CHRESTOMATHIE HINDIE

ET

HINDOUIE

PARIS

BENJAMIN DUPRAT, LIBRAIRE

RUE DU CLOÎTRE SAINT-BENOÎT, N° 7.

हिन्दी हिन्दूई मुन्तखबात ।

CHRESTOMATHIE HINDIE

ET

HINDOUIE

À L'USAGE

DES ÉLÈVES DE L'ÉCOLE SPÉCIALE DES LANGUES ORIENTALES VIVANTES

PRÈS LA BIBLIOTHÈQUE NATIONALE

PARIS

IMPRIMERIE NATIONALE

M DCCC XLIX

AVERTISSEMENT

Voici, pour la première fois, une série de textes choisis hindis et hindouis, c'est-à-dire des deux idiomes de l'hindoustani-hindou, accompagnés d'un Vocabulaire explicatif de tous les mots dont ils se composent. Ce travail, spécialement destiné aux personnes qui suivent mon cours, pourra cependant aussi être extrêmement utile à celles qui voudront s'occuper solitairement de cette branche de la littérature indienne nouvelle pour l'Europe, et contribuer à défricher ce vaste champ littéraire ouvert désormais à leurs labeurs.

Si le hindi n'est guère que de l'hindoustani-urdû écrit en caractères dévanagaris, il n'en est pas ainsi du hindoui, la langue du moyen âge de l'Inde, l'idiome qui succéda au sanscrit dans les provinces du Nord, et qui s'est conservé jusqu'ici, dans quelques localités, exempt de tout mélange de mots persans et arabes. On ne saurait contester l'importance de ce dernier dialecte pour les philologues, et spécialement pour ceux qui ont fait du sanscrit l'objet d'une étude approfondie; mais il offre aussi, comme je l'ai exposé

ailleurs (*Rudiments de la langue hindoui*, p. 3), un grand intérêt philosophique et historique qui le recommande au monde savant, et qui me fait espérer que ce volume sera favorablement accueilli.

La Chrestomathie hindie et hindouie se compose des textes suivants, inédits en grande partie :

PROSE.

I. La dix-septième histoire du *Singhâçan-battîcî* सिंहासन बत्तीसी. Pag. १-७.

II. Deux extraits du *Râjnîti* राजनीति, c'est-à-dire : 1° l'*Introduction;* 2° *Le dévouement de Vîravar,* légende de l'*Hitopades,* connue par la traduction de M. Langlois (*Journal asiat.* t. I, p. 239, 1re série). Pag. ७-१५.

III. Cinq fables de l'*Hitopades* हितोपदेस, d'après une version hindouie inédite, c'est à savoir : 1° *Le corbeau, le daim et le chacal;* 2° *Aventures de Kandarpaket;* 3° *Le corbeau et le serpent;* 4° *Le brâhmane et son bouc;* 5° *Le serpent et la grenouille.* Pag. १५-३४.

IV. Le chapitre LV du *Prem-Sâgar* प्रेम सागर, c'est-à-dire l'*Enlèvement et le mariage de Rukmini,* épisode dont j'ai donné la traduction dans le tome II de l'*Histoire de la litt. hind.* p. 191 et suiv. Pag. ३४-४५.

V. La Vie de Jayadêva, auteur du *Guita-Govinda,* extraite du *Bhakta-Mâl* भक्त माल, de la rédaction de Nârâyan-

Dâs नारायन दास. (*Hist. de la littér. hind.* t. II, p. 54 et suiv.) Pag. ४५-५३.

VI. Cinq extraits de la rédaction inédite du *Bhakta-Mâl*, par Priyâ-Dâs प्रिया दास, c'est à savoir : 1° *La vie de Nâm-Deo;* 2° *de Jayadéva;* 3° *de Kabîr;* 4° *de Pîpâ;* 5° *de Tulcî-Dâs*. Pag. ५३-७६.

POÉSIE.

I. Anecdotes en vers extraites de la Vie de Pîpâ, du *Bhakta-Mâl* de Nârâyan-Dâs. Pag. ७६-८३.

II. Description du *Kali-yug* ou de l'âge de fer, d'après le *Swarg-Rohan* स्वर्ग रोहण, par Wischnu-Dâs विष्णु दास, poëme inédit. Pag. ८३-९०.

III. Deux extraits de l'*Uscha-Charitr* उषा चरित्र, par Parçu-Râm परसुराम, poëme inédit. Pag. ९०-११२.

IV. Enfin l'épisode de *Sakuntala*, d'après la version hindouie du *Mahâbhârat* महाभारत, par Gokul-Nâth गोकुलनाथ. Pag. ११२ et suiv.

Le travail dont je viens d'indiquer les éléments a été préparé pour la presse, sous ma direction, par M. Ed. Lancereau, habile indianiste, déjà connu par l'analyse du *Râjnîti*, et par la publication, à la suite de mes *Rudiments de la langue hindoui*, du texte et de la traduction littérale du *Barattement de la mer*, morceau du *Mahâbhârat*, traduit aussi plus librement par

M. Théod. Pavie, dans ses élégants *Fragments du Mahâbhârat*. Non-seulement M. Lancereau a copié avec beaucoup d'attention les textes dont se compose ce volume; mais il les a étudiés avec soin, et il a rédigé avec la plus grande exactitude le Vocabulaire qui les accompagne. De plus, il a corrigé les épreuves de tout le volume, travail pénible et ingrat, qu'il a exécuté avec une consciencieuse intelligence et avec un zèle digne de tout éloge.

Paris, 1er octobre 1849.

GARCIN DE TASSY,
Membre de l'Institut.

हिन्दी हिन्दुई मुन्तखबात।

सिंहासन बत्तीसी।

सत्यावती पुतली बोला।

एक दिन राजा बीर बिक्रमा जीत सभा में इंद्र समान बैठा था और गंधर्ब मधुर मधुर सुरों से गा रहे थे पातुर नृत्य कर भाव बता रहीं थी कहीं भाट खडे हुए जस बरनन कर रहे थे किसी तरफ़ ब्राह्मन बेद पाठ कर रहे थे किसी तरफ़ मल्ल आपस में युद्ध कर रहे थे और किसी तरफ़ चीते कुत्ते सियाहगोश हिरन मेंढे मीरशिकार लिये खडे थे और जितनी तैयारी राजाओं की चाहिये सब थी। सभा में एक से एक पंडित चतुर और बीर बैठा था उन्ह में राजा इंद्र की तरह बैठा था और सब सामान इंद्र के अखाडे का सा था। इस में राजा ने अपने चित में बिचार कर पंडितों से कहा कि तुम एक बात मेरी सुनों कि स्वर्ग में राजा इंद्र जो है सो मर्त्यलोक का सब मरम जानता है कहो कि पाताल का राजा कौन है और किस जगह वह रहता है।

तब उन्ह में से एक पंडित बोला कि महाराज। पाताल का राजा

शेशनाग है जिस के हज़ार फन हैं और पद्मिनी रानी उस के यहां है और कभी सोग संताप उसे नहीं ब्यापता आनंद से अचल राज वहां का वह करता है और जैसा वह राजा सुखी है वैसा संसार में कोई नहीं।

यह सुनकर राजा को उस के मिलने की इच्छा हुई। बैतालों को बुलाकर कहा कि मेरे तईं पाताल को ले चलो मैं शेशनाग के दरसन को जाउंगा।

बैताल उठाकर पाताल को ले गये और शेशनाग का दूर से मंदिर दिखा दिया राजा ने दूर से देख बैतालों को बिदा किया और आप मन्दिर को चला। जब जाकर उस के पास पहुंचा देखे तो वह कंचन का मन्दिर रत्न जडे हुये जगमगा रहा है और ऐसी जोति है उस की कि जिस में रोशनी के सिवा रात दिन कुछ नहीं मअलूम होता। द्वा द्वार पर कंवल के फूलों की बंदनवारें बंधीं हुई हैं और घर घर आनन्द हो रहे हैं। राजा कुछ डरता डरता कुछ खुशी खुशी द्वारे जा खड़ा हुआ और वहां के द्वारपालों से दंडवत कर कहा महाराज को हमारा समाचार पहुंचाओ कहो कि मर्त्यलोक से एक राजा आप के दरसन को आया है। दरवान राजा को ख़बर देने गया और यह द्वार पर खड़ा हुआ कहता था धन्य भाग हैं मेरे कि मैं यहां तक आन पहुंचा हूं और चारों तरफ़ से राम कृष्ण राम कृष्ण की आवाज़ आती थी और राजा के मन्दिर से बेद की धुनि कान पड़ती थी जब दरवान राजा के सनमुख जा प्रनाम कर हाथ जोड़ खड़ा हुआ राजा ने उस की ओर दृष्ट की। उन्ने कहा महाराज। एक मनुष द्वारे पर खड़ा है और

कहता है कि मर्तलोक से आया हूं द्वारे को हज़ारों दंडवतें करता है बल्कि जिस को देखता है उस को भी आप के दरसन की अभिलाषा है जिस से निहायत बेचैन है। यह बात सुनते ही शेशनाग उठके द्वारे पर आया।

राजा ने देखते ही अष्टांग प्रनाम किया और उस ने हंसकर आसीस दी और पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है और कौन सा देस है। राजा ने हाथ जोड़कर कहा कि स्वामी। बिक्रम भूपाल मेरा नाम है और मर्तलोक का राजा हूं आप के चरन दरसन की मुझे इच्छा थी सो मेरे मन की इच्छा पूरी हुई आज मुझे कड़ोड़ यज्ञ का फल हुआ और कड़ोड़ों दान किये का पुन्य और धन्य भाग मेरे जो आप के चरन कंवल के दरसन हुए बल्कि चौंसठ तीर्थ न्हाने का मुझे फल हुआ।

बिक्रम का नाम सुनते ही शेशनाग मिला और हाथ पकड़ अपने मकान में ले गया अच्छी जगह बैठा क्षेम कुशल पूछी। राजा ने कहा महाराज के दर्शन से सब आनन्द हैं। फिर कहा तुम किस कारन यहां आये हो और आते हुए पंथ में तुम ने बहुत कष्ट पाया होगा। बिक्रम बोला कि फनीनाथ। मैं ने जो कष्ट पाया सो सब तुम्हारे दरशन किये से बिसरा। फिर राजा को रहने के लिये एक अच्छा स्थान दिया और बहुत से लोग टहल करने को और उन्ह लोगों से कह दिया कि मेरी सेवा से भी तुम अधिक राजा की सेवा जानना। इस तरह से पांच सात दिन राजा बिक्रमा जीत वहां रहा। बअद उस के एक दिन हाथ जोड़कर कहा पृथ्वीनाथ। मुझे बिदा कीजिये तो मैं अपने

नगर में जाऊं और वहां बैठ आप का गुन गाऊं। तब शेश ने हंसकर कहा कि अब राजा तुम्हें घर जाने की इच्छा हुई है भला कुछ प्रसाद हम देते हैं तुम लेते जाओ। यह कह चार लअ़ल मंगवा राजा को दिये और उस का गुन कहने लगा एक रत्न का यह सुभाव है कि जितना गहना चाहोगे सो यह तुम्हें देगा और छिन भर देते बिलंब न करेगा और दूसरे नग का यह सुभाव हैं कि हाथी घोडे पालकियां जितनी तुम मांगोगे इतनी इस से पाओगे और तीसरे लअ़ल का यह गुन है कि जितनी लक्षमी जाचोगे उतनी यह देगा और चौथे रत्न का यह प्रभाव है हरि भजन और सतकर्म करने की जितनी इच्छा रखोगे उतनी यह पूरी करेगा।

इस तरह चारों लअ़लों के गुन राजा से समझाकर कहे और बिदा किया। राजा हाथ जोड़कर खड़ा हो कहने लगा महाराज। मैं आप के गुन की उपमा नहीं दे सकता पर आप मुझे दास समझकर कृपा रखियेगा। यह कहकर राजा वहां से रुख़सत हुआ और बैतालों को बुला सवार हो अपने नगर को आया। जब कोस एक नगर रह गया तब बैतालों को छोड़ आप राजा पांओं पांओं शहर को चला। देखता क्या है कि एक दुर्बल भूखा ब्राह्मन चला आता है। जब वह पास आया यह उस ने कहा कि मैं भूखा हूं कुछ मुझे भिक्षा दे जो मैं जाकर कुटुंब को पालूं।

सुनते ही चिंता कर अपने मन में कहने लगा इस ब्राह्मन को इस में से एक लअ़ल दूं यह बिचार कर ब्राह्मन से कहा कि देवता मेरे पास चार रत्न हैं और चारों के ये गुन हैं जो तू इन में से चाहे वह मैं

तुझे दूं। तब ब्राह्मन ने कहा कि पहले अपने घर हो आऊं तब तुम से कहूं। यह कहकर ब्राह्मन अपने घर को गया और राजा वहां खड़ा रहा। वह घर में जाकर अपनी स्त्री औ पुत्र और पुत्र की बहू से कहने लगा कि उन चारों लअ़लों का यह ब्यौरा है। उन्ह तीनों में से उस की ब्राह्मनी बोली कि स्वामी। तुम वह लअ़ल लो जो लक्षमी देहे और ख़ियाल मन से उठा दो क्योंकि लक्षमी से मिलते हैं सहाय और लक्षमी से होते हैं सब उपाय धर्म ज्ञान नेम पुन्य दान यह सब लक्षमी से होता है इस से तुम और तरफ़ चित मत डुलाओ जाकर लक्षमी ले आओ।

फिर उस का पुत्र बोला कि लक्षमी किस काम की है जो साथ सामान न हो और जो सामान हो तो राजा कहावे और सब कोई सिर निवावे सरनजाम हो तो दुर्जन डरें और संसार में शोभा पाए जो लक्षमी हुई और जग में शोभा न पाई तो उस पुरुष का जन्म लेना निर्फल है तुम वह लअ़ल लो जो संसार में शोभा दे।

इतने में उस के बेटे की बहू बोली कि तुम वह लअ़ल लो जो आभूषन दे कि गहने के पहनने से स्त्री अपसरा मअ़लूम हो जो रांड भी पहने तो अति सुन्दरी दिखाई दे और बिपत पडे तो बेच बेच बहुत सा धन ले और जितना मागोगे उतना उस से पाओगे और कितना बिलाओगे पुरुष हमारा बावला है और सास बुद्धि हीन है इस से ससुर तुम सज्ञानी हो और तुम से मैं कहती हूं वही लअ़ल ले आओ जो मैं ने तुम से कहा है उस से तुम सब कुछ पाओगे।

यह सुनकर ब्राह्मन बोला कि तुम तीनों बौराये हो और मेरी इच्छा

सिवाय धर्म के और किसी पर नहीं क्योंकि धर्म से संसार में आदमी राज पाता है और धर्म से सब काम सिद्ध होते हैं और धर्म से जग में यश होता है और धर्म करने से देखो कि राजा बलि ने पाताल का राज पाया और धर्म से राजा इंद्र ने स्वर्ग में जा इंद्रासन पाया और धर्म से यह काया अमर हो जाती है गर्भ बास छूट जाता है इस से तुम मेरा धर्म मत डुलाओ और मैं भी अपना सत न छोड़ूंगा इस में जो हो सो हो। इसी तरह चारों ने चार मति की बातें कहीं एक की एक ने न मानी। तब वह ब्राह्मन फिरकर राजा के निकट आया और आकर सब अहवाल सुनाया कहा कि महाराज। मैं घर तो गया पर बात कुछ बन न आई अपनी अपनी सब कोई कहता है और हम चारों की चार मति हैं और आप ने यहां खड़े होकर हमारे लिये दुख पाया पर हमारा मता बन न आया।

यह सुन राजा ने कहा कि महाराज। तुम अपने चित में निरास होकर उदास न हो चारों लअ्ल तुम अपने घर ले जावो मैं तुम्हें देता हूं क्योंकि जिस में तुम्हारा कुटुंब भी प्रसन्न हो और तुम भी हमारा इसी में कल्यान है। निदान राजा ने चारों लअ्ल खुश होके ब्राह्मन के हाथ दिये ब्राह्मन लेकर असीस दे अपने धाम को गया। राजा बीर बिक्रमा जीत भी अपने मन्दिर को आया और देते दान कुछ बिलंब न लाया॥

राजनीति ।

श्री गंगा जू के तीर एक पटना नाम नगर। तहां सब गुन निधान महाज्ञान पुन्यवान सुदरसन नाम राजा हो। वा नें एक दिन काहू पंडित तें द्वै श्लोक सुनें ता कौ अर्थ यह है कि अनेक अनेक प्रकार के संदेहनि कौं दूरि करै अरु गूढ़ अर्थनि कौं प्रकाशै तातें सब की आंखि शास्त्र है जाहि शास्त्र रूपी नेत्र नाहीं सो आंधरौ है। अरु तरुनापन धन प्रभुता अबिबेकता ये चारौं एक एक अनर्थ की करनिहारी हैं अरु जहां ये चारौं होंय तहां न जानिये कहा होय। यह सुनि राजा आपनें पुत्रनि की मूर्खता देखि चिंता करि कहनि लाग्यौ कि ऐसे पुत्र भये कौन काम के। जे विद्या करि हीन अरु धर्म सों रहित ते पुत्र ऐसें जैसें कानी आंखि देखिबे कौं तौ नाहीं पर दुखनी आवै तौ पीर करै। कह्यौ है। पुत्र ताही कौं कहिये जा के जन्में तें कुल की मर्य्याद होय। अरु या तौ संसार में मरकै को नाहीं उपजतु है पर सज्जन अरु विद्यवान जो पुत्र बंस में होतु है सो पुरुष सिंह है। जैसें चंद्रमा तें आकाश शोभा पावतु है तैसें वा पुत्र सों कुल। जा कौ नाम गुनीन की गिनती में लिखनी तें नाहीं लिख्यौ गयौ ताही की माता कौं बदबांभ कहतु हैं। अरु दान तप सूरता विद्या अर्थलाभ में जिन कौ जस नाहीं भयौ तिन की माताओं नें केवल जनवे ही कौ दुख

पायौ है पै पुत्र कौ सुख नाहीं देख्यौ। कहतु हैं कि जिननि बडे तीर्थनि में अति कठिन तप ब्रत किये हैं तिन के सुत आज्ञाकारी धनवान पंडित धर्मात्मा होतु हैं। ये छह बस्तु संसार में सुखदायक हैं सदा धन की प्राप्ति शरीर आरोग्य स्त्री तें हित नारी मिठबोली पुत्र आज्ञाकारी अरु विद्या तें लाभ।

इतनौ कहि पुनि राजा बोल्यौ कि मेरे पुत्र गुनवान होय तौ भलौ। यह सुनि कोऊ राजसभा में तें बोल्यौ कि महाराज। आयु कर्म वित्त बिद्या अरु मरन ये पांच बात देहधारी कौं गर्भ ही में सिरजी हैं तातें जो भावी में है सो बिना भये नाहीं रहति जैसें श्री महादेव जू कौ नग्नता अरु श्री भगवान कौ सर्प सय्या। ता सों चिंता मति करौ जौ तिहारे पुत्रनि के कर्म में बिद्या लिखी है तौ बिद्यावान हौंयगे। पुनि राजा कही यह तौ सांच है पर मनुष कौं परमेश्वर नें हाथ अरु ज्ञान दयौ है सो बिद्या साधन के अर्थ। जैसें एक चक्र कौ रथ न चलै तैसें बिन पुरुषार्थ किये काज सिद्ध न होय तातें उद्यम सदा करियै कर्म कौई आसरौ करि न बैठि रहियै। कह्यौ है कि जैसें कुम्हार माटी ल्याय जो कछु कह्यौ चाहै सो करै तैसें नर हू अपनें कर्म समान फल पावै। कर्म तौ जड़ है वा सों कछू न होय उद्यम करता है ता सों करता कर्म कौं प्रेरै तब भलो बुरौ करता के कर्म संयोग तें होय। अरु केवल कर्म कौई आसरौ करि बैठि रहनौ कपूत कौ काम है। अरु जा के माता पिता सुत कौं बिद्या कौ उद्यम न करावैं ते शत्रु जानियै। कह्यौ है कि मूढ़ पुत्र पंडितनि की सभा में शोभा न पावै जैसें हंसनि में बगुला न सोहै।

आगै राजा नें यह बिचारि पंडितनि कौ समाज करि कह्यौ हे पंडितौ तुम में कोऊ ऐसौ पंडित है जो मेरे पुत्रनि कौं नीति मार्ग कौ उपदेश दै नयौ जन्म करै। कह्यौ है। जैसें काच कांचन की संगति पाय मर-कत मनि जनाय तैसें साध की संगति में बुद्धि पाय मूरख हू पंडित होय अरु नीच की संगति में नीच।

दोहा।

संगति कीजे साध की हरै और की ब्याधि।
ओछी संगति नीच की आठौं पहर उपाधि॥

तहां राजा की बात सुनि बिष्णुशर्मा वृद्ध ब्राह्मन सकल नीतिशास्त्र कौ ज्ञान वृहस्पति समान बोल्यौ कि महाराज। राजकुमार तौ पढ़ायवे योग्य हैं अयोग्य कौं विद्या न दीजियै क्यौंकि वह पढ़ै तौ सिद्ध न होय अरु जौ सिद्ध होय तौ अनीति बिशेष करै बिद्या कौ गुन छांडि औगुन दृढ़ करि गांठि बांधै तातें कुपात्र कौं न पढ़ाइये। जैसें बिलाव कौं नवौ नवौ भोजन खवाइये तौ हू बिलूखे की घात न तजै। पुनि कोटि जतन करि बगुला कौं पढ़ाइये पर सुआ सौ न पढ़ै। जौ मुनि धर्म में निपुन होय तौ हू माछरी मारवे की घात अधिक सीखै। महाराज तिहारे कुल में तौ निर्गुनी बालक न होंय जौं मनि मानिक की खान में काच न उपजै। हम बिद्या बेचत नाहीं तुम तें कछू लेतु नाहीं पर तुम्हारी प्रार्थना है या तें हौं तिहारे पुत्रनि कौं सहज सुभाव ही छः महीना में नीति मार्ग में निपुन करिहौं।

यह सुनि राजा वृद्ध ब्राह्मन बिष्णुशर्मा तें बोल्यौ अहो पुरुष की सं-गति तें देखौ नान्हे कीट हू सज्जननि के माथे चढ़तु हैं तातें तिहारे

सतसंग तें कहा न होय जैसें पाथर की प्रतिष्ठा किये सब मनुष देवता करि पूजैं। पुनि उदयाचल परबत की बसन सूरज के उदै भये सर्व बस्तु सूरज समान ही दीसै सुसंग तें नीच की हू प्रतिष्ठा होय।

चौपाई।

कीट भृङ्गि ऐसें उर अंतर।
मन सरूप करि देत निरन्तर॥
लोह हेम पारस के परसे।
या जग में यह सासे दरसे॥

दोहा।

सेस सारदा व्यास मुनि कहतु न पावै पार।
सो महिमा सतसंग की कैसे कहै गंवार॥

तुम मेरे पुत्रनि कौं पंडित करवे जोग हौ। ऐसें वा राजा नें बिनती करि ब्राह्मन कौं आपनें पुत्र सौंपे। तब वह बिप्र राजपुत्रनि कौं लै एक ऊंचे मंदिर में जाय बैठ्यौ। कोऊ समें पाय कह्यौ सुनौं महाराज कुमार।

दोहा।

काव्य शास्त्र आनंद तें रसिकनि के दिन जात।
मूरख के दिन नींद में कलह करत उतपात॥

हौं मित्रलाभ की कथा कहतु हौं क्यौंकि मित्रलाभ में लाभ बहुत है।

बीरबर चरित्र।

शूद्रक नाम एक राजा वा की क्रीडा कौ एक सरोवर ता में कर्पूरकेल नाम राजहंस हो। वा की बेटी कौ नाम कर्पूरमंजरी ता पै आशक्त होय मैं व्हां रह्यौ। तहां बीरबर नाम एक राजपूत काहू देस तें उद्यम के लिये आय राजद्वार पै ठाढ़ौ भयौ अरु उनि पौरियन तें कह्यौ मोहि राजा तें मिलाओ हौं सेवा करनि के हेतु आयौ हौं। द्वारपाल यह बात जाय राजा सों कही। तब राजा नें वाहि बुलायकै पूछ्यौ तुम दिन प्रति कहा लेउगे। उनि कही चार सौ तोला सुबरन। पुनि राजा बोल्यौ और तिहारे साथ को है। उनि कही द्वै हाथ तीजौ खडग। राजा कही इतेक हम तें न दियौ जायगौ। यह सुनि बीरबर जुहार करि चल्यौ। तद मंत्री नें राजा सों कही महाराज चार दिन तौ याहि सुबरन दै राखिये औ या कौ पराक्रम देखिये इतेक जोग है कै नाहिं। मंत्री की बात मानि राजा नें वाहि सौनौं दै राख्यौ। वा दिन कौ कंचन लै वा नें आपनें घर जाय आधौ तौ ब्राह्मननि कौं संकल्प करि दियौ अरु वा कौ आधौ भूखे भिखारी भिक्षुकन कौं बांटि दियौ औ एक भाग निज भोजनार्थ राख्यौ। याही भांति वह पुत्र पत्नी स्त्री सहित व्हां रहनि लाग्यौ। जब सांझ होय तब खांडो फरी लै राज सेवा में जाय उपस्थित होय। एक दिन कृष्ण चतुर्दशी की आधी रात कौं घन घुमडि मेह पर्‍यौ। ता समें काहू नारी के रोवन कौ शब्द सुनि राजा बोल्यौ कोउ है। बीरबर कही महाराज कहा आज्ञा होति है। राजा कही देख तौ को रोवतु है। राजा की आज्ञा पाय बीरबर

चल्यौ। तब राजा नें आपनें मन में बिचार्यौ कि मोहि ऐसौ न बूझियै जु या अंधेरी रैन मांहिं रजपूत कौं एक लौ पठाऊं तातें या के पाछें पाछें जाय देखौं तौ सही यह कहा करतु है। या प्रकार राजा मन में बिचारि ढार तरवार गहि वा के पाछें व्है लियौ। आगें जाय बीरबर देखौ तौ एक नारी नवजोबना अति रूपवती सब आभरन पहरें ठाढी धाय मारि मारि रोवति है। इन वा सों पूछी तू को है। उनि कही हौं राज लक्ष्मी हौं। पुनि इन कह्यौ तू रोवति काहे। उनि कही मैं बहुत दिन या राजा की भुजानि की छांह में बिश्राम कियौ अरु अब या राजा कौं छांडि जाउंगी या दुख तें रोवति हौं। इन कही तू काहू भांति हू रहै। उनि कही जौ तू निज पूत कौं बल देइ तौ हौं रहौं अरु यह राजा अनेक दिन अखंड राज करै। पुनि बीरबर कही माता जौलौं मैं आपनें घर व्है आऊं तौलौं तुम व्हां रहौ। ऐसें कहि घर जाय बीरबर पुत्र औ स्त्री कौं जगाय लक्ष्मी के कहे बचन कहिवे लाग्यौ तौ पुत्री हू जागी। यह बात सुनि सब चुप रहे। तद पुत्र बोल्यौ धन्य भाग मेरौ जु यह देह देवी के निमित्त लागै अरु स्वामी कौ काज सरै या में पिता जू बिलंब जिन करौ क्यौंकि कबहू तौ या काया कौ बिनास होय तातें काहू के काज लागै सो तौ भलौ ही है। कह्यौ है। बिद्या धन प्रान पराक्रम जा कौ पराये काम आवै ताही कौं संसार में जन्म लैनौं सुफल है। पुनि बीरबर की पत्नी बोली जौ तुम यह कार्य न करौगे तौ राजा के रिन तें कैसें उतरन होउगे। ऐसें बतराय सब देवी के मंदिर पै गये अरु पूजा करि हाथ जोरि इतनौं कह्यौ माता हमारौ राजा चिरंजीव होय राज करै। यह कहि पुत्र

कौ मूंड काटि बीरबर नें देवी कौं दयौ अरु आपनें मन मांहिं कह्यौ कि राजा के अन्न तें तौ उतरन भयौ पर अब निपूतौ होय जगत में जीवनौं उचित नाहिं। यह समझि आपनौं हू सीस काटि भवानी के आगू धर्‌यौ। उन दोउअन कौं मर्‌यौ देखि वा की स्त्री नें बिचार्‌यौ कि संसार में रांड निपूती व्है जीनौं जोग नाहिं। ऐसे ठानि वा हू नें निज माथौ चढायौ। विन तीननि कौं मर्‌यौ देखि वा की पुत्री नें बिचार्‌यौ कि निगोडी नाटी व्है जग में जीवनौं भलौ नाहिं। यह समझि विन हू मस्तक काटि देवी के सनमुख राख्यौ। यह चरित्र देखि नरपति नें जी मांहिं बिचार्‌यौ कि मो से जीव अनेक पृथ्वी में उपजतु खपतु हैं पर ऐसे सूर नर हौंने कठिन हैं तातें अब या कौ कुटुंब नास करि मोहि राज करनौं जोग नाहिं। यह सोच समझि ज्यौं भूपाल निज मूंड उतारनि लाग्यौ त्यौं हीं देवी नें आय कर गह्यौ अरु कह्यौ राजा तू साहस जिन करै अब तेरे राज में भंग नाहिं। राजा कही माता मोहि राज तें कछु प्रयोजन नाहिं। पुनि देवी बोली हौं तेरे धर्म औ सेवक के कर्म पर संतुष्ट भई अब तू जो बर मांगै सो देउं। राजा कही मा जो तुम तुष्ट भई हौ तौ इन चारन कौं जीव दान देउ। जब उन पाताल तें अमृत लाय विन चारन कौं जिवायौ तब राजा चुपचाप व्हां तें चलि निज मंदिर में आयौ औ बीरबर हू उन तीनौं कौं घर राखि आप राजा के समीप पहुंच्यौ। नरपति नें वाहि पूछ्यौ तुम गये हे तहां कहा देखि आये। पुनि कर जोर उन कही महाराज एक नारी रोवति ही। जौलौं हौं वहां गयौ तौलौं वह चुप रही मैं वाहि न पायौ पुनि मैं बगद आप के ढिग आयौ। ऐसें सुनि

॥ १४ ॥

राजा नें मन में कह्यौ कि यह कोऊ बडो सिद्ध पुरुष है या की स्तुति हौं कहां लौं करौं। कह्यौ है। दयावंत दानी तपसी सत्यबादी औ सूर जो आपनी बडाई न करै तौ वाहि सिद्ध पुरुष जानियै। आगे राजा नें प्रात भये पंडितन की सभा में बैठि रात्रि कौ सब बृत्तांत कह्यौ अरु संतुष्ट होय बीरबर कौं करनाटक देस कौ राज दयौ॥

हितोपदेस।

काग म्रिग अरु स्याल।

मगधदेस मै चंपावति नांम बनु रहै। ताहां बहुत बर्ष के बडे स्नेह करि एक म्रिग अरु काग दोउ बसै हि। सु हिरण बन मैं चरत एक दिन सपुष्टदेही स्याल हि देष्यौ। देषिकरि स्याल बिचारन लाग्यौ। या हिरण कौ मांस कौंन उपाव करि षाऊं। तब स्याल ईह बिचारी जु कुं या सौं प्रीति उपराजौं। प्रीति उपाई करि या कौ मांस षाऊं। ईह बिचार करि स्याल म्रग कैं निकटि जाई करि बोल्यौ। म्यंत्र कुसल है तुम्हं कौ। म्रिग कहि तुम कौंन हौ ईह कहिंतु हौ हौं क्षुद्रबुधि नाम स्याल हौं। ईह बन मै म्यंत्र करि बंधु करि हीन वस्त हौ। अब तुम हि म्यंत्र पाई करि जीयौ हौं। अब तुम्हारे साथि सदा ही रहिहौं। तब इह दोऊ संध्या भये म्रग कौ जहां बास थल थौ तहां गयौ। तहां चंपा के रुष परि सबुधि नाम काग रहै। म्रग कौं मिंत्र तिन कह्यौ। म्यंत्र हिरन यौ दुसरौ कौनु। तब म्रग कहि यौ स्याल हम सौं मैत्रि करन कुं आयौ है। तब काग कहितु है म्यंत्र सुनंहु आकस्मात तत्काल परदेसी सौं मैत्रि न करिये। म्यंत्र हिरण जा कौ कुल न जाणिये अरु जा कौ सील न जाणिये ता कौं बास न दीजे जैसैं

मंजार कौं बासु दीयौ बुटौ गीधु माह्यौ। ईह सुनि दोऊ पुछत हैं म्रगु अरु स्यारु ईह कैसी कथा है। तब काग कहितु है। भागीरथी गंगा के तीर ग्रिधकुट नाम एक परबत रहै गीधर लोक प्रसिध। तहां ग्रीध परबत मै एक बडौ पापरि कौ रुष रहै। ता के षोटर मैं आंधरौ बुटौ एक गीध रहै। तहां वा के जीवनि निमति और पंछी आपने चारा मैं थोरौ थोरौ अहार बांटि देहि ता तैं वह गीध जीवै। तहां एक समये दीर्घकरण नाम मंजार पंछिन्ह के बालकन्ह षावे कौं आयौ। मंजार कौं आवत देषि सब ही पंछी उराने उरतैं पुकारन लागे। ऊन कौ पुकारिवौ सुनि गीध यह कहि। को आवत है। तब दीर्घकरण मंजार गीध कौं देषि उरानौं उरते भाजि कु न सक्यौ वैंहि गीध के निकटि गय्यौ जाई गीध सौं ईह कही जू तुम बडे हौ हमारे प्रणांमु है। तब गीधू कहितु कौंन है। ऊन कही कुं दीर्घकर्ण नांम बिलाव हौं। तब गीध बोल्यौ तु दुरि हि रहि नांतर तोहि मारिहौं। तब मंजार कहि मेरे बचन सुनकुं पीछै जै मारिवे कु जुक्त कुं तौ मारिय्यौ। जातै जाति ही तै न कोउ मारियै न पुजियै व्यौवहार देषि जु जैसौ होई तैसौ हि करियै जौ मारवि जोग्य होई तौ मारियै पुजिवे लाई कहोई तौ पुजियै। तब गीध बोल्यौ कहि सु। मंजार कहितु है गीध राजा मैं इह गंगा जी के तीर असनान करि मांस छाडि ब्रह्मचर्य सौं चंद्रायण ब्रत करत हौं मेरे आगै सब पंछि मिलि तुम कौं धर्मातमा कहि स्तुति करत हैं तातैं तुमैं ग्यांनी जांनिकरि धर्म सुनिवे कू तुम पासि आयौ हौं तुम ऐसे धर्मात्मा हौ जु अतिथ कौं मारिवे कौं ऊठे हौ। ग्रहसथ कौ ईहै धर्म है जौ सत्रु घरि आवै तौ मित्र कु की पुजा

करै जैसें रुष जौ कोउ रुष काटिवे कु आवै तौ रुंष काटनहारा कु कौं छांह करत रहै। जे और नांहि तौ मीठौ बचन तौ कहौ और सुनौ। जातें महांत जे हैं साध तिन के ग्रह तें त्रण बैबि वे कू न छूटहि भूमि आदर सें आसन कौं न मिटही अतिथ कौं जलपांन न मिटहि प्रीय बचन कबहु न छूटई त्रण भूमि जल प्रीय बचन ए कबहु अतिथ कौं न छुटैहि और साधन की द्रष्टि सौं नीके मन सौं मीठें बचन सौं ऊठिकरि आसन देई ईह साध माहांत कौं सहज ही कौ धर्म है। जो महांत होई अरु ग्रहसथ होई करि ईह धर्म न करै अरु जै ग्रहस्थ के घर तें अतिथ निरास होई विमुष जाई तो ग्रहस्थ कौ धरम सब आय ले जाई अरु आपनौं सब पाप ग्रहस्थ कौं दे जाई। और साध जे हैं महांत ते निर्गुणी हु प्राणी बिषै दया करैं जैसें चंद्रमां चंडाल हु कै ग्रहि प्रकास करै। तब गीध कहि सुनौ मंजार की मांस बिषै रुचि बहुत ए पंछीन के बालक ईहा रहित हैं ताते हुं कहित हौं। तब मंजार ईह सुनि भूमि छूई करि कांन उपरै हाथ धर्यौ मो तें ऐसी न होइ मै धर्मसास्त्र सुनि बैरागी होइ यह ब्रत आरंभ्यौ है जातें दया बडौ धर्म है ईहै सब सास्त्र कौ सिधांत है। जाते जु दयावंत है अरु भली है बुरि सब सहितु है अरु सब हि कौ प्रतिपाल करत है ते सर्गलोक पावहि। और एक धर्म सदा सहाइ कहै वा की सब देही के साथि जांहि। अरु जो जिह कौ मांसु षाई जा कौ मांसु अरु षांणहारे कौ मांस इन हु मै बहोत अंतर है कांहे ते जा कौ मांस होई ते जीव हि तें जाई षांणहारे कौं एक छिन जीभ हि कौ स्वाद। तातें जैसें आप कौं मारिवे कौ दुष व्यापै तैसें और हु कौं जांणिजे। सुनौ

तौ बन के साग तैं जै पेट भरै तौ जीव काहे कौं मारिये। इह भांत गीध कौ प्रतीति बटोई उहां हि रह्यौ मंजार आगै रहित रहित दिन प्रति पंछिन के बालक षाई। षांत षांत जिन्ह के बालक षाये ते षोज कारन लागे। उन्ह कौं षोज कारत जांणि मंजार उरतै भाग्यौ। तब उन्ह पंछी षोजत षोजत बालकन के हाउ षोउरा मैं पाये। तब सब पंछिन मिलिइ कही बिभ्रारु कीयौ जु हमारे बालक इन हि बुटे गिधू मारे। तब इह जांनि सब पंछिन मिलि बुटौ गीध मार्यौ। तातें हुं कहित हौं अनजाने सु मैत्रि न कीजे। इह बात सुनि वह स्याल क्रोध सौं बोल्यौ। म्यंत्र काग जा दिन तुम्ह म्रग सौं म्यंत्रि कीन्ही ता दिन इह तुम्हारौ सिल कुल जानतु हौ आजू तेहि मैत्री दिन दिन अधिक होत है। और इह आपनौ इह परायौ इह बिचार मुर्षन्ह कौ है पंडितन कुं सब आपने हि हैं। जैसें इह म्रग मेरौ म्यंत्र तैसै तुम हु हमारे म्यंत्र हौं। तब म्रग कही बहोत बांत सौं कौंन कार्य्य सब मिलि एक ठौर सुष सौं रहिये। तब कागा कही ऐसी प्रिय होऊ जैसै तेरौ बिचारु। तब सबै मिलि प्रतीति करी आगै प्रात भवे अपुने अपुने कार्य कौं गये। तब रहित रहित एक दिन म्रग सौं स्यालं कहि। म्यंत्र एक ठौर है जव को षेत है चलौ तुम कौं हि दीषांइ आउं। तु निति हि ऊहां चरि चरि आव। तब म्रग कौं षेत दीषायौ। म्रग देषे तैं निति ही चरि चरि आवै। तहां एक दिना वा कौं देषि रषवारै जाल पसार्यौ। तब आगि लै दिंनि म्रग बहोरि चरिवा गयौ। तब चरत हि जाल मैं अटक्यौ। तब म्रग मन मैं बिचारन लाग्यौ। आजि मो कौं या जाल मै तैं छिडाईवे कौं म्यंत्र बिनां और कौंन समर्थ है जु मोहि छूडावै। इतुने

बिचि म्रग कौं स्यालु देषि इह मन मैं बिचारन लाग्यौ जु मेरे कपट कौ फल भयौ। अब म्रगु बांध्यौ अब मेरो मनोर्थ सिधि हू है। जब य्या कौ मांस ले जैहूं तब लोहु अरु हाड मैं पाईहौं। तब म्रग स्याल कौं देषि फुल्यौ। देषिकरि पुकारी म्यंत्र मेरे बंधन कांटि मोहि राषि लेहु। जाते नीति मै ऐसी कही है जु आपदा मै म्यंत्र जांणिये जुधन मैं सूर जांणिजे धन मैं निरलोभ होई सुपबित्र जांणिजे द्रविहीण भये असत्रि की परक्षा जाणिजे दुष मै बंधु जांणीजे। यह बचन हिरन के स्याल सुने जाल कौं देषि बिचारन लाग्यौ ईह तौ गांठौ बांध्यौ है। तब स्याल बोल्यौ। म्यंत्र यह जाल तांति कौ है आजि ऐतवार है दांतन करि क्यौं छुवौ म्यंत्र जु और भांति मन मैं मति जांणौ बिहाणैं जु तु कहिहै सु करिहौं। आगे काग प्रात काल जब म्रग न आयौ तब षोज करन लाग्यौ। षोज करत करत जाल मैं बांध्यौ देष्यौ। देषिकरि काग बिचारन लाग्यौ। तब म्रग सौं कहित है म्यंत्र यह कहा। तब म्रग कहितु है। म्यंत्र तेरौ कह्यौ न कीयौ ता कौ यह फल भये। जौ हितकारी म्यंत्र कौ कह्यौं न मानै ता कौं बिपति आई जांणिजे। तब काग कही। तेरौ म्यंत्र स्यालु कहां। म्रंग कहितु है। मेरे मांस कौ अर्थी ईहां ही है। तब कागु कहि। म्यंत्र मै तुम सौं पहिले ही कही थी। यह बात कबहु न बिचारिये जु हम जा कौ बुरो न करिहैं सु हमारी काहे कौं करिहै यह जांनि काहु की प्रतीति न करिये जाते दुष्ट होई सुभले हु सु बुरौ करै। तब स्वास लैकरि काग कहि। अरे दुष्ट स्याल पापी तै ईह कौंण दारुण कार्म कीयौ। जातै जा सौं मीठी बातन करि प्रीति उपराजिकैं मैत्रि करिये मैंत्रि करि अरु भले कौं उह-

का जे सु कौन धर्म है और जे पीछै कार्ज्य नसावै मुष उपरि सुहावति कहै ऐसे म्यंत्र सर्वथा न करिये जैसे भितरि बिष उपरि दुध करि भर्यौ घट न छूयए और दुर्जन होइ प्रिय बचन कहै ता की प्रतीति न करिये वा की जीभ मैं अंम्रत पेट मैं बिषु भर्यौ है। और जौ उपगार होई प्रतीति करै सुषी होई ऐसे सौ जो कपट करै तिन्ह कौं हे प्रीथि माता तूम्ह कैसे धारत है। अथवा ईह दुष्ट कौ यह सुभाव है जुष हि लै पाईन परै पीछै पटकिकै मांस षाई अरु कांन मैं मीठी बात कहै औ-सर पाइ दगो देई जैसे समा बोलत हि कांन मै पैसि जाई। और काग कहतु है म्रग सौं म्यंत्र इह सात मेरे मन मै साल है सुनौ। काग कहितु है। ए सात साल है कौंण कौंण दिन मैं फीकौ चंद्रमा जोबन कै बीते स्त्री सकाम होई कमल बिन सरोवर सुंदर मुष विद्या करि हीण ठाकुर होई लोभ करै अरु साधू जन दुषी राजा निकट दुष्ट मंत्रि रहै ए सात परमं साल है। इह बिचार करत ही है। यह बीचि षेत कौ रषवालौ लाठी लीये आवत काग हि देष्यौ। देषिकरि म्रग सौं यह कही। म्यंत्र म्रग तू म्रतिग सौ परि रहौ जब हुं बोलौं तब तूम ऊठि भाजियौ। ईह कहि काग रुंष परि बैठ्यौ ए ते रषवारौ आई पहुंच्यौ देषि सुष पायौ जु म्रग तौ बांध्यौ। तब म्रग देषिकरि रषवारौ कहन लाग्यौ। ईह आप ही मरि रह्यौ। तब बंधूक ईह जांनि बंधन छोड्यौ। बंधन छोडि जाल सकेलन लाग्यौ। ईहि बिचि काग सबद कीयौ। काग कौ सबद सुनि म्रग ऊठि भाज्यौ। तब भाजतै रषवारै लाठी मेली सु वह लाठी स्याल कै जाई लागी लागत प्रमांण स्याल मूवौ॥

॥ २१ ॥

कंदर्पकेत चरित्र।

कांचनपुर नगर मैं बीर बिक्रमां हीत राजा है तिह नगर मैं राजा की आंग्या पाइ एक नाउ कौं मारिवे कै ठौर ले चले। तहां कंदर्पकेत नांम संन्यासि और एक साथ सहित इह येक बात कहि। अहो इह नाउ मारिवे लाइक नाहि ईह कहि नाउ कौ बस्त्र पकऱ्यौ। तब राजा के सेवकनि कहि। इह काहे तै मारिवे लाईक नाहि। तब कंदर्पकेत कहित है। स्वर्न्नलेषा कौं छूनइ करि संन्यासि दुति साथ ए तीनौ आपने ही दोष तै दुषी भये। तब राजा के सेवक पुछत हैं कैसे कै दुषी भये। संन्यासी कहतु है। सिंघलद्वीप कौ राजा जीमै मौंतकेत है। ता के पुत्र कंदर्पकेतु हम हैं सु एक दिन क्रिडा के बाग मै ठाढ़ौ हुतौ ताहां पैहन के ब्यौपारी बाग मै आइ उतरे तिन के मुष तै इह बात मै सुनी जु ईह ईहि समुद्र मैं अंधियारी चौदसि कै एकु कलपबरष प्रगट होत है वा के है मणिन्ह की किरण करि प्रकासत सेज परि बैठै समसत आभरण पहेरि लिषिमी समान बेण बजावति कौंनै एक कन्या देषियत है। ता वैं यह बात मैं सुनी सुनिकरि बिचारत भयौ जु कैसै हूं देषि जाई। तबै वे ब्यौपारि समुद्र के पार बोहिथ चढ़िकै ब्यौपर कौं चल्यौ। तब हुं उन बनिया के साथि बोइथ चढ़ि चल्यौ। जात जात उस ही ठौर गये उहां जाइ करि कन्या देषि आधी देह पांणी मांहि आधी उपरि वा की सुंदरताई देषि बोइथ उपरि तै वा कै लेन कौं हूं समुद्र मैं पैठ्यौ। आगै सोने के नगर मै जाइ करि सोने हि के घर मै सेज परि बैठि मै देषि उन्ह हौं देष्यौ देषिकरि उह दुति

पठाई। दुति आइ तबै आवत हि मै दुति पुछी इह कन्या कौन है। तहां दुती मेरे पुछे तैं मौ सु इह कहि। यह कन्या कंदर्पकेलि नांम विद्याधर स्मस्त विद्याधरन कौ राजा ता की पुत्री रतनमंजरी नाम है। यह ब्रतांत कहि सुनि तब आपस मैं अन्यौ अन्य प्रीति सनेह ते ब्याह कीयौ वा सौं क्रीडा करत कुं रह्यौ। तहां एक समये एकांत बिषै बात करत है उहि रतनमंजरी मो सौंय जु स्वांमी अनी इछ्या ते यह समस्त भोग करहु पर यह चित्र मैं जु लिषी है स्वर्न्नलेषा नाम विद्याधरी सु या कौं कबहु मति छुवहु। सु एक द्विनि ताहु तें रहि न सक्यौ कौतुक तें वां कौ स्तन मै छुयौ। तब ऊनि चित्र कु भीतर तैं ऐसैं लात करि माह्यौ जैसे कुं सोरठ देस मैं आय पह्यौ। तब ते कुं वा के बिरह के दुष करि संन्यासी भयौ सु फिरत फिरत या नगर मैं आयौ अरु ईहां काल्हि की रात्रि अहीर के घर सोवत मै यह देषी जु पहिलैं ही सांभ अहीर मित्र सौं मिलि मद पीवत आपनी स्त्री कुटनी सौं बात करत देषी। तब वाही अहीरी कौं नीकें करि मारि थांभ सौं बांधि आय सोई रह्यौ। तब आधी राति नाईनि वह कुटनी आई आई कर उस अहीरी सौं यह बात कही। अहो सषी तेरे बिरह करि वह पुरुष मुवौ चाहत है। जातें चंद्रमा के ऊदय ते अंधकार बढीत भये तै कांमदेवं जोबनवंतं पुरुषन्ह कौं ताकि ताकि तीरन मारत है तातें इहां थांभ सौं मोहि बांधिकरि तुं वा कौ भलौ मनाई आव। तब वहि कुटनी बांधी बांधि अहीरी ऊहां गई। पछि छिनक एक रहि अहीर जाग्यौ। जागिकरि यह बात कही। क्यौं अबैं जार पासि काहे नांइ हि जात। जब यह बात कहे ते वह न बोली तब उनि यह कही।

क्यौं तेरे गर्बु भयौ है जु तु मेरे बुलाये नांही बोलत। यह कहि वा कौ छुरी करि नांक काट्यौ। पीछे अहीरी आई वा सौं कही। दुती कहौ समाचार। तब दुती कह्यौ। मेरौ मुह जु कहतु है देषते नांही। तब अहीरी आपु कौं बांधि वह छोडि दीन्ही। वह नाईनिं काट्यौ नांक लै आपनें घर गई। तब प्रात ही नाई वा सौं छुरहुडी मागी। तब ऊहि एक बडो छुरा ले आनि दीन्हौ। तब ऊहि नाई रिसाई कै छुरा घर मै डारि दीयौ। तब ऊहि नांईनि पुकारि ऊठी ईनिं बिनु अपराध हि मेरौ नांक काट्यौ। नांक हाथि ले चौतरा आंनि पुकारी। आगै वह अहीरी अहीर कै पुछे यह कही। अरे पापी ऐसे कौंनु है जु मो सी पतिव्रता कौं कलंक लगाई सके अधिक कहा कहौं मेरौ ब्यौहार आंठौं लौकपाल जानत हैं यह मेरौ आठौ देवता मेरौ धर्म जांनत हैं जैसी मै हौं कौंण देवता सुर्जा चंद्रमा वायु अगनि आकास प्रीथी जलु हृदय यम दिन रात्रि दोऊ संध्या ए सब मनुष्य के चरित्र कौं न जांनत हैं। तातै देषु मेरौ मुषु जौ हूं पतिव्रता हुं तौ मेरौ मुष जैसौ हुतौ तैसौ ही देषिहै। तब यह बात सुनि अहीर दीवा करि मुष अहीरी कौ देष्यौ जैसौ हुतौ तैसौ ही मुष देषि वा के पाईनि पर्यौ। यह तौ ऐसी भई। अब यह साध जु मेरे संग है ता के समांचार सुनहु। यह साधु घर तै निकस्यौ निकसि बारमें बरसि इही नगरिं बहुत द्रव्य ले आयौ। ईहां आई रात्रि बेस्या के घर सुतौ। वह बेस्या अपनें घर के द्वार मै कल करि काठ कौ बेताल बनाई। वा के मांथे परि एक बडौ रतंन रष्यौ वा रतन के लोभ तैं वह साधू आधि रात्रि ऊठिकर वह रतन कौं हाथ पसारि रतन लैंन लाग्यौ। तब रतन कौं

छुवत हि बेस्या कलं छिटकाई छिटकावत हि वा के दोन्यौं हाथ कल करि बांधे गये। तब वह साधु पीडा करि दुषी भयौ। तब पुकारि उठ्यौ तब वा सौं कुटनी कहि यत मलय पर्बत तैं बिटई आये है जौ कछु द्रव्य सु सब ही द्रव्य रतन जु कछु है ते सब देहुगे तब छुटहुगे नांतरु यह तुम हि मारि डारिहै। तब ईनि सब ही रतन द्रव्य दीये। अब यह सर्ब सषाई करि हमारै साथि लाग्यौ है। यह समस्त बार्ता सुनि राजा के सेवकनि न्याव बिचार्यौ॥

॥ २५ ॥

कागु अरु सांप ।

कौनिं एकै रुष परि कागू अरु कागनि रहै सु वा ब्रष के षोउर मै एक काली सांप रहै सु वा कागु के बालकन कौं षावो हि करै। जब कागुनी कौं गर्भ फेरि रह्यौ तब काग सौं इह कहि। स्वामी इह रुष छाडि अन्यंत्र बास कीजे इहां इह कारे सरप तै हमारी संतति न ऊबरिहै। जातें दुष्ट स्त्री कपटी मिंत्र सेवकू जौ उतर देई जा घर मै सापु रहै तहां कौ बासु ए च्यारह्यौ म्रति कौ कारणु है। तब कागु बोल्यौ और प्रीया तु मति उरहि बहुत बार मैं या कौ अपराध सह्यौ है अंब हुं या कौं मारिहौं। तब कागनी कहति है। यह महाबली सर्प या सौं तुम्ह कैसे बैर करिहौ। काग कहि तु यह चिंता मति करहि जातै जां कै बुधि है ता कै बल है जां कै बुधि नाहि ता कैं बल काहे कौं जातै बुधि हि कै बलि महाबली स्यंघु सुसै बुधि ही करि मार्‌यौ। तब कागनी कहि यह कैसी कथा है। कागु कहिंतु है। मंदर नाम पर्बत उपरि एक दुर्द्धांत नाम सिंघु रहै सु सब पसुन कौं मारत रहै। तब सब पसुं जाई मिलिकरि सिंघ सौं बिनती करी म्रिगराज सुनौ। तुम सब पसु काहे कौं मारत है। तुम्हारे अहार कौं एक एक पसु नित्य हम हि आंनि देहिगे। तब स्यंघ कहि भली बात ऐसी ही करहु। तब ते एक एक पसु स्यंघ नित्य षाई रहै। तहां एक दिन बुटे सुसा की बारि आई। तब उनिससै बिचारी है जीवत ही उर कौ त्रास दुरि करौ यह बिचार भलो है जौ मरण निश्चै है तौ हुं सिंघ सौं दीनता भाषौं सु काहे कौं। इह बिचार हलवै हलवै चल्यौ। तब सिंघ कौं जाई पुछु-

च्यौ। आगे तै भुषै रिसाई कही। काहे तै तु बहौत अबेरै आयौ। तब सुसै कहि यह मेरौ अपराध नांहि मारग मै आवत और एक सिंघु मो कौं पकरि रह्यौ मै वा सौं बहुत सपत करिकैं तुम्ह सौं कहन कौं आयौ हौं। स्यंघ यह बात सुनि बहुत रिसानौं क्रोध करि कह्यौ। बेगि चलि वह कहां है मो कु दिषाई देहि। तब सुसा कौं ले गयौ ले जाई गहैरे कुवा ऊपरि ठाढ़ौ कीयौ। सुसै कहि या भीतरि देषु स्यंघ है। यह कहि पांनी मै सिंघ कौं वाही सिंघ की परछां ही दिषाई। तब उनि स्यंघ आपनौं प्रतिबिंब पानि मै देष्यौ। तब ऊनि सिंहि रीस करि बिनु बिचार हि आपुनी परछां हि कौं और सिंघ जांणि वा कौं मारिवे कौं कुवा मांहि पर्यौ परत हि मुवौ। तातैं हुं कहत हौं बिनु बिचारे काम न करिये अरु जा कै बुधि ता ही कै बलु। तब कागनी कह्यौ सुन्यौ मै ईहा जु उपाय बुंभिये सु कहौ। तब काग कहत है। ईही निकटि ही कै सरोवर मैं राजा कौ पुत्र स्नानु नित्या ही आय करत है सु वह सोने की सांकली हाथ ते ऊतारि सरोवर कै तीर राषत है सु तु वह लैकरि या सर्प के षोडर मैं डारि आव। आगैं जब वह सनांन करन लाग्यौ तंब सोने कौ सुत्र वहि ऊतारि धर्यौ। ईहि बिचि कागनी वह सांकली लै आई आनिकरि सांप के षोटरा मै धरि रुष परि बैठी। तब राजा कौ पुत्र देषै तौं सांकली नाहि काग ले गयौ। तब राजपुत्र के सेवक षोजन लागे षोजत षोजत वा षोटरै मैं सांकली देषी अरु सांप देष्यौ। तब सांप कौं मांरि सांकली ले आये ॥

ब्राह्मण अरु बकरा

अपनी ऊपमा कौ जो दुर्जन कौं सत्यबक्ता करि जानै ता कौं दुर्जन उहकै जैसै एक ब्राह्मण बोकडा निमति तीन ठगनि मिलि ठग्यौ। राजा कहि यह कैसी कथा है। काग कहैतु है। गोतमारन्य बन मै एक ब्राह्मण जग्य करिवे कौं और गांव तै एक बकरा मोलि लीये आवत तीन ठगनि देष्यौ। तब वै तीन्यौ दुष्ट आगे जाई पैडा मै मतौ करि कोस एक एक कै अंतरै तीन्यौ बैठे। तब वह ब्राह्मण एक ठगि पुछ्यौ। अरे ब्राह्मण यह कुकरा कांधे पर चढाये काहे कौं लीये जात है। तब ब्राह्मण कहि। यह कुकरा न होई जग्य कौ बोकरा है। आगे जाते कोस एक पर दुसरै हु ठगि उहि भांति पूछ्यौ। यह ऐसे प्रकार दुष्ट के बचन सुनि ब्राह्मण बकरा कांधें परि तै उतारि देष्यौ बहुरि कांधे धरि संदेह करत बांभन चल्यौ। जातै दुष्ट के बचन सुनत महांत हु की बुधि चलतु है संदेह मै परतु है जौ उन के बचन की प्रतीति करै सु मरै जैसै चित्रकर्म मुवौ। राजा पूछी यह कैसी कथा है। कागु कहितु है। कौन हु देस बडे बन मै एक मदोत्कट नांम स्यंघु रहै। ता कौ सेवक बाघ स्यारु कागु ये तीनौ मन मै फिरत फिरत एक ऊट देष्यौ। ऊट कू पुछ्यौ तुम कहां तै आये कहां जाहुगे। तब उनि ऊठि अपुनी सर्ब बार्त्ता कहि जू जैसी हुति तैसी ऊट पुनि कहतु है हुं संग तै भूलि इह बन मै आयौ हौं। तब उन्ह वह ले स्यंघु कौं दीयौ। स्यंघ पुछत है कौ है या कहां तै आयौ है। उन्हौ कही राजा इह ऊट है संग तै भूलि इह बन मै आयौ है। तब स्यंघु वा कौं

अभैदानु दीयौ अरु चित्रकर्न नाम उट वा कौं नाम धरि वह उहां ही राष्यौ। एक समै अति ब्रषाकाल मै स्यंघ भूषो भयौ। तब संकौ बिनु अहार पाये दुषी देषि बाघु स्यारु कागु इन्ह तीन हु बिचार कीयौ। अहो स्यंघ जैसे चित्रकर्न कौं मारै सो उपाव करहु। इह कहि दिषाइ जुई उट कांटे कौ षांनहारौ या ते हमारौ कौन कार्ज है। तब बाघु कहि। राजा या कौं अभैदान दे राष्यौ है कैसे मारिहै। तब काग कहि। ईह समये छिण राजा पापौ करिहै। जाते भूषी महतारी बेटा हु कौं न छांडि भूषी सापनी अपुने अंडा हु कौं षाई भुषो कौन पाप न करै जाते छीण मनुष्य कौं दया नाही रहितु। और मद करि मानौ होई असावधान बावरौ क्रोधी भुषौ लोभी उराणौ उतावलौ कामी ए धर्म कौं न जाणेहि। इह बिचार करि स्यंघू के नियरै गये। स्यंघु पुछत है कछू षावे को ल्याये। तब कागु कहि। राजा बहुत जतन करि षौज्यौ परि अहार कछु न पायौ। स्यंघु बोल्यौ। अब क्यौं जीवहिगे। कागु कहि। राजा हाथ कौ अहार छाडैत तु हौ ताते और हु ठौर नाहि पायतु। स्यंघु कहि। ईहां कौन अहार है ताते और ठौरु नाहि पाईयतु। कागु कान मै लागि कहि। इह चित्रकर्न उट है या कौं मारि षाईये। तब स्यंघु कहि। मारिये कैसे मै या कौं अभैदान दीयौ है। जाते भूमिदान सोबर्णदान अंनदान अत्मादान ए सब दान अभैदान की बराबरि नाहि। और सब बिधि करि जुक्त अश्वमेध जग्य कीये जु फल होई सो फल सराणागत राषे होई। तब कागु कहि। राजा तुम्ह मति मारहु राज हंम सो उपाव करिहैं जु ईहै आप ही ते आपनौ सरीर देहै। स्यंघु ईह बचन सुनि

चुपके रह्यौ। तब कागु स्यंघु कौ मनु जांनि कपट करि सब हि लै स्यंघु पासि गये। कागु राजा सौं कहि। राजा अहार कहि न ही पायतु है मोहि मारि षाऊ राजा तुम्ह बहौत दिन के भूषे मरतू है। जाते जै राजा न होई तौ प्रजा कैसे हु न जीवै जैसे जै आवद्यान होइ तौ धनतर सौ बैदि जिवाई न सकै। और सब प्रजा कौ मुल राजा है जौ ब्रष कौ मुल है तौ आगे पत्र फल फूल सब हुंहि। तब स्यंघु कहि बर मरियै सु भलौ परु ऐसौ कर्म भलौ नांहि जु आश्रित कौं मारियै। तब स्यारु हु कागु सौ बचन कह्यौ। स्यंघु पुनि वाहि उहि उतरु दीयौ। आगै चित्रकारन राजा सौं कहि। राजा मेरौ सरीर षाई करि तुम्ह अपुने प्राण राषहु। ईहु कहित ही बाघ चित्रकर्न कौ पेट फारि मार्यौ। सब मिलि बांटि षायौ। तातै हुं कहितू हौं दुष्ट के बचन सुने तै भले हु की बुधि चलै। तब तीसरे ठगि कहि। रे बांभन कुकरा काहे कौं कांधे परि लीये जातु है। तब बांभन वा कै कहे बकरा कौं छाडि चल्यौ सनान करि घरि गयौ। उन्ह तीनौ ठगनि मिलि बकरा मारि षायौ। तातै हुं कहितू हौं जौ आपनि उपमा करि और दुष्ट की प्रतीति करै सौ उहकावै॥

सरप अरु मैंडक।

जीरणवर्द्धान बन मै मंदविसरप नांम एक सरप रहै सु ग्रधि अति अहार कौं फिरि न सकै सरोवर कै तीर परि रहै। तब एकु मैंडक वा सौं दुरि हि तै कहि। अहो तुम्ह आप कौ अहार कु नांहि षोजत परे ही रहित हौ सु काहे तै। तब सर्प कहि। जाकु कहा मो सु अभागे सुं पुछत हौ। उन मैंडक आचिरजि मानि हठ करि पुछी तौ भी हम सौं कहौ। तब सर्प कहितु है। अहो इह ब्रंभपुर मै कौडन्य नांम्र ब्राह्मण हो। ता कौ बीस बर्ष कौ पुत्र गुणवंत अभाग्य तै मै काट्यौ। तब ब्राह्मण पुत्र कौं सापु काट्यौ देषि मुर्छित ह्वै सोक तै भूमि मै गिर्यौ। पीछै वा नगर के बासी लोगु उहि के भाई बंधू सब मिलि उहां आये। जातै सुष दुष मै दुरभषि मै सत्रु के जूथ मै राजद्वार मै मसाण भूमि मै जो ईन ठौर मै संगि रहै सोइ बंधु जानिये। तहां एकु कपिल नाम ब्राह्मण कहि। अरे कौडन्य तु मुर्ष है जू ईह भांति रोवत है सुनु। जातै जु संसार मै उपज्यौ ता कौं परलोक अति की गोद मै बैठाइयतु है पीछै माता की गोद मै बैठाइयतु है जैसे धाई पहलै आपनै हाथि लेई पीछै महतारी कै हाथि देई सु ऐसे मनुष्य कौ सोक कहा कीजे। और सेना सहित बडे राजा जुधिष्ठर आदि वे कहां गये उन्ह के बिवोग की साषि देवे कू भूमि रही है। जातै सरीर कौ अति नीरो हि है संपदा के आगै ही आपदा है संजोग के आगै हि बिजोग है तातै जू उपज्यौ सु नसाई। और ईह देह घरी ही घरी घटित है मुये हि गई जांनिइतु है जैसे काचौ घट पानी मै घरी ही घरी घटतु जाई परु फूटे हि जानिये। और जां

कौ जनम भयौ तब हि ते ता कौ घरी घरी काल निकटू आवतु है जैसे अपराधि कौ राज आग्या ते जब मारिवे की ठौर चले तब वा कौ वह ठौर पग पग नियरे आवै। और जाते जोबन रूप द्रव्य संग्रह जीवनु ठकूरा इति म्यंत्र हू कौ एक ठौर बासु ए सब पदार्थ बिजुली की सी चंचल हैं ईन्द्र कौ भोग थोरे हि दिन मै नष्ट जातु है ताते पंडित होई सुनांन्हि बस्तून कौ सोकू न करै। जैसें नंदी मै प्रवाह के बेग करि कहु कहु के काठ एकत्र मिले हि बहौरि नंदी ही के प्रवाह ते न्यारे न्यारे हौ हि तैसै प्राणी काल के बेग ते एकत्रि मिल हि अरु न्यारे न्यारे हौ हि। जाते पंच महाभूत एकंत्रि मिल हि ए सब मिले हि तब देह उपजै वै पांचौ न्यारे हौं हि तब देह नष्ट जाई ऐसी देह कै उपजे और बिनास ते जु पंडित होई सो सुष दुष न मानै। जाते मनुष्य जिहि जिहि बस्त मै जितनौ हि सनेह करै तितने ही सोक के बीज बोवै ईह संसार मै सदा काहु सौं एकत्र रहिवौ नाहि। जाते अपुनी देह हु सौं सदा संगु नांहि और सौं कहां ते होई। जाते संजोग एकू दिन बिजोग कौरै तैसै जनम प्रति कौं करै और अपुने भाई बंधुन कौं मिलाय मिल लवौ मिले हि मै नीकौ आगे बिछूरे दुष देतू है जैसे अपथ्य बस्तू षाये ते उहि छिण निकी लागै आगे रोग उपजावै। जैसे नंदी कौ प्रवाहु जाई परु फीरौ नाहि तैसै राति दिन मनुष्य कौ आव लीये जात परु फिरै नाहि। संसार मै साध की संगति सब सूष ते अधिक है परु सौ हु बिजोग रूप षाडे करि काट्यौ है ताते यौह बडो दुष है। जाते पंडित प्रति कौं समझि सब जतन ढिले करतु है जैसे बरिषाकाल मै चांम के बंधनु ढिले होत है। मनुष्य जा दिन तै

गर्भ मै पर्यौ ता दिन तै अति ही के सामहै दौरतु है तातै संसार की ईह गति जांनि सोक करै सो मुर्ष जानिये। जातै अग्यान सोक को कारण न होई बिजोग हि को जात अग्यान के घटे सोक घटत है. तातै आतमा कौं बिचारिकरि सोकू छाडिजे। जातैं आकसमात हि लागी आले चरंम कौं भेदै औ सौ जु सोक रूप घाव ता कौं न समुभिये बिसारि ही डारिये ईह बडौ औषध है। तब कौडन्य ब्राह्मण उठिकरि बोल्यौ तौ अब हुं ग्रह रूप नर्क बिषै बासु कहा करौं अब हूं बन ही मै जांउं। तब पुनि कपिल कहितु है। जातै अनुरागी बिषई कौ बन हू मै दोष उपजै अरु बैरागी जितेंद्रिजौ घर हू मै रहै तौ दोषु नाहि जौ कामना फल छाडि बेदोकत कर्म करि श्री बिश्व जी कौं भजे तौ ता कौ घर बन हु तै अधिकु है। जातै कौन हु असथल बिषै रहै दुष हु पाई करि जो धर्म करै सब प्राणीन बिषै दया करै सो ही तपसी जानिये। ईह और हू कहि है। जातै प्राणु राषिवे कू अहार करै संतति निमति मैथनुक है सत्य बोलिवे कू बचन कहै ते सब दुष कौं तिरै। ईह कही है। जातै आतमा रूप नदी ता बिषै सनान करि कैसी है नदी तहां महाभारत[1] घाट है सत्य रूप जल है

[1] Ce passage, qui se trouve dans l'original sanscrit sous forme de sloka, n'a pas été compris par le traducteur indien. Il y a, dans le texte sanscrit:

आत्मा नदी भारत पुण्यतीर्था, mot à mot:

«L'âme est un fleuve, ô fils de Bharata, dont la pureté est le *tirtha.*»

Le traducteur n'a pas reconnu, dans le mot भारत, avec allongement de la voyelle du radical, le nom patronymique signifiant fils de Bharata. Ne sachant comment se tirer d'embarras, il a omis le mot पुण्य, l'un des plus importants de la phrase, et, traduisant le mot भारत par महाभारत (le Mahâbhârata), il a donné une traduction qui n'offre aucun sens raisonnable. Pour rétablir le texte, il faudrait:

तहां भारत पुन्य घाट है.

सील जहां किरारा है दया हि तरंग है जिह बिषै जाते पानी के समान करि अंतहकरण सुध न होई। और सुनौ। जन्म म्रति बुढाई ब्याधि ईन बेदन करि ब्यापत ईह संसारु या संसार मै कछु सार बस्त नाही ताते संसार छाडिये तौ ही सुष होई। जाते दुष ही होत है सूष नाही दुष ही के नाम कौं सुष करि मांनत हैं जैसें भार बाहकु भार के उतारे सुष करि मानै। तब कौडन्य कहि। ईह बातु ऐसी ही है। तब उहि ब्राह्मण मो कू श्राप दीयौ। रे सरप तु आजि ते मैडकन कौ बाहण होहु। तब पुनि कपिल ब्राह्मण कहि। अहौ कौडन्य तैरे हू दौड पढे कौ जोग्य है अब उपदेस सुनि। जाते संगु सरवथा छाडिये जौ छाडि न सकिये तौ साध जन पंडितन कौ संगु करिये। जाते पंडितन के संग ते सब संगु छूटै हि साधु जन पंडित सब कौ संगु छुडावहि। ईह सुनि उनि कौडन्य ब्राह्मण सोक छाडि संन्यासी भयौ। तब तै ब्राह्मण कौ श्राप भोगिवे कू मैडकनि बाहिवे कू ईहां आयौ हौं। तब उन जलपाद नांम मैडकन्ह कौ राजा तिहि सौं यौ सब ब्रतांत कह्यौ। तब उह मैडक सांप की पीठि परि चढ्यौ। तब उह सापु वा कौं पीठि परि चढाई ले फिरन लाग्यौ। जब दुसरे दिनि चलि न सक्यौ तब मैडकन के राजा कहि। कहि तुम्ह आजि हवे चलतु हौ। तब सांपु कहि। अहार बिनां दुषी हौं चलि नाही सकतु। तब उनू कहि। मेरी सैन्या के मैडुकन कौं मेरी आग्या ते षाहु। तब सांपु कहि। राजा इह मो कू बडौ प्रसाद कीयौ। ईह कहि मैडकन कौं षान लाग्यौ। जब ईह भांति मैडक सब षाये तब पाछै वह राजा कु षायौ ॥

प्रेम सागर।

रुक्मिनी चरित्र।

रुक्मिनी हरन अपने लोगों के मुख से सुन कि जो चौकसी को राजकन्या के संग गए थे राजा सिसुपाल औ जुरासिंधु अति क्रोध कर झिलम टोप पहन पेटी बांध सब शस्त्र लगाय अपना अपना कटक ले लड़ने को श्री कृष्ण के पीछे चढ़ दौड़े औ उन के निकट जाय आयुध संभाल संभाल ललकारे। अरे भागे क्यौं जाते हो खड़े रहो शस्त्र पकड़ लड़ो जो क्षत्री सूर बीर हैं वे खेत में पीठ नहीं देते। इतनी बात के सुनते ही यादव फिर सनमुख हुए और लगे दोनों ओर से शस्त्र चलने। उस काल रुक्मिनी बाल अति भयमान घूंघट की ओट किये आंसू भर भर लंबी सांसें लेती थी औ प्रीतम का मुख निरख निरख मन ही मन बिचार कर यों कहती थी कि ये मेरे लिये इतना दुख पाते हैं। अंतरजामी प्रभु रुक्मिनी के मन का भेद जान बोले कि सुंदरि तू क्यौं डरती है तेरे देखते ही देखते सब असुर दल को मार भूमि का भार उतारता हूं तू अपने मन में किसी बात की चिंता मत करे।

उस काल देवता अपने अपने बिमानों में बैठे आकाश से देखते क्या हैं कि

॥ ३५ ॥

याद्व असुरन सों लरत होत महा संग्राम।
ठाढे देखत कृष्ण हैं करत युद्ध बलराम॥

मारू बाजता है कडखैत कडखा गाते हैं चारन जस बखानते हैं अश्वपति अश्वपति से गजपति गजपति से रथी रथी से पैदल पैदल से भिड रहे हैं। इधर उधर के सूर बीर पिल पिलके हाथ मारते हैं औ कायर खेत छोड अपना जी ले भागते हैं घायल खडे झूमते हैं कबंध हाथ में तरवार लिये चारों ओर घूमते हैं औ लोथ पर लोथ गिरती हैं तिन से लोहू की नदी बह चली है तिस में जहां तहां हाथी जो मरे पडे हैं सो टापू से जनाते हैं औ सूंडें मगर सीं। महादेव भूत प्रेत पिशाच संग लिये सिर चुन चुन मुंडमाल बनाय बनाय पहनते हैं औ गिद्ध शाल कूकर आपस में लड लड लोथें खैंच खैंच लाते हैं औ फाड फाड खाते हैं। कौए आंखें निकाल निकाल धडों से ले जाते हैं। निदान देवताओं के देखते ही देखते बलराम जी ने सब असुर दल यों काट डाला कि ज्यों किसान खेती काट डाले। आगे जुरासिंधु औ सिसुपाल सब दल कटाय कई एक घायल संग लिये भागके एक ठौर जा खडे रहे। तहां सिसुपाल ने बहुत अछताय पछताय सिर डुलाय जुरासिंधु से कहा कि अब तो अपजस पाय औ कुल को कलंक लगाय संसार में जीना उचित नहीं इस से आप आज्ञा दें तो मैं रन में जाय लड मरूं।

नातर हौं करिहौं बन बास।
लैंउं जोग छांडौं सब आस॥
गई आन पत अब क्यों जीजे।
राखि प्रान क्यों अपजस लीजे॥

इतना बात सुन जुरासिंधु बोला कि महाराज आप ज्ञानवान हैं औ सब बात में जान मैं तुम्हें क्या समझाउं जो ज्ञानी पुरुष हैं सो हुई बात का सोच नहीं करते क्योंकि भले बुरे का करता और ही है मनुष का कुछ बस नहीं यह पर बस पराधीन है। जैसे काठ की पुतली को नटुआ जों नचाता है तों नाचती है ऐसे ही मनुष करता के बस है वह जो चाहता है सो करता है। इस से सुख दुख में हर्ष शोक न कीजे सब सपना सा जान लीजे। मैं तेईस तेईस अक्षोहनी ले मथुरा पुरी पर सत्रह बेर चढ गया और इसी कृष्ण ने सत्रह बेर मेरा सब दल हना मैं ने कुछ सोच न किया और अठारवीं बेर जद इस का दल मारा तद कुछ हर्ष भी न किया। यह भागकर पहाड पर जा चढा मैं ने इसे वहीं फूंक दिया न जानिये यह क्योंकर जिया। इस की गति कुछ जानी नहीं जाती। इतना कह फिर जुरासिंधु बोला कि महाराज अब उचित यही है जो इस समय को टाल दीजे। कहा है कि प्रान बचै तो पीछे सब हो रहता है जैसे हमें हुआ कि सत्रह बार हार अठारवीं बेर जीते। इस से जिस में अपनी कुशल होय सो कीजे औ हठ छोड दीजे।

जद जुरासिंधु ने ऐसे समझायके कहा तद विसे कुछ धीरज हुआ औ जितने घायल जोधा बचे थे तिन्हें साथ ले अछता पछता जुरासिंधु के संग हो लिया। ये तो यहां से यों हारके चले और जहां सिसुपाल का घर था तहां की बात सुनों कि पुत्र का आगमन बिचार सिसुपाल की मा जों मंगलाचार करने लगी तों सनमुख छींक हुई औ दाहनी आंख उस की फडकने लगी। यह असगुन देख विस का माथा

ठनका कि इस बीच किसी ने आय कहा जो तुम्हारे पुत्र की सब सेना कट गई औ दुलहन भी न मिली अब वहां से भाग अपना जीव लिये आता है। इतनी बात के सुनते ही सिसुपाल की महतारी अति चिंता कर अबाक हो रही।

आगे सिसुपाल औ जरासिंधु का भागना सुन रुक्म अति क्रोध कर अपनी सभा में आन बैठा और सब को सुनाय कहने लगा कि कृष्ण मेरे हाथ से बच कहां जा सकता है अभी जाय विसे मार रुक्मिनी को ले आऊं तो मेरा नाम रुक्म नहीं तो फिर कुंडलपुर में न आऊं। ऐसे पैज कर रुक्म एक अक्षौहिनी दल ले श्री कृष्णचंद से लडने को चढ धाया और उस ने यादवों का दल जा घेरा। उस काल विस ने अपने लोगों से कहा कि तुम तो यादवों को मारो औ मैं आगे जाय कृष्ण को जीता पकड लाता हूं। इतनी बात के सुनते ही उस के साथी तो यदुबंसियों से युद्ध करने लगे औ वह रथ बढाय श्री कृष्णचंद के निकट जाय ललकारकर बोला अरे कपटी गंवार तू क्या जाने राजब्यौहार बालकपन में जैसे तें ने दूध दही की चोरी करी तैसे तू ने यहां भी आय सुंदरि हरी।

ब्रज बासी हम नहीं अहीर।
ऐसे कहकर लीने तीर॥
बिष के बुझे लिये उन बीन।
खैंच धनुष सर छोडे तीन॥

उन बानों को आते देख श्री कृष्णचंद ने बीच ही काटा फिर रुक्म ने और बान चलाए प्रभु ने वे भी काट गिराए औ अपना धनुष संभाल

कई एक बान ऐसे मारे कि रथ के घोड़ों समेत सारथी उड़ गया और धनुष उस के हाथ से कट नीचे गिरा। पुनि जितने आयुध उस ने लिये हरि ने सब काट काट गिरा दिये तब तो वह अति झुंझलाय फरी खांडा उठाय रथ से कूद श्री कृष्णचंद की ओर यों झपटा कि जैसे बावला गीदड़ गज पर आवे कै जों पतंग दीपक पर धावे। निदान जाते ही उन ने हरि के रथ पर एक गदा चलाई कि प्रभु ने झट उसे पकड़ बांधा औ चाहा कि मारें इस में रुक्मिनी जी बोलीं।

मारो मत भैया है मेरो।
छांडो नाथ तिहारी चेरी॥
मूरख अंध कहा यह जाने।
लक्ष्मी कंत हि मानुष माने॥
तुम योगेश्वर आदि अनंत।
भक्त हेत प्रगटत भगवंत॥
यह जड़ कहा तुम्हें पहचाने।
दीनदयाल कृपाल बखाने॥

इतना कह फिर कहने लगीं कि साध जड़ औ बालक का अपराध मन में नहीं लाते जैसे कि सिंह स्वान के भूंसने पर ध्यान नहीं करता और जो तुम इसे मारोगे तो होगा मेरे पिता को सोग यह करना तुम्हें नहीं है जोग। जिस ठौर तुम्हारे चरन पड़ते हैं तहां के सब प्रानी आनंद में रहते हैं यह बड़े अचरज की बात है कि तुम सा सगा रहते राजा भीष्मक पुत्र का दुख पावे। ऐसे कह एक बार तो रुक्मिनी जी यों बोलीं कि महाराज तुम ने भला हित संबंधी से किया जो पकड़

बांधा औ खड्ग हाथ में ले मारने को उपस्थित हुए। पुनि अति ब्याकुल हो थरथराय आंखें डबडबाय बिसूर बिसूर पांओं पड़ गोद पसार कहने लगीं।

बंधु भीख प्रभु मो कौं देउ।
इतनों जस तुम जग में लेउ॥

इतनी बात के सुने से औ रुक्मिनी जी की ओर देखने से श्री कृष्णचंद जी का सब कोप शांत हुआ। तब उन्हों ने उसे जीव से तो न मारा पर सारथी को सैन करी उस ने झट इस की पगड़ी उतार टुंडियां चढाय मूंछ दाढी औ सिर मूंड सात चोटी रख रथ के पीछे बांध लिया। रुक्म की तो श्री कृष्ण जी ने यहां यह अवस्था की और बलदेव वहां से सब असुर दल को मार भगायकर भाई के मिलने को ऐसे चले कि जैसे स्वेत गज कंवल दह में कंवलों को तोड़ खाय बिथराय अकुलायके भागता होय। निदान कितनी एक बेर में प्रभु के समीप जाय पहुंचे औ रुक्म को बंधा देख श्री कृष्ण जी से अति झुंझलायके बोले कि तुम ने यह क्या काम किया जु साले को पकड़ बांधा तुम्हारी कुटेव नहीं जाती।

बांध्यौ याहि करी बुद्धि थोरी।
यह तुम कृष्ण सगाई तोरी॥
औ यदु कुल कौं लीक लगाई।
अब हम सों को करिहै सगाई॥

जिस समैं यह युद्ध करने को आप के सनमुख आया तब तुम ने इसे समझाय बुझायके उलटा क्यों न फेर दिया। ऐसे कह बलराम जी ने

रुक्म को तो खोल समझाय बुझाय अति सिष्टाचार कर बिदा किया। फिर हाथ जोड़ अति बिनती कर बलराम सुखधाम रुक्मिनी जी से कहने लगे कि हे सुंदरि तुम्हारे भाई की जो यह दसा हुई इस में कुछ हमारी चूक नहीं यह उस के पूर्व जन्म के किये कर्म का फल है और क्षत्रियों का धर्म भी है कि भूमि धन त्रिया के काज करते हैं युद्ध दल परस्पर साज। इस बात का तुम बिलग मत मानौ मेरा कहा सच्च ही जानौ। हार जीत भी उस के साथ ही लगी है और यह संसार दुख का समुद्र है यहां आय सुख कहां पर मनुष माया के बस हो दुख सुख भला बुरा हार जीत संयोग बियोग मन ही मन से मान लेते हैं पै इस में हर्ष शोक जीव को नहीं होता। तुम अपने भाई के बिरूप होने की चिंता मत करो क्योंकि ज्ञानी लोग जीव अमर देह का नास कहते हैं इस लेखे देह की पत जाने से कुछ जीव की नहीं गई।

जब बलराम जी ने ऐसे रुक्मिनी को समझाया तब

सुनि सुंदरि मन समझकै किये जेठ की लाज।
सैन मांहिं पिय सों कहत हांकहु रथ ब्रज राज॥
घूंघट ओट बदन की करै।
मधुर बचन हरि सों उच्चरै॥
सनमुख ठाढे हैं बलदाऊ।
अहो कंत रथ बेग चलाऊ॥

इतना बचन श्री रुक्मिनी जी के मुख से निकलते ही इधर तो श्री कृष्णचंद जी ने रथ द्वारिका की ओर हांका औ उधर रुक्म अपने लोगों

में जाय अति चिंता कर कहने लगा कि मैं कुंडलपुर से यह पैज करके आया था कि अभी जाय कृष्ण बलराम को सब यदुबंसियों समेत मार रुक्मिनी को ले आऊंगा सो मेरा प्रन पूरा न हुआ और उलटी अपनी पत खोई अब जीता न रहूंगा। इस देस औ ग्रहस्ताश्रम को छोड बैरागी हो कहीं जाय मरूंगा।

जब रुक्म ने ऐसे कहा तब उस के लोगों में से कोई बोला महाराज तुम महा बीर हो औ बडे प्रतापी तुम्हारे हाथ से जो वे जीते बच गये सो विन के भले दिन थे अपनी प्रारब्ध के बल से निकल गये नहीं तो आप के सनमुख हो कोई शत्रु कब जीता बच सकता है। तुम सज्ञान हो ऐसी बात क्यों बिचारते हो कभी हार होती है कभी जीत पर सूर बीरों का धर्म है जो साहस नहीं छोडते भला रिपु आज बच गया फिर मार लेंगे। जद यों विस ने रुक्म को समझाया तद वह यह कहने लगा कि सुनौ।

हार्‌यौ उन सों औ पत गई।
मेरे मन अति लज्जा भई॥
जन्म न हों कुंडलपुर जाऊं।
बरन और ही गांव बसाऊं॥
यों कह उन इक नगर बसायौ।
सुत दारा धन तहां मंगायौ॥
ता कौ धर्‌यौ भोजकटु नाम।
ऐसें रुक्म बसायौ गाम॥

उधर रुक्म तो राजा भीष्मक से बैर कर वहां रहा औ इधर श्री कृष्णचंद औ बलदेव जी चले चले द्वारिका के निकट आय पहुंचे।

उडी रेन आकाश जु छाई।
तब ही पुर बासिन सुध पाई॥
आवत हरि जाने जब हिं राख्यौ नगर बनाय।
शोभा भई तिहुं लोक की कही कौन पै जाय॥

उस काल घर घर मंगलाचार हो रहे द्वार द्वार केले के खंभ गडे कंचन कलस सजल सपल्लव धरे ध्वजा पताका फहराय रहीं तोरन बंदनवारें बंधी हुई और हर हाट बाट चौहटों में चौमुखे दिये लिये युवतियों के यूथ के यूथ खडे औ राजा उग्रसेन भी सब यदुबंसियों समेत बाजे गाजे से अगाउ जाय रीति भांति कर बलराम सुखधाम औ श्री कृष्णचंद आनंदकंद को नगर में ले आए। उस समें के बनाव की छबि कुछ बरनी नहीं जाती क्या स्त्री क्या पुरुष सब ही के मन में आनंद छाय रहा था। प्रभु के सोंहीं आय आय सब भेट दे दे भेटते थे औ नारियां अपने अपने द्वारों बारों चौबारों कोठों पर से मंगली गीत गाय गाय आरतां उतार उतार फूल बरसावती थीं औ श्री कृष्णचंद औ बलदेव जी जथा योग सब की मनुहार करते जाते थे। निदान इसी रीति से चले चले राजमंदिर में जा बिराजे। आगे कै एक दिवस पीछे एक दिन श्री कृष्ण जी राजसभा में गये जहां राजा उग्रसेन सूरसेन बसुदेव आदि सब बडे बडे यदुबंसी बैठे थे और प्रनाम कर इन्हों ने उन के आगे कहा कि महाराज युद्ध जीत जो कोई सुंदरि लाता है वही राक्षस ब्याह कहाता है।

इतनी बात के सुनते ही सूरसेन जी ने पुरोहित बुलाय विसे समझायके कहा कि तुम श्री कृष्ण के बिवाह का दिन ठहरा दो। उस ने झट पत्रा खोल भला महीना दिन बार नक्षत्र देख शुभ सूरज चंद्रमा बिचार ब्याह का दिन ठहराय दिया। तब राजा उग्रसेन ने अपने मंत्रियों को तो यह आज्ञा दी कि तुम ब्याह की सब सामा इकठी करो और आप बैठ पत्र लिख लिख पांडव कौरव आदि सब देस बिदेस के राजाओं को ब्राह्मनों के हाथ भिजवाए। चीठी पाते ही सब राजा प्रसन्न हो हो उठ धाए तिन्हों के साथ ब्राह्मन पंडित भाट भिखारी भी हो लिये।

और ये समाचार पाय राजा भीष्मक ने भी बहुत वस्त्र शस्त्र जडाऊ आभूषन औ रथ हाथी घोडे दास दासियों के डोले एक ब्राह्मन को दे कन्यादान का संकल्प मन ही में ले अति बिनती कर द्वारिका को भेज दिया। उधर से तो देस देस के नरेस आए औ इधर से राजा भीष्मक का पठाया सब सामा लिये वह ब्राह्मन भी आया। उस समैं की शोभा द्वारिका पुरी की कुछ बरनी नहीं जाती। आगे ब्याह का दिन आया तो सब रीति भांति कर बर कन्या को मंढे के नीचे ले जा बैठाया और सब बडे बडे मुढ़ यदुबंसी भी आय बैठे। उस बिरियां

पंडित तहां बेद उच्चरें।
रुक्मिनि संग हरि भांवर फिरें॥
ढोल दुंदुभी भेर बजावें।
हरष हि देव पहुप बरसावें॥
सिद्ध साध चारन गंधर्व।

अंतरीक्ष भये देखें सर्ब ॥
चढे बिमान घिरे सिर नावें ।
देव बधू सब मंगल गावें ॥
हाथ गह्यौ प्रभु भांवर पारी ।
बाम अंग रुक्मिनि बैठारी ॥
छोरी गांठ पटा फेर दियौ ।
कुलदेवी कौं तब पूजियौ ॥
छोरत कंकन हरि सुंदरी ।
खेलत दूधाभाती करी ॥
अति आनंद रच्यौ जगदीस ।
निरषि हरषि सब दें हिं असीस ॥
हरि रुक्मिनि जोरी चिरजियौ ।
जिन कौ चरित सुधा रस पियौ ॥
दीनौ दान बिप्र जे आए ।
मागध बंदी जन पहिराए ॥
जे नृप देस देस के आए ।
दीनी बिदा सबै पहुंचाए ॥

भक्त माल।

जयदेव।

मूल। — छप्पै।

जयदेव कबि नृप चक्कवै खंड मंडलेश्वर आन कबि।
प्रचुर भयो तिहु लोक गीतगोबिंद उजागर।
कोक काव्य नव रस सरस सिंगार को सागर॥
अष्टपदी अभ्यास करै तिहि बुद्धि बढ़ावै।
राधा रमन प्रसंग सुनत हरी निश्चय आवै॥
संत सरोरुह खंड को पद्मा पति सुख जनक रबि।
जयदेव कबि नृप चक्कवै खंड मंडलेश्वर आन कबि॥

टीका।

श्री जयदेव किंदुविल्व गांव में रहे भक्त राज तो रहिबे किये कबि राज हू रहे औ बिरक्त हू रहे सो एक ठौर रहैं नहीं प्रति दिन रूख तरे रहते फिरें। एक ब्राह्मन अपनी बेटी श्री जगन्नाथ राय कौं देने चल्यौ। प्रभु ने कह्यौ जयदेव हमारे स्वरूप है यह सुता तिन को जाय बिबाहि द्यौ। सो बिप्र ने सुता ले जयदेव के पास ल्याय कह्यौ कि श्री जगन्नाथ देव की आज्ञा है या कौं अंगीकार करो। जयदेव कह्यौ

हमारी तो रहने की यह रीति है तुम्हारी कन्या कौ निबाह कैसे होयगौ। सुता कौं तिन के पास छांडि बिप्र चलो गयो। जयदेव ने वा कन्या सों पूछ्यौ तुम्हारी कहा बिचार है। तिन कही जबलौं पिता के घर रही तबलौं तिन के बस मों रही अब पिता आपु कौं सौंपि गयौ है जो कहौ सो करौं जौ अंगीकार नहीं करोगे तौ बिना प्रान छांडे दूसरो ठौर कहां है। यह सुनि जयदेव ने सोच में ह्वै जान्यौ प्रभु ने जोरावरी तिया गरे बांधी। मन सों बिचारि बूझने लगे मन हूं अंगीकार करि लयो तब जयदेव ने बिचार्यौ जो अब तो या भांति रहते बनेगो नहीं छाया बनाई चाहिये। घर बनायौ गृहस्थ भये तब राधा माधव ठाकुर ने स्वप्न दियो जैदेव जू गृहस्थाई पूरी भई अब हम ही भारी हैं जो बाहिर परे हैं। प्रभु के भारी कहने पर जयदेव ने ठाकुर कौं घर में आनि पधरायो। बिचार कियो कछु इन कौ जस बरनन कियो चाहिये। तब गीतगोबिंद ग्रंथ बनायो मान के प्रसंग मों यह पद धर्यौ।

पद।

स्मरगरलखण्डनं मम शिरसि मण्डनं देहि पदपल्लवमुदारं॥ [1]

या कौ अर्थ कामरूपी बिष नाशन मेरे शिर कौ आभूषन ऐसो उदार पग पल्लव दीजिये। फिर मन में भायो कि या पद में बिरोधाभास होय है नायक के गुन यह हैं।

[1] Ce vers se trouve dans le texte sanscrit du *Gîta Govinda*, X, 19. En voici la traduction latine littérale, telle que la donne M. Lassen :

Impone generosum surculum pedis, amore progenitos dolores frangentis, capiti meo tanquam ornamentum

दोहा।

अभिमानी त्यागी तरुन कुसली धनी कुलीन।
भव्य छमाजुत सुभग पुनि केलि कलानि प्रबीन॥
रति समरथ सुंदर बचन ए नायक गुन गाय।
ते सब कहत जु कृष्ण में जाते नायक राय॥

ऐसे गुन जा नायक में सो नायका के पैर काहे परैगो सोच में पर्यो अबार जानि कागद धरि नहाने गये। श्री कृष्णचंद जी आप तिन कौ सरूप धारन करि वा पद कौं ग्रंथ में लिखि कागद फारि पोथी बिधु-राय चले गये। जयदेव ने आइ देखि अचंभित ह्वै स्त्री सों पूछ्यौ। तिन कही कि तुम ही फिरि आइ लिखि गये हो दूसरो कौन छुवैगो। यह सुनि स्त्री को प्रदछिन कियो।

नीलाचल को राजा हूं एक गीतगोबिंद की पोथी बनाय ब्राह्मन सब को बुलाइ कह्यौ यह ग्रंथ बिख्यात करो। पंडितनि कह्यौ यह पोथी नई है गीतगोबिंद की पोथी हमारे पास है। राजा ने कह्यौ गीतगो-बिंद यही सांच है। पंडितन्ह मानौ नहीं। यह ठहरायौ कि दोनों पोथी श्री जगन्नाथ जी के मंदिर में धरि दीजिये जा कौं आज्ञा करें सो प्रमान है। सोई कियौ। प्रभु ने जयदेव को ग्रंथ अपने गरे में हार पहिरि राजा को ग्रंथ बाहिर डारि दियो। राजा खिसियानो सो ह्वै समुद्र में डूबने चल्यौ। प्रभु ने कह्यौ राजा वृथा तन काहे को खोवे है जयदेव के सदृश दूसरो ग्रंथ नहीं है ता ते एक एक श्लोक सब सर्ग में लिखाइ दे ता के संग ह्वै ये हू ख्यात होइगो।

एक समैं बिक्रम की सभा में देवता राग सुन्ने आये राजा ने गीतगोबिंद

गान करायो। देवतन्ह कह्यौ यह तौ हमारे ही होतौ है और कछु गावो यह तो देव लोक में होय है उहां की अपेछा तें पाताल हू में जानि लीजै। एक मालिन की छोकरी खेत में बैगन तोरती यह पद गावती डोलै।

धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली ॥[1]

श्री जगन्नाथ देव ता के पाछे फिर्‍यौ कों अंग कौ बागो सब फटि गयो। सेवा समें जो राजा जाइ निहारे तो अचरज भयो। पूछते प्रभु ने कह्यौ जो माली की छोकरी या भांति गीतगोबिंद पढ़ती डोलैगी तौ बहुत बागे फटेंगे एक कौं कहा भावे है। राजा ने आइ वा को लै आइ मंदिर में बैठाय दै कह्यौ कि या ठौर पद गायो करु। सो नित्य गावै। जब मरि गई तब भगवान ने फाका कियो औ राजा सों जनायो जो मेरी भक्तिनि मरि गई मैं आजु अन्न नहीं खायो गाथा नहीं सुन्यौ। तब राजा ने गवायो। और सैन आरती समै अद्यापि गान होतु है। तब हीं नगर में डौंडी फिराय दई जो सब कोउ सुंदर ठौर बैठि गीतगोबिंद पाठ कियो करैं।

लाहौर में एक मुगल मीर माधो नाम पाठ करते काहू साधु तें नित नित सुनत सीख लियौ। घोरे पर सवार भये जहां चले प्रभु वा के सन्मुख जीन के हर्ने पर बैठे चले जांहि। एक साधु ने देखा ता कौं मूर्छा आइ गई। औ वा ने कह्यौ तब वह फकीर भयो सालिह बेग नाम भयो। एक बार मुगल दिल्ली में आइ गीतगोबिंद पाठ करै ता के

[1] Ce vers se trouve dans le texte sanscrit du *Gita Govinda*, V, 11. En voici la traduction latine littérale, telle que la donne M. Lassen :

Manet in Yamunæ ripa, molliter ventilata in silva, silvestribus floribus coronatus.

सुन्ने को बड़ी भीर होने लगी। पातसाह ने यह ख़बर पाइ मुगल को बुलाइ बूझ्यौ कहा पाठ करै है जो इतनी भीर हो है। कह्यौ गीतगोविंद। पातसाह ने कह्यौ और लोग हू तो पाठ करें हैं कहूं इतनी भीर नहीं हो है। इन कही हज़रत जो तोता सत्य गुरुदत्त कहै कोउ सुन्ने नहीं जाहि कौवा जो कहै तौ सब कोउ अचरज मानि सुन्ने दौरे जाहि।

जयदेव ठाकुर के राजभोग के हेत रामत करि कहूं ते मोहर लिये आवते हे मारग में ठग मिले। इन पूछ्यौ तुम सब कहां चले हो। ठगनि कह्यौ जहां तुम जावगे तहां हम हूं जाहिंगे। ए जान गये मोहर के संगी हैं सो थैली ठगनि के हाथ पकराइ दई। ठग मोहर ले आपुस में कहने लगे हमारे सब तौ ठग हुते ही पर यह हम सब ते सरस ठग है या समैं दाउं बचाइ गांव में जाइ हाकिम के पास पकराइ देगौ कहा कियो चाहिये। एक ने कह्यौ मारि डारो। दूसरे ने कह्यौ कि जा को धन लीजिये ता कौं मारिये नहीं। तीसरे ने कह्यौ कि हाथ पांव काटि गड़हे में राखि देहु न कहूं जाय सकैगौ न पकराविगौ। सोई कियौ। ऐसे में कोउ राजा आइ निकस्यौ गड़हे की ओर कोउ कोटि चंद्रमा को प्रकाश देखि तहां जाइ जयदेव पर निहार्यौ तिन के दर्शन तें वा की बुद्धि निर्मल ह्वै गई। पालकी पै चढ़ाइ अपने घर लै आयौ ठूंठ नीको करायौ। पुनि तिन सों पूछ्यौ हमैं उचित होइ सो आज्ञा करिये। तिन कह्यौ हरि साधु सेवा करो। राजा आज्ञा मानि तैसे ही करन लाग्यौ। केते दिन बीते ठग सब ने राजा की साधु सेवा को ख़बर पाइ माला तिलक धारन करि तहां आइ देखें तो जयदेव

जू बिराजे हैं। दुहू ओर तें पहिचान्यौ ठग तो डर के मारे कांपि उठे।

जयदेव जी कौं इन सबनि के आवने सों ऐसो हर्ष भयो जैसे कोउ बड़े मित्र के मिलने सों आनंद होतो है। जैसे ठगनि ने अपनी दुष्टता नहीं छांडी तैसे जयदेव जू ने हूं अपनी साधुता नहीं छांडी। राजा कौं बुलाइ कह्यौ तेरी साधु सेवा को फल इतने दिन पर आजु उदै भयो है ऐसे साधु अबलौं कबहूं आए नहीं रहे भाग तेरे जागे हैं इन सबनि की सेवा औरनि सों सरस भली भांति करियो। राजा इन सबनि के हाथ पकरि मंदिर के भीतर लै गयौ नर लगाय तेल उबटनो मलवायौ नह-वाय भोजन करवायौ। ज्यौं ज्यौं उन सबनि की सेवा होती जाय त्यौं त्यौं ए सब उलटो समुझते जांहि। जयदेव जू कौं देखि देखि मन में कहैं कैसे लोगन कौं माला फले है हम ने तो लियौ सो बंद में परे हैं। वे अपने जानते अच्छी तरह राखैं पै ए सूखे जांहि। जयदेव जी सों बिदा मांगी। जयदेव जू ने राजा कौं बुलाइ कह्यौ ए सब जो धन चाहैं सो देकै बिदा करो। राजा ने इन सबनि कौं खज़ाने के कोठे में ठाढ़ो करि कह्यौ अपनी इच्छा पूर्वक धन जो ले सको सो लेहु। ठग जो ले सके सो ले चले। जयदेव जू ने दोय नर संग कराय दये कि अपनी सरहद के पार करि आवो। इन सबनि जान्यौ कि घर में न मार्‌यौ मारने कौं नर संग करि दये हैं। नरनि ने मारग में ठगनि सों पूछ्यौ इतने दिन तें स्वामी जी ने जैसी तुम्ह सबनि की सेवा कराई है तैसी काहू की न भई है स्वामी जी सों तुम सों कहा नातो अरु कहां की पहिचान है। ठग सब ने कह्यौ हम सब और एक राजा के चा-

करे रहे इन कछु काम बिगाख्यौ राजा ने हुक्म इन के मारने कौं हम सब कौं कियो सो हम सब की इन तें मित्रता रही प्रान तो नहीं लियो हाथ पांव काटि डारे सोई निहोरो मानि ऐसी सेवा कराई है। इतनो इन सबनि के कहते भूमि फाटि गई ठग सब समाय गये। यह चरित्र नरनि ने जयदेव सों जाइ कह्यौ। जयदेव जू अफ़सोस करि टूंठे हाथ पांव मले मलते मानो नव पल्लव से निकरि आए। नरनि यह निहारि और हू अचरज मान्यो दोउ चरित्र जाइ राजा सों कहे। राजा ने सुनि दौरि आइ चरननि पर गिरि पूछ्यौ कि स्वामी या को कारन कहा और आप कौन हौ सो अपनो नांव ठांव को ठिकानो बताइये। राजा जब बहुत अर पख्यौ तब जयदेव जू ने आदि अंत लौं सब कथा अपनी कहि सुनाई। राजा सुनि अपनो महा भाग्य जानि पालकी पठाय पद्मावती जयदेव की स्त्री कौं किंदुविल्व सों बुलाइ महल में जहां रानी रहे तहां बास दियो।

एक दिन रानी के भाई के मरने भौजाई के सती होने की खबर रानी सुनते ही रोदन करि छाती पीटन लगी दश खुशामदी लोग ताहू सों सरस रोने पीटने लगे। पद्मावती जू ज्यौं की त्यौं बैठी रही। काहू ने कह्यौ कि आप कौं कछु सोच न भयो। तिन कह्यौ कि यह प्रेम की रीत नहीं है प्रेम या कौं कहिये जो मरनो सुनि अपनो शरीर छांडि देय। रानी सुनि रोस सों भरि चुप रही। केते दिन बीते रानी ने राजा सों कह्यौ हम पद्मावती जी के प्रेम की परिक्षा लई चाहती हैं इन कौं बाग में लै जाइ तहां सों कहाइ भेजो जो स्वामी को परलोक भयो। राजा ने तैसो कियो। पद्मावती सुनि जैसी रही तैसी

ही बैठी रही। रानी सुनि रोइ उठी। पद्मावती जी ने कह्यौ ओ काहे रोवो हौ स्वामी जी नीके हैं।

कछु दिन बीते रानी ने फेरि राजा सों कह्यौ। राजा ने सुनि माथा धुन्यौ कि यह सब स्वामी जी को उपदेश धूरि में मिलावै है हमारे गरे छुरी दे है। जब रानी अर परी अन्न पानी छांडि दियो तब राजा ने तैसे फिरि कहवाय पठायौ। पद्मावती जान्यौ कि यह निगोड़ी बार बार परिक्षा के हित दुख दियो करैगी सुनतै प्रान छांडि दियौ। यह देखि रानी को मुख सेत ह्वै गयौ। राजा चिता रचि जरन चल्यौ। जयदेव खबर पाइ आइ पद्मावती जू कौं अष्टपदी गाय जिवाइ दै राजा को समाधान करि बिदा ह्वै किंदुबिल्व चले आये। किंदुबिल्व तें गंगा जी अठारह कोस रहे जयदेव कौं नित नहाने जाने को नेम रहे। जब वृद्ध भये तब गंगा जी ने आज्ञा दई अब मति आवो ध्यान कियो करो। इन मान्यो नहीं। तब गंगा जी ने कह्यौ हम हीं तुम्हारे निकट आवें हैं। तिन कह्यौ प्रतीत कैसे होय। कह्यौ कमल फूलो आवेगो ता तें जानियो। तैसे ही भयो। आज लग गांव के नीचे धारा बहे है॥ इति॥

भक्त माल।

नामदेव।

मूल।

नामदेव प्रतिज्ञा निर्वाही ज्यौं त्रेता नरहरि दास की।
बाल दसा बिठल पानि जा के पय पियौ।
मृतक गऊ जिवाय परचौ असुरन कौं दियौ॥
सेज सलिल तें काढि पहिलै जैसी ही होती।
देवल उलट्यौ देषि सकुचि रहे सब ही सोती॥
पंडुर नाथ कृत अनुग ज्यौं छानि स्वकर छाई घास की।
नामदेव प्रतिज्ञा निर्वाही ज्यौं त्रेता नरहरि दास की॥

टीका।

छीपी बामदेव हरि देव जू कौ भक्त बडौ ता की एक बेटी पतिहीन भई जानियै। द्वादस बरष माझ भयौ तनक ही पिता सेवा सावधान मन नीकै करि आनियै। तेरे मनोरथ हैं पूरन करन एई जो पै दत्तचित्त ह्वैकै मेरी बात मानियै। करत टहल प्रभु बेगि ही प्रसन्न भये कीनी

काम बासना सो पोषी उन मानिये। बिधवा को गर्भ ता की बात चली ठौर ठौर दुष्ट शिर मौरन की भई मन भाई है। चलत चलत बामदेव जू के कान परी करि निरधारि प्रभु आय अपनाई है। भयौ जू प्रगट बाल नाम नामदेव धर्यौ कर्यौ मन भायौ सब संपति लुटाई है। दिन दिन बढ्यौ कछू और रंग चढ्यौ भक्ति भाव अंग मढ्यौ कढ्यौ रूप सुषदाई है। खेलत खिलौना प्रीति रीति सब सेवा ही की पट पहिरावे पुनि भोग कौं लगावही। घंटा ले बजावे नीके ध्यान मन लावे त्यौं त्यौं अति सुष पावे नैंन नीर भरि आवही। बार बार कहै नामदेव बामदेव जू सौं देवौ मोहि सेवा माझ अति ही सुहावही। जाउं एक गांव फिरि आउं दिन तीन मध्य दूध कौं पिवावो मति पीवो मोहि भावही। कौन वह बेर जिहिं बेर दिन फेरि होय फेर फेर कहै वहै बेर नही आईये। आई वह बेर ले करा ही माहि हेर दूध डार्यौ जुग सेर मन नीके के बनाईये। चौपनि के टेर लागी निपट औसेर द्रग आयौ नीर घेरि जिन गेरे घूट जाइये। माता कहि टेरि करी बडी तें आवे अब करौ मति बेर अजू चित दे औटाईये। चल्यौ प्रभु पास ले कटोरा छबि रास ता मे दूध सो सुबास मध्य मिश्री ले मिलाई है। हिय में हुलास निज अज्ञता कौ त्रास रे पै करे जो पै दास मोहि महो सुषदाई है। देष्यौ मृदु हास कोटि चांदिनी कौ भास कियौ भाव कौं प्रकास मति अति सरसाई है। प्यायवे की आस करि ओट कछु भर्यौ स्वास देषिके निरास कर्यौ पिवौ जू अघाईये। ऐसौ दिन बीते दोय राषी हिये बात गोप रह्यौ निसि सोय रे पै नीद नही आवही। भयौ जू सवार फिरि वैसे ही सुधारि लियौ हियौ कियौ गाढौ जाय धर्यौ

पिवौ भावही। बार बार पियौ कह्यौ अब तुम पीयौ नाहि आवै भोर नाना गैर छुरी दै दिषावही। गहि लियौ कर जिन करि ऐसी पीउं मै तौ पीवे को लगेई नैक राष्यौ सदा पावही। आये बामदेव पाछै पूछै नामदेव जी सौं दूध कौ प्रसंग अति रंग भरि भाषिये। मो सौं न पिछान दिन दोय हान भई तब मान उर प्रान तज्यौ चाहो अभिलाषिये। पीयौ सुष दियौ जब नैक राषि लियौ मै तौ जियौ सुनि बातै कही प्यावौ कौन साषिये। धर्यौ पै न पीवै अर्यौ प्यायौ सुष पायौ नाना या मै ले दिषायौ भक्त बस रस चाषिये। नृप सो मलेछ बोलि कही मिले साहिब कौं दीजिये मिलाय करामात दिषराईये। होय करामाति तौ पै काहे कौं कि सब कौं भैरं दिन रैंनि ऐ पै बांटि संतनी सौं षाईये। ताही के प्रताप आय इहां लौं बुलाये हमै दीजिये जिवाय गाय घर चलि जाइये। दई लै जिवाय गाय सहज सुभाय ही मैं अति सुष पाय पाय पर्यौ मन भाइये। लेवौ देश गांव जा तैं मेरौ कछु नाम होय चाहिये न कछू दई सेज मनिमई है। धरि लई सीस दीये संग दस बीस नर नांही करि आय जल मांझ डारि दई है। भूप सुनि चौंकि पर्यौ ल्यावौ फेरि आये कही कही नैंक आनिकै दिषावौ कीजै नई है। जल तें निकासि बहु भांति गहि डारी तट लीजियै पिछानि देषि सुधि बुद्धि गई है। आनि पर्यौ पाय प्रभु पास तैं बचाय लीजै कीजै एक बात कभू साधु न दुषाइये। लई यह मानि फेरि कीजिये न सुधि मेरी लीजिये गुननि गाय चलि मंदिर लौं जाईये। देषी द्वार भीर पगदासी कटि बांधी धीर कर सौंउ पीर करी चाहि पद गाईये। देषि लीनी वेई काहू दीनी पांच सात चोट कीनी धकाधकी

रिस मन मै न आईये। बैठे पिछवारे जाय कीनी जू उचित यह लीन्हो जो लगाय चोट मेरे मन भाईये। कान दैके सुनो अब चाहत न और कछु ठौर मो कौं यही नित नेम पद गाइये। सुनत ही आनिकारि करुना बिकल भये फेर्यो द्वार ईतै गहि मंदिर फिराइये। जेतेक वे सोती मोती आब सी उतरि गई भई हिये प्रीति गहे पाव सुषदाईये। औचक ही घर मांझ सांझ ही अगनि लागी बडी अनुरागी रहि गई सोड डारिये। कहै अहो नाथ सब कीजिये जू अंगीकार हसे सुकुमार हरि मोही कौं निहारिये। तुम्हरौ भवन और सकै कौन आय इहां भये यों प्रसन्न छानि छाई आय सारिये। पूछै आनि लोग कौनै छाइ हो छवाय लीजै दीजै जोई भावे तन मन प्रान बारिये। सुनौ और पचे जे आये न कबित मांझ बांझ भई माता क्यौन जौन मति मागी है। कुती एक साह तुलादान कौ उछाह भयौ दयौ पुर सबै रह्यौ नामदेव रागी है। ल्यावो जू बुलाय एक दोय तौ फिराय दिये तीसरे सौं आये कहा कही बड भागी है। कीजिये जू कछु अंगीकार मेरौ भलो होय भयौ भलौ तेरौ दीजै जो पै आस लागी है। जाकै तुलसी है ऐसी तुलसी के पत्र मांझ लिख्यौ आधौ राम नाम या सौं तोलि दीजिये। कहा परिहास करौ है दयाल देषि होत कैसौ ष्याल या कौं पूरौ करि रीझिये। लाये एक कांटौ लै चढायौ पात सौना संग भयौ बडौ रंग सम होत नाहि छीजिये। लई सो तराजू ता सौं तुलै मन पांच सात जातिपांति हूं कौ धन धर्यौ पै न धीजिये। पर्यौ सोच भारी दुष पावे नर नारी नामदेव जू बिचारी एक और काम कीजिये। जिते ब्रत दान और न्हान कीये तीर्थ मैं करि संकल्प या पै जल डारि

दीजिये। करे उपाय पात पला भूमि गड्यौ पाव रहे वे षिसाय कह्यौ इतनौ लीजिये। लैके कह्यां धरै सरवर हू न करै भक्ति भाव सो ले भरे हियें मति अति भीजियै। कियौ रूप ब्राह्मण कौ दूबरौ निपट अंग भयौ हियै रंग ब्रत पाछे कौं लीजियै। भई एकादशी अन्न मागत बहुत भूषौ आजु तौ न देंहुं भोर चाहि जेतौ लीजियै। कह्यौ हठ भारी मिलि दोउ ता कौ सोर पर्यौ समजावै नामदेव या कौं कहा कहि षीजियै। बीते जाम चारि मरि रहे यौं पसारि पाव भाव पै न जानै दई हत्या नही छीजियै। रचिकै चिता कौं बिप्र गोद मैं लै बैठे जाय दियौ मुसिकाय मै परिक्षा लीनी तेरी है। देषी सो सचाई सुषदाई मन भाई मेरै भये अंतरध्यान पेरे पाय प्रीति हेरी है। जागरन मांझ हरि भक्तन कौं प्यास लगी गये लैन जल प्रेत आनि कीनि फेरी है। फेंट तैं निकासि ताल गायौ पद ततकाल बडेई कृपाल रूप धर्यौ छबि टेरी है॥

जयदेव।

मूल।

जयदेव कबि नृप चक्कवै खंड मंडलेश्वर आनि कबि।
प्रचुर भयौ तिहुं लोक गीतगोबिंद उजागर।
कोक काब्य नव रस सरस सिंगार कौ सागर॥
अष्टपदी अभ्यास करै तिहिं बुद्धि बढावै।
राधा रमण प्रसंग सुनत तहां निश्चै आवै॥
संत सरोरुह खंड कौ पद्मा पति सुष जनक रबि।
जयदेव कबि नृप चक्कवै खंड मंडलेश्वर आनि कबि॥

जैदेव की टीका।

किंदुबिल्व ग्राम ता मैं भये कबि राज राज भर्‌यौ रस राज हियै मन मन चाषियै। दिन दिन प्रति रूष रूष तर जाय रहै गहै एक गूदरी कमंडल कौं राषियै। कहि देवै बिप्र सुता जगन्नाथ देव जू कौं भयौ वा कौ समैं चल्यौ दैन प्रभु भाषियै। रसिक जैदेव नाम मेरोई सरूप ताहि देवो ततकाल अहो मेरी कहि साषियै। चल्यौ द्विज तहां जहां बैठे कबि राज राज अहो महाराज मेरी सुता यह लीजियै। कीजियै बिचारि अधिकार बिसतार जाकै ताही कौं निहारि सुकुवार इह दीजियै। जगन्नाथ देव जू की आग्या प्रतिपाल करौ टरौ मति धरौ हियै नातौ दोस भीजियै। उन कौं हजार सौ है हम कौं पहार एक तातैं फिरि जावौ तुमै कहा कहि षीजियै। सुता सौं कहत तुम बैठी रहौ याही ठौर आज्ञा सिर मौर मैरै नाही जाति टारी है। चल्यौ अन षाय

समझाय हारे बातनि सौं मन तू समझि कहा कीजे सोच भारी है। बोले द्विज बालकी सौं आपनौं बिचारि करौ धरौ हियै ज्ञान मो पै जात न संभारी है। बोली कर जोरि मेरौ जोर न चलत कछू चाहौ सोइ होउ यह बारि फेरि डारी है। जानी जब भई तिया किया प्रभु जोर मो पै तो पै एक झौंपरी की छाया करि लीजियै। भई जब छाया स्याम सेवा पधराय लई नई एक पौथी मै बनाई मन कीजियै। भयौ जू प्रगट गीत सरस गोविंद जू कौ मान मैं प्रसंग सीस मंडन सो दीजियै। एही एक पद मुष निकसत सोच पर्यौ धर्यौ कैसें जात लाल लिष्यौ मति रीझियै। नीलाचल धाम ता मैं पंडित नृपति एक करी यही नाम धरि पोथी सुषदाईयै। द्विजन बुलाय कही वही है प्रसिद्ध करौ लिषि लिषि पढौ देस देसनि चलाईयै। बोले मुसिकाय बिप्र छिप्र सो दिषाय दई नई यह कोउ मति अति भरमाईयै। धरी दोउ मंदिर मैं जगन्नाथ देव जू के दीनी यह डारि वह हार लपटाईयै। पर्यौ सोच भारि नृप निपट षिसानौ भयौ गयौ उठि सागर मै बूडौं यही बात है। अति अपमान कियौ कियौ मैं बषान सोई गोई जात कैसें आंच लागी गात गात है। आज्ञा प्रभु दई मति बूडै तू समुद्र माझ दूसरौ न ग्रंथ वैसौ वृथा तन पात है। द्वादश श्लोक लिषि दीजे सर्ग द्वादस मैं ताही संग चले जा की ष्यात पात पात है। सुता एक माली की जु बैंगन की बारि माझ तोरै बनमाली गावै कथा सर्ग पांच की। डोलै जगन्नाथ पाछे काछे अंग मिहीं झंगा आछे गहि घूमै सुधि आवै बिरह आंच की। फट्यौ पट देषि नृप पूछी अहो भयौ कहा जान तन हम अब कही बात सांच की। प्रभु ही जनाई मन भाई मेरै वही गाथा ल्याये उह बालकी

कौं पालकी मैं नाच कौ। फेरी नृप डौंडी यह औंडी बात जानी महा कहा राजा रंक पढै नीकी ठौर जानिकै। अक्षर मधुर और मधुर सुरनि ही सौं गावै जब लाल प्यारी ढिग ही लै मानिकै। सुनी यह रीति एक मुगल नै धारि लई पढै चले चोर आगै स्याम रूप ठानिकै। पोथी कौ प्रताप स्वर्ग गावत हैं देव बधू आय ही जु रीभि लिष्यौ निज कर आनिकै। पोथी की तौ बात सब कही मैं सुहात हियै सुनौ और बात ता मैं अति अधिकाईयै। गाठि मैं मुहर मग चलत मैं ठग मिले कहो कहां जात जहां तुम चलि जाईयै। जानि लई आप षोलि द्रव्य पकराय दियौ लीयौ चाहौ जोई सोई मो कौं लाइयै। दुष्टनि स-मभि कही कीनी इनि बिद्या अहो आवै जो नगर इन्है बेगि पकराइयै। एक कहै डारौ मारि भलौ है बिचार यही एक कहै मारौ मति धन हाथ आयौ है। जौ पै लै पिछानि कहूं कीजियै निदान कहा हाथ पाव काटि बडे गाड पधरायौ है। आयौ तहां राजा एक देषिकै बि-बेक भयौ छयौ उजियारौ औ प्रसन्न दरसायौ है। बाहर निकासि मानौ चंद्रमा प्रकासि ससि पूछ्यौ इतिहास कह्यौ ऐसौ तन पायौ है। बडेई प्रभाववान सकै को बषानि अहो मेरौ कोउ भूरि भाग दरसन की-जियै। पालिकी बैठाय लिये किये सब ठठ नीके जीके भाये भये कछू अग्या मोहि दीजियै। करौ हरि साधु सेवा नाना पकवान मेवा आवै जोई संत तिनै देषि देषि भीजियै। आई वेई ठग माला तिलक चिलक किये किलकै कही बडे बंधु लेष जीजियै। नृपति बुलाय कही हियै हरि भाइ भरे ढरे तेरे भाग अब सेवा फल लीजियै। गयौ लै महल मांभ टहल लगाये लोग लागे होन भोग जिय संका तन छीजियै। मागै बार

बार बिदा राजा नही जान देत अति अकुलाये कही स्वामी धन दीजिये। दैके बहु भांति सो पठाये संग मानस हु आवौ पहुचाय तब तुम पर रीभिये। पूछे नृप नर कोउ तुमरी न सवर जिते आये साधु ऐसी सेवा नही भई है। स्वामी जू सौं नातौ कहा कहैं हम षाई हाहा राषियौ दुराय यह बात अति नई है। हुतौ ईक ठौर नृप चाकरी मैं तहां इनि कियौई बिगार मारि डारौ आज्ञा दई है। राषे हम हितू जानि लै निदान हाथ पाव वाही के दिसा न अब हम भरि लई है। फाटि गई भूमि सब ठग वे समाय गये भये ये चकित दौरि स्वामी जू पै आये है। कही जिती बात सुनि गात गात कांपि उठे हाथ पांव मीले भये ज्यौं के त्यौं सुहाये है। अचिरज दोउ नृप पास जाय प्रकाश किये जिये यह सुनि आये वाही ठौर धाये है। पूछे बार बार सीस पायनि मैं धारि रहे कहिये उघारि कैसे मेरे मन भाये है। राजा अति आग्रहि कही सब बात षोलि निपट अमोल यह संतनि कौ भेष है। कैसौ अपकार करौ तउ उपगार करै टरै रीति आपनी ही सरस सु देस है। साधुता न तजे कभू जैसे दुष्ट दुष्टता न यही जानि लीजे मिले रसिक नरेस है। जांन्यौ जब नांव ठांव रहौ इहां बलि जांउं भयौ मै सनाथ प्रेम भक्ति भई सहै। गयो जा लिवाय लाय कबि राज राज तिया किया लै मिलाय आय रानी ढिग आई है। मह्यौ एक भाई वा कौ भईयौं भौ जाई सती कोउ अंग काटि कोउ कूदि परी धाई है। सुनत ही नृप बधू निपट अचंभौ भयौ इनि कें न भयौ फिरि कहि समुझाई है। प्रीति की न रीति यह बडी बिपरीति अहो छूटे तन जब प्रिया प्रान छूटि जाइ है। ऐसी एक आय कहि राजा सौं यह बात कही लैकै

॥ ६२ ॥

जावौ बाग स्वामी नैक देषौ प्रीति कौं। निपट बिचारी बुरी देत भेरै गैरे छुरी तिया हठ मान करी वैसे ही प्रतीति कौं। आनि कहे आय पाये कही यही भांति आय बैठी ढिग तिया देषि लोटी गई रीति कौं। बोली भक्त बधू अजू वे तौ है बहुत नीके तुम कहा औचक ही पावत हौ भीति कौं। भई लाज भारी पुनि फेरिकै संवारी दिन बीति गये कैउ जब तब वही कीनी है। जानि गई भक्त बधू चाहति परीक्षा लियौ कही आजु पाये सुनि तजी देह भीनी है। भयौ मुष सेत रानी राजा आये जानी यह रची चिता जरौं मेरी भई मति हीनी है। भई सुधि आप कौं सु आये बेगि दौरि इहां देषि मृत्यु प्राय नृप कह्यौ मरी दीनी है। बोल्यो नृप आजू सो हि जरैंई बनत अब सब उपदेस लैकै धूरि मै बहायौ है। कह्यौ बहु भांति ऐ पै आवति न सांति किहुं गाई अष्टपदी सुर दियौ तन जायौ है। लाजनि कौ मार्‍यौ राजा चाहै अपघात कियौ जियौ नहिं जात भक्ति लेस हूत आयौ है। करी समाधान निज ग्राम आए किंदुविल्व जैसौ कछु सुन्यौ यह परचे लै गायौ है। देवध्वनि सोत हो अठारे कोस आश्रम ते सदाई स्नान करै धरै जोग ताई कौं। भयौ तन वृद्ध तहु छोडै नही नित्य नेम प्रेम देषि भारी निसि कही सुषदाई कौं। आवौ जिनि ध्यान करौ मति हठ ऐसौ मानी नही आउं मैं ही जानौं कैसै आई कौं। फूले देषौ कंज जब कीजियै प्रतीति मेरी भई वही भांति सेवै अबलौं सुहाई कौं॥

॥ ६३ ॥

कबीर।

मूल।

कबीर कानि राषी नही वर्णाश्रम षट दरसनी।
भक्ति विमुष जो धर्म सोव अधर्म करि गायौ।
जोग जग्य ब्रत दान भजन बिन तुछ दिषायौ॥
हिंदू तुरक प्रमान रमैनी सबदी साखी।
पछपात नहि बचन सब ही के हित की भाषी॥
आरूढ दसा ह्वै जगत पर मुख देषी नाहिन भनी।
कबीर कानि राषी नही वर्णाश्रम षट दरसनी॥

कबीर जू की टीका।

अति ही गंभीर मति सरस कबीर हियौ लियौ भक्ति भाव जातिपांति सब टारियै। भई नभ बानी देह तिलक कखानी करौ गुरु रामानंद गरै माल धारियै। देषै नही मुख मेरौ मानिकै मलेछ मो कौं जात न्हान गंगा कही मग तन डारियै। रजनी के से समैं अबेस सो चलत आप धरे पग राम कहे मंत्र सो बिचारियै। कीनी वही बात माला तिलक बनाय गात मानि उतपात माता सोर कियौ भारियै। पहुंची पुकार रामानंद जू के पास आनि कही कोउ पूछ तुम नाम लै उचारियै। ल्यावौ जू पकरि वा कौं कब हम कियौ शिष्य लाये करि परदा मै पूछी कहि डारियै। राम नाम मंत्र यही लिष्यौ सब तंत्रनि मैं षोलि पट मिले सांचौ मत उर धारियै। बुनै तानौ बानौ हियै राम मड़रानों कहि कैसे कै बषानौं वह रीति कछू न्यारियै। उतनौइ करै

जा मै तन निर्बाह होय भोय गई और बात भक्ति लागी प्यारीये। ठाढे मंडी माझ पट बेचन ले जन कोउ आयौ मो कौं देउ देह मेरी है उघारिये। लाग्यौ देन आधौ फारि आधे सौं न काम होत दियौ सब लेहो जो यही जिय धारिये। तिया सुत मात मग चाहें भूषे आवे कब दबि रहे हाटनि में लावै कहा धाम कौं। सांचौ भक्ति भाव जानि निपट सुजानि वे तौ कृपा के निधान यह सोच पर्‌यौ स्याम कौं। बाल दले धाये छिन तीनयौं बितये जब आये घर डारि दई दई हो आ-राम कौं। माता करै सोर कोउ हाकि मरोरि बांधे डारी बिन जानै सुत लेत नही दाम कौं। गये जन दोय च्यारि ढूंटिकै लिवाय लाये आये घर सुनी बात जानी प्रभु पीर कौं। रहे सुष पाय कृपा करी रघुराय दई छिन में लुटाय सब बोलि भक्त भीर कौं। दियौ छोरि तानौं बानौं सुष सरसानौं हियौ कियौ रोस धायें सुनि बिप्र तजि धीर कौं। क्यों रे तें जुलाहे धन पायौ न बुलाये हमें सुद्रनि कौं दियौ जावौ कहे यौं कबीर कौं। क्यौं जू उठि जांउं कछू चोरी धन लाउं नित हरि गाउं कोउ राह मैं न मारी है। उन कौं लै मान कियौ याही में अपमान भयौ दयौ जो पै जाय हमै तोही तौ जिवारी है। घर मैं तौ नाही मंडी जाही तुम रहौ बैठे नीट के छुटायौ पैंडौ छिपे ब्याधि टारी है। आये प्रभु आप द्रव्य ल्याये समाधान कियौ लियौ सुख हो भक्ति कीरति उंजारी है। ब्राह्मन कौ रूप धरि आय छिपि बैठे जहां काहे कौं मरत भूषे जावो जी कबीर कै। कोउ जाय द्वार ताहि देत है अठाई सेर बेर जिन लावौ चले जाइयौ बहीर कै। आये घर मांझ देषि निपट मगन भये नये नये कौतुकये कैसे रहे धीर कै। वारमुखी लई संग

मानौ वाही रंग रंगे जानौ यह बात करी उर अति भीर कै। संत देषि उरे सुख भयौई असंतनि कौ तब तौ बिचार मन माझ और आयौ है। बैठौ नृप सभा जहां गए पै न मान कियौ कियौ एक चोज उठि जल ढरकायौ है। राजा जिय सोच पर्यौ कह्यौ कहा कह्यौ तब जगन्नाथ पंडा पांव जरत बचायौ है। सुनि अचिरज भयौ नृप नैं पठाये नर लाये सुधि कही अजू सांची ही सुनायौ है। कही राजा रानी सों जु बात वह सांची भई आंच लागी हियै अब कहौ कहा कीजियै। चले ही बनत चले सीस तृन बोझ भारी गरे सों कुल्हारी बांधि तिया संग भीजियै। निकसे बजार ह्वैकै डारि दई लोक लाज कियौ मैं अकाज छिन छिन तन छीजियै। दूरि ते कबीर देषि ह्वै गए अधीर महा आये उठि आगे कह्यौ डारि मति रीझियै। देषिकै प्रभाव फेरि उपज्यौ अभाव द्विज आयौ पातिसाह सों सिकंदर सो नाम है। बिमुख समूह संग माता हू मिलाय लई जायकै पुकारे जु दुषायौ सब गांव है। लावौ रे पकरि वा कौं देषौ मै मकर कै सौ अकर मिटाउं गाढे जकरि तनाव है। आनि ठाढे किये काजि कहत सलाम करौ जानौं न सलाम जानौं राम गाढ पाव है। बांधिकै जंजीर गंगा नीर मांझ बोरि दिये जिये तीर ठाढे कहैं जंत्र मंत्र आवही। लकरीन माझ डारि अगनि प्रजारि दई मानौं भई देह कंचन लजावही। विफल उपाय भये तऊ नही आय नये तब मतवारो हाथी आनिकै झुकावही। आवत न ढिग औ चिंघारि भाजि जाय आय आगे सिंह रूप बैठि सो भगावही। देष्यौ पातसाह भाव कूदि पर्यौ गहे पाव देषी करामाति मात भये सब लोग है। प्रभु पै बचाय लीजै हमै न गजब कीजै दीजै जोई चाहौ

गांव देस नाना भोग है। चाहै एक राम जा कौं जपै आठो जाम और ग्राम सौं न काम जा मैं भरे कोटि रोग है। आये घर जीति साधु मिले करि प्रीति जिन्है हरि की प्रतीति वेई गायवे कौं जोग है। होयकै षिसाने द्विज निज च्यारि बिप्रनि कौ मूंडनि मूंडाय भेष सुंदर बनायौ है। दूरि दूरि गावनि मैं नामनि कौं पूछि पूछि नाव लै कबीर जू कौ झूठे न्योति आये है। आये सब साधु सुनि ए तौ दूरि गये कहूं चहूं दिसि संतनि के फिरे हरि धाये है। इन ही कौ रूप धरि न्यारी न्यारी ठौर बैठे एउ मिलि गए नीकै पोषिकै रिझाये है। आई अप्सरा छलिवे कौं लियैं वेस कियें हिये देषि गाडे फिरि गई नही लागी है। चत्रभुज रूप प्रभु आनिकै प्रगट कियौ फल नैंननि कौ बडौ बड भागी है। सीस धर्यौ हाथ तन साथ मेरे धाम आवौ गावौ गुन रहौ जौलौं तेरी मति पागी है। मग हमै जाय भक्ति भाव कौं दिषाय बहु फूलनि मगाय पौढि मिले हरि रागी है॥

॥ ६७ ॥

पीपा।

मूल।

पीपा प्रताप जग बासना नाहर कौं उपदेस दियौ।
प्रथम भवानी भक्त मुक्ति मागन कौं धायौ।
सत्य कह्यौ तिहि सक्ति सुदृढ हरि सरन बतायौ॥
रामानंद पद पाय भये अति भक्ति की सेवां।
गुण असंख्य निर्मोल संत धरि राषत ग्रीवां॥
परसि प्रनाली सरस भये सकल विश्व मंगल कियौ।
पीपा प्रताप जग बासना नाहर कौं उपदेस दियौ॥

पीपा जू की टीका।

गांगरौन गढ पीपा नाम राजा भयौ लयौ पन देबी सेवा रंग चढ्यौ भारीयै। आये पुर साधु सीधौ दियौ जोई सोई लियौ कियौ मन माझ प्रभु बुद्धि फेरि डारियै। सोयौ निसि रोयौ देषि सुपनौं बिहाल अति प्रेत बिकराल देह धरिकै पछारियै। अब न सुहाय कछू वह पाय परि गई नई रीति भई याहि भक्ति लागी प्यारीयै। पूछी हरि पायवे कौं मग जब देवी कही सही रामानंद गुरु करौ प्रभु पाईयै। लोग जानै बौरौ भयौ गयौ यह कासी पुरी फुरी मति आये जहां हरि गाईयै। द्वार मै न जान देत आग्या ईस लेत कही राज सौ न हेत सुनि सब ही लुटाईयै। कह्यौ कूवा गिरौ चले गिरन प्रसन्न हियै जियैं सुष पायौ लाये दरस दिषाईयै। किये शिष्य कृपा करि धरी हरि भक्ति हिये कही अब जावौ ग्रेह सेवा साधु कीजियै। बितये बरस जब सरस टहल

जानि संत सुष मानि आवै घर मध्य लीजियै। आये आग्या पाय धाम कीनी अभिराम रीति प्रीति कीनी पारावार चिठी लिषि दीजियै। दूजियै कृपाल वही बात प्रतिपाल करौ चले जुग बीस जन संग मति रीझियै। कबीर रैदास आदि दास सब संग लीये आये पुर पास पीपा पालकी लै आयौ है। करी साष्टांग न्यारी न्यारी बिनै साधुनि कौं धन दै लुटाय सो समाज पधरायौ है। जैसी कीनी सेवा बहु मेवा नाना राजभोग वा नीके न जोग भाग कापै जात गायौ है। जानि भक्ति रीति घर रहौ कै अतीत होकु करिकै प्रतीति गुरु पग लगि धायौ है। लागी संग रानी दस दोय कही मानी नही कष्ट कौं बतावै मन नहि लावही। कामरीन फारि मध्य मेखला पहरि लेवो उारि आभरन जो पै नही भावही। काहू पै न होय दियौ रोय भोय भक्ति आई छोटी नाम सीता गरै डारी न लजावही। यहू दूरि डारौ करौ तन कौं उघारौ कियौ दियौ रामानंद हियौ पीपा न सुहावही। जो पै आप कृपा करी दीजै काहू संग करि मेरें नही रंग या मै कही बार बार है। सौंह कौं दिवाय दई लई तब कर धरि चले टरि बिप्र एक छोडौ न बिचार है। षायौ विष जियौ पुनि फेरिकै पठायौ सब आये यौं समाज द्वारावती सुष सार है। रहै कोउ दिन आग्या मागी इति रहि वे की कूदे सिंधु माझ चाह उपजी अपार है। आये आगे लैन आय दिये हैं पठाई जन देषी द्वारावती कृष्ण मिले बहु भायकै। महल महल मांझ चहल पहल लषी रहे दिन सात सुष सकै कौन गायकै। आज्ञा दई जायबे की जायबौ न चाहै हियै पियै वह रूप देषौ मोही कौं जु जायकै। भक्त बूडि गए यह बडौई कलंक भयौ मेटौ तुम अंक संक

गही अकुलायके। दई लैकै छाप पाप जगत के टूरि करौ टरौ कहूं और कही सीता समझाय है। चली पहुंचाय वे कौं प्रीति के अधीन आप बिन जल मीन जैसे ऐसे फिरि आये हैं। देषि नई बात गात सूके पट भीजे हिये लियें पहिचानि आनि पग लपटाये हैं। छठेई मिला न भई बन में पठान भेट लई छीनि तिया कीया चैन प्रभु धाये हैं। अभू लगि जावौ घर कैसें आवे उर बोली ही जानिये न भाव पै न आयौ है। लेत ही परीछा मै तौ जानौं तेरी सीक्षा ऐ पै सुनि दृढ बात कान अति सुष पायौ है। चले मग दूसरे सु ता में एक सिंघ है आयौ बात लेत सिष्य कियौ समुझायौ है। आये और गांव सेषसाई प्रभु नाम रहै करै बंश हरे ठरे चीधर सुहायौ है। दोउ तिया पति देषै आये भागवत ऐ पै घर की कुगति ,रति सांची लै दिषाई है। लहगा उतारि बेचि दियौ लियौ ता कौं सीधौ करौ अन्न पाक बधू कोठी में दुराइ है। करी लै रसोई सोई भोग लगि बैठे कह्यौ आवो मिलि दोउ लैवे पाछै सीत भाई है। वाहू कौं बुलावौ लावौ आनिकै जिवावौ तब सीता गई वाही ठौर नगन लषाई है। पूछै कही बात ये उघारे क्यौं हैं गात कही ऐसें ही बिह्वात साधु सेवा मन भाई है। आवैं जब संत सुष होत है अनंत तन ढक्यौ कै उघारौ कहा चरचा चलाई है। जानि गई रीति प्रीति देषी एकई नही मै हम हू कहवैं ऐ पै छटा हू न पाइ है। दियौ पट आधौ फारि गहिकै निकारि लई भई सुष शैल पाछै पीपा कौं सुनाई है। करै बेस्या कर्म अवधर्म है हमारौ यही कही जाय बैठी जहां नाजन की ढेरी है। घिरि आये लोग जिन्है नैंननि को रोग लषि दूरि भयौ सोग नैक नीकै हूत हेरी है। कहै तुम कौन वारमुखी नही

भौन संग भहवा सु गहै मौन सुनि परिवेरी है। करी अन्न रासि आगे मौहौरे रुपैया मागे पटै दई चौधर के तब ही निबेरी है। आग्या मागि टोडे आये कभू भूषे कभू धाये औचक ही ढाम पाये गये हैं स्नान कौं। मौहौरन भांडे भूमि गड्यो देषि छोडि आये कह्यौ निसि तिया बोली जावौ सर आन कौं। चोर चाहै चोरी करै सुनि वाही ओर टरै देषै जो उघारि सांप उरै हुते प्रान कौं। ऐसें आय परी गिनी सात शत बीस भई तौरै पांच बांट करै एक के प्रमान कौं। जोई आवै द्वार ताहि देत है अहार और बोलिकै अपार संत भोजन करायौ है। बीते दिन तीन धन षाय प्याय छीन कियौ लियौ सुनि सूरज सैन नाम नृप देषिवे कौं आयौ है। देषिकै प्रसन्न भयौ देवो दीक्षा मोहि दीक्षा है अतीत करै आप सो सुहायौ है। चाहौ सोई करौ है कृपाल मो कौं टरौ अजू धरौ आनि संपति औ रानी जाय लायौ है। करिकै परीक्षा दई दीक्षा संग रानी दई भईये हमारी परदान संत सौं। दियौ धन घोरा कछू राष्यौ दै निहोरा भूप मानत न छोरा बडौ मान्यौ जीव जंत सौं। सुनि जरि बरि गये भाई सैन सूरजि के उरज प्रताप कहा कहै सीता कंत सौं। आयौ बनिजारौ मोल लियौ चाहै बैलनि कौं दियौ बहकाय कह्यौ पीपा जू अनंत सौं। बोल्यौ बनिजारौ दाम षोलि बैला दीजियै जू लीजियै जू आय गाव.चरन पठाये हैं। गयौ उठि पाछै बोलि संतनि महोछौ कियौ आयौ वाही समैं कही लेवो मन भाये हैं। दरसन करि हियै भक्ति भार भयौ आनिकै बसन सब साधु पहिराये हैं। और दिन न्हान गये घोरा चढि छोडि दियौ लियौ बांध्यौ दुष्टनि नैं आयौ मानौं लाये हैं। गये हे बुलाये आप पाछै घर संत आये अन्न कछू नाहि कहूं

जायकरि लाईये। बिषई बनिक एक देषिकै बुलाय लई दई सब सोच कही सही निसि आईये। भोजन करत मांझ पीपा जू पधारे पूछी बारे तन प्रान जब कहिकै जनाईये। करिकै सिंगार सीता चली लुकि मेह आयौ कांधे पै चढायें वपु बनिया रिझाईये। हाट पै उतारि दई द्वार आप बैठि रहै चहै सूके पग माता कैसें करि आई हौ। स्वामी जू लिवाय लाये कहां है निहारौ जाय आय पाय पर्‍यौ ठर्‍यौ राषौ सुषदाई हौ। मानौं जिनि संक काज कीजियै निसंक धन दियौ बिन अंक जा पै लरे मरे भाई है। मर्‍यौ लाज भार चाहै धर्‍यौ भूमि फारि दृग वहै नीर धार देषि दई दीक्षा पाई है। चलत चलत बात नृपति श्रवन परी भरी सभा बिप्र कहै बडौ बिपरीति है। भूप मन आई यह निपट घटाई होत भक्ति सरसाई नहीं जानें घटी प्रीति है। चले पीपा बोध दैन द्वार ही ते सुधि दई लई सुनि कही आवो करौ सेवा रीति है। बडौ मूढ राजा मोजा गांठैं बैठ्यौ मोची घर सुनि दौरि आयौ रहै ठाढे कौन रीति है। हुती घर मांझ बांझ रानी एक रूपवती मांगी वही ल्यावौ बेगि चल्यौ सोच भारी है। डगमग पांव धरै पीपा सिंघ रूप करै ठाढौ देषि डरै इत आवे आप धारी है। जाय तौ बिलाय गयौ तिया ढिग सुत नयौ भयौ भूमि पर कला जानी न निहारी है। प्रगट्यौ सरूप निज षिझिकै प्रसंग कह्यौ कहां वह रंग सिष्य भयौ लाज टारी है। कियौ उपदेस नृप हृदै मै प्रबेश कियौ लियौ वही पन आप आये निज धाम है। बोल्यो एक नांव साधु एक निसि देवो तिया लेवौ वही भागी संग भागी सीता बाम है। प्रात भये चले नाहि रैनि ही की आग्या प्रभु चल्यौ छांडि आगे घर घर देषी ग्राम है। आय

वाही ठौर चल्यौ माता पछुताय आछु आय गहे पाय भाव भयौ गयो काम है। बिषई कुटिल चारि साधु भेष लियौ धारि कीनी मनुहारि कही तिया निज दीजियै। करिकै सिंगार सीता कोठे मांझ बैठी जाय चाहैं मग आतुर ह्वै आजू जावौ लीजियै। गए जब द्वार उठी नाही सु फारिबे कौं फारै नही बानौ जांनि आय अति षीजियै। अपनौ बि-चारो हियो कियो भोग भावना को मांनि सांच भये सिष्य प्रभु मति धीजियै। गूजरी कौं धन दियौ पियौ दही संतनि नै बांभन कौं भक्त कियौ देवी दई निकारिकै। तेली कौं जिवायौ भैंस चोरनि पै फेरि ल्यायो गाडी भरि आयौ तन पांच ठौर जारिकै। कागद लै कोरौ कह्यौ बनिया को सोक हर्यौ भर्यौ घर त्यागि डारी हत्या हू उतारिकै। राजा कौं ओसेर भई संत कौं जु बिभौ दई लई चीठी मानि गए श्री रंग उधारिकै। श्री रंग कै चेत धर्यौ तिय हिय भाव भर्यौ बाह्मन कौं सोक हर्यौ राजा पै पूजायकै। चंदवा बुझाय लियौ तेली कौं लै बैल दियौ पुनि घर माझ भयौ सुष आयकै। बडौई अकाल पर्यौ जीव दुष दूरि कर्यौ पर्यौ भूमि गर्भ धन पायो दै लुटायकै। अति बिसतार लियें कियो है बिचार यह सुने एक बार फेरि भूलै नही गायकै॥

॥ ७३ ॥

तुलसी दास।

मूल।

कलि कुटिल जीव निस्तार हित वाल्मीक तुलसी भयौ।
त्रेता काव्य निबंध करि सत कोटि रामायण।
ईक अक्षर उद्धरै ब्रह्महत्यादि परायण॥
अब भक्तनि सुष दैन बहुरि लीला बिस्तारी।
राम चरण रस मत्त रटत अह निसि ब्रतधारी॥
संसार अपार के पार कौं सुगम रूप नौका लयौ।
कलि कुटिल जीव निस्तार हित वालमीक तुलसी भयौ॥

टीका।

तिया सों सनेहि बिनि पूछि पिता गेह गई भूली सुधि देह भजे वाही ठौर आये है। बधू अति लाज भई रिसि सों निकस गई प्रीति राम नई तन हाड चाम छाये है। सुनि जब बात मानौ होय गयौ प्रात वह पाछि पछितात तजी कासी पुरी धाये है। कियौ तहां बास प्रभु सेवा लै प्रकास कीनौ लीनौ दृढ भाव नैन रूप के तिसाये है। सौच जल सेस पाय भूत हू बिसेस कोउ बोल्यौ सुष मानि हनुमान जू बताये है। रामायण कथा सो रसायनि है काननि कौं आवत प्रथम पाछि जात घ्राण जाये है। जाय पहिचानि संग चले उर आनि आए बन मधि जान धाय पाय लपटाये है। करै सीत कार कही सकौगे न टारि मे तौ जाने रस सार रूप धस्यो जैसें गाये है। मांगि लीजै बर कही दीजै राम भूप रूप अति हीं अनूप नित नैनन अभिलाषियै। कियौ लै

संकेत ताही दिन ही सौं लाग्यौ हेत आई सोई समै चेत कब छबि चाषियै। आये रघुनाथ साथ लछमन चढे घोरे पट रंग बोरे हरे कैसे मन राषियै। पाछे हनुमान आय बोले देषे प्रान प्यारे नैकु न निहारे मै तौ भले फिरि भाषियै। हत्या करि बिप्र एक तीरथ करत आयो कहै मुष राम भिक्षा डारियै हत्यारे कौं। सुनि अभिराम नाम धाम मै बुलाय लियौ दियौ लै प्रसाद कियौ शुद्ध गायौ प्यारे कौं। भई द्विज सभा कहि बोलिकै पठाये आप कैसे गयौ पाप संग लैकैं जैंवे हत्यारे कौं। पोथी तुम बांचौ हियें सार नही साचौ अजू ताते मत काचौ दूर करै न अंध्यारे कौं। देषी पोथी बाच नाम महिमा हूं कही सांच ऐ पै हत्या करै कैसे तरै कहि दीजियै। आवै ज्यौ प्रतीति कहो कही या के हाथ जैंवै सिव जू कौ बैल तब पंकति मै लीजियै। थार मै प्रसाद दियौ चले जहां पन कियौ बोले आप नाम के प्रताप मति भीजियै। जैसी तुम जानौ तैसी कैसे कै बषानै अहो सुनिकै प्रसन्न पायौ जैसै धुनि रीझियै। आये निसि चौर चोरी करन हरन धन देषे स्याम घन हाथ चाप सर लियौ है। जब जब आवै बान सांधि डर पावै वे तौ अति मंडरावै ऐ पै बली दूरि कियै है। भोर आप पूछे अजू सावरौ किसोर कौंन सुनिकर मौन रहे आंसु डारि दियै है। दै सबै लुटाय जानी चौकी राम राय दई लई उन्हौ दीक्षा सीक्षा सुद्ध भये हियै है। कियो तन बिप्र त्यागि लागि चली संग तिया दूर ही तें देषि किया चरण प्रनाम है। बोले यों सुहागवती मर्यौ पति होऊं सती अब तौ निकासि गई ज्यांउ सेवो राम है। भये सब साधु ब्याधि मेटी लै बिमुष ता की जा की बास रहै तौन सूझै स्याम धाम है। दिल्ली पति पात-

साहु अहदी पठायौ लैन ता कौं सो सुनायौ सूबे बिप्र ध्यायौ जानियै। देषि वे कौं चहे नीके सुष सौं निबाहे आय कही बहु बिनै कही चली मन आनियै। पहुंचे नृपति पास आदर प्रकास कियौ दियौ उच्च आसन लै बोल्यौ मृदु बानियै। दीजै करामाति जग ष्यात सब मात किये कही भूठी बात एक राम पहिचानियै। देषै राम कैसौ कहि कैद कियौ कियें हियै हूजिये कृपाल हनूमान जू दयाल हो। ताही समै फैलि गए कोटि कोटि कपि नये लोचे तन षैचे चीर भयौ यों बिहाल हो। फोरे कोटि मारे चोउ किये डारे चोट पौट लीजै कौन ओट जाय मानौ प्रलय काल हो। भई तब आंषै दुष सागर कौं चाषै अब वेई हमै राषै भाषै वारौ धन माल हो। आय पाय लिये तुम दिये हम प्रान पावै आप समझावै करामात नेकु लीजियै। लाज दबि गयौ नृप तब राषि लियौ कह्यौ भयो घर राम जू कौं बेगी छोडि दीजियै। सुनि तजि दियौ और कह्यौ लैके कोट नयौ अब हू न रहै कोऊ वा मै तन छीजियै। कासी जाय बृंदाबन आय मिले नाभा जू सौं सुन्यौ हो कबित निज रीझ मति भीजियै। मदन मोहन जू कौ दरसन कही सही राम ईष्ट मेरे दृष्ट भाव मागी है। वैसौई सरूप कियौ दियौ लै दिषाय रूप मन अनुरूप छबि देषि नीकी लागी है। काहू कही कृष्ण अवतारी जू प्रसंस महा राम अंस सुनि बोले मति अनुरागी है। दसरथ सुत जानौ सुंदर अनूप मानों ईसता बताई रति बीस गुनी जागी है॥

भक्त माल।

पीपा।

गूजरी को धन दियो पियो दही संतनि ने।

चौपाई।

एक दिवस पीपा के द्वारे। बहुत भक्त बैठे मति सारे॥
गूजरि एक दही लै आई। पीपा स्वामी लई बुलाई॥
कहु रे बहिनि दही को मोला। हौं नहिं मेटौं तुमरो बोला॥
तब तिहिं कही दुगानी तेरा। इतनो मोल को मथना मेरा॥
पीपा बोले कही भले री। आजु कि भेंट जो आवै तेरी॥
आदर करि गूजरि बैठारी। पीवत भयो दही सुख भारी॥
तब हि एक बनिजारो आयो। तिन पीपा को द्रव्य चढायो॥
सात मोहर अरु द्वै परकाला। कछु एक मोती पुरखा घाला॥
खांड चिरौंजी और छुहारी। केसरि लौंग कपूर सुपारी॥
इतनी बस्तु धरी सिर नाई। अब मैं घर कहं जाउं गुसांई॥
गौ बनियां जब आज्ञा दीन्ही। स्वामी सौंज इकट्ठी कीन्ही॥

लै री बहिनि दही को मोला। राख्यौ राम हमारो बोला ॥
उरपी गूजरि छुवै न हाथा। नहीं सो लेइ डोलावै माथा ॥
दधि को मोल देहु जो आवै। राजा दंड लेइ सुनि पावै ॥
इतनो मोहि ग्वान नहि दैहै। सूरज सेन चौगुनो लैहै ॥
तब स्वामी बोले सति भाउ। तोहि न राजा दंडै काउ ॥
तेरे काज तहां हम जैहैं। हरि साधुन के उपर दैहैं ॥
यह बातें सुनि हरषी नारी। बहुत बार कीन्ही मनुहारी ॥
इन्ह को बेगि मुकुन्दी कीजे। और कछू हम हूं सों लीजे ॥
पीपा कहै मोल ले माई। तेरे भाग भेंट यह आई ॥
मेरे बचन झूठ जनि पारे। सत छौडि परमेश्वर मारे ॥
तब गूजरी मन कियो बिचारा। दीक्षा लई न लागी बारा ॥
अपना करि सब पूजा कीन्हा। और सौंज भक्तन्ह कों दीन्हा ॥
ऐसी प्रीति भक्ति सों लागी। निसि दिन स्तुति हृदय अनुरागी ॥
तब ते पीपा के मन भावै। निति उठि गोरस लै पहुंचावै ॥

ब्राह्मन को भक्त कियो देबी दे निकारिकै।

ब्राह्मन एक नगर मंह ऐसो। गर्बवंत अति कहियै जैसो ॥
धन जीबन परिवार संजूता। सकल सौंज देखिए बहूता ॥
तिन देबी को चक्र करायो। बिप्र सहित सब के मन भायो ॥
करी बिबिधि बिधि श्रद्धा भारी। बहुत लोग न्यौते नर नारी ॥
सो पीपा को न्यौतन आयो। मान्यौ नहीं बहुत समुझायो ॥
पीपा कह्यो कहा करु मेरा। तौ हौं न्यौता मानौं तेरा ॥

थोरो थोरो थार जु भरियो। लै अछूत हरि आगे धरियो॥
पहिले राम हि भोग लगावों। ता पीछे मैं झूठनि पावों॥
सुनत बात सब के मन मानी। श्री हरि गति काहूं नहि जानी॥
इतनी कहि पीपा तहां जाई। देखि रसोई सौंज मंगाई॥
तनक तनक भरि आनी थारी। और सौंज सब राखी न्यारी॥
जितनौ पाक रह्यौ घर माहीं। दियो अछूतौ जान्यौ नाहीं॥
बेदी माझ भोग हरि लायो। संखोदक चहुं दिसि छिरकायो॥
सबन्ह सहित प्रभु भोजन पायो। पदुम अठारह जूथप खायो॥
पीछे ब्राह्मन कियो अहारा। सजन कुटुंब मगन परिवारा॥
भूखे जन कहं भोजन दीन्हो। तब देवी को सुमिरन कीन्हो॥
निसा भई सोए नर नारी। सपने माता दीन्ही गारी॥
अर्ध राति ऊपर चढि आई। भूखी भूखी कहि बिलखाई॥
मेरे हेत कियो तैं जागू। पीपा स्वामी लियो सोहागू॥
जब तें भोग लायौ भरि थारी। मख तें तब मोहि कियो जु न्यारी॥
लागे वानर कोटि पचासा। देखन देहि न नेकुं तमासा॥
भली भई परमेश्वर पायो। तू जनि जानै माता खायो॥
हरि सों बल करि सकै न कोई। हम कों सीत न रही रसोई॥
इतना कहि देवी चलि जाई। ब्राह्मन जाग्यौ मन पछिताई॥
तब गवन्यौ पीपा के पासा। कह्यो जो देवी सकल प्रकासा॥
पीपा कह्यो जु तुम कछु देखा। बोला सो कपिरी छन पेखा॥
झूठी देवी बेगि निकारो। राम भक्त ह्वै कारज सारो॥
घर देवी सरवर तट राखी। पीपा पद परि बिनती भाषी॥

देवी तजि तब दीक्षा लीन्ही। तिन पीपा की पूजा कीन्ही॥

तेली को जिवायो।

एक दिना सीधो घर नाहीं। पीपा चले चौहटा माहीं॥
तेलिनि एक रूप अति भारी। ता पर स्वामी दृष्टि पसारी॥
तेलिनि कहै लेहु रे तेला। तेहि पीपा सों भयो मग मेला॥
ऐसो तन जौ सुमिरै रामू। तौ हरि सकल संवारै कामू॥
यहि तें ता को राम कहायो। तेलिनि क्रोधवंत दुख पायो॥
कंत मरै जब सती जो होई। रामि राम पुकारै सोई॥
मो ते कहा मसखरी करहू। कुबचन बोले तुम ही मरहू॥
पीपा के मन उपजो रोसू। भली कहत कत लावै दोसू॥
मानुष मरे कहैगी जब हीं। जौ पति मरै करौंगा तब हीं॥
इतनी कहि स्वामी घर जाई। तेलिनि के जिय संका आई॥
चित आकरष्यो वा के पति को। उघर्‌यौ द्वार दोउ की गति को॥
मृतक भयो नहिं लाग्यौ बारा। तब ही तेलिनि राम पुकारा॥
रोवै कुटुंब सबै नर नारी। भैया बहिनि पिता महतारी॥
लेहु समेटि मृतक कहं काढो। सुन्यो जु सोक सबनि कौं गाढो॥
तेलिनि सती होन तब लागी। सब सुख को सुख देख्यौ आगी॥
बहुत भांति बाजंत्र बजाए। मरघट पहुंचे स्वामी आए॥
सती पुकारै रामै रामू। नेक न जीभ लेय बिश्रामू॥
हंसिकै पीपा बूझै बाता। अब क्यौं राम कहति हौ माता॥
जीवत जब तें कह्यौ न काउ। मरती बेर भयो क्यौं भाउ॥

तेलिनि के मन उपज्यौ दापू। कंत मर्‍यौ तैं दियो सरापू॥
अब मोहि कहा कहत है भाई। मेरी मीचु पलक में आई॥
पीपा कहै भक्ति जो करहू। मृतक जीव होइ बहुरि न मरहू॥
इतनी सुनि तेलिनि सुख पायो। वाहि बोल दै मृतक जिआयो॥
घर लै आए दीक्षा दीनी। भक्त बुलाय महोछो कीनी॥

कागद लै कोरो कह्यौ बनियां को सोक हर्‍यौ।

बडो ब्यौहरो सेठ सुदीनी। कह्यो आप ते मांगिन लीनी॥
दीन्हो बोलि टका सै चारी। कागद लिख्यौ साखि दै भारी॥
तब दीजो जब होइ तुमारे। नहि कछु आतुर अहै हमारे॥
छठे महीना मांग्यौ आनी। झगरो करै न मानै कानी॥
पीपा कहै कबै धन दीनो। को है साखि कबै हम लीनो॥
तब पंचन में पत्र मंगायो। कोरो कागद निकरि जु आयो॥
सब कागद घर मंह को देखै। उत्तम कहा पुरातन पेखै॥
झूठो झूठ कह्यौ सब काहू। बहुरि न उत्तर दीन्हो साहू॥
भरी सभा मैं साहु खिस्यानौ। पीपा कह्यौ लियौ मैं मानौ॥
हरि की माया हरि जन खाई। तुम क्यौं झूठी करी बडाई॥
ज्यौं ज्यौं उपजे देवौं तोही। अपने कर जौ दीन्हौ मोही॥
कागद सकल सुअछर किया। तब सुख उपज्यौ साहु के हिया॥
दीक्षा दै बनियां सिष कीन्ही। और भेट पीपा कह दीन्ही॥

॥ ८१ ॥

उरी हत्या हू उतारिकै।

रमत कहत रहे ते हि ठांउ। झारखंड में बस यक गांउ॥
साकट लोग रहै ता माहीं। आधी बस्ती आधी नाहीं॥
नर नारी हंसि अपजस लेई। अपने पास न बैठन देई॥
सूनो भवन कियो बिस्रामू। दोउ मिलि सुमिरै रामै रामू॥
नेरी नदी नीर भरि आनी। ता पीछे कीरतन ठानी॥
सौ मूरति संन्यासी आए। लोगन स्वामी पास पठाए॥
परदेसी कहा जानै मरमू। कहे संन्यासी करियै धरमू॥
पीपा तिन को आदर कीन्हो। न्यारो घर बैठन कौं दीन्हो॥
सीता पै मंदिर झरवाए। चूल्हो चौको कलस भराए॥
पात मांगि पत्राबलि कीन्ही। तब हरि बहुत रसोई दीन्ही॥
प्रेर्यौ एक हुतो हत्यारो। उन लोगन को है भइयारो॥
सुनि कीरतन तहं आयो सोई। बन में रहै न देखै कोई॥
पीपा के पग लाग्यौ धाई। मैं हत्यार्यौ मारी गाई॥
मूंड मुंडायो गंगा जाई। सीधो कियो न जेमै भाई॥
दया करो मोहिं लीजे पांती। अब मैं तजी आपनी जाती॥
तुम सों बोलि सकै नहिं कोई। मेरे मन में निहचै होई॥
तब ही स्वामी सौंज मंगाई। वा के जिय की संक मिटाई॥
चाउर चून दालि घृत षांडा। बहुत भरे गोरस के भांडा॥
करी रसोई लाग्यौ भोगू। छन में भयो जीमें सब लोगू॥
हरषि हरषि जीमैं संन्यासी। कुटुंब समेत गांव के बासी॥

॥ ८२ ॥

पीपा ता कों दोष गमाई। राम कहे सब ही गति पाई॥

कोटिक हत्या देहि मिटाई। इक हत्या की कहा चलाई॥

ऐसे राम तबकुं थल कीन्हा। देश देश जीवन गति दीन्हा॥

स्वर्ग रोहण ।

कलि जुग वर्णन ।

श्री कृष्ण उवाच ।

कहै कृष्ण सुन पंडौं राई । कलि मै प्रथी पलंगी आई ॥
कलि मै सत छाडैगा लोगा । तिन्है बहुत ब्यापैगा सोगा ॥
सत जुग त्रेता द्वापर भनिये । येक बार वै ऐसा लुनिये ॥
जो निपजै तो बीसै राई । हाहाकार करि मैं लुगाई ॥
सुनो जुधिष्ठर कलि ब्योहारा । जैसी गति चालै संसारा ॥
सत्त न सील तहां आचारू । ऐसें होय प्रथी ब्योहारू ॥
बार बार हों बिनडं सेवा । पुरुष हिं नारि न गिनिहै देवा ॥
पुत्र न कह्या पिता का मानै । मन भावै सोई चित मै आनै ॥
और सुनो इहिं कलि का जुगता । पिता सु पहलें मरिहै पूता ॥
अंत न जिवै सावका कोई । सेत केस वाहू कै होई ॥
येक माय कै जनमै पूता । ते कलि जुग मै होय अजुगता ॥
कलि मै न्याव देषि मुह होई । झूठी साषि भरै सब कोई ॥
कलि मै अलप बरषहै मेहा । हाली भीजै आधी देहा ॥

तुछ अंन उपजैगा राई। अति प्रानी भूषे मरि जाई॥
बरष दिना द्विज करै जु सेवा। तब घर बाम्हन जिमावै देवा॥
कलि के बिप्र जु घर घर फिरहीं। कछु यक लाज चित्त मन धरहीं॥
थोरा तृण उपजैगा राई। गौवैं जाय किर पती षाई॥
जग्य धर्म कलि बिरला होई। कलि मै सगा न कोई होई॥
कलि मै कन्या बेचैं बापा। महादुषी होहिं तिहि पापा॥
बिप्र देव भिक्षा परहरई। नीच जाति की सेवा करई॥
बिप्र न काहू हिये समोही। कोउ कर्म नाटि लर षोई॥
बिप्र हिं सकल करैं ब्योपारा। परहरिहैं कुल के आचारा॥
संध्या हीन रहैं सुष माना। बिप्र हिं तजैं बेद की काना॥
सहस करै बैठे जो रहई। जो न देयती पापी कहई॥
निंदा जाय बिरानी करई। कर्म आपने चित नहि धरई॥
बेद पुरान ग्यान परहरई। पर धन लेवे कों मन धरई॥
मूरष सठ बहुते नर होई। येक गुनी बिरला नर कोई॥
कलि जुग ऐसा धरनी धरै। पिता पुत्र की करनी करै॥
सौ मै येक जपैगा रामा। यसे होंहिं कलि जुग के कामा॥
बहु अकर्म कलि जुग मै होई। कलि मै बिप्र न मानै कोई॥
जा के चित जु राम पद होई। कबहू न कलि जुग ब्यापै सोई॥
मूरष न जान कछु ये बाता। कोइय न जानै जमपुर जाता॥
कलि समुद्र है सागर देवा। कबहु न करिहैं वै हरि सेवा॥
कलि के लोग कपट मन धरई। लेवे कों हरि सो नहिं डरई॥
मुकति काज कों तीरथ जाई। चोरया यह तहां कराही॥

ऊपर ऊपर हसिहैं ताहीं। कलि जुग माहि बिप्र बहु आहीं ॥
कहै कृष्ण सुनि पंडौं राई। कलि मै छत्री पौरुष जाई॥
दान धर्म ते चित न धराई। तीरथ जाय सु बणज कराई ॥
बेद पुरान करै नहि ग्याना। गनिका सब्द सुनै धरि ध्याना ॥
देहि दान तब सेवा लेही। निसप्रेही कों कोइय न देही ॥
कलि मै ऐसे ह्वैंगे ग्यानी। कहत राय सों सारंग प्रीनी ॥
कलि मै बेद तजैगे प्रानी। सुनै जाय ते रसक कहानी ॥
बिद्या पढै बिप्र जो थोरी। सभा मध्य गर्बै बहुतेरी ॥
छत्री करिहैं बहुत तुफाना। गर्बै मन काहू नहि जाना ॥
छत्री बिप्र गऊ ले बेचैं। बिप्र भाट बैरी करि चाहैं ॥
भागा जात मारिहैं ता कों। आयें सनमुष कोंन हाकू ॥
ब्राह्मन तनक छोति नहि मानै। नीच जाति कू घर मै आनै ॥
ऐसा ब्राह्मन कलि मै राई। बरनन कों कह्यो न जाई ॥
निधि के आगम करैं उपाई। उन को मर्म न पायो जाई ॥
लोग कहैं चुपराये बनिया। इन को मर्मन नाहीं जानिया ॥
सगे कठोर होहिंगे राई। इहि बिधि कलि जुग लोग रहाई ॥
कलि के बानिक होंगे धूता। हसिकै निंदा करैं तुरंता ॥
सगे हसाई तुरत करंता। सुनि हो राय कहैं भगवंता ॥
और जु कलि मै बिप्र हैं जेते ॥ धर्म नेम परहरिहैं तेते ॥
सालगराम जु तुलसी सेवा। जैहै जनम अकारथ देवा ॥
सो उजकहै ब्रत असनाना। कलि मै सूद्र धर्म कों जाना ॥
जथा सकति करि देहै दाना। सुनो राय कलि के परवाना ॥

किरति न मानै कलि मै राई। करै बहुत वै महा अन्याई ॥
न्यायअन्यायक नगर मझारी। कहैं कछू तो सनमुष गारी ॥
जे गुनियर ते थोरी आवा। सूद्र पुरुष के पूजें पावा ॥
कलि मै गुनी जु घर घर होई। नीच सुषी जानै सब कोई ॥
कलि मै जेते करैं पषंडा। सुनि हो धर्म पुत्र बल बंडा ॥
नगन न्हाय अरु मैलन रहैं। अरु दूजे की छांह न लहैं ॥
बल छल करकै जोरै दामा। ऐसे होंय कलि जुग के कामा ॥
कलि मै कोली नीच गंवारा। करैं जु सांग षड्ग हथियारा ॥
कलि मै दान देय तो निंदा। बिप्र करैं सम कहैं जु सुद्रा ॥
तातें बिप्र हिं आयो दोषा। थोरें बहुत न है संतोषा ॥
बिद्याहीन बिप्र बहु होई। घर घर फिरैं न मानै कोई ॥
पुत्र न करै पिता की सेवा। नीच लोग पूजेंगे देवा ॥
बाचांहीन पुरुष कलि ह्वैहैं। नारायन पंडी सो कहिहैं ॥
ब्राह्मन होय गनिका संग करिहैं। ऐसी कलि नारायन कहिहैं ॥
बुद्धिहीन छत्री कलि जानी। कहत राय सों सारंग प्रीनी ॥
ब्रह्म हिं घात करै जो कोई। पुनि पछिताय दान कछु देई ॥
झूठे बचन कहै सब कोई। लघु अकाज संतत कल होई ॥
संग ब्योहार मझार उबोई। सगा बीर कलि मै सुनि राई ॥
जेठे की नहिं सेव कराई। इहि बिधि कलि जुग कर्म कराई ॥
परबी तीरथ तजिहैं प्रानी। स्नान दान तें रहे जु प्रानी ॥
पिता न मन मै संका करई। पुत्र बेचिकर उदर जु भरई ॥
बिभचारी कलि के सब लोगा। ते करिहैं पित्रन के सोगा ॥

करिहैं लोभ मूल की सारा। पीपल के निंदक संसारा ॥
सूद्र जु हीन जुधिष्ठर राई। सो नहि बडो करै कठनाई ॥
राजा लोभ करेंगे घना। जस पर त्याग करेंगे अपना ॥
कलि के लोग न देषैं न्याई। लेंहि अकोर तब करें सहाई ॥
कलि मैं बहुत न मानै सास। उलटि देंहि वै बहुतै त्रास ॥
बुद्धि धर्म कलि माहिं चलाई। बेद पुरानन निंदैं राई ॥
कलि मै पुत्र ऐसा परभाई। मिहरी कारण मारैं माई ॥
कलि मैं गउ छीर तुछ देहीं। अंत न बछरा अपनो लेई ॥
और सुनो राज अजुगता। अंन षाय बापैं तजिहैं पूता ॥
मातपिता का धन हरि लेई। ले लुकाय मिहरी कों देई ॥
ससुरा हार बहू सौं भागैं। जेठा भ्रात बधू सों लागैं ॥
मातापिता न मानै कोई। सुनो राय ऐसी कलि होई ॥
सिष ही भोगैं गुरु की नारी। ये अजुगत कलि होहिं मझारी ॥
कलि मै बिप्र तजैं षट कर्मा। पालैं नाहि आपने धर्मा ॥
बिनि न्हायैं वै अन्न जु षाई। हरि पूजा चित नाहि धराई ॥
छाडैं कुल हि धर्म आचारा। पतरिया सों करि बिभचारा ॥
कलि मै कृष्ण देव परहरई। मोहनि मंत्र सौं चित धरई ॥
बिप्र हि देत बहुत करि लोभा। अतीत हि देत बहुत दुष होगा ॥
बिप्र न पावै कलि मै दाना। ब्रह्म भाट को राषैं माना ॥
दुरि दुरि जग्य करैं कलि माहीं। कहैं कृष्ण ऐसी कलि ताहीं ॥
झूठा कलि मै बोलैं जेता। कलि मै राय मानियें तेता ॥
साचो साध बहुत जो होई। ता कों राय न मानै कोई ॥

कलि मै गुनी न मानै कोई। नगन भूठ को आदर होई॥
सूद्र रूप जो मानस जेते। कलि मै गुनी जु होंहिंहें तेते॥
जा पै दर्ब प्रतक्षज होई। दुनियां आस करै सब कोई॥
सबै लोग धन संग्रह चहैं। मरि मरि मिटैं जु देन नहिं कहैं॥
जास प्रीति बहुत सी होई। तिस कों बहुत भलाई देई॥
करैं नीच संग्रह ब्योहारा। ब्रह्मा जात नहि वारन पारा॥
कलि जुग को जानियें नेसा। कपट रूप ह्वै फिरहि देसा॥
न्याय अन्याय करि जोरैं सामा। निस बासर जु लोभ सों कामा॥
मन का कठन न देत हरि प्रीती। हरि ले चोर अकारथ बीती॥
बिप्र बेद बिन जज्ञ जु कराई। सूद्र जनम इकीस औतरई॥
कलि मै लोभ करै सब कोई। नित नित चलन कपट का होई॥
कलि मै बापैं ठगिहैं पूता। ठग ठग होंहैं सुंजुगता॥
कलि मै हींन बचन जो कोई। लेकरि देन न चाहैं सोई॥
कलि मै पाप बर्त्तेगा देवा। पुत्र पिता की करै न सेवा॥
कलि के राय करैंगे कामा। सेवक राय मेटैंगे दामा॥
अपनी गोकुल जो नहि जाई। ले राजा उगलावै तांई॥
बिप्र दंड संचै भंडारा। कलि मै राय ऐसे ब्योहारा॥
कलि मै राय तजै हरि सेवा। उत्तम चहैं कुमारग देवा॥
बिरला बर्त्त येकादसी करैं। बिरला तीरथ कों मन धरैं॥
कलि मै गर्भ डारि दे नारी। नारि रांड भोगैं बिभचारी॥
साचा बोल न बोलैं राई। बिधवा लेंगी घर हिं कराई॥
कलि मै मृत बंधु बिस्वासी। घर घर बंधु करैं पैकासी॥

बिप्र न कलि मै मानै कोई। धर्म कथा कलि माहिं न होई॥
हरि की पूजा अक्षत करई। सौंधा पुष्प गनिका कै धरई॥
कलि मै टों नाटन मन जानै। बेद पुरान न कोउ मानै॥
घात बाद बहु कलि मै होई। नर्क पाप तें डरै न कोई॥
जहं स्वारथ तहं देहिं बुलाई। निसप्रेही मानै नहि राई॥
स्वारथ जान ता कों कछु देई। देषि अनाथ ताहि हसि लेई॥
कलि मै बिप्रन नाहिं संतोषा। ले हि पती ग्रह होंहिं न मोषा॥
होम जग्य कछु दान न कांही। गंधर्व होय कलि मै औतरही॥
तिस कौं और धूत सो मानै। सती साध कलि मै न पिछानै॥
जिहि तें हर तपरत होय मोषा। ताहि यकादसि लावै दोषा॥
कलि मै सूद्र न्हायकरि षांई। ब्राह्मन सीतल जल हिं उराई॥
करैं बिप्र कृषी ब्योपारा। यों कलि मै जु चलै संसारा॥

ऊषा चरित्र ।

चौपई ।

बिदुर देस श्रोणतपुर गांउं । बानासुर राजा को नाउं ॥
तास कुंवरि ऊषा है सुंदरी । रूपवंत अति सब गुन भरी ॥
तिहिं नृपति सों कहै लडकाई । जुदा महल मोहि देहु कराई ॥
महल अनूप बन्या अति भारी । सषी चतुरि राषी रषुवारी ॥
असी सहस जोध्या रषवारे । अति सुजान नृप राज दुलारे ॥

दोहा ।

सुष सोवत नहिं सुंदरी सुपनै निरषि कुंवार ।
भई प्रीति उर द्रिगन मिलि बिधना लिषी लिलार ॥

चौपई ।

उहिं नैंन उनि सुपना देषा । कुंवरि प्रीति तिहुं लोक बिसेषा ॥
भयो प्रात कछु कही न जाई । ऊषा कुंवर के रूप अंघाई ॥
तन सों तन मन सों मन हीया । चार पहर सुष ऊषा किया ॥
कुंवरि रही छबि देषि लुभाई । अनुरुद्ध देषि पह्या मुरझाई ॥
कौंन भांति बिधि किया संजोग । अब बिछुर नहीं होय बियोग ॥

॥ ८१ ॥

दोहरा।

कुंवर हेत अति कामिनी कामिनि हेत कुमार।
सुपनै मै प्रीतम मिले बिछुरत नहीं संभार॥

चौपई।

उठी कुंवरि कछु नाहिं संभारा। छिन छिन उठै बिरह की झारा॥
लै उसास अंसुवां भरि आवै। कुंवरि बिथा कोमर मन पावै॥
छिन छिन प्रीति बढै अधिकाई। अति ब्याकुल चित रह्यो न जाई॥
छिन भीतरि छिन बाहरि आवै। झरहिं नैन पल पलक न लावै॥
उरें तन मन मोरें रहई। हिय की पीर न काहूं कहई॥

दोहरा।

छिन उदास प्रीतम बिना निरषि भरै द्रिग नीर।
अंतर जरि पिंजर जरै प्रबल बिरह की पीर॥

चौपई।

षिन रोवै षिन गावै सोवै। हिये अग्नि तन बिरह संतावै॥
कुसम सेज पर जो पग धरई। रोम रोम बेदन संचरई॥
मन चिंता करि त्रिया बियोगी। जैसें ध्यान रहै धरि जोगी॥
जिहिं तन मै बिरहा संचरई। सो प्रानी तन जीवत मरई॥
बिरह की चिनगी जिह तन पर जरै। छिन छिन अगिन अधिक पर जरै॥

दोहरा।

बस्त्र मलीन उदास चित हिय उसास भरि लेय।
भूष नीद लज्या तजें बिरही लछन येह॥

॥ ९२ ॥

चौपई

बिरह बान लाग्या अति भारी। दिष्टि न आवै प्रेम पियारी॥
गिरै परै बैठै बिकरारा। निस दिन उठै बिरह की झारा॥
कबहूं कहै बात तुतलाई। कबहूं चित ब्याकुल ह्वै जाई॥
बैद देषि कछु मरम न पावै। कृष्ण देव सों आनि सुनावै॥
औषधि मंत्र न येको लागै। फुरै न येकै सो गुन जागै॥

दोहरा।

बिरह बान जिहिं लागई सो जानै यह भेव।
कुंवर बिथा निरवारिया सो देवन का देव॥

चौपई।

कुंवर बात तुम छाडौ मीता। अब तुम कहो कुंवर दुष चिंता॥
उषा बिकल परी मुरझाई। चित्ररेष तब पहुंची आई॥
निरषी कुंवरि धरनि मै परी। चितवै इत उत बिरह की जरी॥
बदन छिरकि तब कुंवरि जगाई। बोली भरम उठी अंगराई॥
काहे उषा भई अयानी। छाडि कुंवरि तू प्रेम कहानी॥

दोहरा।

तू बाला सन सुंदरी रस की छाडौ चिंत।
प्रेम कहानी जो कथै सो ह्वै जोबनमंत॥

चौपई।

मेरी सिष सुनि राज दुलारी। मात पिता की प्रेम पियारी॥
बिरह रीति कित जानै बौरी। निज पग धरो प्रेम की पौरी॥
प्रेम पंथ है षरा दुषारा। सीस जात नहिं लागत बारा॥

जो देषै श्री रानी राय। पहलें बकुमी मोहि गउाय ॥
जीव हानि अब हीं दुष होय। जब हिं राय सों कहि देसोय ॥

दोहरा।

दासी निपट सयान है मन मै करै बिचार।
बिरह भुवंगम जो उसी तिहिं को नहिं उपचार ॥

चौपई।

तब उषा मन करै संभारी। छिन छिन उठैं बिरह की भारी ॥
मन ब्याकुल तन नाहिं संभारी। चित अंतर तें टरै न टारी ॥
नैन भरै उर लेय उसास। सषी छोडि जीवन की आस ॥
दुष संताप कछु कह्या न जाई। बिरह पीर चित ब्याकुल ताई ॥
सषी कहैं सुनि राज दुलारी। मो सों कथा कहो निरवारी ॥
हों तन सषी तिहूं पुर गामी। सकल जीव को अंतरजामी ॥

दोहरा।

तेरी बिथा दुलारिये हौं मेटौं छिन मांहि।
मो सों कहौ पियारिये जिनि करि मेरी बांहि ॥

चौपई।

कुंवरि कहै तुम सुनहु पियारी। तो सों कथा कहौं निरवारी ॥
आज रैन मेरी लोयन लागी। पलक न लगी सबै निस जागी ॥
कुंवर येक सुपनै मै देष्या। कामरूप सुंदर चितरेषा ॥
औचिक आय प्रीति उनि कीनी। मन हरि लियो ठगोरी दीनी ॥
ऐसा सषी चरित उनि कीना। अंषियां बैठि काढि जिय लीना ॥

॥ ८४ ॥

दोहरा।

सुपने में सुष ऊपजा जागत बहु दुष हीन।
मनो काठ की काटिकै टूक कीआ कीन॥

चौपई।

जागत हीं उपज्या दुष भारी। मानो उर लागें कैवर कारी॥
कुंवर अनूप मेरे लोयन लागी। पलक न लगी सबै निस जागी॥
कहा कहीं कछु कह्यो न जाई। प्रान नाहिं उर अंतर माहीं॥
स्वास लेत पिंजर डिगमगई। छिन अचेत छिन जीवत मरई॥
सषी मोहि जो मरत जिवावो। वह मूरति मोहि लिषि दिषरावो॥

सोरठा।

रुधिर न रह्यो सरीर प्रेम मगन भई सुंदरी।
का जानै पर पीर जिहि घट बिरह न संचरै॥

चौपई।

चित्ररेषा बोली सुनि बारी। धीरज धरि मन माहिं पियारी॥
तीन लोक छबि लिषि दिषराउं। तू पहिंचानि पकरि मै ल्याउं॥
लिषे कुंवरि तब तीनौ लोका। इंद्र आदि देव देव बिबेका॥
गन गंध्रव मुनि लिषे जु जछ। सुर सब कीने बेर बिलछ॥
इन मैं नही कहै बर नारी। लिषे कोटि तेतीस कुंवारी॥

दोहरा।

तीन लोक बहुबिधि लिषे अति बहुरूप संवारि।
तिन मै निरषै सुंदरी नांही प्रान अधारि॥

चौपई।

बहुरि लिष्यो भुवलोक बनाई। लिषी द्वारिका पुरी सुहाई॥
लिष्यो कृष्ण त्रिभुवन को राजा। तिनै देषि कछु उपजी लाजा॥
बहुरि लिष्यो परद्दौंन कुंवारू। श्री अनुरुद्ध काम अवतारू॥
निरष्यो कुंवर देषि मन चीना। लाय प्रीति फेरा नहिं कीना॥
तब जाना अनुरुद्ध कुमारू। यहै प्रान जीवन आधारू॥

दोहरा।

सुंदर मूरति कर लई तन की तपति सिरानि।
देषि रूप चक्रत भई बुहुरि मिलि द्रिग आनि॥

चौपई।

लिषि मूरति ऊषा कौं दीनी। सुंदर दोउ नैन भर लीनी॥
यहै सषी हर लीन भंडारा। येही जीवन मूर हमारा॥
कहै सषी सुनि राजकुंवारी। यहै चोर बडा मति भारी॥
चित्ररेष कहै आया पाउं। बेग हि जाय कुंवर ले आउं॥
तब ही चलि उठि सषी सयानी। पुरी द्वारिका आय तुलानी॥

दोहरा।

कनक रतन मंदिर दिपैं दीसैं धजा अपार।
पुरी संचार न पावहीं मन मै करै बिचार॥

चौपई।

पुरी न पावै बेग संचारी। चक्र सुदरसन है रषवारी॥
छल बल जतन करै बहुतेरै। ते सब कछुव न आवैं नेरै॥
मंत्र जंत्र बहु भांति बनावै। भींतर नगर जान नहिं पावै॥

भूत प्रेत डंकनि सब आवै। जो देषै सो मारन धावै॥
दूती कहै ग्यान दे मोही। जो मागै सो देहौं तोही॥

दोहा।

पुरी संचार न पावही बहुत रही पचिहारि।
नारद आवत देषिकै मन मै करै बिचारि॥

चौपई।

चित्ररेष नारद पै आई। करि परनाम सीस भैं लाई॥
नारद रिषि बोलै सुनि नारी। कौंन काज कहां आइ कुंवारी॥
बोली नारि सुनो रिष राई। काज येक इहां मै आई॥
बानासुर की राज दुलारी। सुपनै अनुरुध देषि कुमारी॥
अति बियोग ता कै संग माती। नीद न परै द्यौंस अरु राती॥

दोहा।

भूष प्यास लागै नहीं मरै न जीवै नारि।
कबहूं मूरछि मौन धरि कबहूं उठै पुकारि॥

चौपई।

नैन नीर भरि भरि ढरि लेई। हिये जरनि बिरहा दुष देई॥
ज्यों ज्यों स्वास लेत अधिकाई। बिरह अगिन तन सही न जाई॥
भस्म होय छिन माहि सरीरा। बहुत टरै नैनन तें नीरा॥
दिन बीतै रजनी जब आवै। अति ब्याकुल छिन पलक न लावै॥
सीतल अंग न सुरति सरीरा। बिस भरि गयों न पावै पीरा॥

दोहा।

देषि बिपति अति कुंवरि की हौं आई इहिं गांवं।

॥ ८७ ॥

सो कछु भेद बताय हो महल कुंवर के जावं ॥

चौपई।

हसि नारद पूछी तब बाता। कौंन तात कौंन है माता ॥
चित्ररेष तब कहै बिचारी। प्रद्यौंन पिता अरु रति है माता ॥
है अनुरुद्ध कृष्ण को नाती। सुनो बात नारद बहु भांती ॥
जब गोपन की आवै बारा। तब तोहि होय पुरी संचारा ॥
गड रेन लागै तोहि देही। तब तू पावै परम सनेही ॥

दोहा।

जब रिष भेद बताइयो गई द्वारिका माहि।
कुंवर द्वार तब पूछिकै किहि मारग हम जाहि ॥

चौपई।

द्वार येक दासी दिषराई। दूती पहुंचि नगर मै जाई ॥
कुंवर तहां लेटे बिकरारा। छिन छिन उठै बिरह की भारा ॥
नैन नीर भरि लेय उसासा। दूती चली गई तिहिं पासा ॥
माया येक करी चितरेषा। आवत जात न काहू देषा ॥
पलंग पास ठाढ़ी बर नारी। कुंवर चिंत अति ब्याकुल भारी ॥

दोहा।

कुंवर पास पहुंची सषी मन आनंद कराय।
छल बल करि ले कुंवर कों कुंवरि मिलाऊं जाय ॥

चौपई।

दूती कहै कुंवर सुनि बाता। कहो साच काहे रंग राता ॥
हौं जानौं तिहुं लोक को भेव। मुनि गंध्रव दानो अरु देव ॥

जिहि तोहि प्रीति करी है पीरा। तिहि गहि लाउं तुमरे तीरा ॥
मन चिंता करि दूरि कुंवारा। ल्याउं आज सुपने की बारा ॥
षोलि नैन तब बदन उघारा। कौंन ठावं कहं तें पग धारा ॥

दोहा।

कुंवर जु चित ब्याकुल बिकल प्रान सुंदरी पास।
तब दूती के बचन सुनि भई कुंवर कों आस ॥

चौपई।

तब हिं कुंवर दूती सों बोलै। प्रान कपट हीये कर षोलै ॥
पठई कौंन कहां तें आई। कौंन सषी तू जान पठाई ॥
कौंन नगर तू बसा कुंवारी। अति चातुरि तोहि देषों भारी ॥
कहै कुंवरि तू सन हिं सहेली। मेरे प्रान अटक पर बेली ॥
सुपनै मै देषी सुकुमारी। लाय प्रीति दीना दुष भारी ॥
चित्ररेष हसी मन मांही। छल करि लेहुं कुंवर गहि बांही ॥
उठो कुंवर तुम चलो गुसांई। मिलहु आज प्रीतम कैतांहीं ॥
बचन लेहु मो पास कुंवारू। सुपने साच मिलाउं बारू ॥

दोहा।

बचन सत्ति हों बोलिहों सरै तुम्हारो काज।
सो सुपना तुम देषिया ताहि मिलाउं आज ॥

चौपई।

हसि बोला तब राजकुंवारू। हम तुम बीचि येक करतारू ॥
कहो भेद तुम मोहिं कुंवारू। कौंन नगर हैं प्रेम पियारू ॥
सत्ति बचन तू बोलि कुंवारी। बन परबत सब ठौर हमारी ॥

ल्याउं कुंवरि भेटो गहि बाहीं। ....
मै जानी निजु बिथा तुम्हारी। मिलो आज सुपने की बारी॥

दोहरा।

कुंवर जीव तब आई यों धीरज धरि मन मांहि।
कौंन ठौर है सुंदरी दौरि गही उठि बांहि॥

चौपई।

चित्ररेषा बोली तिस बारा। सुपना कहाय न साच कुंवारा॥
मै तो कही बात की बातां। ....
बहुरि कुंवर बोल्या सुनि नारी। साच हिं कहो अगिन पर जारी॥
अति कठौर तोहि दया न आई। बिरह अगिन पर ज्यों दौं लाई॥
तब हीं कही दूती निजु बाता। श्रोणतपुर ऊषा रंग राता॥

दोहरा।

बिरह बिथा व्याकुल बिकल तिहि तें तोहि अपार।
बिधना नै बानी रची बाढो प्रेम अपार॥

चौपई।

बानासुर राजा का नाउं। श्रोणत नगर बसै उस ठांउं॥
ता की कन्या ऊषा नारी। रूप रंग बिद्या दस च्यारी॥
जुदा महल कंचन चौबारा। असी सहस जोधा रषुवारा॥
चींटी पाव संचारै नांही। सो प्रीतम जु बसें उस ठांई॥
जो तुम चलो बेगि लै जांउं। उर अंतर की तपति बुझाउं॥

दोहरा।

सहस येकादस जोजन हि निकटि समुद्र कै तीर।

चलौ कुंवर लै जाउं हौं जो मनि बांधो धीर॥

चौपई।

कुंवर कहै तुम चलो पियारी। दिन दिन बिथा होत है भारी॥
चित्ररेषा बोली तिस बारा। निमष माहिं लै जाउं कुंवारा॥
चली उठाय कुंवर गहि बाहीं। अति आनंद भई मन माहीं॥
अति चातुरि रहसी मन माहीं। बेगवंत आई उस गांईं॥
लै मंदिर ऊषा कै गई। कुंवर सहित तहं ठाढ़ी भई॥
चहुं देष्या जब निरषि कुंवारू। बन पब्बत तहं अगम अपारू॥
बिलमो कुंवर नेक इहिं ठांई। हौं ऊषा कौं पूछौं जाई॥

दोहरा।

पौरि पासि ठाढ़े कुंवर मंदिर गई पियार।
चहुं दिस चक्रत पर रहौं तन मन नाहि करार॥

चौपई।

चित्ररेष तब देष्यो जाई। कुंवर रेष बिरह अधिकाई॥
सषी येक जो दीपक कराई। बिरह रूप कछु समझ न परई॥
ऐसे चरित नारि जब देष्या। सेज निकट ठाढ़ी चितरेषा॥
तब चितई ऊषा मन माहीं। चित्ररेषा संग प्रीतम नाहीं॥
कुंवरि सेज तब उठी रिसाई। कहो सषी इकली क्यों आई॥
आस लागि मै राषे प्राना। तैं तो कपट रूप मन माना॥
अति कठोर तोहि दया न आई। बिरह अगिन फेरि दौं लाई॥

दोहरा।

बचन लागि सुनि मै सषी दिन बहु गये पचिहार।

जिन निरास करि डारई बूडत लेहु उबार ।

चौपई ।

उमडो बिरह समुद अधिकाई । वा की लहरि सही नहि जाई ॥
मैन सकल मे मंद चलावै । बिन प्रीतम कोउ निकटि न आवै ॥
बिरह समुद अधिक अति आई । बूडि मरै पावै नहि थाही ॥
घर अरु सेज टूभर भई सोई । रजनी सकल सिराउं रोई ॥
कबहूं प्रेम मगन तन दहई । कबहूं हाय हाय करि रहई ॥
कबहूं चित ब्याकुल भई रोवै । कबहूं प्रेम मगन भई सोवै ॥
चित्ररेष गहि बाह उचाई । करि मनुहारि हिये लै लाई ॥

दोहरा ।

चित्ररेषा हसिकै कहै प्रेम प्रीति निजु पागि ।
सुनो कुंवर अब कुंवरि मिलि बूझि बिरह की आगि ॥

चौपई ।

उठी कुंवरि रहसी मन माहीं । तुम प्रीतम गहि ल्यावो बाहीं ॥
चित्ररेषा तब पहुंची तहां । राजकुंवर बैठे हैं जहां ॥
कही तबै कुंवर पै आई । राजकुंवरि मंदिर नहिं पाई ॥
सुनी बात गिरि पर्यो तुरंता । कवन काज कीना भगवंता ॥
सूके अधर बदन कुमिलाई । भयो अकाज सषी हम जानी ॥
चित्ररेषा तब कर टक टोरै । प्रान नही सब घर भकभोरै ॥
निकटि सषी बैठी पछिताई । जानो घरी काल की आई ॥

दोहरा ।

बिकल भई तब देषिकै बहुतै भई निरास ।

काम काम टक टोर जग केकुं न आवै सास ॥

चौपई।

तब हिं कुंवर बोल्या उठि बानी। कौंन षोट तोहि पासि सयानी ॥
अति कठोर तोहि दया न आई। बिरह अगिन तन कूक जगाई ॥
तेरा मन हम कपटनि जानी। तो तेरे संग किया पयानी ॥
अब तुम सषी बात कहु साची। बोली प्रीति कहो मत काची ॥
सुनो कुंवर यह राजदुवाहू। कैसें होय तुमै पैसाहू ॥
उठहु चलो तुम कुंवर गुसांई। मिलो आज प्रीतम केतांई ॥
चले कुंवर मंदिर मै गये। उषा निरषि नैन भरि लिये ॥
चित्ररेष ज्यों चित्त जगाई। उठी संभार मिलन कों धाई ॥

दोहरा।

निरषि प्रान सीतल भयो चित्त रह्यो तिहिं बोर।
नैनन लागी चटपटी जैसें चंद चकोर ॥

चौपई।

निरषत कुंवर बिकल है पाई। तब तिनि सषी करी चतुराई ॥
चित्ररेषा तब देषि लजानी। परम चतुरि जिय माहि सयानी ॥
उठी सषी तब बाहरि आई। तब हिं कुंवर सों करि चतुराई ॥
कहो कुंवर कहां तें आये। राजमहल क्यों आवन पाये ॥
तैं तो कीनी बहुत ढिठाई। साच हिं कहो कुंवरि फिरि जाई ॥

दोहरा।

असी सहस रषवार हैं सषी बीस दास सोय।
अब हिं षबरि सुनि पायहैं जियत न छाडै कोय ॥

दोहरा ।

कुंवर बात साची कहौं अति कठोर है राय ।
जब तुहि आनि संतावही मेरौ कछु न बसाय ॥

चौपई ।

कुंवर कहै तुम सुनहु कुंवारी । क्या उर मोहि दिषावै भारी ॥
सुर असुर जीतन नहि पावै । नर बपुरा सनमुष नहिं आवै ॥
तोहि सोच काहू की नांही । ....
कृष्ण देव जाहीं औतारी । तू क्यों मोहि डरावै भारी ॥
कुंवर हस्या दीनी गलबांही । हसी कुंवरि चितई मन मांही ॥

दोहरा ।

कुंवर बडाई क्या करौ सुनि पावैगो राय ।
रहक सुष के कारनै डरै मोहि गडाय ॥

चौपई ।

पितादत्त हौं दीनी नांही । छाडि कुंवर मेरी गलबांही ॥
छाडि हाथ तैं मन भय राषी । चांद सूर दोऊ हैं साषी ॥
करि बिवाह मन भयो अनंदा । ज्यौं तरुवर मै बिगसे चंदा ॥
कर बीरी ऊषा कर लीनी । हसे कुंवर तब मुष मै दीनी ॥
कुंवर पान अप हाथ संवारे । ऊषा मुष दीने उजियारे ॥
....
....
....
....

दोहरा ।

जब दल माहू बाजियो सबद पर्यो नृप कान ।
असुर राय मन थरहर्यो सोचत भयो बिहान ॥

चौपई ।

सकल रैन जो सोच बिहानी । प्रात भयो उठि मजलस ठानी ॥
महता मंत्री लिया बुलाय । तिन कों नृप पूछै समझाय ॥
यह बणिजारा कित तें आया । पूछौं कौंन बसत भरि ल्याया ॥
बैल गौणि सूर की नहि साथी । हींसैं तुरी चिंघारै हाथी ॥
बणिजारा माहू कब देई । लादै गौनि नगर सुधि लेई ॥
सब मंत्री मिलि कीन जुहारा । अति चातुर तब दूत हंकारा ॥
तुम दल की सुधि ल्यावो जाई । कौन पुरुस यह उतर्यो आय ॥
राजा चौंकि अचंभे रह्या । मंत्री मंत्र सरस जब कह्या ॥
चल्यो दूत नृप कों सिर नाई । कृष्ण मंदिर मै पहुंच्यो जाई ॥

दोहरा ।

कोटि भान मंदिर दिपै सोभा सरस अपार ।
देषि दूत मन थरहर्यो मन मै करै बिचार ॥

चौपई ।

गयो दूत तब राजदवारा । सुर नर मुनि जन देषि पियारा ॥
कनक जटित रथ धजा बिराजै । तिन की चमक देषि रबि लाजै ॥
रथ हथियार सूर की पांती । बन्यो कटक चटि जानो राती ॥
रण मै चहुं दिस घुरैं निसाना । देषि दूत मन माहिं उराना ॥
बन्यो बंजार चहूं दिस दीषै । राजकुंवार सरास न सीषै ॥

इंद्र अपछरा गुनी अनंता। सूर सकल दीसैं बिगसंता ॥
फिर्‌यो दूत देष्यो चहुं फेरा। दल को अंत न पावै नेरा ॥

दोहरा।

दूत कहै प्रीतम सुनो तुम आये किहिं काज।
दल को अंत न पावई कौंन ठौर को राज ॥

चौपई।

दूत कहै आये किहिं काजा। कटक अनंत बहुत बहु राजा ॥
पुनि आयो यह कटक अंदेसा। कुंवर येक अटक्यै तुम देसा ॥
जा कारन जादौं चढि आये। बंधे कुंवर तोहि नगर बताये ॥
सुनिकै दूत राज पै गयो। लै संदेस राय सों कह्यो ॥
राजा पूछै कहु समझाई। कौंन पुरुस यह उतर्‌यो आई ॥
कहै दूत तुम सुनो भुवाला। कृष्ण देव आये यह काला ॥
कुंवर काज जादौं चढि आये। कटक अनंत साजि दल ल्याये ॥
आये राय बली वै जादौं। गज मदमतन उठी षुर कादौं ॥
प्रबल कटक कछु कह्या न जाई। राजद्वार सब गंधर्ब छाई ॥

दोहरा।

ठौर ठौर मानिक दियें अरु झूलैं मैमंत।
राजद्वार गंधर्ब रहै षेलत सदा भसंत ॥

दोहरा।

सकल असुर मिलि बैठिहैं मंत्र करैं इहिं बार।
साज करो तुम आपना हस्ती घुर हथियार ॥

चौपई।

जाके बाजे बाज पुनि दीने। कारहि साज पुनि आग्या लीने ॥
चले न्याय सिर सैनापती। बने असुर माथे चढि रती ॥
चल्या कटक नृप कों सिर नाई। आगे चलत न पाव पराई ॥
उठि देषौ तुम कटक संवारा। सजें कटक घोरा हथियारा ॥
असी सहस बाजे तहां बाजें। हाथी कोटि तेतीसों गाजें ॥
येक अर्ब तहां सूर सुजाना। दल थंभन को परे सधाना ॥
सैन नरेस लछ परधाना। पायक अर्ब तहां सूर सुजाना ॥
अति प्रबीन राजा हितकारी। कटक प्रबल जहां जुरे अपारी ॥
आस पास सब सैंन संवारी। सहू बाहु की सैंन हंकारी ॥
तब निज दूत नगर मे गये। राजद्वार जा ठाढे भये ॥
नमसकार कियो प्रतिहारे। गयो जहां बैठो है राई ॥

दोहा।

करि जुहार ठाढो भयो बानासुर कहि बात।
कौंन काज आये यहां हमै कहो कुसलात ॥

चौपई।

कहै दूत सुनो मो पासी। हों पठयो जादौं अबिनासी ॥
द्वारावती जदुनाथ मुरारी। आय परे लीला औतारी ॥
समुद तीर द्वारिका नाउं। दक्षिन देस कनकपुर गांउं ॥
सहस येकादस जोजन आही। मन जन देषे पावे थाही ॥
कृष्ण पुत्र प्रद्यौंन कुंवाहू। तिन कै येक अनुरुद्ध अवताहू ॥
ऊंची अटा कुंवर पौढाये। लेइ गयो कोई दूत चुराये ॥

हाहाकार भयो पुर माहीं। नारद षबरि दई पुनि ताहीं ॥
सो बालक तुम नगर बताये। जा कारन जादौं चढि आये ॥
हौं पठयो जदुनाथ गुसांई। कुंवर षबरि ले आवो जाई ॥

दोहा।

भयो हरष चित राय के श्रवन सुनी यह बात।
चोर येक पकऱ्यो हमै निसां महल मै जात ॥

चौपई।

देषौं ताहि आयस जो पाउं। यह संदेस ले क्रष्ण सुनाउं ॥
चल्या दूत जो आग्या पाई। तुरति कुंवर पै पहुंच्यो जाई ॥
देषे कुंवर बंधे नागफांसी। कौंन काज कीना अबिनासी ॥
कुंवर नैन भरि आये पानी। सुनी कुंवर सेवग की बानी ॥
बोल्या कुंवर कौंन बिधि आये। कहै दूत जदुनाथ पठाये ॥
आये क्रष्ण सहित चलि जादौं। ....
भय जन करो कुंवर मन माहीं। तुमै छुडाय कोटें नृप बांहीं ॥
आग्या दई कुंवर फिरि जाई। मेरो सब दुष कहो सुनाई ॥
दादा पिता कहो परनाम। भल बात आये इहिं गाम ॥

दोहा।

लाज भई सुनि जीव मै कछु हरष मन माहिं।
सुनि पाई उषा जबै दौरि गही उठि बांहिं ॥

चौपई।

दूत देषि जादौं पै गये। कुंवर प्रनाम सबन कों किये ॥
पूछी बात निकटि गुहरावा। कहो दूत देषन क्यों पावा ॥

तब बोल्या निजु दूत गुसांई। प्रथम राज मह पहुंच्यो जाई॥
कहे सकल तुमरे ब्योहारा। तब मै पूछी कुंवर की सारा॥
राजा दूत साथि करि लीना। तब हीं जाय कुंवर मै चीना॥
कुंवर बंधे देषे नागफांसी। परम दुषी अति चिंत उदासी॥
नैन नीर ढरि ढरि बहु रहई। अंन पान कोई नहि देई॥

दोहा।

सुनिकै कृष्ण अति थरहरे कुंवर दुषी निजु जानि।
कहो राय सों जायकै देह कुंवर कों आनि॥

चौपई।

चल्यो दूत राजा पै जाई। कहै बात नृप सों समझाई॥
ले मिलि कुंवर करो सनमाना। नातर माचैहै घमसाना॥
सुनी बात नृप उठो रिसाई। जाहु दूत क्यों करो ढिठाई॥
मारों कहा दूत सुनि बातां। कहो जाय जिय की कुसलातां॥
दिन अनेक अंत की षाई। उन की मृत्यु इहां ले आई॥

दोहा।

प्रात काल उठि नृप कहै कहा करो तुम रार।
आय मिलो कछु देयकै नातर डारों मार॥

चौपई।

फिरिकै दूत कृष्ण पै आवा। करि जुहार पुनि सीस नवावा॥
कृष्ण देव चितयो मन माहीं। चतुर दूत बोल्यो कछु नाहीं॥
कही कहा तुम कों निजु राई। कहो दूत मो सों समझाई॥
सुनो बात जादौं पति राई। समझत नाही असुर अन्याई॥

निकटि कृष्ण बलि दई दिषाई। देषि रूप समझ्यो तब राई॥

दोहा।

अति सोभा परताप बड स्याम गौर अभिराम।
पीतांबर पट वोढिकै निजु जन पूरन काम॥

चौपई।

अति प्रबल असुरन को राई। देषत तब बोले सिर नाई॥
नीलांबर पट वोढें जाई। कृष्ण देव नै अति छबि छाई॥
बालक कोंन काज तैं बांधे। आनि चुराय कहां तें सांधे॥
राजा जो अधमाई करै। जग अपजस पुनि नीकैं परै॥
ऐसे काम किये अराधी। राजा होय अबिद्या साधी॥

दोहा।

नागफांस सों बांधियो कोमल राजकुमार।
तुम सर पापी के नही जग कठोर हत्यार॥

चौपई।

सुनो बचन कृष्ण परबीना। को बाक हरि लियो अचीना॥
बडो ढीठ यह चोर अन्याई। पैठा निस हि महल मै जाई॥
नागफांस मै बांधे ध्याई। ....
वा बालक की कहा चलावौ। जीव आपनै जांन न पावौ॥
ऐसा को है आनि छुडावै। ....
बरषन लागे बान अपारा। मानो मेघ परै असरारा॥
जाहीं पति छोडैं बान अनंता। बान बान मिलि गये तुरंता॥
उडि षुरषेह अकासैं गई। दिन तें राति पलक मैं भई॥

लैं सूर कर अपने जाई। सूझ तन हिं अपने न पराई॥

दोहा।

उमडि मिले दोउ दलैं चहुं दिस मारहिं मार।
धनुष छाडि तरुवारि गहि कोई गहे कटार॥

चौपई।

दल मै सूर करैं किलकारा। परे बहुत बरछन की मारा॥
कोउ हथियार धर परैं तुरंता। कोउ रथ चूर करैं भगवंता॥
घोरा कट कट किधर परैं। कोउ सिर धर लोटैं घैरं॥
कोउ टेकिकै ठाढ पुकारैं। कोउ भैरं रुधिर बिष उारैं॥
कोउ सूर अधर धर टेकैं। कोउ हाथ दोउ कर टेकैं॥
बहुते जुद्ध उठा रण माहीं। जहं देषैं तहं मारन जाहीं॥

दोहा।

दुंद जुद्ध भारी भयो कह्यो कौंन पै जाय।
इतै कृष्ण जादौं पती उत असुरन को राय॥

चौपई।

श्रोणत नदी भई अपारा। लोटैं सूर परे बिकरारा॥
तहां गीध गज मद कमंधी। हौं नहिं जानो उठि सर संधी॥
जोधा दैत करैं किलकारा। उमडी नदी रुधिर की धारा॥
धनुष टूट जनु सीप समाना। बसैं भूमि भूतल पटाना॥
गीध चील्ह औ काग कराला। अति अंचाय जंबुक प्रतकाला॥

दोहा।

जोगनि रुधिर अंचात हैं रुंडमाल कर लीन।

बहुत जुद्ध हर कीन्है हैं सो बर पूरन कीन ॥

चौपई।

इंद्रादिक सब कौतिक आये। जै जै करत सकल सब धाये ॥
उमडि अकास कों गये पलाये। बानासुर माया करि धाये ॥
बर्षै आगि असुर अन्याई। तब हिं सुदरसन दिया पठाई ॥
तब हि चक्र बानासुर घेरा। बीच हि असुर फिरै चहुं फेरा ॥
काटी बांह सकल द्वै राषी। बानासुर भागे सिव साषी ॥
महादेव पै जाय पुकार्यो। मेरा संकट तुम निवारो ॥
तब सिव संकट बिथा निवारी। श्रोणतपुर मै आय पधारी ॥

महाभारत।

शकुन्तलोपाख्यानं।

रोलाछन्द।

वैसंपायन उवाच।

भयो पौरव बंश मे दुष्यन्त भूप महान।
करी सागर अन्त लों बश भूमि सब सुखदान॥
बंश सङ्कर होत नहिं करत कोउ पाप।
सबिधि पालत प्रजा सिगरी भरो परम प्रताप॥
धर्मरत धर्मार्थ पावत प्रजा जेहि के राज।
चौर भय को क्षुधा भय को मिटो हेतु दराज॥
बर्ण रमत स्वधर्म मे सब बिना भय संचार।
समय लहि परजन्य बर्षत सरस सश्य उदार॥
भई रत्न समृद्ध भू अति मुदित जन गण सर्ब।
भए बिप्र स्वधर्मरत नहिं अनृत बोलत खर्ब॥
भूप बज्र समान तन को युवा अति मतिमान।

दोर्दण्ड पर धरि गिरि सकानन फिरत जो बलवान ॥
चतुर्बिधि को गदा युद्ध समेत शस्त्र अनेक ।
भयो ता को परम बेत्ता बीर भूपति एक ॥
दूरस्थ अरि पै गदा केरो छोडिवो प्रक्षेप ।
अरु समीपस्थ हि कोटि करिकै हनन सो बिक्षेप ॥
बहु अरिन माहि घुमायकै चहुं दिशि गदा हि सक्रोध ।
जो हनन ता कों परिक्षेप सु कहत परम सबोध ॥
अरु हनन जौंन गदाग्र सौं है हांकि हूल चलाय ।
बिधि अभिक्षेप सु कहत ता कों बुधन के समुदाय ॥
गज हय रोहन मे चतुर अति बिष्णु सम बलवान ।
भयो भूप दुष्यन्त तेजस भरो भानु समान ॥
अक्षोभ्य सिन्धु समान भोसु सहिष्णु धरणी रूप ।

जनमेजय उवाच ।

सु शकुन्तला अरु भरत संभव कहहु सु मुनि अनूप ॥
सु शकुन्तला को लही जिमि दुष्यन्त भूप महान ।
सुनो चाहत तौन तुम सों कहहु सु मुनि सुजान ॥

बैसंपायन उवाच ।

साजिकै चतुरङ्ग सेना भूप सो बर बीर ।
चलो मृगया हेतु बन को एक दिन रण धीर ॥
नाग बृंहित स्यन्दन सु धुनि अश्व ह्रेषित घोर ।
सुभट नादन सों भरो नभ भूमि चारो ओर ॥
चढि प्रासादन लखैं पुर तिय भूप शक्र समान ।

सुमन बर्षहिं भूप ऊपर भरि मोद महान ॥
करहिं नाना भांति सों ते परम मंगल गान ।
चले कढ़ि सह बर्ण चारो करत जयति सुजान ॥
जायके कछु दूरि पौरन कों कह्यो इमि भूप ।
जाहु निज निज धाम कों तुम धारि मोद अनूप ॥
सुपर्ण मे चढ़ि भूप स्यन्दन भयो परिसर पार ।
बजी दुन्दुभि पटह भेरी भरो शब्द उदार ॥
लखो नन्दन सदृश बन घन गए ता के पास ।
घेरि लागे करण मृगया भूप आनद रास ॥
सिंह व्याघ्र बराह मारि मृगन के समुदाय ।
करो मन्थन बिपिनि को सह बीर सुभट सहाय ॥
बचे ते नहि बान गोचर भए जे बनजीव ।
निकसि भागे सिंह बाघ बराह तजि बन सीव ॥
हनत मृग दूरस्थ बानन्ह निकट जे चलि जात ।
तिन्हैं डारत मारि छिति पर करी सु खड्ग निपात ॥
हने नाना शस्त्र सों लहि बन्य जीव अनन्त ।
रचो मृगया रङ्ग सों दुष्यन्त पृथिवी कन्त ॥
भाजिके बनजीव प्यासे गए सरिता पास ।
लहत जल नहि गिरत मूर्छित होय पाय प्रयास ॥
किते भक्षत मांस मृग को सुभट भूखे जौन ।
भजे सुण्ड लपेटिके गज भए घायल तौन ॥
मूत्र और पुरीष डारत भजे मद गज जात ।

मरहि धक्कान मारि तिन बहु करे मनुज निपात ॥
दुष्ट जीवन मारिकै क्षितिपाल अति बलवान।
करो शोभन तौन कानन मुनिन को सुखदान ॥

बैसम्पायन उवाच।

रोलाछन्द।

मारिकै मृग बृन्द तेहां खेलि मृगया भूप।
गए अन्य अरन्य कों अति सघन जौंन अनूप ॥
क्षुत्पिपासाकुलित सिगरे सङ्ग के बर बीर।
छोडि सोउ गहन जो नृप और कानन धीर ॥
परम रम्य सुहरित तृणमय लसति भूमि सुठार।
भरे सुमन समूह साखी सहित लतन उदार ॥
कूजि कलरव रहे जिन पैं गूंजि मधुकर घेरि।
होति भरि मकरन्द की जेहि दन्द भागत हेरि॥
बहुत सौरभ भार सों भरि भयो शीतल पौंन।
लसति सघन पराग धुन्धुरि परम आनद भौंन ॥
करत हैं भनकार भिल्ली कीर रव कल मान।
भरो अति आनन्द भूपति देखि बन सुखदान ॥
कुञ्ज सोहत सुमन पुञ्ज सु करत अलि गुञ्जार।
धाम काम बसन्त को मनु लसत सुषमा गार ॥
सुखद छाया सघन साखी भरे सुमन समूह।
लसत नाना रंग के द्विज किए जिन पर जूह ॥
बिना कण्टक फले फूले बिटप सघन उदार।

मदन ध्वज से भरे नाना रंग सुमनस भार ॥
भूप सम रितुराज जानत देखि सुषमा धाम ।
पवन प्रेरित मनहु बरषत सुमन बिटप ललाम ॥
लखत ऐसो बिपिनि भूपति गयो सरिता तीर ।
तहां आश्रम लखो मुनि को तपस तेज गंभीर ॥
लसत नाना वृक्ष जेहां ज्वलित पावक यज्ञ ।
गयो सो चलि निकट आश्रम परम भूपति तज्ञ ॥
बालखिल्य सु यती मुनि बर लसत जह तपधाम ।
लसत अग्नि अगार नाना परम रम्य ललाम ॥
मालिनी जहं नदी पुण्या लसति जा के पास ।
बन्य जीव सु सौम्य जेहां करे है सहवास ॥
देव लोक समान आश्रम पास भूपति जाय ।
पुण्य आश्रम देखिवे कों कियो मन सुखदाय ॥
नदी बेष्ठित परम आश्रम लसत सो अभिराम ।
बदरिकाश्रम सहित गंगा यथा पावन धाम ॥
कन्व काश्यप महा ऋषि के परम आश्रम पास ।
राखि सेना भट सबाहन भूप आनद रास ॥
संग सचिव पुरोहित हि लै उतरि रथ तें भूप ।
चलौ देखन कन्व ऋषि कों ज्वलित पावक रूप ॥
देखि आश्रम की सु शोभा भयो हर्षित भूप ।
ब्रह्मलोक समान शोहत भरो तेजस रूप ॥
पढत हैं द्विज बेद चारो बरक्रमे पदयुक्त ।

यज्ञ नाना भांति ब्राह्मण करत हैं अति मुक्त ॥
सकल शास्त्र बिचार बेत्ता करत मत सिद्धान्त ।
लसत मुनि गण तहां बैठे ठौर ठौर हि दान्त ॥
देखिकै मुनि बृन्द कों दुष्यन्त भूप अनूप ।
ब्रह्मलोक सु प्राप्त जानो परम अपनो रूप ॥
कन्व काश्यप के सु आश्रम मे गयो क्षितिपाल ।
जास चहुं दिशि लसत मुनि गण मुकुत की मनु माल ॥
फेरि सचिव पुरोहित हि तजि गयो एक नरेश ।
तहां देखो कन्व मुनि नहि शून्य आश्रम देश ॥
कह्यो भूपति इहां कोउ बचन उच गम्भीर ।
सुनत आई निकसि कन्या श्री समान शरीर ॥
क्षीर निधि सो परम आश्रम स्वक्ष अमल अमन्द ।
निकसि आई तहां ते सु शकुन्तला जिमि चन्द ॥
तापसी को बेश धारें कियौ नृप सनमान ।
पूछि कुशल सु प्रश्न पूजा कियो अति सुखदान ॥
कह्यो सह मुसकानि आए कौन कारण भूप ।
कहहु सो हम करहि भूपति काज सो अनुरूप ॥
महा मुनि को चाहि दरशन आगमन यहि हेत ।
कह्यो ता सों देखि ता कों भरे आनद चेत ॥
गए हैं कहं महा मुनि बर कहहु सुन्दरि तौंन ।

शकुन्तलोवाच ।

गए हैं फल हेतु बन कों पिता मम मुनि जौंन ॥

बैसम्पायन उवाच।

रहो द्वै घटि आय जैंहै सु मुनि अत्र अनूप।
तपस तेजस भरी यौबन कहो ऐसें भूप॥
कौन हौ तुम कौन की हौ रूप ऐसो धारि।
करति आश्रम बास मुनि गण मध्य हे सुकुमारि॥
देखत हि तोहि अहे शुभगे भयो हृत मम चित्त।
तुम हि जानो चहत हौं सो कहहु सकल निमित्त॥
भूप के सु शकुन्तला तब सुनत ऐसे बैन।
कहन लागीं पूर्व सब बृत्तान्त बिहसि सचैंन॥
कन्व की हम सुता हैं दुष्यन्त जानहु भूप।
परमज्ञानी धर्म्मबेत्ता महातप के रूप॥

दुष्यन्त उवाच।

ऊर्द्धरेता महा मुनि कों कहत जगत प्रसिद्धि।
भई तुम केहि भांति ता के कहहु कन्या ऋद्धि॥

शकुन्तलोवाच।

यथा मेरो भयो सम्भव तथा सुनिए भूप।
भई जैसें महा मुनि की धर्म्मकन्या रूप॥
कन्व ऋषि सों आय ऐसे हि एक मुनि मतिमान।
कहो ऋषि जो कहो सो हम सुनो सकल बिधान॥

जयकरीछन्द।

कन्व उवाच।

कौशिक मुनि को तप अतिमान। देखि उरे मन मे सुत्राण॥

महातेज तप को बल पाय। मोहिन पद तें दैई गिराय ॥
कह्यो मेनका सों इमि बैंन। सुरपति भय सों भेर अचैंन ॥
तुम अप्सरन मध्य छबि धाम। काज मेनका मम यह काम ॥
होय हमारे अति उपकार। कौशिक को तप भङ्ग उदार ॥
जैसें होय काज तुम जाय। अहो मेनका मम सुखदाय ॥
सुरपति के सुनि बचन उदार। कह्यो मेनका सहित बिचार ॥
भरे महातप क्रोध अमान। तेजस पुञ्ज सदृश शिखि मान ॥
जास समुभि तप क्रोध बिधान। तुम हु उरत रहत सुत्राण ॥
हम जैहैं कैसें ता पास। औसि करैगो मेरो नाश ॥
मुनि बशिष्ठ के पुत्र अनेक। जेहि मारे नहि छोडे एक ॥
जन्मि क्षत्र कुल भो द्विज बर्ण। सृष्टि दूसरी लागो कर्ण ॥
तप बल तें जेहिं नदी अमान। करी कौशिकी पुण्य महान ॥
कौशिक गे तप करण बिशाल। परो कछू दिन मे अति काल ॥
ऋषि मतङ्ग ता को परिवार। पालन करो जीव गण मार ॥
भए व्यास सम ऋषि मतङ्ग। कौशिक आय कुशल लखि सङ्ग ॥
तुम सह ता सों यज्ञ कराय। आपु सोम तंह पियो उराय ॥
गो त्रिशङ्कु करि गुरु अपराध। दयो शरण ता कों निर बाध ॥
ऐसे जा के कर्म्म महान। सो न दहै कहि क्यौं सुत्राण ॥
सृष्टि नाश कारण समर्थ्य। बिश्वामित्र प्रताप अकथ्य ॥
हम सी नारि जितेंद्री ताहि। कौन भांति सों परसत चाहि ॥
जा सों उरत रहत सुर सर्ब्ब। ताहि जीतिहैं का हम खर्ब्ब ॥
तव शासन शिर राखि सुरेश। औसि जाइहैं हम तेहि देश ॥

रक्षा मो चिन्तहु सुरनाथ। फिरिहौं मै तित ता के साथ ॥
क्रीडा करत तत्र छल छाय। बायु उडाय देय पट आय ॥
महा कार्य मे मदन सहाय। करै कृपा करिकै सुखदाय ॥
सुरपति शासन लहिकै पौंन। वहन त्रिबिधि लागो तहं तौंन ॥
सहित बसन्त मदन तंह आय। खडो भयो शर धनुष चढाय ॥
गई मेनका तंह छबि धाम। करि कौशिक कों प्रथम प्रणाम ॥
भीरु भई क्रीडा बिस्तार। करि लागी तंह करण बिहार ॥
पवन दियो पट तास उडाय। बिहंसि समेटन लगी लजाय ॥
तोरति फूल भुजान उठाय। उरज उतंग निबिड दरशाय ॥
करि कटाक्ष मुनि की दिशि चाहि। नीवी सिथिल रहत गहि ताहि ॥
करि चख चपल बिलोकति तत्र। बैठे लखत महा मुनि यत्र ॥
अकथित भरी रूप गुण बाम। ऐसो रचो चरित अभिराम ॥
देखि भरो मुनि के हिय भाव। मारो मदन बान लखि दाव ॥
लई बोलाइ ताहि मुनि पास। गई मेनका करि मृदु हास ॥
करण लगे दोउ सु रति विहार। बहुत काल गो बीति उदार ॥
एक दिवस सम जानो तौंन। रमे मेनका के संग जौंन ॥
सु मुनि मेनका मे अभिराम। जनमाई कन्या गुण धाम ॥
हिमगिरि निकट परम शुचि देश। नदी मालिनी तीर सुबेश ॥
छोडि मेनका सुता ललाम। गई कार्य्य करि सुरपति धाम ॥
लखि निर्जन मे कन्या आय। बैठे घेरि शकुन सुखदाय ॥
आच्छादन सों ताहि बचाय। लियो शकुन्त कुन्त सों छाय।
हम सन्ध्या करिवे के हेत। गए नदी तट बिधि बस चेत ॥

तत्र शकुन्तन मधि हम चाहि। ल्याय दियो कन्या पद याहि॥

दोहा।

जन्म सु दाता प्राण ताता देइ अन्न कों जौंन।
धर्म्मशास्त्र यह कहत हैं पिता तीनि हैं तौंन॥

चरणाकुलकछन्द।

भे शकुन्त बन मे रखवारे। तौ शकुन्तला नाम बिचारे॥
मुनि बर कही कथा हम जैसें। भई शकुन्तला कन्या ऐसें॥
कन्व हि भूप जनक हम मानैं। हम स्वपिता कों हैं नहि जानैं॥

शकुन्तलोवाच।

सुनो जन्म अपनो हम जैसें। तुम सों कहो भूप सब तैसें॥
हमै कन्व की कन्या जानो। हे नरपति कछु और न मानो॥

दुष्यन्त उवाच।

प्रगट राजपुत्री तुम बामा। भार्य्या मम हूजै गुण धामा॥
नाना रत्न बसन बर नीके। भूषण दिव्य हार सुठी श्री के॥
तुम कों देत और जो भाखो। राज्य सकल अपनो करि राखो॥
व्याह श्रेष्ठ गान्धर्ब सो जानो। सो तव संग करत हम मानो॥

शकुन्तलोवाच।

फल आनन गो पिता हमारो। घरी एक मंह आवन हारो॥
तुम्है मोहि देहै सो जानो। तबलों करहु क्षमा यह मानो॥

दुष्यन्त उवाच।

तुम्है भजो हों चाहत प्यारी। है त्वदर्थ थिति इच्छा हमारी॥
बन्धु आपनो आत्मा जानो। आपनि गति आत्मा अनुमानो॥

आत्मदान आत्मा तें नीकों। तातें काहु धर्म श्रुति श्री कों ॥
अष्ट बिबाह धर्मबिद कहे। ब्राह्म्य दैव आर्ष अरु अहे ॥
प्राजापत्य आसुर गान्धर्बो। राक्षस अरु पैशाच अखर्बो ॥

दोहा।

चारि आदिके बिप्र कों षट क्षत्रिय हि ललाम।
आसुर वैश्य शूद्र कंह जानो फलद अभिराम ॥
राक्षस अरु गान्धर्ब है क्षत्रिन कों सुखदान।
आसुर अरु पैशाच ए कबि जोग्य न जान ॥
सालङ्कार दान कन्या को ब्राह्म्य कहत हैं जौंन।
यज्ञ दक्षिणा मे कन्या को दान दैव है तौंन ॥
तुम दोउ मिलिकै सब धर्म हि कीज्यो इमि कहि आम।
दीवो जो कन्या को सो है प्राजापत्य ललाम ॥
लै द्वै गाय देत जो कन्या तौन आर्ष अभिराम।
ए चारों विवाह विहित है विप्रण कों गुण धाम ॥
बहुत लेइ धन देइ फिरि कन्या आसुर साच।
सुप्त प्रमत्तन की कन्या को हरिबो सौ पैशाच ॥
मारि बन्धु रोवत कन्या हरि करै सो राक्षस उढ।
क्षत्रिन को यह योग्य है और करै सो मूढ ॥
व्है सु काम बस कन्यका लहि एकान्त सह धर्म।
पाणि गहै गान्धर्ब सो ईश्वर साक्षी पर्म ॥
हम सकाम तुम पै भए हम पैं तुम हु सकाम।
करि गान्धर्ब बिबाह मो भार्य्या हो अभिराम ॥

शकुन्तलोवाच ।

रोलाछन्द ।

धर्म को पथ कहो यह मम आतमा प्रभू जौंन ।
दान मे जो सुनो भूपति कहति हैं मै तौंन ॥
होयगो मम पुत्र जो जुबराज सोई होय ।
देहु जौं यह बचन साचो भूप धर्म समोय ॥
काहु संगम सुनहु मम पति भए तुम गुणऐन ।

बैसंपायन उवाच ।

एवमस्तु सु कह्यो ता सों पायकै नृप चैन ॥
गह्यो पाणि शकुन्तला को करो संगम भूप ।
कह्यो दै बिश्वास ऐसें बचन आनन्द रूप ॥
होत हों मै बिदा तुम सों सुनहु प्यारी बैन ।
आनिवे कों भेजिहों मै तुम्हें सिबिका सैन ॥
आइयो तुम भरी आनद धाम कों अभिराम ।
चले कहि यह भूप मुनि की धरें शङ्का माम ॥
दोय घटिका गएं आए कन्व आश्रम भौन ।
लाज बस सु शकुन्तला नहि कियो आगे गौंन ॥
दिव्य दृग सों जानि बोले कन्व सब वृतान्त ।
अनादृत्य जो मोहि कीन्हो पुरुष संग नितान्त ॥
धर्म्म घातक नहीं नृप कों उठ जो गान्धर्ब ।
करैं होय सकाम दोउ रहस माहि अखर्ब ॥
धर्म्मधर दुष्यन्त भूपति परम उत्तम बंश ।

शकुन्तला तूं बरी ता कों लहौ सु पति प्रसंश ॥
होयगो अति महाबल तो पुत्र परम प्रशंस्य ।
भूमि सागर मेखला सो करैगो सब बस्य ॥
शकुन्तला तब आय मुनि के धोय बिधिवत पाय ।
लियो मुनि को भार फल को धरो शुचि सुखदाय ॥

शकुन्तलोवाच ।

तात हा दुष्यन्त नृप कों बरी जानि सुधर्म्म ।
करहु सहित अमात्य ताप कृपा मुनि बर पर्म्म ॥

कन्व उवाच ।

भयो हौं सुप्रशन्न ताप जानि तो भर्त्तार ।
लेहु बर अब मांगि इक्षित होय जौंन उदार ॥

बैसम्पायन उवाच ।

होंहि पौरव बंश मे धर्मिष्ठ अच्युत भूप ।
लयो यह बर मांगि बर दुष्यन्त हित अनुरूप ॥
तीनि हायन पूर्ण धार्यो गर्भ परम उदार ।
भयो पुत्र शकुन्तला के भरो तेजस भार ॥
जन्मकर्म्म सु कियो सिगरो कन्व मुनि अभिराम ।
बर्धमान बिचारि बालक महा बल को धाम ॥
दन्त शुक्ल सकान्ति जा के सिंह सम बर काय ।
शंख चक्र गदाङ्क कर बर मत्स्यरेखा पाय ॥
महत मूर्द्धा देव सुत सम बढो तहं बलवान ।
भयो सो षट बर्ष को मुनि कन्व के सु स्थान ॥

सिंह व्याघ्र वराह महिषा गजन कों गहि लेत ।
बांधि आश्रम बृक्ष सों सो तिन्है बल बश देत ॥
करत तिन कों दमन चढिकै तौन बालक बीर।
धरो ता को नाम मुनि गण सर्बदमन गंभीर ॥
देखिकै पुरुषार्थ ता को मह्या ओजस तौन ।
जानिकै बर कुंवर को जुबराज समय सु जौंन ॥
कह्यौ शिष्यन बोलिकै इमि कन्व मुनि बर धीर।
सु शकुन्तला कों जाऊ लै पति धाम सह सुत बीर ॥
बहुत रहिवो बन्धुजन मे योग्य नारिन कौन ।
सुनत सहित शकुन्तला तिन कियो तित कों गौंन ॥
गए हस्तिन नगर कों दुष्वन्त नृप के द्वार।
द्वारपालन कह्यो नृप सों तास आगम बार ॥
बोलि भूपति पूजि तिन कों सुनो आगम सुत्र।
बिदा व्है ते गए छोडि शकुन्तलै सह पुत्र ॥

शकुन्तलोवाच ।

पुत्र भूपति रावरो युवराज कीजै याहि।
भयो तुम तें मोहि मे सुर सदृश लीजै चाहि ॥
दियो हो बर जौंन भूपति औसि कीजै तौंन ।
यदा संगम भयो मो सो कियो हो पन जौंन ॥
समुझि ए जे कन्व ऋषि के कहे आश्रम माह।
बैन सो प्रतिपालिए अब सुनहु हो नरनाह ॥
सुनो भूपति समुझि मन मे क्षणक रहिकै मौन।

कहो आई कहात है दुष्ट तापसि कौंन ॥
पूर्ब मम तव भयो संगम कहति हौ तुम जौंन ।
जाहु भावे रहहु बैठि हो न समुझत तौंन ॥
सुनत ऐसें बचन नृप के भई निश्चल रूप ।
कोप तें भे चपल रक्ष्द अक्षि अरुण अनूप ॥
दहन चाहति मनहु तिरेहुं लखति भूपति ओर ।
परम सौम्य शकुन्तला सो क्रोध प्रेरित घोर ॥
कोरे तप को तेज धारण कहे नृप सो बैंन ।
जानिकै इमि कहत हौ यह उचित तुम कों है न ॥
सत्य और असत्य जानत सकल आत्मा जौन ।
करत जौंन असत्य ता कों महा पातक तौन ॥
एक हम हीं रहे जानत नही जो हृदयस्थ ।
कर्म्म साक्षी जीवजन को सकल पथ्य अपथ्य ॥
सुनहु भूपति कर्म साक्षी रहत ईश्वर पाश ।
सूर्य्य शशि अरु अनिलअनलौ भूमि रूप अकाश ॥
शलिल अह निशि धर्म साक्षी गुणो अरु यमराज ।
करत नर जो कर्म तैसो देत फल महराज ॥
स्वयं आई इहा मै पति धर्म धारे धीर ।
योग्य आदर मो निरादर करण योग्य न बीर ॥
ग्राम्य जन लौं सभासद मे करत मो अपमान ।
करति हौं कारुन्य रोदन सुनहु भूप सुजान ॥
जौंन मांग्यो वचन तुम सों कहुगे नहि सोय ।

जायगो फटि शीस तुम्हरो फूटि शतधा होय ॥
पति करि प्रबेश सु भार्या मे लेत निज फिरि जौंन।
सुनहु जाया कहत यात बेद बेत्ता तौंन ॥
होत है पति आतमा सो पुत्र अति अभिराम।
करत संतति तौन तारत पितर सिगरे आम ॥
पुन्नाम नरक महान तें जो पितर तारत सर्ब।
पुत्र याते कहत हैं वेदज्ञ सुमति अखर्ब ॥
सो भार्या गृह कार्य दक्षा पुत्रवती है तौंन।
सो भार्या पति प्राण जा को पतिब्रत रत जौंन ॥
अर्द्ध तन पति को सु पत्नी सखा अति अभिराम।
त्रिबर्ग को है मूल भार्या मोद दायक माम ॥
बिना भार्या यज्ञ कर्म्म न होत है न गृहस्थ।
होत भार्यावंत श्रीयुत जानु भूपति तस्थ ॥
सखा होति एकांत मे पति की प्रियंबद बाम।
धर्मकृति मे पिता की सम मातृ दुःख मे आम ॥
होति है बिश्राम दाता दुर्ग पथ मे तौंन।
बिना भार्या पुरुष को बिश्वास मानत कौंन ॥
प्रेत पथ मे होति साथिनि एक पति जब जात।
लेति गति पति पाय पत्नी प्रथम जास निपात ॥
करत पाणि ग्रहण यातें पुरुष जे मतिमान।
भारया पति पाय साधत दोउ दिशि सुखदान ॥
पुरुष आत्मा आपु जनमत पुत्र को धरि रूप।

पुत्र माता सदृश माता होति यातें भूप ॥
पुत्र भार्या जनित देखत करत यों आनन्द ।
मुकुर मे प्रतिबिंब अपनो देखि सदृश अमन्द ॥
आधि सों अरु व्याधि सों पीडित हि यों सुखदान ।
होति भार्या घर्म तापित कों यथा जलपान ॥
क्रोध हू मे करत नर नहि भार्या अपमान ।
धर्म रति अरु प्रीति ता मे देखिकै अतिमान ॥
धूरि धूसर देखि सुत कों पिता हिय सों लाय ।
लहत है आनन्द इतनो तौन वरनि न जाय ॥
भरो सुत अभिलास आयो आपु सों तव पास ।
करत हौ अपमान हेरि कटाक्ष सों तन तास ॥
धरति अंउ न करति भेद पिपीलिका अति अज्ञ ।
भरङ्गे का नही आत्मज भूप तुम सर्बज्ञ ॥
अस्पर्श बामा बसन जल को तथा सुखद न होत ।
पिता पावत लाय हिय सों यथा आत्मज पोत ॥
जातकृति मे पुत्र मस्तक घ्राण जानत तौंन ।
बेद मे यह मंत्र लिपि है कहत बेत्ता जौंन ॥

मंत्र ।

अङ्गादङ्गात्सम्भवसि हृदयादभिजायसे ।
आत्मा वै पुत्र नामासि सञ्जीव शरदां शतं ॥
जीवितन्त्वदधीनं मे सन्तानो ऽपि तवाक्षयः ।

तस्मात्त्वं जीव मे पुत्र सुसुखी शरदां शतं ॥[1]

पुरुषात यह पुरुष भो तव अंग तें नृप अन्य ।
यथा निर्मल सलिल मे प्रतिबिम्ब सदृश अनन्य ॥
आह्वनीय मे जिमि अग्नि गार्हपत्य तें धरि देत ।
तथा तुम तें भयो सुत यह द्विधा रूप समेत ॥
मृग मारण हृत धाए गए तुम नरनाह ।
तहां पाई मोहि कन्या पिता आश्रम माह ॥
सब अप्सरन मे मेनका जो ब्रह्मयोनि अनूप ।
आय क्षिति पर पाय कौशिक मोहि जाई भूप ॥
गई तजि हिमवान के ढिग यथा असती नारि ।
पूर्व्वजन्मज कर्म्म पातक परत नहि निरधारि ॥
बाल्यपन मे पिता माता तजी तुम अब भूप ।
जाउंगी मै आश्रम हि नहि तजहु पुत्र अनूप ॥

दुष्यन्त उवाच ।

शकुन्तला कब भयो तुम कों पुत्र जानत हों न ।
कहें नारी बैन मिथ्या तिन्हें मानत कौन ॥
बन्धकी है मेनका तेहि कर्म ऐसो कीन ।
जनमि तो कों छोडि गिरि ढिग गई दया हीन ॥
महा निर्दय पिता तुम्हरो क्षत्रयोनि सक्रुद्ध ।

[1] Formule sacrée que récite le père à la naissance d'un enfant. En voici la traduction :

« Tu proviens de toutes les parties de mon corps ; tu es né de mes entrailles ; tu es « mon âme même : O mon fils, puisses-tu vivre cent ans ! C'est de toi que dépend mon « existence ; c'est par toi que doit se perpétuer ma race · puisses-tu donc vivre heureux, « ô mon fils ! l'espace de cent ans. »

तौन बिश्वामित्र चाहत होन ब्राह्मण लुब्ध ॥
श्रेष्ठ तुम्हरे पितर दोउ रूप गुण तप ऐन ।
भई तिन तें कहति हौ तुम पुंश्चली लों बैन ॥
सुनत योग्य न बचन तुम्हरे रहित लज्जा जौंन ।
कहति मो ढिग दुष्ट तापसि कुरु जथेच्छित गौंन ॥
कहां कौशिक मुनि मुकुट कन्हं मेनका गुण धाम ।
कहा तुम अति कृपिणि धारें बेष तपस्विनि बाम ॥
पुत्र है अतिकाय तुम्हरो महाबल भय गात ।
भयो थोरे द्योस मे किमि कहति झूठी बात ॥
भई योनि निकृष्ट तें तुम पुंश्चली इब बैन ।
कहति जाई मेनका सु जदृच्छया बस मैन ॥
कहति तू जो है परोक्ष न बिदित हम को तौंन ।
हों न जानत तुम्है कीजे यथा इच्छा गौंन ॥

शकुन्तलोवाच ।

सर्षप मात्र दोष औरन को लखत तुम भूप ।
चाहि चाहत नही अपनो दोष बिल्व सरूप ॥
मेनका है देव गण मे त्रिदश अनु हैं जास ।
उच्च तुम्हरे जन्म ते है जन्म मो तो पास ॥
अटत हौ तुम भूमि मे हों गगण गामी भूप ।
बीच हम सों और तुम सों मेरु सर्षप रूप ॥
सत्य है यह बात मेरो कहो तुम सो जौंन ।
तुम हि जनाइवे कों क्षमा कीजो तौंन ॥

बदन जबलों आदरस मे लखत है न कुरूप।
कहत तबलों आप कों वह रूपवान अनूप॥
मुकुर मे जब लखत है मुख चित्त दै अनुमानि।
परत अपनो और को तब रूप अन्तर जानि॥
रूपमान न करत कबहु और को अपमान।
बकत हैं दुर्बचन तेई नीच सुनहु सुजान॥
सुनत मूरख नीकि नागा जल्पकन की शीख।
गहत हैं ते दोष को इमि ज्यों बराह पुरीख॥
सुनत हैं बर प्राज्ञ बक्तान के शुभाशुभ बैन।
गहत गुणवत वाक्य हंस सु क्षीर पीवत पैन॥
कहि कठोर सु अन्य सों कछु साधु अनुपछितात।
कहि असाधु कठोर तैसें होत पुलकित गात॥
साधु पावत मोद ज्यों कहि बडेन प्रति मृदु बैन।
साधु सों दुर्बचन कहि त्यौं लेत दुर्जन चैन॥
दोष जानत नही ते जन लहत मोद महान।
दोष दर्शी मूर्ख ते जग कहत आपु समान॥
कहा है अति हास्य या तें सुनहु जग मे और।
कहत दुर्जन मनुज दुर्जन सुजन कों क्षिति मौर॥
धर्म चुत तें डरत नास्तिक कहा आस्तिक बात।
यथा देखि सक्रोध पन्नग कहहु को न डरात॥
आपु करि उतपन्न पुत्र स्वसदृश छोडत जौंन।
हनत देवत तास औ परलोक लहत न तौंन॥

पुत्र है कुल बंश थापक कहत पितर सुज्ञान ।
धर्म मे सब पुत्र उत्तम सो न त्याग समान ॥
पत्नी प्रभव लब्ध अरु क्रयकृत पालक चौथो तौंन ।
पञ्चम अन्य क्षेत्रभव जानो पुत्र कहे मनु जौंन ॥
कीर्ति धर्म वह होत ए है पुत्र सुखद सुज्ञान ।
पितृ बूडत नर्क निधि मे होत प्लव सुखदान ॥
पुत्र त्याग न करहु भूपति सत्य धर्म बिचारि ।
दीजिए नरसिंह मन ते कपट कुञ्चित डारि ॥
शौं कूप तें बर बावली शत बावली तें यज्ञ ।
शत यज्ञ तें बर पुत्र शत पुत्र तें सत्य है बर तज्ञ ॥
अश्वमेध सहस्र सत्य सु तुला पर धरि देहु ।
सत्य गरुओ होयगो यह जानि भूपति लेहु ॥
सर्ब बेदाध्ययन अरु सब तीर्थन को स्नान ।
होयगो नहिं सुनहु भूपति सत्य बचन समान ॥
सत्य सम नहिं धर्म है कछु कहत सकल सुज्ञान ।
झूठ तें नहिं पाप कोउ अधिक बेदतिप्रमान ॥
भूप सत्य सु रूप ब्रह्म सु सत्य पन को त्याग ।
करहु मति मम संग तुम सों सत्य है बर भाग ॥
अनृत सों है प्रीति तव नहिं रुचत जो मो बैन ।
आपु ही तौ मै न करिहौं संग तव बलऐन ॥
भूप तुम्हारे अन्त मेरो पुत्र यह बलवान ।
सिन्धु लों चहूं ओर पृथिवी पालिहै सुखदान ॥

बैसम्पायन उवाच ।

शकुन्तला कहि भूप सों यों चली जब दुख छाय ।
गगन बाणी भई तब दुष्यन्त प्रति सुखदाय ॥
ऋत्विक पुरोहित सहित मंत्री सुनी भूपति तौंन ।
गर्भ की है पात्र माता पिता है सुत जौंन ॥
पुत्र पालु शकुन्तला को करहु आदर भूप ।
रेतभव सुत यमपुरी तें देत गति शुचि रूप ॥
सत्य कहति शकुन्तला नृप गर्भ तो अभिराम ।
अंग दुसरो पिता को सुत जनति जाया आम ॥
धारु तातें पुत्र कों सु शकुन्तलाभव भूप ।
छोडि जीवत सुत हि जियबो सौ अभाग्य अनूप ॥
शकुन्तला दुष्यन्त सम्भव पुत्र यह बलवान ।
भरहु भूपति मानि तात दिव्य बचन प्रमान ॥
भरत तातें नाम राखहु पुत्र को अभिराम ।
भरण तुम सों कह्यो यातें अह्यो भूप ललाम ॥
गगन बाणी सुनत यह नृप भरो मोद ललाम ।
बोलि मंत्री सौं सु ऐसें कह्यौ अति अभिराम ॥

जयकरीछन्द ।

देव दूत के सुने सु बैन । कहे गगन गत आनद ऐन ॥
आत्मज सत्य लियो हम जानि । कियो न ग्रहन लोक भय मानि ॥
अब यह सुद्ध बिचारहि सर्ब । नतरु करत शङ्का जन खर्ब ॥

बैसम्पायन उवाच ।

गगन गिरा ते सुद्ध बिचारि । नृप लिए पुत्र अङ्क मंद धारि ॥
जन्मकर्म ता को सब भूप । कियो मोद भरिकै अनुरूप ॥
भूप कियो सुत मूर्द्धा घ्रान । बन्दिन पढै सुजश सुखदान ॥
पुत्र स्पर्श मोद नृप पाय । शकुन्तला आदर सुख छाय ॥
कियो भूप कहि मीठे बैन । भो परोक्ष तव संगम चैन ॥
यातें तव सुध्यार्थ बिचारि । लोक भीति हिय मे निरधारि ॥
कहे जे अनुचित वचन अकाम । तौन क्षमा कीजै गुण धाम ॥
महिषी प्रिया जानिकै भूप । भूषन बसन दिए अनुरूप ॥
भूप भरत सुत कों जुबराज । तब कीन्हो सह सचिव समाज ॥
भरत राज्य शासन कों करत । सकल प्रजा आनद सों भरत ॥
जीति करे सिगरे वस भूप । चारो धर्म नीति अनुरूप ॥
मण्डलेश भो भूप महान । किए यज्ञ बहु सम मघवान ॥
करवायो मख कन्व मुनीश । बिपुल दक्षिणा दियो क्षितीश ॥
भरत बंश मे भए नरेश । देब सदृश जे बिपुल बिसेश ॥
ब्रह्म सदृश भे बहु तप धाम । तिन के कहैं कहांलों नाम ॥
तिन मे भए मुख्य जे भूप । तिन को कहत नाम गुण रूप ॥
कारक बंश भए अभिराम । तिन को बर्णन करत ललाम ॥

स्वस्ति रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना कृतमहाभारत-
दर्पणे आदिपर्वणि शकुन्तलोपाख्यानं समाप्तमेकत्रिंशो ऽध्यायः ॥

ERRATA.

Page १,	ligne 1,	au lieu de बोला,	lisez बोली.
१६,	16-17,	लाई कल्होई,	लाईक ल्होई.
१९,	20,	ल्हाई,	ल्होई.
८९,	7,	पती ग्रह्,	प्रतिग्रह्.
१०४,	22,	सरास न,	सरासन.

VOCABULAIRE

HINDI-HINDOUI-FRANÇAIS.

VOCABULAIRE

HINDI-HINDOUI-FRANÇAIS.

अ

अंक s. m. Marque, tache, souillure.

अंग s. m. Corps, membre.

अंगरानौं v. n. Bâiller, entr'ouvrir les lèvres.

अंगीकार s. m. Action d'agréer. — अंगीकार करनौं Accepter.

अंघानौं Voyez अघानौं.

अंड s. m. Œuf.

अंडा Voyez अंड.

अंत s. m. Fin, achèvement, destruction, mort. — Adv. A la fin.

अंतर s. m. Intervalle, différence, intérieur, cœur.—Adj. Autre.

अंतर adv. Dans, au milieu de.

अंतरजामी adj. Qui connaît le cœur.

अंतरीक्ष s. m. Les airs, atmosphère.

अंतह्करण s. m. Intelligence, conscience.

अंतर्ध्यान s. m. Méditation, abstraction religieuse.

अंदेसा s. m. Pensée, soupçon, crainte.— P. اندیشه.

अंध adj. Aveugle.

अंधकार s. m. Obscurité, ténèbres.

अंधियारा adj. Noir, obscur.

अंधेरा adj. Obscur.

अंध्यारा s. m. Ténèbres, obscurité.

अंन Voyez अन्न.

अंनदान s. m. Présent consistant en aliments.

अंब Voyez अब.

अंम्रत s. m. Ambroisie.

अंषियां s. f. pl. Yeux.

अंस s. m. Portion.

अंसुवां s. m. pl. Voyez अंसू.

अंसू s. m. Larme.

अकथित adj. Inexprimable, indicible.

अकथ्य adj. Inexprimable.

अकर् adj. Qui n'accomplit aucune œuvre.

अकर्म s. m. Mauvaise action, péché, vice.

अकाज s. m. Perte, dommage, inutilité.

अकाम adj. Vain, inutile, vil, bas, abject.

अकारथ s. f. Inutilité, préjudice.

अकारथ adj. Vain, inutile.

अकाल s. m. Famine.

अकाश s. m. Espace éthéré, firmament, les airs, l'espace.

अकास Voyez अकाश.

अकुलानौं v. n. Être troublé, être agité.

अकोर् s. f. Présent donné pour corrompre quelqu'un.

अक्षत s. m. Riz (*dont on se sert dans les sacrifices*).

अक्षर् s. m. Lettre (de l'alphabet).

अक्षि s. m. Œil.

अक्षोभ्य adj. Calme, qu'on ne peut agiter.

अक्षोहनी s. f. Armée complète (*composée d'infanterie, de cavalerie, de chars et d'éléphants*).

अक्षौहिनी Voyez अक्षोहनी.

अखंड adj. Intact, non brisé, non interrompu.

अखर्ब *Allitération employée pour la rime.*

अखर्बों Voyez अखर्ब.

अखाडा s. m. Lieu d'assemblée. — इंद्र का अखाडा La cour d'Indra.

अगनि s. f. Feu. — n. pr. m. Agni ou le Feu.

अगम adj. Inaccessible.

अगाउ जानौं v. n. Aller au-devant.

अगार् s. m. Maison, habitation.

अगिन s. f. Feu.

अग्नि s. f. Feu.

अग्या s. f. Ordre, permission.

अग्यान s. m. Ignorance.

अघानौं v. n. Être rassasié, se rassasier.

अङ्क s. m. Embrassement.

अचंभा s. m. Étonnement.

अचंभित adj. Étonné.

अचंभौ Voyez अचंभा.

अचरज s. m. f. Étonnement, merveille.

अचल adj. Immuable, qui n'éprouve aucun changement, immobile.

अचिरज Voyez अचरज.

अचीना adj. Qui n'a pas de marque, sans conséquence.

अचेत adj. Privé de sentiment.

अचैन adj. Inquiet, troublé.

अच्छा adj. Bon, convenable.

अच्युत adj. Qui ne tombe pas, indestructible, impérissable.

अछतानौं पछतानौं v. n. Être affligé, se repentir.

अछूत adj. Que l'on ne peut toucher (aliments préparés pour des saints, etc.).

अछूतौ Voyez अछूत.

अजुगत adj. Désuni, inconvenant.

अजुगता s. f. Indignité, inconvenance.

अजुगता adj. Voyez अजुगत.

अजु adv. Aujourd'hui.

अज्ञ adj. Ignorant, dépourvu de connaissance.

अज्ञता s. f. Ignorance.

अटक s. f. Obstacle.

अटकनौं v. n. Être arrêté, être retenu, s'arrêter, rester.

अटनौं v. n. Marcher, errer.

अटा s. m. Terrasse, balcon.

अठारवौं adj. num. Dix-huitième.

अठारह adj. num. Dix-huit.

अठारै Voyez अठारह.

अति prép. Au delà de, très, fort, beaucoup.

अतिकाय adj. De haute stature, gigantesque.

अतिथ s. m. Hôte, personne qui a des droits à l'hospitalité, pèlerin.

अतिमान adj. Excessif, démesuré.

अतीत s. m. Pèlerin, espèce de faquîr.

अत्र adv. Ici.

अथवा adv. En outre.

अद्यापि adv. Jusqu'à présent.

अधमाई s. f. Chose vile, vilenie.

अधर s. m. Lèvre.

अधर s. m. Espace (*compris entre le ciel et la terre*).

अधर्म s. m. Action contraire à la religion, injustice, crime.

अधार s. m. Soutien, nourriture.

अधारि Voyez अधार.

अधिक adj. Plus grand, plus que, le plus grand, le premier.

अधिकाई s. f. Augmentation, agrandissement, abondance, excès.

अधिकानौं v. a. Augmenter.

अधिकार s. m. Autorité, gouvernement.

अधिकु Voyez अधिक.

अधीन adj. Soumis, docile.

अधीर adj. Prompt, violent.

अन Voyez अन्न.

अनंत adj. Éternel, infini, innombrable.

अनंता Voyez अनंत.

अनंद s. m. f. Bonheur, joie.

अनंदा Voyez अनंद.

अनजाना adj. Inconnu.

अनन्त Voyez अनंत.

अनन्य adj. Même, identique.

अनर्थ s. m. Préjudice, dommage.

अनर्थ adj. Qui n'a pas de sens, absurde.

अनाथ adj. Qui n'a pas de protecteur, de maître, de mari.

अनादृत्य part. forme sanscrite. En méprisant, en ne tenant aucun compte de.

अनिलअनलौ mot comp. forme duel du sanscrit. Le feu et l'air.

अनी adj. Autre.

अनीति s. f. Injustice, immoralité.

अनु prép. Après, à la suite de.

अनुग s. m. Serviteur, suivant.

अनुचित adj. Inconvenant.

अनुपछितानौं v. n. Éprouver des regrets, du repentir.

अनुमान s. f. Conclusion, induction.

अनुमाननौं v. a. Raisonner, conclure.

अनुरागी adj. Attaché, qui aime, qui éprouve de l'affection.

अनुरुद्ध n. pr. Anourouddha.

अनुरुध Voyez अनुरुद्ध.

अनुरूप adj. Conforme, convenable. — *Empl. adverbial.* Conformément à.

अनूप adj. Incomparable, sans égal.

अनृत s. f. Fausseté, mensonge.

अनेक adj. Beaucoup.

अन्त s. m. Extrémité, fin. — Adv. A la fin.

अन्तर s. m. Différence.

अन्न s. m. Nourriture, riz.

अन्यंत्र adv. Ailleurs.

अन्य adj. Autre.

अन्याई s. m. Injustice, outrage.

अन्याई adj. Injuste, méchant.

अन्याय s. m. Injustice.

अन्यायक adj. Injuste.

अन्यौ अन्य adj. Mutuel, réciproque.

अप Voyez आप.

अपकार s. m. Injure.

अपघात s. m. Action de tuer, de frapper.

अपछरा Voyez अप्सरा.

अपजस s. m. Infamie, déshonneur.

अपथ्य adj. Qui n'est pas convenable, indigeste.

अपना pron. poss. Mon, ton, son, notre, votre, leur.

अपनाई Voyez अपना.

अपनो Voyez अपना.

अपनौ Voyez अपना.

अपमान s. m. Manque de respect, dédain, mépris.

अपराध s. m. Offense, faute.

अपसरा Voyez अप्सरा.

अपार adj. Infini, démesuré, immense, innombrable, sans limites.

अपारा Voyez अपार.

अपारी adj. m. Voyez अपार.

अपारू Voyez अपार.

अपुना Voyez अपना.

अपुराधि s. m. Criminel, offenseur.

अपेक्षा s. f. Attente, espérance, désir.

अप्सरा s. f. Apsarā ou courtisane du ciel d'Indra, danseuse.

अफ़सोस s. m. Chagrin. — अफ़सोस करनौं Soupirer.— P. افسوس.

अब adv. Maintenant.

अबलौं adv. Jusqu'à présent.

अबाक adj. Silencieux, muet.

अबार s. f. Temps non favorable pour faire une chose.

अबिद्या s. f. Ignorance.

अबिनासी adj. Immortel.

अबिबेकता s. f. Indiscrétion, manque de réflexion.

अबेर s. f. Délai, retard.

अबेस adj. Nu.

अबैं Voyez अबै.

अबै pour अब ही Voyez अब.

अभागा adj. Malheureux.

अभाग्य s. m. Malheur.

अभाग्य adj. Malheureux.

अभाव s. m. Anéantissement, non-existence.

अभिक्षेप s. m. Mépris, action de vaincre.

अभिमानी adj. Fier.

अभिराम adj. Beau.

अभिलाषनौं v. a. Désirer.

अभिलाषा s. f. Désir.

अभिलास s. m. Désir.

अभी adv. A l'instant même, maintenant.

अभू Voyez अभी.

अभैदान s. m. Assurance de protection.

अभैदानु Voyez अभैदान.

अभ्यास s. m. Étude, pratique, exercice. — अभ्यास करनौं Étudier.

अमन्द adj. Actif, prompt, agissant.

अमर adj. Immortel.

अमल adj. Pur.

अमात्य s. m. Ministre.

अमान adj. Incroyable, extraordinaire, immense.

अमृत s. m. Ambroisie.

अमोल adj. Inappréciable.

अयान adj. Indifférent, ignorant, sans connaissance.

अयोग्य adj. Incapable, qui n'est pas propre à....

अरग adj. A part, séparé, en confidence.

अरनौं v. n. S'arrêter, hésiter. — अर् परनौं Insister.

अरन्य s. m. Forêt.

अराधनौं v. a. Accomplir, adorer.

अरि s. m. Ennemi.

अरु Voyez अरु.

अरु conj. Et.

अरुण adj. Rouge.

अरे interj. O! Holà! (*s'emploie dans un sens de mépris*).

अर्थ s. m. Sens, signification, chose, intention, but.

अर्थलाभ s. m. Acquisition de la richesse.

अर्थी adj. Qui désire.

अर्द्ध adj. Demi, moitié.

अर्ध Voyez अर्द्ध.

अर्ब adj. num. Cent millions.

अलंकार s. m. Ornement, parure.

अलप adj. Peu.

अलि s. m. Grosse abeille noire.

अवतार s. m. Incarnation.

अवतारि Voyez अवतार.

अवतारू Voyez अवतार.

अवधर्म s. m. Infraction au devoir, action blâmable.

अवस्था s. f. État, condition.

अशुगन s. m. Mauvais présage.

अश्व s. m. Cheval.

अश्वपति s. m. Cavalier.

अश्वमेध s. m. Aswamédha ou sacrifice d'un cheval.

अष्ट adj. num. Huit.

अष्टपदी s. f. Strophe de huit vers.

अष्टांग s. m. Collection de huit parties du corps. — अष्टांग प्रनाम Action de se prosterner.

असंख्य adj. Innombrable.

असंत s. m. Méchant, impie.

असती adj. f. Infidèle, impudique (femme).

असत्य s. m. Mensonge, fausseté.

असत्रि s. f. Femme.

असथल s. m. Place, demeure d'un religieux mendiant.

असनान s. m. Action de se baigner.

असनाना Voyez असनान.

असरा adj. Tel. — *Mahratte:* असलाला.

असाधु adj. Méchant.

असी adj. num. Quatre-vingts.

असीस s. f. Bénédiction.

असुर s. m. Asoura (*espèce de démon*).

अस्पर्श s. m. Toucher, contact, attouchement.

अह् s. m. Jour.

अहदी s. m. Espèce de soldat. — P. احدى.

अह्वाल s. m. Circonstance, chose qui s'est passée. — A. احوال.

अह्वार s. m. Nourriture.

अहारा Voyez अह्वार.

अहीरी Voyez अह्वीरी.

अहीर s. m. Vacher.

अहीरी s. f. Femme de vacher.

अहे interj. Oh!

अहे Voyez अहे.

अहो interj. Oh! Holà!

अहौ Voyez अहो.

आ

आंख s. f. Œil.

आंखि Voyez आंख.

आंग्या Voyez आग्या.

आंच s. f. Flamme, feu.

आंठौं Voyez आठ.

आंधरी adj. Aveugle, obscur.

आंनौं Voyez आनौं.

आंष Voyez आंख.

आंसु Voyez आंसू.

आंसू s. m. Larme.

आई s. f. Arrivée.

आकर्षनौं v. a. Retirer.

आकसमात adv. Sans motif, accidentellement, immédiatement.

आकस्मात Voyez आकसमात.

आकाश s. m. Cieux, air, firmament, espace.

आकास Voyez आकाश.

आग s. f. Feu. — आग बुझानौं Éteindre le feu.

आगम s. m. Arrivée, avenir, acquisition.

आगमन s. m. Arrivée.

आगि s. f. Voyez आग.

आगि adv. Voyez आगे.

आगी s. f. Voyez आग.

आगू adv. Devant, avant.

आगे adv. Ensuite, en avant, devant, en présence de.

आगैं Voyez आगे.

आगै Voyez आगे.

आग्या s. f. Ordre, permission.

आचार s. m. Pratique, coutume, règle de conduite.

आचारु Voyez आचार.

आचारू Voyez आचार.

आचिरजि Voyez अचरज.

आछै adj. empl. adverb. Bien.

आज adv. Aujourd'hui.

आजि Voyez आज.

आजु Voyez आज.

आजू Voyez आज.

आज्ञा s. f. Ordre, permission.

आज्ञाकारी adj. Docile, obéissant.

आठ adj. num. Huit. — आठौं पहर Les vingt-quatre heures, continuellement.

आठौ Voyez आठ.

आतमा s. f. Ame, esprit, vie, personne (*dans le sens abstrait*).

आतुर adj. Inquiet, agité, troublé.

आत्मज s. m. Fils.

आत्मदान s. m. Don de sa personne.

आत्मा Voyez आतमा.

आत्मादान s. m. Don de la vie.

आदमी s. m. f. Homme (*dans le sens général*). — P. آدمی.

आदर s. m. Respect, déférence, égards.

आदरस s. m. Miroir.

आदि s. Commencement. — adj. Premier. — *en compos.* Autre, et cætera.

आदिक adj. Premier. — Voyez आदि.

आधार s. m. Soutien, aliment.

आधारू Voyez आधार.

आधि s. m. Inquiétude, angoisse.

आधौ adj. Demi, moitié.

आन s. f. Honte, pudeur, modestie.

आन adj. Autre, différent.

आनंद s. m. f. Bonheur, joie, Plaisir.

आनंदकंद Racine, (source) de bonheur. (*Épith. de Krichna.*)

आनद Voyez आनंद.

आननौं v. n. Voyez आनौं.

आननौं v. a. Apporter, amener, faire venir.

आनन्द Voyez आनंद.

आनौं v. n. Venir, arriver, aller.

आप pron. réfl. Moi, toi, lui, nous, vous, eux.

आपदा s. f. Infortune, malheur.

आपना Voyez अपना.

आपनो Voyez अपना.

आपनौं Voyez अपना.

आपनौ Voyez अपना.

आपस pr. récipr. — आपस में Entre eux, entre nous, etc.

आपा Voyez आप.

आपार Voyez अपार.

आपु Voyez आप.

आपुनौ Voyez अपना.

आपुस Voyez आपस.

आभरण s. m. Parure, ornement, bijou.

आभरन Voyez आभरण.

आभूषन s. m. Bijou, parure.

आम *Allitération employée pour la rime.*

आयस Voyez आयसु.

आयसु s. m. Ordre, commandement.

आयु s. m. Durée de la vie, vie.

आयुध s. m. Arme.

आरंभ्यौ adj. Commencé.

आरता s. m. Cérémonie qui a lieu dans un mariage. Lorsque l'époux entre dans la maison de sa fiancée, il est reçu par les parents, qui lui présentent un plat peint, au milieu duquel est une lampe faite de farine, remplie de beurre clarifié et ayant plusieurs mèches allumées.

आरती s. f. Cérémonie qui consiste à faire passer une lampe allumée autour de l'image d'un dieu.

आराम s. m. Repos, soulagement. — P. آرام.

आरूढ adj. Élevé.

आरोग्य s. m. Santé.

आर्ष s. m. *Nom d'un des huit modes de mariage.*

आला adj. Humide, mouillé.

आव s. m. Vie.

आवदान s. m. Acte accompli, fin, action de rompre, de briser.

आवन s. m. Arrivée, approche.

आवनौं v. n. Venir.

आवाज़ s. f. Cri, voix. — P. آواز.

आशक्त adj. Attaché à..., amoureux.

आश्रम s. m. Hermitage, demeure.

आश्रित adj. Réfugié, qui est sous la protection.

आस s. f. Espérance, désir.

आसन s. m. Siége.

आस पास s. m. Voisinage. — adv. Autour, de tous côtés.

आसरौ s. m. Refuge, espérance, attente.

आसावधान adj. Nonchalant, inattentif.

आसीस s. f. Bénédiction.

आसुर s. m. *Nom d'un des huit modes de mariage.*

आस्तिक s. m. Homme pieux.

आह्वनीय s. m. Feu destiné au sacrifice, sacrifice.

आह्री v. impers. Il (elle) est, il y a.

इ

इंद्र n. pr. Indra.

इंद्रादिक mot comp. Indra et les autres (dieux).

इंद्रासन s. m. Trône d'Indra.

इंनि cas obliq. sing. du pron. dém. यह.

इक adj. num. Un.

इकट्ठा adj. Amassé, rassemblé.

इकठा Voyez इकट्ठा.

इकला adj. Seul.

इकीस adj. num. Vingt et un.

इक्षित adj. Désiré.

इच्छा s. f. Désir.

इछा Voyez इच्छा.

इत adv. Ici.

इतना adj. Autant, tel. — इतना जितना Autant que. — इतने में Cependant, sur ces entrefaites.

इतनों adv. Ainsi.

इतनो Voyez इतना.

इतनौं Voyez इतनों.

इतनौ Voyez इतना.

इति particul. Ainsi, et cætera.

इतिहास s. m. Histoire.

इतेक adj. Tant, autant.

इतै adv. Ici.

इधर adv. Ici.

इन cas obliq. pl. du pron. dém. यह. — cas obliq. sing.

इनि cas obliq. pl. du pron. dém. यह. — cas obliq. sing.

इन्ह cas obliq. pl. du pron. dém. यह.

इन्है cas obliq. pl. du pron. dém. यह.

इव adv. Comme.

इमि adv. Ainsi.

इस cas obliq. sing. du pron. dém. यह. — इस में Sur ces entrefaites. — इस से C'est pourquoi.

इह porn. dém. Celui-ci, ceci.

इह adv. Ici.

इहां adv. Ici.

इहा Voyez इहां.

इहि pron. dém. Voyez इह.

इहि pron. dém. Voyez इह.

इही pron. dém. Voyez इह.

ई

ईह pron. dém. Celui-ci, ceci.

ई A la fin des mots s'emploie pour हि.

ईक adj. num. Un. — ईक ठौर Ensemble.

ईछ्या s. f. Désir.

ईतना Voyez इतना.

ईतै adv. Ici, ainsi.

ईन cas obliq. pl. du pron. dém. यह. — cas obliq. sing.

ईनि cas obliq. pl. du pron. dém. यह. — cas obliq. sing.

ईन्ह cas obliq. pl. du pron. dém. यह.

ईश्वर s. m. Le maître suprême.

ईष्ट adj. Désiré.

ईस s. m. Maître.

ईसता s. f. Suprématie, supériorité.

ईह pr. dém. Celui-ci, ceci.

ईह्न adv. Ici.
ईह्नां adv. Ici.
ईह्ना Voyez ईह्नां.
ईह्नि pron. dém. Voyez ईह्न.
ईह्नी pron. dém. Voyez ईह्न. — adv. Voyez ईह्नां.
ईह्नु pron. dém. Voyez ईह्न.
ईह्ने pron. dém. Voyez ईह्न.

उ

उगलानौं v. a. Faire vomir, faire rendre.
उग्रसेन n. pr. Ougraséna.
उघर्नौं v. n. Être ouvert, être découvert.
उघार् adj. Nu, découvert.
उघार्नौं v. a. Découvrir, dévoiler, mettre à nu.
उघारौ Voyez उघार्.
उचानौं v. a. Soulever.
उचार्नौं v. a. Prononcer, proférer.
उचित adj. Convenable.
उच्च adj. Élevé, haut.
उच्चर्नौं v. a. Dire, prononcer, proférer, lire.
उछाह् s. m. Joie, empressement, désir.
उजकनौं v. n. Sauter par-dessus, transgresser.
उजागर् adj. Fameux, célèbre, éclatant.
उजारौ adj. Eclatant, brillant.
उजियारा Voyez उजारौ.
उजियारौ Voyez उजारौ.
उठनौं v. n. Se lever, être levé.
उठानौं v. a. Enlever, soulever, lever, emporter. — उठा देनौं Éloigner.
उडनौं v. n. Voler, s'envoler.
उडानौं v. a. Faire voler.
उत adv. Là.
उतग adj. Proéminent.
उतना adj. Autant, tel.
उतनौइ Voyez उतना.
उतपन्न adj. Produit, engendré.
उतपात s. m. Violence, injustice, injure, prodige.
उतर् s. m. Réponse, réplique.
उतर् adj. Postérieur, dernier.

उतर्न s. f. — उतर्न ह्नोनौं S'acquitter (d'une dette).

उतर्नौं v. n. Descendre.

उतरा adj. Voyez उतर्.

उतरु s. m. Voyez उतर्.

उतार्नौं v. a. Faire descendre, déposer, décharger, enlever, retrancher.

उतारा s. m. Descente, action de déposer.

उतावलौ adj. Violent, emporté, véhément.

उत्तम adj. Excellent, le meilleur, le plus grand.

उत्तर् s. m. Réponse.

उदयाचल s. m. Montagne du Levant. (*Montagne située à l'Orient, derrière laquelle le soleil se lève, suivant les Indiens.*)

उदर् s. m. Ventre.

उदार adj. Libéral, généreux, grand.

उदार्नौं v. a. Magnifier? rendre grand?

उदास adj. Solitaire, triste, chagrin.

उदै s. m. Lever. — उदै ह्नोनौं Se lever, se manifester.

उद्धर्नौं v. n. Être délivré, être absous.

उद्यम s. m. Effort, travail, occupation.

उधर् adv. Là.

उन cas obliq. pl. du pron. dém. वह्न. — cas obliq. sing.

उनि cas obliq. pl. du pron. dém. वह्न. — cas obliq. sing.

उन्ने pour उन ने.

उन्हृ cas obliq. pl. du pron. dém. वह्न.

उन्हौ cas obliq. pl. du pron. dém. वह्न.

उपकार् s. m. Faveur, service, bonté, bienfait, marque officieuse.

उपगार् Voyez उपकार्.

उपचार् s. m. Médication, secours. service.

उपजनौं v. n. Être produit, naître.

उपजानौं v. a. Produire,. engendrer, causer.

उपदेश s. m. Conseil, avertisse-

ment, avis, remontrance, instruction.

उपदेस Voyez उपदेश.

उपमा s. f. Ressemblance, comparaison, chose à laquelle une autre est comparée, chose semblable.

उपराजनौं v. a. Contracter.

उपरि prép. Sur, au-dessus.

उपरै Voyez उपरि.

उपस्थित adj. Prêt.

उपाधि s. f. Chose pernicieuse, peste, fléau.

उपानौं v. a. Gagner, produire.

उपाय s. m. Expédient, moyen, remède.

उपाव Voyez उपाय.

उबटनो s. m. Composition de parfums, de farine, etc. pour se frotter le corps.

उबार् s. m. Salut, délivrance.

उबार्नौं v. a. Délivrer, relâcher.

उमडनौं v. n. Déborder, fondre sur quelqu'un.

उर् s. m. Sein, poitrine.

उरज s. m. Force, puissance.

उरज s. m. Sein (d'une femme).

उलटनौं v. a. Bouleverser, renverser.

उलटा s. m. Contraire, opposé.

उलटा adj. ou part. Renversé, retourné, bouleversé.

उलटो s. m. Voyez उलटा.

उलट्यौ part. Voyez उलटा.

उवाच 3ᵉ pers. sing. 2ᵉ prét. du verbe sanscrit वच् Il (elle) dit.

उस cas obliq. sing. du pron. dém. वह्.

उसास s. f. Soupir, respiration.

उसासा Voyez उसास.

उह् pron. dém. pour वह्.

उहां adv. Là.

उहिं Voyez उह्.

उहि Voyez उह्.

ऊ

ऊंचा adj. Haut, élevé, grand.

ऊंची Voyez ऊंचा.

ऊठनौं Voyez उठनौं.

ऊच adj. Haut, élevé.

ऊट s. m. Chameau.

ऊठनौं v. n. Se lever, être levé.

ऊढ s. m. Mariage.

ऊतारनौं v. a. Faire descendre, ôter, enlever.

ऊदय s. m. Montagne derrière laquelle le soleil se lève, suivant les Indiens. — Lever.

ऊन cas obliq. pl. du pron. dém. वह. — cas obliq. sing.

ऊनि cas obliq. pl. du pron. dém. वह. — cas obliq. sing.

ऊनु cas obliq. pl. du pron. dém. वह. — cas obliq. sing.

ऊन्ह cas obliq. pl. du pron. dém. वह.

ऊपजनौं v. n. Être produit, naître.

ऊपजा s. m. Production, naissance.

ऊपमा s. f. Ressemblance, comparaison.

ऊपर adv. Sur, au-dessus, auprès.

ऊपरि Voyez ऊपर.

ऊबरनौं v. n. Excéder, être nombreux.

ऊर्द्धरेता s. m. Saint personnage qui a toujours vécu dans la chasteté.

ऊषा n. pr. Oûchâ.

ऊहां adv. Là.

ऊहि pron. dém. pour वह.

ऋ

ऋत्विक s. m. Prêtre de la famille.

ऋद्धि s. f. Prospérité, bonheur.

ऋन s. f. Dette.

ऋषि s. m. Richi (*saint personnage*).

ए

ए pron. dém. Voyez यह.

एई pron. dém. Celui-ci, ceci.

एउ Voyez एई.

एकंत्रि Voyez एकत्र.

एक adj. num. Un, une, seul.— एक से एक L'un après l'autre, l'un contre l'autre.

एकत्र adv. Ensemble.

एकत्रि Voyez एकत्र.

एकांत s. m. Lieu retiré, entretien particulier. — एकांत मे Dans l'isolement, dans la solitude. — adv. A part.

एकादशी s. f. Onzième jour de la quinzaine lunaire.

एकान्त Voyez एकांत.

एकु Voyez एक.

एकू Voyez एक.

एकै Voyez एक.

एता adj. Autant.

एवमस्तु loc. adverb. Soit, oui.

एही pron. dém. Celui-ci, ceci.

ऐ

ऐ pron. dém. Celui-ci, ceci.

ऐतवार् s. m. Dimanche.

ऐन particul. synonym. de हि. — *Allitération employée pour la rime.*

ऐसा adj. Tel.—ऐसे में Sur ces entrefaites.

ऐसें adv. Ainsi, de même, de telle sorte.

ऐसे Voyez ऐसें.

ऐसैं Voyez ऐसें.

ऐसै Voyez ऐसें.

ऐसो Voyez ऐसा.

ऐसौ Voyez ऐसा.

ओ

ओछा adj. Qui ne produit aucun fruit, frivole, vain.

ओजस s. m. Force, éclat.

ओट s. f. m. Action de couvrir, de cacher, abri. — ओट करनौं Couvrir, cacher.—*Empl. adverbial.* En cachette.

ओर् s. f. Côté.—चारों ओर् Des quatre côtés (*de tous les côtés*).

ओसेर् s. f. Inquiétude, sollicitude

औ

औंडा adj. Profond, grand.

औ conj. Et.

औगुन s. m. Vice, défaut.

औचक adv. Subitement, soudain.

औचिक Voyez औचक.

औटानौं v. a. Faire bouillir.

औतर्नौं v. n. Prendre incarnation (*littéral.* Descendre (sur la terre).

औतार् s. m. Incarnation, descente (du ciel).

औतारी Voyez औतार्.

और् conj. Et. — adj. Autre. — और् ही Tout à fait différent.

औरि Voyez और्.

औषध s. f. Remède, médicament.

औषधि Voyez औषध.

औसर् s. m. Occasion, moment favorable.

औसि adv. Nécessairement, inévitablement.

औसेर् s. f. Inquiétude, souci.

क

कंकन s. m. Bracelet.

कंचन s. m. Or.

कंज s. m. Lotus.

कंत s. m. Époux.

कंदर्पकेत n. pr. Kandarpaket.

कंदर्पकेत Voyez कंदर्पकेत.

कंदर्पकेतु Voyez कंदर्पकेत.

कंदर्पकेलि n. pr. Kandarpakéli.

कंवल s. m. Lotus (*Nymphæa Nelumbo*).

कंह adv. Comment? Est-ce-que?

कंह postpos. Voyez को.

कई adj. Quelque. — कई एक Un petit nombre de, quelques.

कछु pron. indéf. Un, une, quelque, quelque chose. — जो

कछु Ce qui. — *Empl. adverbial.* Un peu.

कछुव Voyez कछु.

कछू Voyez कछु.

कटक s. m. Armée.

कटनौं v. n. Être coupé, être taillé en pièces, être brisé, être retranché.

कटाक्ष s. m. Œillade, coup d'œil de côté.

कटानौं v. a. Couper, tailler en pièces, faire couper.

कटार् s. m. Poignard.

कटोरा s. m. Coupe, vase de métal.

कठन Voyez कठिन.

कठना s. m. Difficulté, embarras, position critique.

कठनाई Voyez कठना.

कठिन adj. Dur, difficile.

कठोर् adj. Cruel, dur, sévère.

कठौर् Voyez कठोर्.

कड़खा s. m. Chant de guerre (*pour inspirer du courage aux combattants*).

कड़खैत s. m. Barde.

कड़ोड़ adj. num. Dix millions.

कढनौं v. n. Ressortir, se dessiner, sortir, s'échapper.

कण्टक s. m. Épine, ennemi méprisable.

कत adv. Comment? où?

कथनौं v. a. Dire, raconter.

कथा s. f. Histoire, exposition, récit.

कनक s. m. Or.

कनकपुर् n. pr. Kanakpour.

कन्त s. m. Amant, bien-aimé, époux.

कन्यका s. f. Jeune fille.

कन्या s. f. Jeune fille.—कन्यादान Don d'une fille en mariage.

कण्व n. pr. Kanwa.

कन्हें adv. Où?

कपट s. f. Tromperie, ruse, fourberie.

कपट adj. Fourbe, astucieux, trompeur, faux.

कपटी adj. Voyez कपट.

कपर् छन adj. Impalpable, insaisissable.

कपि s. m. Singe.

कपिरी छन Voyez कपर् छन.

कपिल n. pr. Kapila.

कपूत s. m. Fils dégénéré.

कपूर s. m. Camphre.—A. كافور.

कबंध s. m. Tronc (sans tête).

कब adv. Quand? — जब कब Dans quelque temps que, quand.

कबहु adv. Jamais, quelquefois.

कबहूं Voyez कबहु.

कबहू Voyez कबहु.

कबि s. m. Poëte.

कबित s. m. Poésie, poëme.

कबीर n. pr. Kabîr.

कबै adv. Quand? (pour कब ही).

कभी Voyez कभू.

कभू adv. Quelquefois, jamais. — *Répété, il signifie* tantôt.

कमंडल s. m. Vase de terre ou de bois dont se servent les ascètes.

कमंधी Voyez कबंध.

कमल s. m. Lotus.

करंता part. prés. Voyez करनौं.

कर s. m. Main.

करण s. m. Action de faire, cause.

करणौं Voyez करनौं.

करता s. m. Auteur, créateur, faiseur.

करतार s. m. Créateur, auteur.

करतारू Voyez करतार.

करद s. f. Couteau. — P. كارد.

करन s. m. Voyez करण.

करनाटक n. pr. Karnātak (*Karnatique, province de l'Inde*).

करनिहारा s. m. Faiseur, auteur.

करनिहारी s. f. Conduite, manière d'agir.

करनी s. f. Affaire, action.

करनौं v. a. Faire, exécuter une chose.

करम Voyez कर्म.

करवानौं v. a. Faire faire.

करा s. m. Voyez कर.

करा adj. Faux.

करानौं v. a. Faire faire, exécuter, accomplir.

करामात s. f. pl. Miracles. — A. كرامات.

करामाति Voyez करामात.

करार Voyez करारा.

करारा adj. Dur, cruel, terrible.

कराला Voyez करारा.

करु impérat. Voyez करनौं.

करुना s. f. Compassion.

करेजा s. m. Foie, cœur.

कर्णं pour कारण forme infl. de l'inf. du v. कारणौं.

कर्पूरकेल n. pr. Karpoûrakel.

कर्पूरमंजरी n. pr. Karpoûramandjarî.

कर्म s. m. Action, œuvre, cérémonie.

कर्मा Voyez कर्म.

कर्म्म Voyez कर्म.

कलं s. f. Voyez कल.

कलंक s. m. Tache, souillure, déshonneur.

कल s. m. Bruit agréable, murmure.

कल s. m. Voyez कलि.

कल s. f. Trappe, piége, machine.

कलपबृष s. m. Arbre qui croît dans le paradis d'Indra, et produit tout ce que l'on désire.

कलरव s. m. Colombe, tourterelle.

कलस s. m. Vase, pot (*servant à mettre de l'eau*).

कलह s. m. Querelle.

कला s. f. Artifice.

कलि s. m. Kali-youga, ou le dernier des quatre âges du monde.

कल्यान s. m. Bonheur, prospérité.

कवन pron. interr. Qui? quel?

कष्ट s. m. Peine, difficulté, détresse.

कहूं adv. Voyez कहां.

कहूं postpos. servant à marquer le dat. et l'acc.

कहु postpos. Voyez कहूं.

कहन n. verb. Action de dire, dire.

कहनौं v. a. Dire. — नहिं कहनौं Refuser.

कहवानौं v. a. Faire dire.

कहां adv. Où?

कहांलों adv. Jusqu'où? jusqu'à quel point?

कहा s. m. Parole, dire.

कहा pron. interr. et adv. Quel? quoi? comment? est-ce que? pourquoi? — *Quand il est répété, signifie :* Et.

कहानी s. f. Histoire, récit.

कहानौं v. a. Faire dire, dire, s'appeler.

कहि adj. Quelque, quelque chose.

कहीं adv. Quelque part.

कही adv. Voyez कहीं.

कहु adj. Voyez कहि.

कहूं adv. Quelque part.

कहो impérat. Voyez कहनौं.

कहौ pron. interr. Quel?

कह्या s. m. Voyez कहा.

कह्यो temps pass. Voyez कहनौं.

कह्यौ s. m. Voyez कहा.

कांचन s. m. Or.

कांचनपुर् n. pr. Kântchanapour.

कांटनौं Voyez काटनौं.

कांटा s. m. Épine.

कांटौ s. m. Balance.

कांधा s. m. Épaule.

कांन s. m. Voyez कान.

कांपनौं v. n. Trembler, être agité.

कांमदेवं nom pr. Kâmadéva (*le dieu de l'amour*).

कांहि pron. cas obliq. pour काहे.

का Voyez क्या.

काड़ Voyez काढ़.

काग s. m. Corbeau.

कागद् s. m. Papier. — P. كاغد.

कागनि s. f. Femelle du corbeau.

कागनी Voyez कागनि.

कागा Voyez काग.

कागु Voyez काग.

कागुनी Voyez कागनि.

कागृ Voyez काग.

काच s. m. Verre.

काचा Voyez काचौ.

काचौ adj. Qui n'est pas mûr, fait de terre non cuite, inexpérimenté, faux.

काढ़नौं v. a. Tirer.

काज s. m. Affaire. — *S'emploie adverbial. dans le sens de :* Pour, à cause de.

काजा Voyez काज.

काजि Voyez काज.

काटनहारु s. m. Coupeur. — रूंष काटनहारु Bûcheron.

काटनौं v. a. Couper, déchirer, interrompre, mordre, piquer. — काट डालनौं Tailler en pièces, moissonner.

काठ s. m. Bois, morceau de bois.

काढनौं v. a. Tirer, retirer, arracher, enlever, transporter.

काद्रौं s. m. Bourbier.

कान s. m. Oreille.

कान s. f. Respect, modestie.

कानन s. m. Forêt.

काना s. f. Voyez कान.

काना adj. Borgne.

कानि Voyez कान.

कानी Voyez कान.

कापनौं Voyez कांपनौं.

काब्य s. m. Poeme.

काम s. m. Désir, amour. — n. pr. Kâma (*dieu de l'amour*).

काम s. m. Affaire, action, chose, emploi, utilité. — किस काम की लक्ष्मी है A quoi bon la fortune?

कामना s. f. Désir.

कामरी s. f. Couverture.

कामरूप adj. Qui a la forme, la beauté de l'amour.

कामरूपी Voyez कामरूप. — कामरूपी बिष Poison de l'amour.

कामा Voyez काम.

कामिनि Voyez कामिनी.

कामिनी adj. f. Femme qui aime.

कामी adj. Luxurieux.

काम्‌ Voyez काम.

काय Voyez काया.

कायर् adj. Lâche, poltron.

काया s. f. Corps.

कार् s. m. Affaire. — P. کار.

कार्क adj. Qui fait, qui produit.

कार्‌ज s. m. Affaire, action.

कार्‌ण s. m. Cause, motif.

कार्‌णु Voyez कार्‌ण.

कार्‌न Voyez कार्‌ण.

कार्‌नै cas obliq. du s. कार्‌न. — *Empl. adverbialement :* Pour, à cause de.

कारा adj. Noir.

कारी adj. Voyez कारा.

कारी *En compos.* Faisant.

कारुन्य s. m. Tendresse.

कार्ज Voyez कार्‌ज.

कार्ज्य Voyez कार्‌ज.

कार्य s. m. Affaire, action.

कार्य्य Voyez कार्य.

काल s. m. Temps, mort.

काला Voyez काल.

कालौ adj. Noir.

काल्हि pour काल हि Au moment de.

काव्य s. m. Poeme.

काश्यप s. m. Descendant de Kasyapa.

कासी n. pr. Kâsî ou Bénarès.

काह्न Voyez काहू.

काहूं Voyez काहू.

काहू cas obliq. sing. des pron. indéf. कोउ et कछू.

काहे cas obliq. du pron. interr. कहा. *Empl. adverbial.* Pourquoi?—काहे को (*même sens*).

काहै Voyez काहे.

किंदुविल्व n. pr. Kindouvilwa.

कि conj. Que, parce que, lorsque. — P. کہ.

कित adj. Combien? quelques-uns.

कित adv. Où?

कितना adj. Combien?— कितनी एक बेर Plusieurs fois.

किधर adv. Où?

किमि adv. Comment? pourquoi?

कियो temps pass. Voyez करनौं.

किर s. m. Pourceau.

किरण s. f. Rayon, trait de lumière.

किरति Voyez कीरति.

किरारा s. m. Bord (d'une rivière), rive.

किलकारा s. f. Cri de joie.

किलनौं v. n. Soupirer, gémir, se lamenter.

किस pron. interr. cas obliq. Quel?

किसान s. m. Laboureur, paysan.

किसी cas obliq. du pron. indéf. कोई.

किसोर s. m. Jeune homme, adolescent.

किहिं pron. interr. cas obliq. Quel?

किहि Voyez किहिं.

किहुं pron. indéf. cas obliq. pl. Quelques.

कीट s. m. Insecte, ver.

कीननौं Voyez करनौं.

कीनौं Voyez करनौं.

कीन्हो temps pass. Voyez करनौं.

कीर s. m. Perroquet.

कीरतन s. m. Célébration des louanges d'un dieu, chant d'hymnes.

कीरति s. f. Renommée, réputation, gloire.

कीर्त्ति Voyez कीरति.

कुं postpos. pour को.

कुंडल s. m. Anneau d'oreille, cercle.

कुंडलपुर n. pr. Koundalpour.

कुंमार Voyez कुंवर.

कुंवर s. m. Prince, jeune homme.

कुंवरि Voyez कुंवारी.

कुंवार Voyez कुंवर.

कुंवारा Voyez कुंवर.

कुंवारी s. f. Princesse, jeune fille. — m. pour कुंवार.

कुंवारू Voyez कुंवर.

कु postpos. pour को.

कुकरा s. m. Chien.

कुगति s. f. Mauvais état, mauvaise situation.

कुछ pron. indéf. Un, quelque, quelque chose. — *S'emploie comme adverbe :* En quelque chose, un peu.

कुञ्चित adj. Qui n'est pas droit, pervers.

कुञ्ज s. m. Berceau, bosquet.

कुटनी s. f. Entremetteuse.

कुटिल adj. Courbe, tortueux, pervers, méchant.

कुटुंब s. m. Famille.

कुटेव s. f. Mauvaise disposition.

कुत्ता s. m. Chien.

कुन्त s. m. Insecte.

कुपात्र adj. Indigne, incapable.

कुबचन s. m. Mauvaise parole, mauvais discours.

कुमार s. m. Prince, fils, jeune homme.

कुमारग s. m. Mauvaise voie, impiété.

कुमारी s. f. Princesse, jeune fille. — m. pour कुमार.

कुमारू Voyez कुमार.

कुमिलानौं v. n. Se faner, se flétrir.

कुम्हार s. m. Potier.

कुरु impér. forme sanscrite, Fais.

कुरूप adj. Laid.

कुल s. m. Famille, caste.

कुलदेवी s. f. Déesse adorée dans une famille.

कुलीन adj. Bien né, de bonne famille.

कुल्हारी s. f. Hache.

कुवा Voyez कूवा.

कुशल s. f. Bien-être, santé, bonheur, intérêt.

कुसम s. m. Fleur.

कुसल Voyez कुशल.

कुसलात s. f. Santé, bien-être.

कुसलातां Voyez कुसलात.

कुसली adj. Bien portant.

कू postpos. pour को.

कूक s. f. Cri, lamentation.

कूकनौं v. n. Crier, se lamenter, sangloter.

कूकर् s. m. Chien.

कूजनौं v. n. Roucouler.

कूदनौं v. n. Sauter, se rouler.

कूप s. m. Puits.

कूवा s. m. Puits.

कूषि s. f. Sein, matrice.

कृत adj. Fait.

कृपा s. f. Faveur, bonté, miséricorde, compassion.

कृपाल adj. Miséricordieux, bienveillant.

कृपिणि adj. f. misérable, vile.

कृषी s. f. Agriculture.

कृष्ण s. m. Quinzaine pendant laquelle la lune est dans son déclin. — n. pr. Krichna.

कृष्ण् Voyez कृष्ण.

कृष्णचंद्र n. pr. Krichnatchand (*nom de Krichna*).

कें postpos. pour के.

केतांई postpos. A. — (*S'emploie pour* को.)

केता adj. Combien? quelque.

केरो postpos. pour कौ.

केल s. f. Jeu, divertissement, badinage.

केलि Voyez केल.

केवल adv. Seulement.

केस s. f. Chevelure.

केसरि s. f. Safran.

केहि pron. interr. Quel?

केहुं postpos. pour को?

कैं postpos. pour के. — particul. pour कै.

कै adj. Quelque. — कै एक Quelques.

कै conj. Ou. — postpos. pour के.

कैउ adj. Quelque.

कैतांहीं Voyez केतांई.

कैद् s. f. Emprisonnement, lien, chaîne. — A. قيد.

कैबर् s. m. Cousin (*insecte*).

कैसा adj. Quel? comment?

कैसें Voyez कैसे.

कैसे adv. Comment?

कैसैं Voyez कैसे.

कैसै Voyez कैसे.

कैसो Voyez कैसा.

कैसौ Voyez कैसा.

कों pron. interr. Qui?

कों postpos. pour कौं.

कोंन pron. interr. Qui? quel?

को pron. interr. Qui? quel?

को postpos. servant à marquer le dat. et l'acc. — *S'emploie aussi pour* कौ.

कोइय Voyez कोई.

कोई pron. indéf. Un, quelque, quelqu'un. — सब कोई Chacun. — जो कोई Quiconque.

कोउ Voyez कोऊ.

कोऊ pron. indéf. Un, quelque, quelqu'un. — सब कोऊ Chacun.

कोक s.m. Science des rapports de l'homme avec la femme.

कोट s. m. Forteresse, château fort.

कोट adj. Beaucoup.

कोटि adj. Dix millions.

कोटिक s. m. Quantité de dix millions.

कोठा s. m. Maison, chambre.

कोठी s. f. Chambre.

कोप s. m. Colère.

कोमर् Voyez कोमल.

कोमल adj. Doux, tendre.

कोय Voyez कोई.

कोरा adj. Nouveau, neuf.

कोली s. m. Tisserand.

कोस s. m. Kos (*mesure de distance équivalant à deux milles anglais*).

कौं postpos. servant à marquer le dat. et l'acc.

कौंण Voyez कौन.

कौंन Voyez कौन.

कौंनु Voyez कौन.

कौंनैं Voyez कौन. — कौंनैं एकै Un.

कौंनै Voyez कौन.

कौ postpos. servant à marquer le gén.

कौ pron. interr. Qui? quel?

कौआ s. m. Corbeau.

कौई pour कौ हि.

कौउ Voyez कोऊ.

कौड्यन्य n. pr. Kaudyanya.

कौतिक Voyez कौतुक.

कौतुक s. m. Amusement, divertissement, gaieté.

कौन pron. interr. Qui? quel? — pron. indéf. Quelque, un. — *Empl. adverbial.* Est-ce que?

कौनु Voyez कौन.

कौने Voyez कौन.

कौर् s. m. Dix millions.

कौरव s. m. Descendant de Kourou.

कौरो Voyez कौरो.

कौवा s. m. Corbeau.

कौशिक s. m. Descendant de Kousika (*nom de Viswâmitra*).

कौशिकी n. pr. Kausikî (*rivière qui coule dans le Béhar*).

कौस Voyez कोस.

क्या pron. interr. Quel? quoi? — *Adv.* Est-ce que? comment? — *Quand il est répété, il équivaut à la conj.* et. — क्या स्त्री क्या पुरुष Hommes et femmes.

क्यों adv. Pourquoi? comment? parce que.

क्यौं Voyez क्यों.

क्योंकर् Voyez क्यों.

क्योंकि conj. Parce que.

क्यौं जू conj. Parce que.

क्यौन Voyez क्यों.

क्रयक्रीत adj. Acheté.

क्रव्याद् s. m. Animal carnassier, Râkchasa.

क्रिडा Voyez क्रीडा.

क्रीडा s. f. Amusement, plaisir.

क्रोध s. m. Colère. — क्रोध करनौं Se mettre en colère.

क्रोधवंत adj. Colère.

क्रोधी adj. Colère.

क्षण s. m. Moment, instant.

क्षणक Voyez क्षण.

क्षत्र Voyez क्षत्रिय.

क्षत्रयोनि m. comp. adj. Qui est né kchatriya.

क्षत्रिन Voyez क्षत्रिय.

क्षत्रिय s. m. Kchatriya ou homme de la caste guerrière, guerrier.

क्षत्री Voyez क्षत्रिय.

क्षमा s. f. Patience, pardon.

क्षिति s. f. Terre.

क्षितिपाल s. m. Roi, prince.

क्षितीश s. m. Roi.

क्षिन s. m. Instant. — क्षिन भर् Un moment.

क्षीर् s. m. Lait, eau.

क्षुत्पिपासाकुलित m. comp. Tourmenté par la faim et la soif.

क्षुद्रबुधि n. pr. Kchoudraboudhi.

क्षुधा s. f. Faim, famine.

क्षेत्रभव s. m. Fils né de la femme et d'un parent, ou de toute autre personne chargée par le mari de lui donner un héritier.

क्षेम s. f. Bien-être, bonheur.

ख

खंड s. m. Portion, contrée, région, province.

खंभ s. m. Pilier, poteau.

ख़ज़ाना s. m. Trésor. — A. خزانه.

खड्ग s. m. f. Épée, poignard.

खडा adj. Qui se tient debout. — खडा होनौं Se tenir debout. — खडा रहनौं S'arrêter.

खड़ा Voyez खडा.

खडो Voyez खडा.

खड्ग Voyez खड्ग.

खपनौं v. n. Rester, se rencontrer avec, entrer, pénétrer.

ख़बर् s. f. Nouvelle. — A. خبر.

खर्ब adj. num. Un billion.

खर्ब *Allitération employée pour la rime.*

खर्बु Voyez खर्ब.

खवानौं v. a. Manger.

खांड s. m. Sucre (brut).

खांडा s. m. Poignard, épée.

खांडो Voyez खांडा.

खान s. f. Mine.

खानौं v. a. Manger, dévorer. — *Au fig.* éprouver, souffrir.

ख़ियाल s. m. Pensée, idée, opinion, imagination. — A. خيال.

खिलौना s. m. Joujou.

खिसियानौ adj. Chagrin, fâché, honteux.

खिस्यानौ Voyez खिसियानौ.

ख़ुश adj. Satisfait, content. — P. خوش.

ख़ुशामदी s. f. Flatterie, condoléance. — ख़ुशामदी लोग Gens à gages que l'on paye pour partager sa joie ou sa douleur. — P. خوشامدی.

खुशी खुशी adj. Joyeux. — P. خوشی خوشی.

खेत s. m Champ, champ de bataille.

खेती s. f. Moisson.

खेलनौं v. n. Jouer, se divertir.

खैंचनौं v. a. Tirer avec force, arracher violemment, déchirer.

खोनौं v. a. Perdre, gaspiller, dissiper.

खोलनौं v. a. Ouvrir, déployer, délier, délivrer.

खोवनौं Voyez खोनौं.

ख्यात adj. Célèbre, fameux.

ग

गंगा n. pr. La Gangâ ou le Gange.

गंधर्ब s. m. Gandharva, ou musicien céleste, musicien.

गंधर्व Voyez गंधर्ब.

गंध्रव Voyez गंधर्ब.

गंभीर् adj. Profond, grand.

गंवार् s. m. Villageois.

गंवारा Voyez गंवार्.

गउ s. m. f. Vache.

गऊ Voyez गउ.

गगण s. m. Ciel, firmament.

गगन Voyez गगण.

गज s. m. Éléphant.

गजपति s. m. Homme monté sur un éléphant.

गजब s. m. Colère, fureur. — A. غضب.

गड़नौं v. n. Pénétrer, être enfoncé (en terre), s'enfoncer, être fixé, être enfoui.

गड्हा s. m. Fosse, trou.

गड़ानौं v. a. Faire enterrer.

गढ s. m. Château fort, forteresse.

गण s. m. Classe, multitude, troupe, troupes de divinités inférieures.

गत part. ou adj. Allé, parti.

गति s. f. Conduite, démarche, marche, refuge, salut, funérailles.

गदा s. f. Massue.—गदा युद्ध Combat avec la massue.

गदाग्र mot comp. Extrémité d'une massue.

गदाङ्क adj. Qui porte une massue comme marque, comme signe distinctif.

गन Voyez गण.

गनिका s. f. Courtisane.

गमानौं v. a. Faire partir. — दोष गमानौं Effacer une faute.

गम्भीर् adj. Bas (*en parlant de la voix*).

गयौं part. pass. empl. subst. Voyez जानौं.

गर् s. m. Cou, gorge, gosier.

गरुओ adj. Lourd, important.

गर्ब s. m. Orgueil, vanité, fierté.

गर्बवंत adj. Orgueilleux, vaniteux.

गर्बु Voyez गर्ब.

गर्बै pour गर्ब ही Voyez गर्ब.

गर्भ s. m. Sein, matrice, grossesse, état d'un oiseau qui est sur le point de pondre, fœtus, enfant dans le sein de sa mère.

गलबांह् s. f. Embrassement, action de jeter ses bras autour du cou de quelqu'un.

गलबांही Voyez गलबांह्.

गवानौं v. a. Faire chanter.

गहन s. m. Bois, forêt.

गहना s. m. Joyau, bijou.

गहनौं v. a. Prendre.

गहरौ adj. Profond.

गांईं s. m. Village, ville

गांउं Voyez गांङ.

गांउ Voyez गांङ.

गांङ s. m. Village, ville.

गांगरौन n. pr. Gângaraun.

गांटनौं Voyez गांठनौं.

गांठ s. f. Nœud.

गांठनौं v. a. Attacher, lier, réunir, coudre.

गांनौं Voyez गानौं.

गांम Voyez गाम.

गांवं Voyez गांव.

गांव s. m. Village, ville.

गाई् s. f. Vache.

गाजनौं v. n. Rugir, faire du bruit, rendre un son.

गाजा बाजा s. m. Son de divers instruments de musique.

गाटनौं Voyez गांठनौं.

गाठ Voyez गांठ.

गाठनौं Voyez गांठनौं.

गाठि s. f. Bourse.

गाड s. m. Fossé.

गाउनौं v. a. Repousser, enfoncer profondément.

गाडी s. f. Chariot.

गाढो adj. Épais, fort, grand, sage, habile.

गाढौ Voyez गाढो.

गात s. f. Corps, membre.

गाथा s. m. Chant, stance.

गान s. m. Chant.

गानौं v. a. Chanter.

गान्धर्ब s. m. *Nom d'un des huit modes de mariage.*

गान्धर्बौ Voyez गान्धर्ब.

गाम s. m. Village, ville.

गामी adj. Allant, marchant.

गाय s. f. Vache.

गार् Voyez गारि.

गारि s. f. Reproche, injure, outrage.

गार्हपत्य s. m. Feu du foyer domestique, d'où l'on tire le feu du sacrifice.

गाव Voyez गांव.

गावनौं Voyez गानौं.

गिद्ध s. m. Vautour.

गिधू s. m. Vautour.

गिनती s. f. Énumération.

गिननौं v. a. Compter, calculer, tenir compte, faire cas de.

गिरनौं v. n. Tomber.

गिरा s. f. Voix, discours.

गिरानौं v. a. Faire tomber, renverser.

गिरि s. m. Montagne.

गीत s. m. Chant.

गीतगोबिंद् n. pr. Gîtagovinda.

गीदड s. m. Chacal.

गीध s. m. Vautour.

गीधर् s. m. Vautour.

गीधु Voyez गीध.

गीधू Voyez गीध.

गुञ्जार् s. m. Bourdonnement.

गुण s. m. Qualité, mérite, propriété.

गुणेन adj. Vertueux, doué de qualités.

गुणवंत adj. Doué de qualités, bon.

गुणवत Voyez गुणवंत.

गुणो Voyez गुण.

गुन Voyez गुण.

गुनवान adj. Vertueux, doué de qualités.

गुना *En composit.* Le double,

deux fois autant. — *Exemple :* सौ गुना, centuple.

गुनियर् adj. Doué de qualités.

गुनी adj. Vertueux, adroit, doué de qualités.

गुरु s. m. Gourou, précepteur spirituel. — गुरुदत्त Donné par un gourou.

गुसांईं s. m. Saint personnage. *(Ce mot s'emploie aussi comme terme de respect.)*

गुसांई् Voyez गुसांईं.

गुहारनौं v. a. Appeler.

गूंजनौं v. n. Bourdonner, murmurer.

गूजरि Voyez गूजरी.

गूजरी s. f. Femme d'une caste inférieure et originaire du Guzarate.

गूढ adj. Caché.

गूदरी s. f. Espèce de matelas.

गृह s. m. Maison.

गृहस्थ s. m. Maître de maison, chef de famille.

गृहस्थई s. f. Maison, famille, état de maître de maison.

गो pour गयौ Voyez जानौं.

गो signe du fut. pour गौ.

गोई signe du fut. pour गो ह्वी.

गोकुल s. m. Commerce criminel.

गोचर् adj. Aperçu, connu.

गोतमारन्य n. pr. Gotamâranya.

गोद s. f. Giron, sein. — गोद पसारनौं Supplier.

गोप s. m. Vacher, laitier.

गोरस s. m. Lait.

गोविंद n. pr. Govinda *(nom de Krichna)*.

गौंन s. m. Action d'aller.

गौ s. m. f. Vache.

गौणि s. f. Sac.

गौनि Voyez गौणि.

गौर् adj. Qui a un beau teint.

गौवैं s. pl. cas obliq. Voyez गौ.

ग्यांनी Voyez ग्यानी.

ग्यान s. m. Connaissance, sagesse, intelligence.

ग्याना Voyez ग्यान.

ग्यानी adj. Sage, savant. — s. m. Sage.

ग्रंथ s. f. Livre.

ग्रह s. m. Maison.

ग्रहण s. m. Action de prendre, prise.

ग्रहन s. m. Voyez ग्रहण.

ग्रहसथ Voyez ग्रहस्थ.

ग्रहस्ताश्रम s. m. Condition de maître de maison, de chef de famille.

ग्रहस्थ s. m. Maître de maison, chef de famille.

ग्रहि Voyez ग्रह.

ग्राम s. m. Bourg, village.

ग्राम्य adj. Rustique, vulgaire, commun.

ग्रिधकुट n. pr. Gridhakouta.

ग्रीध s. m. Vautour.

ग्रीवां Voyez ग्रीवा.

ग्रीवा s. f Cou.

ग्रेह s. m. Maison.

घ

घंटा s. m. Clochette, sonnette.

घट s. m. Pot, vase à mettre de l'eau.

घट s. f. Cœur.

घटनौं v. n. Dépérir, s'affaiblir, diminuer, décroître.

घटानौं v. a. Diminuer, affaiblir, abattre.

घटि s. f. Voyez घरी.

घटिका s. f. Espace de temps comprenant vingt-quatre minutes.

घन s. m. Nuage, firmament.

घन adj. Voyez घना.

घना adj. Épais, nombreux, qui est en grande quantité.

घमसान s. m. Bataille.

घमसाना Voyez घमसान.

घर s. m. Maison.

घरि Voyez घर.

घरी s. f. Espace de temps comprenant vingt-quatre minutes. — P. گهری.

घर्म s. m. Chaleur.

घाट s. m. Quai, endroit où l'on peut se baigner au bord d'une rivière.

घात s. f. Intention, dessein, occasion.

घात s. Meurtre.

घातक s. m. Meurtrier, destructeur.

घायल adj. Blessé.

घाल्नौं v. a. Répandre, servir, présenter.

घास s. f. Chaume.

घिर्नौं v. n. Être entouré, se rassembler, être rassemblé, s'amasser.

घुमड़ानौं v. n. Rouler, tourbillonner.

घुमानौं v. a. Faire tourner, brandir.

घुर् s. m. Cheval.

घुर्नौं v. a. Voir, regarder.

घूंघट s. f. Voile.

घूंमनौं Voyez घूमनौं.

घूट s. m. Action de boire, d'avaler, gorgée.

घूमनौं v. n. Aller autour, tourner, tourbillonner.

घृत s. m. Beurre fondu, clarifié.

घेर्नौं v. a. Entourer, environner. — v. n. Se rassembler, se réunir, s'amasser.

घोड़ा s. m. Cheval.

घोर् adj. Terrible, effrayant.

घोर्या s. m. Fumier.

घोरा Voyez घोड़ा.

घ्राण s. m. Odorat, odeur.

घ्रान Voyez घ्राण.

च

चंचल adj. Passager, périssable.

चंडाल s. m. Homme de la caste la plus basse, malheureux.

चंद् s. m. Lune.

चंद्वा n. pr. Tchandawâ.

चंदा Voyez चंद्.

चंद्रमां Voyez चंद्रमा.

चंद्रमा s. m. Lune. — n. pr. Tchandramâ ou la Lune.

चंद्रायण s. m. Pénitence lunaire.

चंपा s. m. *Nom d'arbre* (*Michelia champaca*).

चंपावति n. pr. Tchampâwati.

चकित adj. Étonné.

चकोर् s. m. Bartavelle (*espèce de perdrix qui, suivant les Indiens, est amoureuse de la lune*).

चक्क्वै n. pr. Tchakkwaï.

चक्र s. m. Roue, disque de Vichnou, expiation religieuse

qui consiste à attacher le pénitent à un levier et à le faire tourner.

चक्रित adj. Étonné.

चख s. m. Œil.

चटपटी s. f. Trouble, précipitation.

चटि adv. Promptement. — s. f. Bruit que fait une chose en se brisant, éclat. — चटि जानौं Être dissipé.

चढ़नौं v. n. Monter, s'avancer, s'embarquer, marcher.

चढ़्नौं Voyez चढ़नौं.

चढ़ानौं v. a. Faire monter, embarquer, offrir en sacrifice, porter, placer.

चढ़ानौं Voyez चढ़ानौं.

चतुर् adj. num. Quatre.

चतुर् adj. Adroit, habile, sage, savant.

चतुरङ्ग s. m. Armée complète (*composée d'éléphants, de chariots, de cavaliers et de fantassins*).

चतुरा adj. Adroit, intelligent, habile.

चतुराई s. f. Adresse, sagesse, intelligence.

चतुर्दशी s. f. Le quatorzième jour de la quinzaine lunaire.

चतुर्विधि adj. De quatre espèces, de quatre manières.

चतुर्भुज adj. Qui a quatre bras (*épith. de Vichnou*).

चन्द्र s. m. Lune.

चपल adj. Agité, tremblant, qui remue.

चमक s. f. Éclat, splendeur.

चर्चा s. m. f. Discussion, considération, recherche.

चरण s. m. Pied.

चरन Voyez चरण.

चरन s. Action de paître.

चरनौं v. n. Paître.

चरम s. m. Cuir, peau.

चरित Voyez चरित्र.

चरित्र s. m. Conduite, qualité, action, fait, aventure, histoire.

चरिवानौं v. a. Paître, faire paître.

चलन s. m. Habitude, procédé, conduite.

चलनौं v. n. Aller, marcher, s'en aller, circuler, couler.

चलानौं v. a. Faire avancer, faire partir, envoyer, lancer, chasser, bannir, effacer.

चह्नौं v. a. Désirer, choisir, préférer.

चह्ल पह्ल s. f. Amusement, fête.

चहुं Voyez चहूं.

चहूं adj. num. Quatre.

चांद् s. m. Lune.

चांद्नी s. f. Clair de lune.

चांम Voyez चाम.

चाउर् adj. num. Quatre.

चाकर् s. m. Serviteur. — P. چاکر.

चाकरी s. f. Service. — P. چاکری.

चातुर् adj. Voy. चतुर्.

चाप s. m. Arc.

चाम s. m. Peau, cuir.

चार् adj. num. Quatre. — P. چار.

चारन s. m. Barde.

चारा s. m. Nourriture.

चारि Voyez चार्.

चारी Voyez चार्.

चारों Voyez चार्.

चारो Voyez चार्.

चारौं Voyez चार्.

चालनौं v. n. Marcher, aller.

चाषनौं v. a. Goûter, jouir de.

चाह् s. f. Désir, choix.

चाह्नौं v. a. Désirer, chercher, vouloir.

चाह्नौं v. a. Voir, chercher.

चिंघार्नौं v. n. Crier. (*Ce mot s'emploie le plus souvent pour désigner le cri de l'éléphant.*)

चिंत s. f. Pensée, réflexion.

चिंत Voyez चित.

चिंता s. f. Réflexion, souci. — चिंता कर्नौं Penser, s'inquiéter, réfléchir.

चिठी s. f. Lettre.

चित s. m. Esprit, âme.

चितनौं v. n. Voir, regarder, penser.

चितरेषा Voyez चित्ररेषा.

चिता s. f. Bûcher funéraire.

चित्त s. m. Esprit, cœur, âme. — चित्त देनौं Prêter de l'attention.

चित्र s. m. Peinture.

चित्रकरन Voyez चित्रकर्न.

चित्रकर्न n. pr. Tchitrakarna.

चित्रकर्ण Voyez चित्रकर्न.

चित्ररेष Voyez चित्ररेषा.

चित्ररेखा n. pr. Tchitrarêkhâ.

चिनगी s. f. Étincelle.

चिन्तनौं v. a. Penser.

चिरंजीव adj. Qui vit longtemps.

चिरजीनौं v. n. Vivre longtemps, avoir une longue vie.

चिरौंजी s. f. Noix du *Chironjia sapida.*

चिलक s. f. Éclat.

चींटी s. f. Fourmi.

चीठी s. f. Lettre.

चीता s. m. Léopard (*Felis jubata*).

चीधर n. pr. Tchîdhar.

चीनह्नौं v. a. Connaître, reconnaître.

चीना Voyez चीनह्नौं.

चीर s. m. Déchirure, action de déchirer.

चील्ह s. f. Milan.

चुत adj. Tombé, qui s'est écarté de.....

चुननौं v. a. Assembler, ramasser, arranger, choisir.

चुप adj. Silencieux.

चुपका adj. Silencieux.

चुपचाप adv. Silencieusement, furtivement.

चुपरानौं v. a. Falsifier.

चुरानौं v. a. Voler, dérober.

चूक s. f. Faute, erreur.

चून s. m. Farine.

चूर adj. Brisé, broyé.

चूल्हो s. m. Foyer.

चेत s. m. Esprit, pensée, mémoire.

चेरो s. m. Esclave, serviteur.

चैन s. m. Repos, satisfaction, tranquillité.

चोज s. m. Finesse, adresse.

चोट s. f. Coup, dommage.

चोटी s. f. Mèche de cheveux (sur le sommet de la tête).

चोड adj. Dévasté, détruit.

चोप s. f. Désir, avidité.

चोर s. m. Voleur.

चोरानौं v. a. Voler, dérober, prendre.

चोरी s. f. Vol. — चोरी करनौं Voler, dérober.

चौंकनौं v. n. Tressaillir, trembler. — चौंक परनौं Bondir, se dresser.

चौंसठ adj. num. Soixante-quatre.

चौकसी s. f. Garde.

चौकी s. f. Garde, veille.

चौको s. m. Espace dans lequel les Indiens prennent leur repas ou préparent leur nourriture.

चौगुनौ adj. Quatre fois autant, quadruple.

चौतरा s. m. Bureau de police.

चौथा adj. num. Quatrième.

चौथो Voyez **चौथा**.

चौदसि s. f. Quatorzième jour de la quinzaine lunaire.

चौप Voyez **चोप**.

चौपई Voyez **चौपाई**.

चौपाई s. f. Espèce de mètre hindoui.

चौबार s. m. Pavillon, hangar.

चौबारा Voyez **चौबार**.

चौमुख s. m. Lampe à quatre becs.

चौमुखा adj. Qui a quatre becs (lampe).

चौर Voyez **चोर**.

चौहटा s. m. Marché auquel aboutissent quatre chemins, carrefour.

च्यारि adj. num. Quatre.

च्यार्‍यौ Voyez **च्यारि**.

छ

छः adj. num. Six.

छटा s. f. Éclat, gloire.

छठौ adj. num. Sixième.

छत्री s. m. Kchatriya ou homme de la caste guerrière.

छन s. m. Instant, moment.

छनौं v. a. Voir.

छप्पै s. m. Espèce de mètre hindoui.

छबि s. f. Beauté, éclat, magnificence.

छमाजुत adj. Doux, clément, patient.

छल s. m. Artifice. — **छल बल** Violence et ruse, stratagème.

छलनौं v. a. Tromper, séduire.

छवानौं v. a. Couvrir, faire couvrir.

छह् adj. num. Six.

छांडनौं v. a. Laisser, abandonner, renoncer à, épargner.

छांह् s. f. Ombre.

छाडनौं Voyez छांडनौं.

छाती s. f. Poitrine.

छान s. f. Toit.

छानि Voyez छान.

छानौं v. a. Couvrir, cacher, abriter, obscurcir, étendre, répandre.

छाप s. f. Sceau.

छाया s. m. f. Abri, demeure, ombre.

छिटकानौं v. a. Ecarter, tirer.

छिडानौं v. a. Délivrer.

छिण s. m. Moment, instant.

छिण adj. Faible, affaibli, maigre.

छिति s. f. Terre, sol.

छिन s. m. Voyez छिण.

छिनक s. m. Instant, moment.

छिपनौं v. n. Être caché.

छिप्र adv. Promptement, aussitôt.

छिरकनौं v. a. Jeter de l'eau sur, asperger.

छिरकानौं v. a. Faire répandre, verser.

छींक s. f. Éternuement.

छीजनौं v. n. Dessécher, dépérir, décroître, baisser.

छीण adj. Amaigri, desséché, pauvre.

छीन Voyez छीण.

छीननौं v. a. Enlever, tirer, arracher.

छीपी s. m. Imprimeur sur étoffes.

छीर् s. m. Lait.

छूटनौं v. n. Être abandonné, être omis, être lâché, être délivré.

छुटानौं v. a. Quitter, abandonner.

छुडानौं v. a. Abandonner, quitter, délivrer, éloigner, écarter.

छुडावनौं Voyez छुडानौं.

छुनौं Voyez छूनौं.

छुर् Voyez छुरा.

छुरा s. m. Rasoir.

छुरी s. f. Couteau.

छुहारी s. f. Datte (*Phœnix dactylifera*).

छूटनौं v. n. Cesser, être abandonné, être oublié, être négligé, être perdu, manquer. — v. a. Abandonner.

छूड़ानौं Voyez छुड़ानौं.

छूड़ावनौं Voyez छुड़ानौं.

छूनौं v. a. Toucher, se mêler à.

छोकरी s. f. Jeune fille.

छोटौ adj. Petit, le plus jeune.

छोड़नौं v. a. Laisser, abandonner, quitter, délivrer, ôter, lancer.

छोड़नौं Voyez छोड़नौं.

छोड़ा s. m. Abandon, omission.

छोड़िवो infin. forme infl. empl. subst. Voyez छोड़नौं.

छोत s. f. Impureté, tache, souillure.

छोति Voyez छोत.

छोड़्नौं Voyez छोड़नौं.

छोरा s. m. Garçon, serviteur.

छोड़्नौं Voyez छोड़नौं.

ज

जंजीर् s. f. Chaîne. — P. زنجير.

जंत s. m. Être.

जंत्र मंत्र s. m. Enchantement, formule servant à évoquer.

जंबुक s. m. Chacal.

जकड़नौं v. a. Lier, attacher.

जग s. m. Monde.

जगत s. m. Monde.

जगदीश s. m. Maître du monde (*épith. de Vichnou*).

जगदीस Voyez जगदीश.

जगनौं v. n. S'éveiller, être éveillé.

जगन्नाथ n. pr. Djagannâth (*nom de Vichnou*).

जगमगा adj. Brillant, resplendissant.

जगमगानौं v. n. Briller.

जगह् s. f. Place, demeure, habitation.

जगानौं v. a. Éveiller.

जग्य s. m. Sacrifice.

जक्ष s. m. Yakcha (*espèce de demi dieu.*)

जज्ञ s. m. Sacrifice.

जटित adj. Garni, monté, enchâssé.

जड़ s. m. Fou, insensé.

जड़नौं v. a. Joindre, enchâsser (des pierres précieuses).

जड़नौं v. a. Secouer, se débarrasser de.

जड़ाऊ adj. Garni de pierres précieuses.

जतन s. m. Effort.

जथा adv. Comme, selon. — जथा योग्य Convenablement, comme il faut.

जथेच्छित adv. Suivant son désir, comme on veut.

जद adv. Lorsque, quand.

जदुनाथ s. m. Seigneur des enfants d'Yadou (*épith. de Krichna*).

जदृच्छया s. f. à l'instrum. forme sanscrite. Par caprice, par humeur.

जन s. m. Homme, personne, gens. — *En composit. ce mot donne le sens du pluriel à celui auquel il est joint.*

जन particul. prohib. Voyez जिन.

जनक s. m. Père.

जननौं v. n. Mettre au monde, être né.

जनम s. m. Naissance, existence.

जनमनौं v. n. Être né.

जनमानौं v. a. Engendrer.

जनमेजय n. pr. Djanamédjaya.

जनानौं v. a. Faire connaître, dire, paraître.

जनि particul. prohib. Voyez जिन.

जनित adj. Engendré.

जनु Voyez जनो.

जनो adv. Comme.

जन्म s. m. Naissance, vie, existence. — जन्म लेनौं Naître.

जन्मकर्म s. m. Cérémonie que l'on accomplit à la naissance d'un enfant.

जन्मकर्म्म Voyez जन्मकर्म.

जन्मनौं v. n. Être né, exister.

जपनौं v. a. Répéter (des prières ou le nom d'un dieu).

जब adv. Lorsque, quand.

जबलों adv. Tant que, jusqu'à ce que.

जबलौं Voyez जबलों.

जबै pour जब ही Voyez जब.

जमपुर् s. m. Ville d'Yama ou séjour de la mort.

जयति Victoire! bravo!

जयदेव n. pr. Djayadéva.

जरन s. f. Action de brûler.

जर्नौं v. n. Brûler, être brûlé.

जरानौं v. a. Brûler.

जल s. m. Eau.

जलपांन Voyez जलपान.

जलपाद n. pr. Djalapāda.

जलपान s. m. Action de boire de l'eau, collation.

जलु Voyez जल.

जल्पक s. m. Bavard, parleur.

जव s. m. Orge.

जस s. m. Gloire, renommée, réputation, bonheur.

जहं Voyez जहां.

जह pron. dém. Voyez यह.

जहां adv. Où. — जहां तहां Çà et là, partout.

जां pour जा cas obliq. sing. du pron. relat. जो.

जांणनौं Voyez जाननौं.

जांननौं Voyez जाननौं.

जांनौं Voyez जानौं.

जा cas obliq. sing. du pron. relat. जो.

जाई s. f. Fille.

जाग s. m. Sacrifice.

जागनौं v. n. S'éveiller, être éveillé.

जागरन s. m. Veille, action de veiller en prières.

जागू Voyez जाग.

जाचनौं v. a. Demander, solliciter.

जाणनौं Voyez जाननौं.

जात s. f. Production, naissance, existence, race, caste.

जातकृति s. f. Cérémonie que l'on accomplit à la naissance d'un enfant.

जाति s. f. Race, caste.

जातिपांति s. f. Généalogie, descendance, génération.

जाती Voyez जाति.

जातें Voyez जातैं.

जातैं loc. adverb. Puisque, parce que.

जाते Voyez जातैं.

जादौं Voyez जादौ.

जादौ s. m. Descendant d'Yadou.

जान s. f. m. Esprit, âme. — p. جان.

जान n. verb. Action d'aller.

जान adj. Sage, instruit. — part. Connaissant.

जाननौं v. a. Connaître, savoir, reconnaître, penser.

जानौं v. n. Aller, s'en aller, être, exister.

जाम s.m. Vase, coupe. — P. جام.

जाम s. m. Espace de trois heures ou huitième partie du jour. — आठौ जाम Constamment.

जाया s. f. Femme (mariée).

जार् s. m. Galant.

जार्नौं v. a. Brûler.

जाल s. m. Filet.

जावं pour जाउं Voyez जानौं.

जास cas obliq. sing. du pron. rel. जो.

जाहीं cas obliq. sing. du pron. rel. जो.

जिआनौं v. a. Faire vivre, ressusciter.

जितना adj. Autant que, tout autant que, quel que.

जितनौ Voyez जितना.

जिता Voyez जितना.

जितेंद्रिजौ adj. Qui dompte ses sens.

जितेंद्री s. m. Sage qui a dompté ses sens, ascète.

जिन particul. prohib. Ne pas.

जिनि Voyez जिन.

जिन्हे cas obliq. pl. du pron. rel. जो.

जिन्हैं cas obliq. pl. du pron. relat. जो.

जिमानौं v. a. Nourrir, entretenir.

जिमावनौं Voyez जिमानौं.

जिमि conj. Comme.

जिय s. m. Vie, esprit.

जियवा infin. forme infl. empl. subst. Action de vivre, vie.

जियौ part.? Voyez जानौं.

जिवनौं v. n. Vivre.

जिवानौं v. a. Faire vivre, ressusciter, faire manger.

जिवार्नौं v. a. Faire vivre.

जिह cas obliq. sing. du pron. rel. जो.

जिहिं cas obliq. sing. du pron. rel. जो.

जिहि cas obliq. sing. du pron. rel. जो.

जी s. m. Vie, âme, esprit.

जी Djî (*terme de respect*).

जीत s. f. Victoire. — *Ce mot s'emploie aussi après les noms propres, comme titre d'honneur.*

जीतन n. verb. Action de vaincre.

जीतनौं v. a. Vaincre.

जीता adj. Vivant.

जीति Voyez जितना.

जीन s. m. Selle. — P. زين.

जीनौं v. n. Vivre.

जीभ s. f. Langue.

जीमनौं v. a. Manger. — v. n. Vivre.

जीरणवढांन n. pr. Djīranaudān.

जीव s. m. Vie, âme, être vivant, vivant, amant, bien-aimé.

जीवजन s. m. Les vivants.

जीवत part. Vivant. — adj. Courageux, résolu.

जीवन s. m. Vie, subsistance.

जीवनि Voyez जीवन.

जीवनु Voyez जीवन.

जीवनौं v. n. Vivre.

जु pron. relat. Voyez जो.

जु conj. Voyez जो.

जु pour जी (*terme de respect*).

जुक्त adj. Convenable, qui mérite.

जुग s. m. Un âge du monde, ou grande période, paire, couple. — जुग बीस Quarante.

जुगता s. m. Usage, coutume, manière d'être.

जुदा adj. Séparé, à part. — P. جدا.

जुद्ध s. m. Combat, bataille.

जुध Voyez जुद्ध.

जुधिष्टर n. pr. Youdhichthir.

जुबराज s. m. Youvarâdja ou héritier du trône.

जुरनौं v. n. Être réuni, être rassemblé.

जुरासिंधु n. pr. Djourâsindhou.

जुलाह्रा s. m. Tisserand. — P. جلاها.

जुष s. m. Émotion, passion, plaisir.

जुहार s. f. Salutation, action de se prosterner.

जुहारा Voyez जुहार.

जू adv. Comme, lorsque.

जू *terme de respect*. Voyez जी.

जू pron. relat. Voyez जो.

जूथप s. m. Éléphant chef d'une troupe.

जूध s. m. Combat.

जूह s. m. Couple.

जेठ s. m. Frère aîné du mari.

जेठा adj. Aîné.

जेता adj. Autant que, autant.

जेतेक Voyez जितना.

जेतौ Voyez जेता.

जेमनौं v. a. Manger.

जेहां adv. Où.

जेहि cas obliq. sing. du pron. rel. जो. — cas obliq. sing. du pron. dém. जह?

जै s. m. f. Victoire, bravo! — जै जै कारनौं Pousser des cris de joie.

जै s. m. Vie.

जै conj. Si.

जैदेव Voyez जयदेव.

जैसा adv. ou adj. De même que, tel que, quel. — जैसा वैसा Autant que.

जैसें Voyez जैसे.

जैसे adv. Comme, de même que, que.

जैसें Voyez जैसे.

जैसै Voyez जैसे.

जैसो Voyez जैसा.

जैसौ Voyez जैसा.

जों adv. Comme, lorsque.

जो pron. relat. Qui, lequel, celui qui, ce qui. — जो कोई Quiconque. — *जिस में — इस में Par cette raison que.

जो conj. Si, que, à savoir que, ainsi que, en sorte que, puisque, comme.

जो adv. Lorsque.

जोई pron. rel. Voyez जो.

जोग s. m. Conjoncture, moment favorable, pénitence, dévotion.

जोग adj. Capable, convenable, possible.

जोगनि s. f. Espèce de démon femelle.

जोगी s. m. Pénitent.

जोग्य adj. Capable, convenable, digne de.

जोजन s. m. Yodjana (*mesure de distance*).

जोउनौं v. a. Joindre, unir, rassembler.

जोड़नौं Voyez जोउनौं.

जोति s. f. Éclat, splendeur, lumière.

जोतिक s. m. Astrologie.

जोधा s. m. Guerrier.

जोध्धा Voyez जोधा.

जोबन s. m. Jeunesse, adolescence.

जोबनमंत adj. Jeune.

जोबनवंत adj. Jeune

जोर् s. m. Union.

जोरनौं Voyez जोउनौं.

जोरावर् adj. Violent, qui fait violence. — P. زور آور.

जौं conj. Comme, puisque, si, que.

जौंन pron. rel. Qui, celui qui.

जौंन adv. ou conj. Lorsque, comme, puisque, si.

जौ conj. Voyez जौं.

जौ pron. rel. Qui, lequel. — जौ कोउ Quiconque. — जौ कछु Tout ce qui.

जौन Voyez जौंन.

जौबन Voyez जोबन.

जौलौं adv. Jusqu'à ce que.

ज्ञान s. m. Connaissance, intelligence

ज्ञानवान adj. Instruit, savant, intelligent.

ज्ञानी adj. Sage, savant, intelligent.

ज्यांनौं Voyez ज्यानौं.

ज्यानौं v. a. Faire vivre, ressusciter

ज्यों Voyez ज्यौं.

ज्यौं adv. Comme, lorsque. — ज्यौं का त्यौं, ज्यौं के त्यौं Tout comme, tout à fait de même.

ज्यौ Voyez ज्यौं.

ज्वलित adj. Allumé, enflammé.

झ

झंगा s. m. Vêtement de dessus.

झकझोरनौं v. n. Se disputer, être en querelle, chercher à saisir.

झखनौं v. a. Babiller, réciter.

झगरो s. m. Querelle, dispute, contestation.

झट adv. Promptement, rapidement.

झनकार् s. f. Cri aigu, carillon.

झपटनौं v. n. Se précipiter, sauter sur.

झर् s. f. Cascade, torrent.

झरनौं v. n. Être abattu, tomber.

झाड़ानौं v. a. Faire balayer.

झाड़ि Voyez झाड़.

झाड़खंड s. m. Forêt.

झाड़ा Voyez झाड़ी.

झाड़ी s. f. Épine.

झिलम s. f. Armure, cuirasse.

झिल्ली s. f. *Grillon*.

झुंझलानौं v. n. Éprouver du dépit, être furieux, mécontent.

झुकानौं v. a. Faire baisser, faire courber.

झूठ s. m. Mensonge, fausseté, restes (de nourriture).

झूठ adj. Faux, mensonger.

झूठा adj. Voyez झूठ.

झूठो adj. Voyez झूठ.

झूमनौं v. n. Tournoyer, branler, éprouver des convulsions.

झूलनौं v. n. Pendre, être suspendu, osciller.

झोंपड़ी s. f. Chaumière, hutte.

ट

टकनौं v. a. Voir, regarder.

टका s. m. Monnaie de cuivre valant deux païsas.

टड़नौं v. n. Fuir, éviter, se retirer.

टहल s. f. Service. — टहल कड़नौं Servir.

टापू s. m. Ile.

टाड़नौं v. a. Éloigner, écarter, éviter, transgresser, faire peu de cas de, mettre de côté.

टाल s. f. Remise, action d'éloigner. — टाल देनौं Remettre, différer.

टीका s. f. Commentaire.

टुंडी adj. f. Privée de ses mains. — टुंडियां चढानौं Attacher les mains derrière le dos.

टूटनौं Voyez टूटनौं.

टूक s. m. Morceau, fragment.

टूटनौं v. n. Être brisé, se précipiter, se jeter sur.

टेकनौं v. a. Supporter, soutenir. — v. n. S'appuyer sur.

टेड़ s. f. Action d'être rassasié, satiété.

टेड़ s. f. Voix, appel, accent.

टेर्नौं v. n. Former des accords, chanter, crier, appeler à haute voix.

टेरी Voyez टेर्.

टों Voyez टोना.

टोडा n. pr. Torâ (*village*).

टोना s. m. Enchantement, fascination.

टोप s. m. Casque, cimier, heaume.

ठ

ठकुरा s. f. Domination, empire, autorité, pouvoir.

ठग s. m. Voleur, rusé, trompeur.

ठगनौं v. a. Tromper, duper, voler.

ठगि Voyez ठग.

ठगोरी s. f. Tromperie, fraude, supercherie.

ठठ s. m. Foule, multitude.

ठर्नौं v. n. Être fixé, établi, être debout, rester.

ठहर्नौं v. n. Être fixé, déterminé.

ठहरानौं v. a. Déterminer, fixer, arrêter, décider.

ठांई s. f. m. Demeure, lieu, place.

ठांउं Voyez ठांव.

ठांउ Voyez ठांव.

ठांव s. f. m. Demeure, résidence, lieu, place.

ठाकुर s. m. Idole, divinité, maître, seigneur, propriétaire.

ठाढनौं v. n. Être debout, être établi, être fixé.

ठाढा Voyez ठाढ़ो.

ठाढ़ो adj. Qui se tient debout, droit. — ठाढ़ो कर्नौं Faire entrer.

ठाढौ Voyez ठाढ़ो.

ठाढ़ौ Voyez ठाढ़ो.

ठाननौं v. a. Placer, établir, déterminer, décider.

ठानी s. f. Lieu, place, demeure.

ठावं Voyez ठांव

ठिकानो s. m. Demeure, place.

ठिला adj. Refroidi, amolli.

ठूंठ s. m. Main coupée, blessure.

ठूंठा adj. Coupé, amputé.

ठौर् s. f. Place, lieu, demeure.

— मारिवे के ठौर् Lieu de supplice.

ठौरु Voyez ठौर्.

ड

डंक s. m. Aiguillon, dard.

डंकनि s. f. Espèce de démon femelle.

डगमग adj. Chancelant.

डगमगानौं v. n. Chanceler.

डबडबानौं v. a. Remplir de larmes. — आंखें डबडबानौं Avoir les yeux pleins de larmes.

डबोनौं v. a. Noyer, plonger, détruire, renverser.

डर् s. m. f. Crainte.

डर्नौं v. n. Trembler, craindre.

डर्पनौं v. n. Craindre, avoir peur.

डराणौ adj. Craintif, peureux, effrayant.

डरानौं v. a. Effrayer, craindre.

डरानौ adj. Effrayant, terrible, craintif.

डसनौं v. a. Mordre, piquer.

डह्कानौं v. a. Tromper, duper.

डार्नौं v. a. Jeter, renverser, répandre, mettre, détruire.

डिगमगानौं v. n. Chanceler, menacer ruine.

डुलानौं v. a. Agiter, ébranler, secouer.

डूबनौं v. n. Se noyer, être plongé, être détruit.

डोलनौं v. n. Rôder, errer çà et là.

डोला s. m. Espèce de chaise à porteurs, palanquin.

डोलानौं v. a. Agiter, secouer, remuer.

डौंडनौं v. n. Être proclamé au son du tambour.

डौंडी s. f. Proclamation au son du tambour.

ढ

ढक्यौ adj. ou part. Couvert.

ढल्कानौं v. a. Répandre.

ढल्नौं v. n. Couler, être versé, être répandu, être incliné, être baissé.

ढार् s. f. Bouclier.

ढिंग Voyez ढिग.

ढिग s. m. f. Côté, région. —*Empl. adverbialement*, Auprès de, devant.

ढिठाई s. f. Audace, témérité, impudence.

ढीठ adj. Impudent, audacieux, téméraire.

ढेरी s. f. Tas, monceau.

ढोल s. m. Espèce de gros tambour.

त

तंत्र s. m. Traité religieux.

तंह् adv. Voyez तह्नां.

तईं postpos. qui, jointe à un génit., lui donne le sens du dat. ou de l'acc.

तउ pron. dém. plur. Ceux-là mêmes.

तजनौं v. a. Abandonner, laisser, renoncer à, négliger.

तञ *Allitération employée pour la rime.*

तट s. m. Rive, bord.

ततकाल Voyez तत्काल.

तत्काल adv. En ce temps, alors, de suite.

तत्र adv. Là.

तथा adv. ou conj. Ainsi, de même.

तद् adv. Alors.

तन s. m. Corps, personne.

तनक adj. Petit, léger, délicat. —adv. Un peu.

तनाव s. f. Corde. — A. طناب.

तप s. m. Mortification, pénitence.

तपति s. f. Chaleur.

तपधाम s. m. Hermitage, demeure d'un ascète.

तपरत adj. Voué aux austérités.

तपस s. m. Mortification, austérités religieuses.

तपसी s. m. Ascète. — adj. Qui se livre à des austérités.

तपस्विनि s. f. Femme qui se livre à la vie ascétique.

तब adv. Alors. — तब आगि लै Dès lors. — तब ह्रीं En ce moment même.

तबलों adv. Jusqu'alors, autant de temps.

तबलौं Voyez तबलों.

तबहुं adv. En ce moment même, alors.

तबै pour तब ही Voyez तब.

तमासा s. m. Spectacle, divertissement. — A. تماشا.

तरंग s. f. Vague, flot.

तर adv. Sous.

तरनौं v. n. Traverser, être sauvé.

तरफ़ s. f. Côté. — तरफ़ तरफ़ Ici, là. — A. طرف.

तरवार s. f. Épée.

तरह s. f. Manière. — इंद्र की तरह Comme Indra, इस तरह से De cette manière. — A. طرح.

तरा s. m. Fond, profondeur.

तराज़ू s. f. Balance. — P. ترازو.

तरुन adj. Jeune.

तरुनापन s. m. Jeunesse, puberté.

तरुवर s. m. Grand arbre.

तरुवारि s. f. Épée.

तरे adv. Voyez तर.

तव gén. sing. pron. de la seconde pers. De toi.

तस्य *Allitération employée pour la rime.*

तहं Voyez तहां.

तहां adv. Là, alors.

तहु pron. dém. Voyez तउ.

तांई cas obliq. sing. du pron. dém. वह.

तांति s. f. Corde à boyau.

तांहीं cas obliq. sing. du pron. dém. वह.

ता cas obliq. sing. du pron. dém. वह.

ताई Voyez तांई.

ताकनौं v. a. Viser, épier.

तात s. m. Père. (*S'emploie aussi comme terme d'affection en parlant à un inférieur.*)

ताता adj. Qui réchauffe.

तातें loc. adverb. Pour cette raison.

तातैं Voyez तातें.

तातै Voyez तातें.

तानौं बानौं Voyez तानौ बानौ.

तानौ बानौ s. m. Action d'être toujours en mouvement, d'attendre, agitation.

ताप s. m. Chaleur brûlante, peine, souffrance.

तापसि s. f. Femme ascète.

तापित adj. Échauffé, tourmenté.

तार्नौं v. a. Délivrer, sauver, absoudre d'un péché.

ताल s. m. Espèce de cymbale sur laquelle on frappe avec une baguette.

तास gén. sing. du pron. dém. वह.

ताहां Voyez तहां.

ताहीं cas obliq. sing. du pron. dém. वह.

ताही cas obliq. sing. du pron. dém. वह.

ताहु cas obliq. sing. du pron. dém. वह.

ताहू cas obliq. sing. du pron. dém. वह.

तित adv. Là.

तितना adj. Autant.

तिन cas obliq. pl. du pron. dém. वह. — cas obliq. sing.

तिनि cas obliq. pl. du pron. dém. वह. — cas obliq. sing.

तिनै cas obliq. pl. du pron. dém. वह. — cas obliq. sing.

तिन्ह cas obliq. pl. du pron. dém. वह. — cas obliq. sing.

तिन्हैं cas obliq. pl. du pron. dém. वह.

तिन्है cas obliq. pl. du pron. dém. वह.

तिन्हों cas obliq. pl. du pron. dém. वह.

तिय s. f. Femme.

तिया Voyez तिय.

तिरछौ adj. Oblique, de travers, pervers.

तिरनौं v. n. Franchir, traverser, être sauvé.

तिल s. m. Graine de sésame.

तिलक s. m. Marque faite sur le front.

तिस cas obliq. sing. du pron. dém. वह्.

तिसानौं v. n. Avoir soif de, désirer ardemment.

तिह् cas obliq. sing. du pron. dém. वह्.

तिहिं cas obliq. sing. du pron. dém. वह्.

तिहि cas obliq. sing. du pron. dém. वह्.

तिहुं adj. num. Trois.

तिहु adj. num. Voyez तिहुं.

तिहु cas obliq. sing. du pron. dém. वह्.

तिहूं cas obliq. sing. du pron. dém. वह्.

तीजौ adj. num. Troisième.

तीन adj. num. Trois.

तीनयौं Voyez तीन.

तीनि Voyez तीन.

तीनौ Voyez तीन.

तीन्यौ Voyez तीन.

तीर् s. m. Rivage, bord.—*Empl. adverbial.* Sur le bord de, auprès.

तीर् s. m. Flèche. — P. تیر.

तीरथ s. m. Lieu de pèlerinage, pèlerinage.

तीरा s. m. empl. adverbial. Voyez तीर्.

तीर्थ Voyez तीरथ.

तीसरा adj. num. Troisième.

तीसरौ Voyez तीसरा.

तुं Voyez तू.

तु Voyez तू.

तुछ adj. Vain, de nulle valeur, mauvais.

तुतलानौं v. n. Bégayer, balbutier.

तुफाना s. m. Tempête, dévastation, calomnie. — A. طوفان.

तुम pl. du pron. pers. तू.

तुमरी gén. pl. du pron. pers. तू.

तुमरो gén. pl. du pron. pers. तू.

तुमारे gén. pl. du pron. pers. तू.

तुमैं cas obliq. pl. du pron. pers. तू.

तुमै pour तुम को Voyez तुम.

तुम्ह pron. pers. pour तुम.

तुम्हरो gén. pl. du pron. pers. तू.

तुम्हरौ gén. pl. du pron. pers. तू.

तुम्हैं cas obliq. plur. du pron. pers. तू.

तुरंत Voyez तुरत.

तुंता Voyez तुरत.

तुरक s. m. Musulman. — A. et P. ترك.

तुरत adv. Promptement, rapidement, à l'instant.

तुरति Voyez तुरत.

तुरी s. m. Cheval.

तुलनौं v. n. Être pesé.

तुलसी s. f. Petit arbrisseau vénéré par les Indiens. (*Ocymum sanctum*).

तुलसी दास n. pr. Toulsî-Dâs.

तुला s. f. Balance.

तुलादान s. m. Sorte de présent qui consiste à donner à quelqu'un le poids de son corps.

तुलान adj. Qui va vite, qui se hâte.

तुष्ट adj. Satisfait, content.

तूं Voyez तू.

तू pron. pers. Tu, toi.

तूम Voyez तुम.

तूम्ह Voyez तुम.

तृण s. m. Herbe.

तृणमय adj. Couvert de gazon.

तृन Voyez तृण.

तें pron. pers. Tu, toi.

तें postpos. Voyez ते.

ते postpos. De, par, etc.

तेई pour ते ही.

तेईस adj. num. Vingt-trois.

तेज s. m. Ardeur, éclat, splendeur, énergie, feu.

तेजस s. m. Splendeur, éclat, puissance, énergie.

तेता adj. Autant.

तेतीस adj. num. Trente-trois.

तेरा gén. sing. du pron. pers. तू.

तेल s. m. Huile.

तेला Voyez तेल.

तेलिनि s. f. Marchande d'huile.

तेली s. m. Marchand d'huile.

तेहां adv. Voyez तहां.

तेहि cas obliq. sing. du pron. dém. वह.

तैं pron. pers. Tu, toi.

तैं postpos. Voyez ते.

तै pl. du pron. dém. वह.

तै pron. pers. Tu, toi.

तै postpos. Voyez ते.

तैयारी s. f. Préparatifs, appareil. — A. طياری.

तैसा adj. Tel.

तैसें Voyez तैसे.

तैसे adv. Ainsi.

तैसें Voyez तैसे.

तैसै Voyez तैसे.

तैसो Voyez तैसा.

तैसौ Voyez तैसा.

तों Voyez तो.

तो adv. et conj. Alors, donc, ainsi.

तो cas obliq. sing. du pron. pers. तू.

तोउनौं v. a. Briser, déchirer, couper, cueillir.

तोता s. m. Perroquet.

तोरन s. m. Guirlandes de fleurs.

तोरनौं Voyez तोउनौं.

तोरा gén. sing. du pron. pers. तू.

तोलनौं v. a. Peser.

तोला s. m. *Nom d'un poids qui varie dans les diverses provinces de l'Inde.*

तोह्री cas obliq. sing. du pron. pers. तू.

तौंन pron. corr. Celui-là.

तौंन adv. Alors, ainsi.

तौ adv. et conj. Voyez तो.

तौन Voyez तौंन.

तौरो Voyez तोला.

तौलौं adv. Jusque-là, autant de temps.

त्याग s. m. Abandon, renonciation.

त्यागनौं v. a. Quitter, abandonner, renoncer à.

त्यागी adj. Généreux, libéral.

त्यौं adv. Ainsi, alors.

त्रण s. m. Herbe.

त्राण s. m. Sûreté, salut.

त्रास s. m. Crainte, terreur.

त्रिदश s. m. Dieu, divinité.

त्रिबर्ग s. m. Collection des trois objets que doit rechercher l'homme, tels que : le plaisir, le devoir et la richesse.

त्रिबिधि adv. De trois manières, triplement, de trois côtés.

त्रिभुवन s. m. Les trois mondes.

त्रिया s. f. Femme.

त्रिशङ्कु n. pr. Trisankou.

त्रेता s. f. Tréta-Youga, ou le second des quatre âges du monde.

त्वदर्थ mot comp. loc. adverb. Pour toi.

थ

थंभन s. m. Action de soutenir, soutien.

थरथरानौं v. n. Trembler, être agité.

थरहरनौं v. n. Trembler, être troublé.

थल s. m. Lieu, place, terre ferme.

थांभ s. m. Pilier.

था v. n. temps passé m. sing. J'étais, tu étais, il était.

थापक s. m. Fondateur, soutien.

थार् s. m. Plat.

थारि s. f. Plat.

थाह्री s. f. Fond, gué.

थिति s. f. Séjour, repos.

थीं v. n. temps passé f. pl. Voyez था.

थी v. n. temps passé f. sing. Voyez था.

थे v. n. temps passé m. pl. Voyez था.

थैली s. f. Bourse, sac.

थोर् adj. Petit, peu, un peu, peu nombreux, en petite quantité.

थोरा Voyez थोर्.

थोरि Voyez थोर्.

थोरो Voyez थोर्. — थोरो थोरो Peu à peu.

थोरौ Voyez थोर्.

थौ Voyez था.

द

दंड s. m. Bâton, branche, peine, châtiment, amende, ligne.

दंडनौं v. a. Punir, mettre à l'amende.

दंडवत s. f. Action de se prosterner, salutation. — दंडवत करनौं Saluer.

दई part. pass. f. Voyez देनौं.

दई part. pass. empl. subst. Don.

दक्षा adj. f. Adroite, capable.

दक्षिणा s. f. Présent offert aux

Brâhmanes à l'occasion d'un sacrifice ou de toute autre solennité.

दक्षिन s. m. Sud, partie sud de l'Inde ou Dékhan.

दगो s. f. Tromperie. — दगो देनौं Tromper. — P. دغا.

दत्तचित्त m. comp. adj. Attentif, qui a l'esprit livré à.

दधि s. m. Lait caillé.

दन्त s. m. Dent.

दन्द Voyez दंड.

दबनौं v. n. Être caché, se retirer.

दमन s. m. Action de dompter, de subjuguer.

दया s. f. Pitié, compassion, bonté.

दयाल adj. Compatissant, bon, bienfaisant.

दयावंत adj. Compatissant, bon, charitable.

दयो temps pass. Voyez देनौं.

दरवान s. m. Portier. — P. دروان.

दरशन Voyez दर्शन.

दरशानौं v. a. Faire voir, montrer.

दरस s. m. Vue, action de voir.

दरसन Voyez दर्शन.

दरसनी Voyez दर्शन.

दरसानौं Voyez दरशानौं.

दराज *Allitération employée pour la rime.*

दर्ब s. m. Richesses, chose.

दर्शन s. m. Vue, action de voir, système philosophique.

दर्शी adj. Qui voit.

दल s. m. Armée.

दलनौं v. a. Moudre.

द्वार s. m. Porte.

दश adj. num. Dix.

दस Voyez दश.

दस च्यारी adj. num. f. Quatorze. — विद्या दस च्यारी Les quatorze branches de la science.

दसरथ n. pr. Dasaratha.

दसा s. f. Condition, état, circonstances.

दह s. m. Grande profondeur d'eau. — कंवल दह Étang plein de lotus.

दहन n. verb. Action de brûler.

दहनौं v. n. a. Brûler.

दही s. m. Lait caillé.

दांत s. m. Dent.

दाउं s. m. Ruse, feinte.

दाढी s. f. Barbe.

दाता s. m. Donneur, bienfaiteur.

दादा s. m. Aïeul paternel.

दान s. m. Acte de charité, don, aumône, présent.

दाना Voyez दान.

दानी adj. Libéral, charitable.

दानो s. m. Dânava ou démon.

दान्त adj. Dompté, qui supporte patiemment les austérités.

दाप् s. m. Crainte respectueuse.

दाम s. m. Lien, corde.

दाम s. m. Filet, piége. — p. دام.

दाम s. m. *Espèce de monnaie.*

दामा Voyez दाम.

दायक adj. Qui donne, libéral.

दारा s. f. Femme, épouse.

दारुण adj. Épouvantable, horrible.

दालि s. f. Vesce.

दाव s. m. Moment favorable, occasion.

दास s. m. Serviteur, esclave.

दासी s. f. Servante, femme esclave.

दाह्ना adj. Droit (*opp. à gauche*).

दिंनि Voyez दिन.

दिखानौं v. a. Faire voir, montrer.

दिन s. m. Jour.

दिना Voyez दिन.

दिनि Voyez दिन.

दिया s. m. Lampe.

दियो temps pass. Voyez देनौं.

दिल्ली n. pr. Dehlî.

दिवस s. m. Jour.

दिवानौं v. a. Faire donner.

दिव्य adj. Divin, céleste.

दिश s. f. Point de l'espace, de l'horizon, côté.

दिशि Voyez दिश.

दिषरानौं v. a. Montrer, faire voir.

दिषाई s. f. Action de montrer, apparition.

दिषानौं v. a. Montrer, faire voir.

दिष्टि s. f. Vue.

दिस Voyez दिश.

दिसा s. f. Ordre.

दिसि Voyez दिश.

दीक्षा s. f. Initiation.

दीन adj. Pauvre, humble.

दीनता s. f. Pauvreté, humilité.

दीनदयाल adj. Compatissant à l'égard du pauvre.

दीनौं v. n. Briller.

दीनौं v. a. Donner.

दीन्हो temps pass. Voyez दीनौं.

दीपक s. m. Lampe, lumière.

दीवा s. m. Lampe.

दीर्घकरण n. pr. Dîrghakarna.

दीर्घकर्ण Voyez दीर्घकरण.

दीवो s. m. Don.

दीषनौं v. n. Regarder, apparaître, être vu.

दीषांनौं Voyez दीषानौं.

दीषानौं v. a. Montrer, faire voir.

दीसनौं v. n. Sembler, paraître, être visible.

दुःख Voyez दुख.

दुंद s. m. Tambour.

दुंदुभी s. f. Tambour, timbale.

दुख s. m. Peine, affliction, douleur, tourment, malheur. — दुख पानौं Éprouver de la peine.

दुखना adj. Gênant, incommode, affligeant.

दुगानी s. f. *Petite pièce de monnaie de cuivre.*

दुति Voyez दुती.

दुती s. f. Messagère, entremetteuse.

दुध s. m. Lait.

दुनियां s. f. Monde, gens, biens de ce monde. — A. دنيا.

दुन्दुभि s. f. Timbale, tambour.

दुरभिष s. m. Famine.

दुरानौं v. a. Cacher.

दुरि adj. Éloigné. — adv. Loin.

दुर्ग Inaccessible, difficile.

दुर्जन s. m. Ennemi, méchant.

दुर्दांत n. pr. Dourdânta.

दुर्बचन s. m. Mauvaise parole, injure, calomnie.

दुर्बल adj. Faible, pauvre.

दुर्वचन Voyez दुर्बचन.

दुलहन s. f. Fiancée.

दुलार s. m. Amour, affection.

दुलारिये adj. f. au voc. Voyez दुलारी.

दुलारी s. Voyez दुलार. — adj. f. Chérie.

दुष Voyez दुख.

दुषानौं v. a. Affliger, tourmenter.

दुषार adj. Pénible, difficile.

दुषी adj. Qui est dans la peine, qui souffre, affligé.

दुष्ट adj. Méchant, nuisible, vil.

दुष्टता s. f. Méchanceté.

दुष्यन्त n. pr. Douchwanta.

दुसरो adj. num. Second.

दुसरौ Voyez दुसरो.

दुइ adj. num. Deux.

दूजा s. f. Second jour d'une quinzaine lunaire.

दूत s. m. Messager, envoyé.

दूती s. f. Messagère, entremetteuse.

दूध s. m. Lait.

दूधाभाती s. f. Cérémonie qui a lieu le quatrième jour après le mariage, et dans laquelle les deux époux mangent ensemble du lait, du riz bouilli et du sucre.

दूबरौ adj. Faible.

दूभर adj. Insupportable.

दूर s. f. Distance éloignée. — दूर से De loin. — adj. Éloigné.

दूरस्थ adj. Éloigné.

दूरि adj. Éloigné, loin. — दूरि करनौं Éloigner, dissiper.

दूसरा adj. num. Second.

दूसरा Voyez दूसरा.

दूसरौ Voyez दूसरा.

दृग s. m. OEil, vue.

दृढ adj. Ferme, fort.

दृढ़ Voyez दृढ.

दृष्ट s. f. Vue, action de regarder, œil.

दृष्टि Voyez दृष्ट.

देखन s. m. Action de voir, vue.

देखनौं v. a. Voir, regarder, observer.

देन n. verb. Action de donner.

देनौं v. a. Donner.

देब s. m. Dieu, divinité. — देब लोक Le ciel.

देबी s. f. Déesse. (*Nom de la déesse Dourgâ.*)

देयती s. f. Divinité.

देव s. m. Dieu. (*Ce mot s'emploie aussi comme terme de respect.*)

देवत s. f. Divinité.

देवता s. m. f. Divinité. (*Ce mot s'emploie aussi comme terme de respect.*)

देवध्वनि s. f. *Nom du Gange.*

देवल s. m. Temple.

देवा s. m. Dieu, divinité.

देवी Voyez देबी.

देश s. m. Région, territoire, pays.

देषन Voyez देखन.

देषनौं Voyez देखनौं.

देस Voyez देश.

देसनौं v. a.? Faire voir? montrer?

देसा Voyez देश

देह् s. f. Corps.

देह्धारी adj. Qui a un corps.

देहा Voyez देह्.

देही Voyez देह्.

दैंनौं Voyez देनौं.

दैत s. m. Daitya ou démon.

दैन n. verb. Action de donner.

दैनौं Voyez देनौं.

दैब Voyez दैव.

दैव s. m. *Nom d'un des huit modes de mariage.*

दोउ Voyez दोऊ.

दोऊ adj. Deux, les deux, tous deux.

दोनों adj. Deux, les deux, tous deux.

दोन्यौं Voyez दोनों.

दोय adj. Deux, les deux.

दोर्दण्ड s. m. Bras.

दोष s. m. Faute, crime, défaut.

दोषा Voyez दोष.

दोषु Voyez दोष.

दोस Voyez दोष.

दोसू Voyez दोष.

दोह्रा s. m. Distique.

दोहा Voyez दोह्रा.

दौं s. f. Feu.

दौउ Voyez दोऊ.

दौउनौं v. n. Courir, accourir, se précipiter.

दौरनौं Voyez दौउनौं.

द्योस Voyez द्यौंस.

द्यौंस s. m. Jour.

द्रग s. m. Œil.

द्रविहीण adj. Qui a perdu son bien, pauvre.

द्रव्य s. m. Chose, richesse, biens.

द्रष्टि s. f. Vue, action de montrer.

द्रिग s. m. Œil.

द्वादश adj. num. Douze, douzième.

द्वादस Voyez द्वादश.

द्वापर् s. m. Dwâpara-youga, ou le troisième des quatre âges du monde.

द्वार् s. m. Porte. — द्वार् द्वार् पर् A chaque porte.

द्वारपाल s. m. Portier.

द्वारावती n. pr. Dwārāvatī.

द्वारिका n. pr. Dwārikā.

द्विज s. m. Homme de l'une des trois premières castes, brâhmane.

द्विज s. m. Oiseau. (*Ce mot désigne tout animal ovipare.*)

द्विधा adv. En deux parties, doublement.

द्वेष s. m. Inimitié.

द्वै adj. num. Deux.

ध

धकाधकी s. f. Coup porté, attaque.

धक्कन Voyez धक्का.

धक्का s. m. Action de heurter, choc.

धजा s. f. Étendard, bannière.

धउ s. m. Córps.

धन s. m. Fortune, richesses, argent.

धनतर् n. pr. Dhanwantari (*médecin des dieux*).

धनवान adj. Riche.

धनी adj. Riche.

धनुष s. f. Arc.

धन्य s. m. Fortune, bonheur, richesse.

धन्य adj. Heureux, fortuné.

धर् Voyez धरा.

धरणी s. f. Terre.

धरनि Voyez धरणी.

धरनी Voyez धरणी.

धरनौं v. a. Placer, préparer, appliquer, porter, confier, prendre, garder.

धरम Voyez धर्म.

धरमू Voyez धर्म.

धरा s. f. Terre, sol.

धर्म s. m. Justice, vertu, pratique religieuse, devoir, obligation morale, loi, mérite moral et religieux, coutume particulière à chaque caste.

धर्म n. pr. Dharma (*nom d'Yama.*) — धर्म पुत्र Fils de Dharma. (*Épith. de Youdhichthira.*)

धर्मज्ञाति s. f. Action d'observer

la loi, de s'acquitter d'un devoir religieux.

धर्मबिद् adj. Qui connaît la loi, pieux, vertueux.

धर्मरत adj. Fidèle à son devoir, pieux, juste.

धर्मसास्त्र Voyez धर्म्मशास्त्र.

धर्मा Voyez धर्म.

धर्मातमा Voyez धर्मात्मा.

धर्मात्मा adj. Vertueux, juste, pieux.

धर्मार्थ s. comp. Le devoir et l'intérêt.

धर्मिष्ठ adj. Très-vertueux, très-pieux.

धर्मी adj. Vertueux, juste.

धर्म्म Voyez धर्म.

धर्म्मकन्या s. f. Fille adoptive.

धर्म्मधर adj. Juste, pieux, vertueux.

धर्म्मबेत्ता adj. Qui connaît la loi, vertueux, pieux.

धर्म्मशास्त्र s. m. Dharma-Sâstra, ou Livre de lois.

धाई s. f. Nourrice.

धानौं v. n. Courir, se hâter, se jeter.

धाम s. m. Maison, séjour, demeure.

धामा Voyez धाम.

धार s. f. Torrent, ruisseau, courant d'eau.

धारण Voyez धारन.

धारन n. verb. Action de prendre, de porter, de soutenir. — धारन करनौं Prendre.

धारनौं v. a. Porter, soutenir, conserver, garder, prendre, placer.

धारा s. f. Courant d'eau, torrent.

धाव s. m. Assaut, attaque.

धीनौं v. a.? Contenir?

धीर s. m. Patience, calme, résolution, fermeté.—adj. Fort, courageux, sage, ferme.

धीरज s. m. Patience, fermeté, résolution.

धुननौं v. a. Frapper.

धुनि s. f. Bruit, murmure, son (*de voix*).

धुन्धुरनौं v. n. Être couvert d'un nuage, d'un brouillard.

धूत Voyez धूता.

धूता adj. Fripon, trompeur, perfide.

धूरि s. f. Poussière.

धूसर् adj. Gris.

धोनौं v. a. Laver.

ध्यान s. m. Méditation, réflexion. — ध्यान कर्नौं Faire attention, réfléchir, méditer.

ध्याना Voyez ध्यान.

ध्यानौं v. a. Penser, songer à, méditer.

ध्वज s. f. m. Étendard, bannière.

ध्वजा s. f. Voyez ध्वज.

न

नं Voyez न.

नंदी Voyez नदी.

न nég. Ne pas.

नई nég. Ne pas.

नई adj. f. Voyez नयौ.

नउ adj. Jeune, nouveau.

नक्षत्र s. m. Constellation, astérisme.

नग s. m. Pierre précieuse.

नगन adj. Nu.

नगर् s. m. Ville.

नगरि s. f. Ville.

नग्नता s. f. Nudité.

नचानौं v. a. Faire danser.

नट s. m. Jongleur.

नटुआ s. m. Jongleur.

नतरु adv. Sinon, autrement.

नदी s. f. Fleuve, rivière.

नन्दन s. m. Jardin du paradis d'Indra.

नभ s. m. Air, espace aérien, ciel, atmosphère.

नमसकार् s. m. Salutation, adoration.

नयौ adj. Nouveau, jeune.

नर् s. m. Homme.

नर्क s. m. Enfer.

नर्नाह् s. m. Roi, prince.

नर्पति s. m. Roi, souverain.

नर्सिंह् s. m. Homme éminent, puissant.

नर्हरि दास n. pr. Narhari-Dâs.

नरेश s. m. Roi, souverain.

नरेस Voyez नरेश.

नेसा Voyez नेश्ता.

नैंन Voyez नर.

नर्क Voyez नरक.

नव adj. Jeune, nouveau.

नव adj. num. Neuf.

नवज़ोबना adj. f. Jeune, qui vient d'entrer dans l'âge de puberté.

नवानौं v. a. Courber, baisser, incliner, faire baisser.

नवौ adj. Nouveau, jeune.

नष्ट adj. Perdu, détruit.

नसानौं v. n. Être détruit, périr. — v. a. Détruire.

नसावनौं v. a. Détruire, faire périr.

नह्वानौं v. a. Faire baigner.

नह्वानौं v. n. Se baigner, faire ses ablutions.

नहिं Voyez नहीं.

नहि Voyez नहीं.

नहीं nég. Ne pas. — नहीं तो Sinon, autrement.

नही Voyez नहीं.

नांइ nég. Ne pas, non.

नांइनि Voyez नाइनि.

नांक s. f. Nez.

नांतर Voyez नातर.

नांतरु Voyez नातर.

नांम Voyez नाम.

नांव s. m. Nom.

नांहि nég. Ne pas. — नांहि तौ Sinon.

नांही Voyez नांहि.

नाइनिं Voyez नाइनि.

नाइ s. m. Barbier.

नाइ part. pass. f. Voyez नावनौं.

नाइनि s. f. Femme de barbier.

नाउं s. m. Nom.

नाउ s. m. Barbier.

नाग s. m. Éléphant. — *En compos.* Prééminent.

नागफांस s. f. Nœud coulant, espèce de corde à nœud dont on se sert pour saisir un ennemi.

नागफांसी Voyez नागफांस.

नागा Voyez नाग.

नाच s. m. Danse.

नाचनौं v. n. Danser.

नाज s. m. Grain.

नाट Voyez नट.

नाटा adj. Petit.

नातर adv. Sinon, autrement.

नाती s. m. Petit-fils.

नातो s. m. Parenté, alliance.

नातौ s. m. Voyez नातो.

नातौ adv. Sinon.

नाथ s. m. Maître, seigneur, mari.

नाद् s. m. Bruit, cri, son.

नाना adj. Différent, beaucoup.

नानौं Voyez नावनौं.

नान्हें adv. Non certes.

नाभा जू n. pr. Nābhā Djoû.

नाम s. m. Nom.

नामदेव n. pr. Nāmdev.

नायक s. m. Jeune homme, amant.

नायका s. f. Jeune fille, amante.

नारद् n. pr. Nārada.

नारायन n. pr. Nārāyana (*nom de Vichnou*).

नारि Voyez नारी.

नारी s. f. Femme.

नाव Voyez नांव.

नावनौं v. a. Baisser, courber, incliner, faire baisser.

नाश s. m. Destruction, mort.

नाशन s. m. Destruction, mort, anéantissement.

नास Voyez नाश.

नास्तिक s. m. Athée, impie.

नाहर् s. m. Tigre.

नाहरी s. f. Tigresse.

नाहिं Voyez नाहीं.

नाहि Voyez नाहीं.

नाहिन Voyez नाहीं.

नाहीं nég. Non, ne pas.

नाही Voyez नाहीं.

निंदक s. m. Qui méprise, contempteur, calomniateur.

निंदनौं v. a. Mépriser, diffamer.

निंदा s. f. Reproche, diffamation, calomnie.

निंद्रा s. f. Sommeil, somnolence, paresse.

निकट adv. Auprès.

निकटि Voyez निकट.

निकटू Voyez निकट.

निकरनौं Voyez निकलनौं.

निकलनौं v. n. Sortir, partir. — निकल जानौं Échapper.

निकसनौं v. n. Partir, sortir, se montrer.

निकारनौं Voyez निकालनौं.

निकालनौं v. a. Faire sortir, exclure, arracher.

निकासनौं v. a. Faire sortir, chasser, exclure, retirer.

निकृष्ट adj. Vil, méprisable.

निको adj. Bon, beau. — P. نکو.

निगोड़ी s. f. Malheureuse, misérable.

निज adj. Propre, particulier. (*S'emploie comme pron. poss.*)

निजु Voyez निज.

नित adv. ou adj. Continuellement, toujours, continuel, invariable.

नितान्त adj. Excessif.

निति Voyez नित.

नित्य Voyez नित.

नित्या Voyez नित.

निदान adv. Enfin, à la fin.

निधान s. m. Demeure, réceptacle.

निधि s. m. Trésor, océan.

निपजनौं v. n. Naître, être produit.

निपट adv. Extrêmement.

निपात s. f. Action de tomber, chute, mort.

निपुन adj. Adroit, versé dans.

निपूतौ adj. Privé de fils, qui n'a pas d'enfants.

निबंध adj. Attaché, assemblé, déterminé.

निबाह् s. m. Accomplissement, entretien, action de garder.

निबाह्नौं v. a. Faire, accomplir, garder, prendre soin de, protéger.

निबिड adj. Gros, épais.

निबेरनौं v. a. Finir, accomplir, dépenser, débourser.

निमति Voyez निमित्त.

निमष s. m. Moment, instant, clin d'œil.

निमित्त s. m. Cause, motif. — *Employé adverbial.* Pour l'amour de, à cause de, pour.

नियरे adv. Auprès, près.

नियरैं Voyez नियरे.

निर् prép. Sans.

निरखनौं v. a. Regarder, voir.

निरधार s. m. Assurance, certitude.

निरधारनौं v. a. Établir, fixer, déterminer.

निरधारि Voyez निरधार.

निरन्तर adj. ou adv. Sans intervalle, sans différence, constamment.

निरलोभ adj. Exempt d'avarice, exempt de désirs, content.

निरवारिया adj. f. Qu'on ne peut empêcher, incurable.

निरवारि adj. f. Qui ne craint pas.

निरषनौं Voyez निरखनौं.

निरादर adj. Non respecté, pour qui on n'a point d'égards.

निरास adj. Découragé, désespéré.

निर्गुणी adj. Dépourvu de qualités.

निर्गुनी Voyez निर्गुणी.

निर्जन adj. Désert, inhabité, isolé.

निर्दय adj. Cruel, insensible.

निर्फल adj. Sans fruit, vain, inutile.

निर्बाह् s. m. Entretien, accomplissement.

निर्मल adj. Pur, sans tache.

निर्मौल adj. Inappréciable.

निर्वाह्नौं v. a. Accomplir, achever, garder, prendre soin de.

निवानौं v. a. Incliner, courber, faire baisser.

निवारनौं v. a. Empêcher, obvier à, prévenir.

निशि s. f. Nuit.

निश्चय s. m. Certitude, connaissance de la vérité, foi, croyance.

निश्चल adj. Immobile, privé de mouvement, immuable.

निश्चै s. m. Voyez निश्चय.

निश्चै adj. Certain, sûr, assuré, inévitable.

निसंक adj. Exempt de crainte, qui n'a aucun doute, aucun soupçon.

निस s. f. Nuit.

निसप्रेह्री adj. Exempt de désirs.

निसां Voyez निसा.

निसा s. f. Nuit.

निसाना s. m. Étendard. — p. نشانه.

निसि Voyez निशि.

निस्तार s. m. Salut, délivrance.

निह्चै s. m. Confiance, foi, certitude.

निहायत adv. Extrêmement.

निहारनौं v. a. Regarder, voir, avoir égard.

निहोरा s. m. Faveur, bonté, obligation.

निहोरो Voyez निहोरा.

नींद s. f. Sommeil, somnolence, paresse.

नीकि Voyez नीको.

नीकैं Voyez नीकै.

नीकै cas obliq. de नीकौ. Bien.

नीकों Voyez नीको.

नीको adj. Bon, qui est bien, convenable. — नीको होनौं Aller bien. — P. نیکو.

नीकौ Voyez नीको.

नीच adj. Vil, vulgaire, bas.

नीचे adv. En bas, à terre, sous.

नीट adj. Droit, direct.

नीति s. f. Conduite, morale, politique.

नीतिशास्त्र s. m. Livre de morale, de politique.

नीद Voyez नींद.

नीवी s. f. Vêtement qui couvre le milieu du corps de la femme, ou les extrémités du vêtement passées autour des reins.

नीर s. m. Eau.

नीरा s. m. Voyez नीर.

नीरी adv. Près, auprès.

नीलांबर s. m. Vêtement bleu foncé ou noir.

नीलाचल n. pr. Nīlātchal.

नृत्य s. m. Danse. — नृत्य करनौं Danser.

नृप s. m. Roi, prince.

नृपति s. m. Roi, prince, souverain.

नें Voyez ने.

ने postpos. Par.

नेक adj. Bon, heureux. — P. نیک.

नेक adv. Un peu.

नेकु adv. Voyez नेक.

नेत्र s. m. Œil.

नेम s. m. Acte de piété, piété, vœu.

नेरा adv. Voyez नेरे.

नेरी adv. Voyez नेरे.

नेरे adv. Auprès, près.

नैं Voyez ने.

नैंक adv. Voyez नेक.

नैंन Voyez नैन.

नै Voyez नै.

नैक adv. Voyez नेक.

नैकु adv. Voyez नेक.

नैन s. m. Œil.

नौका adj. Nouveau.

न्याई Voyez न्याय.

न्याय s. m. Justice, équité, raison, argument.

न्याय part. de susp. Voyez नावनौं.

न्यायअन्यायक mot comp. adj. Juste et injuste.

न्यारि adj. f. Voyez न्यारे.

न्यारि adv. Voyez न्यारे.

न्यारे adv. Séparément, à part, en particulier.

न्यारो adj. Distinct, différent, séparé, extraordinaire.

न्यारौ Voyez न्यारो.

न्याव s. m. Justice, droit, décision.

न्योतनौं v. a. Inviter.

न्यौतनौं Voyez न्योतनौं.

न्यौता s. m. Invitation.

न्हान s. m. Bain, ablution.

न्हानौं v. n. Se baigner, faire ses ablutions.

प

पंकति s. f. Rangée de personnes prenant part à un repas, compagnie, réunion.

पंच s. m. Conseil, tribunal, arbitres.

पंच adj. num. Cinq.

पंछि Voyez पंछी.

पंछी s. m. Oiseau.

पंडा s. m. Ministre attaché au temple d'une idole.

पंडित s. m. Pandit, savant. — adj. Instruit.

पंडुर n. pr. Pandoura (*ville*).

पंडौं Voyez पंडौ.

पंडौ s. m. Descendant de Pandou.

पंथ s. m. Route, chemin.

पक adj. Cuit.

पकड़नौं v. a. Prendre, saisir.

पकानौं Voyez पकड़नौं.

पकड़ानौं v. a. Faire prendre, donner.

पकवान s. m. Confitures, sucreries, friandises.

पग s. m. Pied. — पग पग Pas à pas. — पग धर्नौं Marcher, s'en aller.

पगड़ी s. f. Turban.

पगद्वासी s. f. Chaussure, sandale.

पचासा adj. num. Cinquante.

पचिल्हानौं v. n.? Se donner de la peine? se fatiguer?

पक्षपाती adj. Partial.

पछाड़नौं v. a. Renverser, terrasser, abattre.

पछितानौं v. n. Avoir des regrets, se repentir, être chagrin.

पञ्चम adj. num. Cinquième.

पट s. m. Vêtement, étoffe.

पट s. m. Porte.

पटकनौं v. a. Heurter, renverser.

पटना n. pr. Patnâ.

पटनौं v. n. Être payé, être procuré.

पटह s. m. Timbale, tambour.

पटा s. m. Parure servant à orner le front, ceinture.

पटाना adj. Arrosant, inondant.

पटानौं v. a. Arroser.

पठनौं v. n. Être envoyé.

पठान n. pr. Pathân ou Afghân.

पठानौं v. a. Envoyer.

पड़नौं v. n. Tomber, être renversé, arriver.

पड़नौं Voyez पड़नौं.

पढनौं v. a. Réciter, lire, répéter, dire, expliquer.

पढ़नौं Voyez पढनौं.

पढ़ानौं v. a. Faire lire, instruire.

पतंग s. m. Mite, papillon?

पत s. f. Honneur, réputation.

पतरिया s. f. Prostituée.

पताका s. f. Étendard.

पति s. m. Maître, époux.

पतिब्रत s. m. Chasteté, fidélité envers son époux.

पतिब्रता adj. f. Fidèle à son mari (femme).

पतिव्रता Voyez पतिब्रता.

पतिहीन adj. f. Veuve, qui n'a pas de mari.

पती s. m. Voyez पति.

पत्ती s. f. Feuille.

पत्नी s. f. Épouse.

पत्र s. m. Feuille, lettre, billet.

पत्रा s. m. Calendrier, almanach.

पत्रावलि s. f. Assiette faite de feuilles attachées ensemble.

पथ s. m. Route, chemin, sentier.

पथ्य adj. Convenable.

पद् s. m. Pied, vers, rang, dignité, place.

पद्युक्त m. comp. adj. Accompagné de marches.

पदार्थ s. m. Chose.

पदुम s. m. Lotus.

पद्मा n. pr. *Nom de Lakchmî, femme de Vichnou.*

पद्मावती n. pr. Padmâwatî.

पद्मिनी n. pr. Padminî.

पधरानौं v. a. Faire arriver, faire entrer, jeter.

पधारनौं v. n. Aller, arriver.

पन s. m. Promesse, vœu.

पन्नग s. m. Serpent.

पय s. m. Lait, eau.

पयान s. m. Départ.

पयानी Voyez पयान.

पयंगा adj.? Changé? retourné?

पर् adj. Autre, étranger, éloigné.

पर् adv. Sur, auprès de, contre, touchant. — conj. Mais, cependant.

परकाला s. m. Diamant. — P. پرکاله.

परचनौं v. n. Être introduit, être présenté, être informé.

परचा s. m. Examen, épreuve, essai, preuve.

परचौ Voyez परचा.

परछाँ s. f. Ombre, image.

परछ्या s. f. Épreuve.

परजन्य s. m. Nuage.

परताप Voyez प्रताप.

परदा s. m. Rideau. — P. پرده.

परदान s. m. Don.

परदेसी s. m. Étranger. — adj. Étranger.

परद्यौंन n. pr. Pradyoumna.

परधान s. m. Chef, ministre d'état.

परधाना Voyez परधान.

परनाम Voyez प्रणाम.

परनौं v. n. Tomber, être étendu, reposer, arriver, camper. — बाहिर् परनौं Être dehors.

परब s. m. Fête, jour de fête.

परबत Voyez पर्बत.

परबी Voyez परब.

परबीन Voyez प्रबीन.

परबीना Voyez प्रबीन.

परभाई s. m. Puissance, autorité, pouvoir.

परमं Voyez परम.

परम adj. Extrême, excellent, suprême. — *Employé adverbial.* Très, fort, extrêmement.

परमज्ञानी adj. Qui possède la science suprême.

परमेश्वर s. m. Le maître suprême.

परलोक s. m. Ciel, paradis.

परवाना s. m. Permission, licence. — P. پروانه.

परस s. m. Attouchement, contact.

परसनौं v. a. Toucher.

परस्पर adv. Réciproquement, mutuellement, l'un l'autre.

परहरनौं v. a. Abandonner, laisser, négliger.

पराक्रम s. m. Puissance, force, bravoure.

पराग s. m. Pollen (*d'une fleur*).

पराधीन adj. Dépendant, soumis, humble.

परानौं v. a. Faire tomber, déposer, faire reposer.

परायण adj. Attaché à, dépendant de.

पराया adj. Étranger, qui appartient à un autre.

परायौ Voyez पराया.

परि prép. Sur, autour, auprès.

परिक्षा Voyez परीक्षा.

परिक्षेप s. m. Action d'entourer.

परिवार s.m. Famille, suite, serviteurs.

परिवारा Voyez परिवार.

परिवेरा adj. ?Qui se tient auprès?

परिसर s. m. Terrain situé sur le bord d'une rivière ou près d'une montagne.

परिहास s. m. Plaisanterie.

परी Voyez परि.

परीक्षा s. f. Épreuve,

परीछा s. f. Épreuve.

परु conj. Voyez पर.

परो adj. Voyez पर.

परोक्ष s. m. Événement passé, chose dont on a perdu le souvenir. — adj. Passé, invisible.

पर्बत s. m. Montagne.

पर्भ *Allitération employée pour la rime.*

पर्म्भ Voyez पर्भ.

पलंग s. m. Lit.

पल s. m. Moment (*cent vingtième partie d'une heure*).

पलक s. f. m. Paupière, clin d'œil, moment.—पलक लगनौं (*Se dit des paupières qui se ferment.*) — पलक लानौं Fermer les yeux. — P. پلک.

पला s. m. Plateau d'une balance. — P. پلا.

पलानौं v. a. Fuir.

पल्लव s. m. Tige, rejeton.

पवन s. f. Air, vent.

पषंडा s. m. Méchanceté, hypocrisie, impiété.

पसार्नौं v. a. Tendre, étendre, déployer, ouvrir.

पसु s. m. Animal.

पहचाननौं v. a. Connaître, reconnaître, distinguer.

पहननौं v. a. Revêtir, mettre un vêtement, s'ajuster, se couvrir de.

पहर् s. m. Espace de temps comprenant trois heures.

पहर्नौं v. a. Revêtir, habiller, porter.

पहले adv. D'abord.

पहलैं Voyez पहले.

पहलै Voyez पहले.

पहाड s. m. Montagne.

पहार् Voyez पहाड.

पहिंचाननौं Voyez पहिचाननौं.

पहिचाननौं v. a. Connaître, reconnaître, distinguer, discerner.

पहिरानौं v. a. Vêtir, revêtir, habiller, se revêtir de. — हार् पहिरानौं Mettre comme un collier.

पहिले adv. D'abord, précédemment.

पहिलैं Voyez पहिले.

पहिलै Voyez पहिले.

पहुंचनौं v. n. Arriver.

पहुंचानौं v. a. Porter, transmettre, faire arriver, conduire, faire venir.

पहुचानौं Voyez पहुंचानौं.

पहुप s. m. Fleur.

पहैरानौं v. a. Se couvrir de, se revêtir.

पांच adj. num. Cinq.

पांचौ Voyez **पांच**.

पांडव s. m. Descendant de Pandou.

पांणी Voyez **पानी**.

पांती s. f. Rang, rangée, ordre.

पांनी Voyez **पानी**.

पांव s. m. Pied. — **पांओं पांओं चलनौं** Aller à pied.

पाई s. m. Pied. — P. پائ.

पाक s. m. Cuisine, nourriture préparée.

पाग s. m. Électuaire.

पागि Voyez **पाग**.

पाछे adv Derrière, ensuite.

पाछै Voyez **पाछे**.

पाठ s. m. Lecture.

पाणि s. f. Main.

पात s. m. Action de tomber, chute.

पात s. f. Feuille.

पातक s. m. Péché, crime.

पातसाह् s. m. Souverain, roi, sultan. — P. پادشاه.

पाताल s. m. Enfer, région souterraine habitée par des serpents.

पातिसाह् Voyez **पातसाह्**.

पातुर् s. f. Danseuse, bayadère, prostituée.

पात्र s. m. Vase, réceptacle. — adj. Capable, digne.

पाथर् s. m. Pierre.

पान s. m. Boisson.

पान s. m. Feuille de bétel.

पानि s. f. Main.

पानि s. m. Voyez **पानी**.

पानी s. m. Eau, boisson.

पानौं v. a. Acquérir, recevoir, obtenir, trouver, rencontrer, atteindre.

पाप s. m. Péché, crime.

पापर् s. m. *Nom d'arbre.*

पापा Voyez **पाप**.

पापी adj. Pécheur, criminel, méchant.

पापौ Voyez **पाप**.

पावक s. m. Feu.

पाय s. m. Pied. — P. پائ.

पायक s. m. Fantassin.

पार् s. m. Limite, point le plus éloigné. — adv. Au delà. —

पार् करनौं Conduire au delà, faire traverser.

पारनौं v. a. Faire, accomplir, finir.

पारस s. m. Pierre de touche.

पारावार् adv. Sur les deux rives, partout, de tous côtés.

पालक s. m. Protecteur, fils adoptif.

पालकी s. f. Palanquin.

पालन s. m. Action de protéger, de nourrir.

पालनौं v. a. Nourrir, soutenir, protéger, conserver, gouverner, régir.

पालिकी Voyez पालकी.

पाव s. m. Pied.

पावक Voyez पाबक.

पावन s. m. Purification, pénitence.— adj. Pur, qui purifie.

पावनौं Voyez पानौं.

पावा Voyez पाव.

पाश postpos. Voyez पास.

पास postpos. Auprès de, à côté de, sur.

पासा Voyez पास.

पासि Voyez पास.

पासी Voyez पास.

पिंजर् s. m. Côte, flanc, thorax.

पिछ्वारी s. m. Partie postérieure, derrière.

पिछाननौं v. a. Connaître, reconnaître.

पितर् s. m. pl. Ancêtres, parents (*le père et la mère*).

पिता s. m. Père.

पितादत्त adj. Donné par son père.

पितृ s. m. Père, ancêtres.

पित्र s. m. Père.

पिपीलिका s. f. Petite fourmi.

पिय s. m. Bien-aimé, amant, époux.

पियार् s. m. f. Amour, affection. — adj. Aimé, chéri.

पियारा adj. Aimé, chéri.

पियारिये adj. f. au voc. Voyez पियारी.

पियारी adj. f. Aimée, chérie. — adj. m. Voyez पियारा.

पियारू Voyez पियारा.

पियो temps pass. Voyez पीनौं.

पियौ adj. Cher, chéri.

पिलनौं v. a. Attaquer.

पिवानौं v. a. Faire boire.

पिशाच s. m. Mauvais génie d'une espèce particulière, démon.

पीछ़ adv. Derrière, après, ensuite. — **पीछ़ चढनौं** Poursuivre.

पीछै Voyez **पीछ़**.

पीटनौं v. a. Frapper, battre.

पीठ s. f. Dos. — **पीठ देनौं** Tourner le dos, fuir.

पीठि Voyez **पीठ**.

पीडा s. f. Douleur, peine, affliction.

पीडित adj. Affligé, tourmenté.

पीतांबर s. m. Vêtement de soie, étoffe de soie.

पीनौं v. a. Boire.

पीपल s. m. Figuier sacré (*Ficus religiosa*).

पीपा n. pr. Pīpā.

पीर s. f. Peine, douleur, souffrance, mal, compassion, sensibilité.

पीरा Voyez **पीर**.

पीवनौं Voyez **पीनौं**.

पुंश्चली s. f. Courtisane, femme de mauvaise vie.

पुकार s. f. Cri.

पुकारनौं v. a. Appeler, crier.

पुकारि Voyez **पुकार**.

पुछ़ Voyez **पूछ़**.

पुछनौं Voyez **पूछनौं**.

पुजनौं Voyez **पूजनौं**.

पुजा Voyez **पूजा**.

पुञ्ज s. m. Quantité, collection, amas.

पुण्य adj. Pur. — (f. **पुण्या**).

पुतली s. f. Statuette, figure, poupée.

पुत्र s. m. Fils.

पुत्रवती adj. f. Qui a un fils, des enfants.

पुत्री s. f. Fille.

पुनि adv. De nouveau, en outre, ensuite.

पुन्नाम m. comp. adj. Qui se nomme pout. (*Nom d'un enfer au séjour duquel est condamné celui qui n'a point d'enfants.*)

पुन्य s. m. Mérite moral ou religieux, vertu, pureté.

पुन्यवान adj. Pur, vertueux.

पुर s. m. Ville.

पुरधा s. m. ? Espèce de sucreries ?

पुरस Voyez **पुरुष**.

पुरातन adj. Ancien, vieux.

पुरान s. m. Pourāna.

पुरी s. f. Ville.

पुरीख Voyez पुरीष.

पुरीष s. m. Excrément, ordure.

पुरुष s. m. Homme.

पुरुषात ablat. sanscrit. Voyez पुरुष.

पुरुषार्थ s. m. Intention de l'homme, objet que recherche l'homme.

पुरुषार्थ locut. adverb. Pour l'homme.

पुरोहित s. m. Prêtre de la famille.

पुलकित adj. Joyeux, qui éprouve une horripilation.

पुष्प s. m. Fleur.

पुहुचनौं v. n. Arriver.

पुहुप s. m. Fleur.

पूछ s. f. Question, interrogation.

पूछनौं v. a. Demander, interroger, questionner.

पूजनौं v. a. Adorer, rendre hommage, honorer, vénérer.

पूजा s. f. Adoration, vénération, culte, honneur rendu.

पूजानौं v. a. Faire adorer.

पूत s. m. Fils.

पूता Voyez पूत.

पूरन adj. Plein, rempli, accompli.

पूरा adj. Plein, rempli, accompli, achevé.

पूरौ Voyez पूरा.

पूर्ण adj. Plein, accompli.

पूर्ब adj. Antérieur, ancien, d'autrefois.

पूर्व Voyez पूर्ब.

पूर्वक adj. Ancien, antérieur.

पूर्बजन्मज m. comp. adj. Qui a eu lieu dans une existence précédente.

पृथिवी Voyez पृथ्वी.

पृथ्वी s. f. Terre.

पृथ्वीनाथ s. m. Maître de la terre, souverain.

पेखनौं v. a. Voir.

पेट s. m. Ventre.

पेटी s. f. Ceinture.

पैं Voyez पै.

पैंडौ s. m. Route.

पै adv. et conj. Sur, à, auprès, derrière, ensuite, cependant,

puisque, par conséquent, mais.

पैकासी s. f.? Querelle? contestation?

पैज s. f. Vœu, promesse. — पैज करनौं Faire vœu, promettre.

पैठनौं v. n. Se jeter, se précipiter, pénétrer.

पैडा s. f. Arbre.

पैदल s. m. Infanterie, fantassin.

पैन s. m. Réservoir d'eau, ruisseau, eau.

पैर s. m. Pied.

पैशाच s. m. *Nom d'un des huit modes de mariage.*

पैसनौं v. n. Entrer, pénétrer, se précipiter dans.

पैसार s. m. Accès, entrée.

पैसारू Voyez पैसार.

पैलन s. m. Vaisseau? barque?

पोत s. m. Petit (*d'un animal*).

पोथी s. f. Livre.

पोरुष s. m. Force, courage.

पोषनौं v. a. Nourrir, entretenir.

पौंन s. f. Air, vent.

पोट s. f. Paquet, bagage.

पौढनौं v. n. Reposer, être étendu.

पौढानौं v. a. Faire reposer, déposer.

पौथी Voyez पोथी.

पौर s. m. Citoyen.

पौरव s. m. Descendant de Pourou.

पौरि Voyez पौरी.

पौरिया s. m. Portier.

पौरी s. f. Porte.

प्यारी adj. f. Chère, bien-aimée.

प्यारो adj. Aimé, cher, agréable.

प्यावनौं v. a. Faire boire, donner à boire.

प्यास s. f. Soif. — प्यास लागनौं Avoir soif.

प्यासा adj. Qui a soif.

प्रकार s. m. Sorte, espèce, manière.

प्रकाश s. m. Éclat, splendeur, lumière, manifestation, révélation. — adj. Brillant, manifeste.

प्रकास Voyez प्रकाश.

प्रकासत adj. Brillant.

प्रकासा Voyez प्रकाश.

प्रकासि adj. Brillant.

प्रक्षेप s. m. Action de lancer.

प्रगट adj. Manifeste, visible.

प्रगटनौं v. n. Se manifester, apparaître.

प्रचुर adj. Nombreux, répandu.

प्रजा s. f. Sujets, peuple.

प्रजारनौं v. a. Allumer.

प्रणांम् Voyez प्रणाम.

प्रणाम s. m. Salutation.

प्रतकाला s. m. Matin.

प्रतक्षज s. m. Garde.

प्रताप s. m. Gloire, majesté, puissance.

प्रतापी adj. Glorieux, puissant.

प्रति prép. Contre, à, vers. — प्रति दिन Chaque jour.

प्रतिग्रह् s. m. Acceptation, présent fait à un brâhmane.

प्रतिज्ञा s. f. Engagement, promesse.

प्रतिपाल s. m. Protection, action d'observer.

प्रतिपालनौं v. a. Garder, tenir, conserver, entretenir.

प्रतिबिंब Voyez प्रतिबिम्ब.

प्रतिबिम्ब s. m. Image.

प्रतिष्ठा s. f. Consécration d'un monument élevé en l'honneur d'un dieu, célébrité.

प्रतिहार s. m. Portier, garde placé à une porte.

प्रतीत Voyez प्रतीति.

प्रतीति s. f. Confiance, foi.

प्रथम adv. D'abord. — adj. Premier.

प्रथी s. f. Terre.

प्रदक्षिन s. m. Circumambulation autour d'une personne ou d'une chose que l'on veut honorer.

प्रदौंन Voyez परदौंन.

प्रन s. m. Promesse, vœu, résolution.

प्रनाम Voyez प्रणाम.

प्रनाली s. f. Cours d'eau, bord d'un puits, conduit.

प्रबल adj. Violent, fort, puissant.

प्रबीन adj. Habile, adroit, intelligent.

प्रबेश s. m. Accès, entrée. — प्रबेश करनौं Coire.

प्रभव adj. Né, produit.

प्रभाव s. m. Pouvoir, majesté, propriété.

प्रभाववान adj. Puissant, plein de majesté.

प्रभु s. m. Maître, seigneur.

प्रभुता s. f. Suprématie, supériorité, puissance.

प्रभू Voyez प्रभु.

प्रमत्त adj. Ivre, fou.

प्रमांण Voyez प्रमान.

प्रमान s. m. Autorité, preuve, quantité, mesure, distance.

प्रमान adj. Authentique, approuvé de, agréable.

प्रयास s. m. Fatigue.

प्रयोजन s. m. Cause, motif, intention.

प्रलय s. f. Destruction générale du monde.

प्रवाह् s. m. Courant (*d'un fleuve*), torrent.

प्रवाहु Voyez प्रवाह्.

प्रशंस्य adj. Vanté, célèbre, digne de louange.

प्रश्न s. m. Demande, question.

प्रसंग s. m. Récit, suite d'un récit, d'un livre, histoire.

प्रसंश Voyez प्रसंस.

प्रसंस s. f. Éloge, louange.

प्रसन्न adj. Content, satisfait.

प्रसाद् s. m. Faveur, présent, aliments, nourriture qui a été offerte aux dieux.

प्रसिद्ध adj. Connu, célèbre, fameux.

प्रसिद्धि s. f. Réputation, renommée, bruit.

प्रसिध Voyez प्रसिद्ध.

प्राजापत्य s. m. *Nom d'un des huit modes de mariage.*

प्राज्ञ s. m. Sage.

प्राण s. m. Vie, souffle, bien-aimée.

प्राणी adj. Vivant, être animé.

प्राणु Voyez प्राण.

प्रात s. m. Matin, point du jour.

प्रान Voyez प्राण.

प्राना Voyez प्राण.

प्रानी Voyez प्राणी.

प्राप्त adj. Acquis, obtenu.

प्राप्ति s. f. Acquisition.

प्राय adj. Semblable.

प्रारब्ध s. f. Fortune, destinée, destin.

प्रार्थना s. f. Demande.

प्रासाद् s. m. Palais, édifice.

प्रियंवद् adj. Qui parle avec douceur, qui dit des choses agréables et flatteuses.

प्रिय adj. Cher, ami, amical, agréable.

प्रिया adj. m. Chéri, bien-aimé. — adj. f. Chérie, chère.

प्रीतम adj. superl. Très-chéri. — s. m. Bien-aimé, amant, époux.

प्रीति s. f. Amitié, amour, attachement, affection.

प्रीती Voyez **प्रीति**.

प्रीथि s. f. Terre.

प्रीथी Voyez **प्रीथि**.

प्रीनी adj. Satisfait, joyeux, agréable.

प्रीय Voyez **प्रिय**.

प्रीया adj. f. Voyez **प्रिया**.

प्रेत s. m. Âme qui a quitté le corps, mort, fantôme, espèce de démon.

प्रेम s. m. Amitié, affection, amour.

प्रेर्नौं v. n. Être envoyé, arriver. — v. a. Envoyer, presser, pousser.

प्रेरित adj. Envoyé, dissipé.

प्लव s. m. Radeau.

फ

फकीर् s. m. Faquîr, mendiant. — A. فقير.

फटनौं v. n. Être déchiré, être brisé.

फड़कनौं v. n. Clignoter (*en parlant des yeux*).

फन s. m. Tête d'un serpent.

फनी s. m. Serpent. — **फनीनाथ** Roi des serpents.

फरी s. f. Bouclier.

फल s. m. Fruit, profit, avantage.

फलद् adj. Qui porte fruit, utile, avantageux.

फलनौं v. n. Porter fruit, fructifier, être avantageux.

फह्रानौं v. n. Flotter, voltiger dans l'air.

फाका s. m. Jeûne. — A. فاقه.

फाटनौं v. n. S'entr'ouvrir, se briser.

फाडनौं v. a. Déchirer, mettre en pièces, faire ouvrir.

फार्नौं Voyez फाडनौं.

फिर् adv. Ensuite, de nouveau.

फिर्नौं v. n. Marcher, aller, errer, retourner, revenir.

फिरानौं v. a. Faire tourner, retourner, faire retourner, faire circuler.

फिरि adv. De nouveau, en retour, ensuite. — फिरि आनौं Revenir.

फिरे adv. Après, derrière, ensuite.

फीकौ adj. Pâle (*en couleur*).

फीर्नौं Voyez फिर्नौं.

फुर् adj. Vrai, sincère.

फुरे adv.? Voyez फिरे.

फुलनौं v. n. Fleurir, être joyeux.

फूंक s. f. Action de souffler (*le feu*). — फूंक देनौं Mettre le feu, incendier.

फूटनौं v. n. Se briser, se séparer.

फूल s. m. Fleur.

फूलौ adj. Fleuri.

फेर् s. m. Retour, échange, changement. — adv. De nouveau, en retour. — फेर् देनौं Rendre.

फेर्नौं v. a. Tourner, retourner, répéter.

फेरा s. m. Tour, circuit, circumambulation, changement.

फेरि adv. De nouveau, ensuite, en arrière.

फेरी adv. Voyez फेरि.

फेरी s. f. Action d'aller autour, de tourner autour d'une chose.

फेंट s. f. Ceinture.

फैलनौं v. n. Se répandre.

फोर्नौं v. a. Briser.

ब

बंजार् s. m. Camp de marchands de grains, camp.

बडा Voyez बडा.

बंडौ Voyez बडा.

बंद् s. m. f. Lien, captivité. — P. بند.

बंदनवार् s. f. Guirlande.

बंदी s. m. Barde, poëte.

बंधन s. m. Lien, emprisonnement, courroie.

बंधनु Voyez बंधन.

बंधनौं v. n. Être attaché, être lié, être enfermé.

बंधु Voyez बंधू.

बंधू s. m. Parent, ami, captif.

बंधूक s. m. Captif, prisonnier.

बंश s.m. Bambou, famille, race, lignage.

बंस Voyez बंश.

बअ्द adv. Après. — बअ्द उस के Après cela. — A. بعد.

बकनौं v. n. Babiller.

बकरा s. m. Bouc.

बक्ता s. m. Parleur, qui parle, qui dit.

बखाननौं v. a. Louer, vanter, célébrer, expliquer, citer.

बगदनौं v. n. Retourner, revenir.

बगुला s. m. Grue, héron.

बचन s. m. Discours, parole, promesse.

बचनौं v. n. Être sauvé, se sauver, échapper.

बचानौं v. a. Sauver, préserver, protéger, réserver, cacher.

बछरा s. m. Veau.

बजनौं v. n. Résonner, faire du bruit, retentir.

बजानौं v. a. Faire sonner, faire retentir, jouer d'un instrument de musique.

बजार s. m. Marché. — P. بازار.

बजावनौं Voyez बजानौं.

बज्र s. m. Foudre.

बटनौं v. a. Gagner.

बड़ Voyez बड़ा.

बड़ भागी adj. Très-heureux, fortuné.

बड़ा adj. Grand, gros, principal, âgé, ancien.

बड़ाई s. f. Grandeur, action de vanter.—बड़ाई करनौं Vanter, célébrer.

बड़ो Voyez बड़ा.

बड़ौ Voyez बड़ा.

बड़ौई Voyez बड़ा.

बढ़नौं v. n. Grandir, croître, avancer.

बढ़ानौं v. a. Augmenter, exalter, faire avancer.

बढ़ानौं Voyez बढ़ानौं.

बणज s. m. Commerce, trafic.

बणिजारा s. m. Marchand de grain, marchand.

बतरानौं v. n. Parler, converser, s'entretenir.

बतानौं v. a. Indiquer, exposer, montrer, décrire, dire. — भाव बतानौं Gesticuler.

बदन s. m. Visage.

बदबांभ adj. Stérile.

बदरिकाश्रम m. comp. s. m. Hermitage de Badri. (*Lieu de pèlerinage situé dans le nord de l'Inde.*)

बदीत part. pass. Arrangé, disposé, établi.

बधू s. f. Femme, épouse.

बन s. f. Forêt.

बनजीव s. m. Habitant des forêts.

बननौं v. n. Être fait, construit, arrangé, préparé, s'arranger, convenir.

बनमाली s. m. *Nom de Krichna.*

बनानौं v. a. Construire, faire, composer, arranger, orner.

बनाव s. m. Préparation, décoration.

बनिक s. m. Marchand.

बनिजारो s. m. Marchand de grain, marchand.

बनिजारौ Voyez बनिजारो.

बनियां Voyez बनिया.

बनिया s. m. Marchand, banquier.

बनु Voyez बन.

बन्दिन s. m. Barde.

बन्धकी s. f. Courtisane, femme de mauvaise vie.

बन्धु s. m. Parent, ami.

बन्धुजन s. m. Parents, famille.

बन्य adj. De forêt, qui habite les forêts.

बपुरा adj. Qui ne peut se défendre, qui manque de secours.

बर s. m. Choix, faveur, fiancé. — adj. Excellent, préférable, meilleur.

बर conj. Mais, plutôt.

बरक्रमे mot comp. forme du locat. sanscrit, employée adverbial.: Dans un ordre excellent.

बरछा s. m. Pique, javeline.

बरन s. m. Couleur, classe, rang, caste.

बरन conj. Plutôt.

बरनन s. m. Description, éloge. — बरनन करनौं Célébrer.

बरननौं v. a. Décrire, dépeindre, louer, célébrer.

बरनौं v. n. Brûler.

बरष s. m. Pluie, année.

बंरषनौं v. n. Pleuvoir.

बरषानौं v. a. Faire pleuvoir, répandre.

बरस Voyez बरष.

बरसनौं Voyez बरषनौं.

बरसानौं Voyez बरषानौं.

बरसि Voyez बरष.

बराबरि s. f. Égalité, rivalité. — P. برابری.

बराह s. m. Sanglier.

बरिषाकाल s. m. Saison des pluies.

बरी s. m. Fiancé.

बर्ण s. m. Caste.

बर्णन Voyez बरनन.

बर्त्त Voyez ब्रत.

बंर्त्तनौं v. a. User de, faire.

बर्धमान adj. Grandissant.

बर्ष Voyez बरष.

बर्षनौं Voyez बरषनौं.

बल s. m. Force, puissance.

बल s. m. Sacrifice. — बल देनौं Sacrifier.

बलऐन adj. Fort, puissant.

बलदाउ Voyez बलराम.

बलदेव Voyez बलराम.

बलराम n. pr. Balarāma.

बलवान adj. Fort, puissant.

बलि s. m. Sacrifice. — n. pr. Bali.

बलि s. m. Force.

बली adj. Fort, puissant.

बलु s. m. Force, puissance.

बल्कि adv. De plus, en outre. — P. بلکه.

बश s. m. Pouvoir, puissance, autorité, volonté. — बश करनौं Soumettre, subjuguer.

बशिष्ठ n. pr. Vasichta.

बषान s. m. Éloge, description, explication.

बषाननौं Voyez बखाननौं.

बषानि Voyez बषान.

बस Voyez बश.

बसत Voyez बस्त.

बसन s. m. Vêtement, parure, habitation, séjour.

बसनौं v. n. Habiter.

बसन्त s. f. Printemps.

बसानौं v. a. Faire habiter, faire rester, peupler, fonder une cité.

बसुदेव n. pr. Vasoudéva.

बस्त s. f. Chose, denrée.

बस्ती s. f. Village, endroit habité, population.

बस्तु Voyez बस्त.

बस्तू Voyez बस्त.

बस्त्र s. m. Vêtement.

बस्य adj. Dompté, soumis.

बहकानौं v. a. Tromper.

बहनौं v. n. Couler.

बहानौं v. a. Faire couler, réduire.

बहिनि s. f. Sœur.

बहीर s. f. Bagage, foule.

बहु adj. Beaucoup.

बहुत adj. Beaucoup.

बहुतेर adj. Beaucoup.

बहुतेरा Voyez बहुतेर.

बहुबिधि adj. De plusieurs manières, de plusieurs espèces.

बहुमी s. f. Terre.

बहुरि adv. De nouveau.

बहुरूप adj. De diverses formes.

बहू s. f. Femme, bru. — पुत्र की बहू Bru.

बहूत Voyez बहुत.

बहूता Voyez बहुत.

बहोत Voyez बहुत.

बहौत Voyez बहुत.

बहौरि Voyez बहुरि.

बांचनौं v. a. Lire.

बांझ adj. Stérile.

बांट s. m. Portion, distribution.

बांटनौं v. a. Partager, distribuer.

बांत Voyez बात.

बांध s. m. Lien, captivité.

बांधनौं v. a. Lier, attacher, arrêter.

बांभन s. m. Brâhmane.

बांह s. f. Bras.

बांहिं Voyez बांह.

बांहि Voyez बांह.

बांहीं Voyez बांह.

बांही Voyez बांह.

बाक s. m. Discours, parole.

बाग s. m. Jardin. — p. باغ.

बागो s. m. Vêtement.

बाघ s. m. Tigre.

बाघु Voyez बाघ.

बाच s. f. Discours, parole.

बाचांहीन adj. Privé de la parole.

बाज Voyez बाजा.

बाजनौं v. n. Résonner, retentir.

बाजा s. m. Instrument de musique. — बाजा गाजा Son de divers instruments de musique.

बाट s. f. Route, chemin.

बाढनौं v. n. Augmenter, avancer, s'élever.

बाणी s. f. Voix.

बात s. f. Parole, discours, bruit, rumeur, affaire, chose.— बात की बात Paroles insignifiantes.

बातां Voyez बात.

बाता Voyez बात.

बातु Voyez बात.

बाद s. m. Accusation.

बाध s. m. Empêchement, obstacle.

बान s. m. Flèche.

बानासुर n. pr. Bānāsour.

बानिक s. m. Marchand.

बानिये Voyez बानी.

बानी s. f. Voix, discours. — n. pr. *Nom de la déesse Saraswatî.*

बानौ s. m. Profession, costume (particulier à telle ou telle classe d'individus).

बाप s. m. Père.

बापा Voyez बाप.

बाम s. m. Côté gauche. — बाम अंग (*Même sens.*)

बाम s. f. Voyez बामा.

बामदेव n. pr. Bāmdev.

बामा s. f. Femme.

बाम्हन s. m. Brâhmane.

बायु s. m. Vent. — n. pr. Vāyou ou le vent.

बार s. m. Porte, jour de la semaine.

बार s. f. Fois, temps, tour, moment, délai, retard.

बारनौं v. n. Cesser, se diviser. — v. a. Empêcher.

बारबार adv. Souvent, sans cesse, à plusieurs reprises. — P. باربار.

बारम adj. num. Douzième.

बारा s. f. Voyez बार.

बारा s. f. Jeune fille.

बारि s. f. Fois, tour, occasion, délai.

बारी s. f. Jardin.

बारो s. f. Jeune fille.

बारु s. m. f. Jeune homme, jeune fille.

बार् adv. A la fois, à la fin. — P. باری.

बार्ता Voyez बार्त्ता.

बार्त्ता s. f. Histoire, récit.

बाल s. m. Enfant. — बाल दसा Enfance.

बाल s. f. Jeune fille.

बाल s. f. Épi de blé.

बालक s. m. Enfant, petit (des animaux).

बालकपन s. m. Enfance.

बालकी s. f. Jeune fille, enfant.

बालखिल्य s. m. Espèce d'être d'origine divine.

बाला s. f. Jeune fille, enfant.

बाल्यपन s. m. Enfance.

बावरौ Voyez बावला.

बावला adj. Fou, insensé, furieux.

बावली s. f. Grand puits dans lequel on descend par des marches.

बास s. m. Demeure, habitation, séjour.

बासना s. f. Désir, affection.

बासर् s. m. Jour.

बासी adj. m. empl. subst. Habitant. — पुर् बासी Habitant d'une ville.

बासु Voyez बास.

बाह Voyez बांह.

बाहक adj. Qui porte.

बाहण s. m. Véhicule, animal sur lequel on monte.

बाहनौं v. a. Porter, transporter.

बाहर् adv. Dehors.

बाहरि Voyez बाहर्.

बाहिर् Voyez बाहर्.

बाहीं Voyez बांह.

बाहु Voyez बांह.

बाह्मन s. m. Brâhmane.

बिकरार् adj. Terrible, affreux.

बिकरारा Voyez बिकरार्.

बिकराल Voyez बिकरार्.

बिकल adj. Qui n'a point de repos, troublé, ému.

बिक्रम n. pr. Vikrama.

बिक्रमा Voyez बिक्रम.

बिक्रमा जीत n. pr. Vikramā-Djīt.

बिक्षेप s. m. Action de jeter, de renverser.

बिख्यात adj. Renommé. — बिख्यात करनौं Faire connaître, rendre célèbre.

बिगसंता adj. Joyeux, charmé.

बिगसनौं v. n. Avoir du plaisir, se plaire, être charmé.

बिगार् s. m. Injure, mauvaise action.

बिगार्नौं v. a. Injurier, se conduire mal envers.

बिचार् s. m. Réflexion, pensée, considération, jugement, intention.

बिचार्नौं v. a. Penser, réfléchir, comprendre, juger.

बिचार्ा Voyez **बिचार्**.

बिचारि् Voyez **बिचार्**.

बिचार्ु Voyez **बिचार्**.

बिचार्ो Voyez **बिचार्**.

बिचि adv. Entre, au milieu. — **ईतुने बिचि** Sur ces entrefaites.

बिछुर्नौं v. n. Être séparé.

बिछूर्नौं Voyez **बिछुर्नौं**.

बिजुली s. f. Éclair.

बिजोग s. m. Séparation, absence.

बिटनौं v. a. Gagner, faire du profit, du bénéfice.

बिटप s. m. Arbre, branche.

बिठल n. pr. Bithal.

बितनौं v. n. Passer, s'écouler.

बितानौं v. a. Passer.

बिथर्ानौं v. a. Disperser, éparpiller, étendre.

बिथा s. f. Peine, affliction.

बिथुर्ानौं Voyez **बिथर्ानौं**.

बिदा s. f. Action de renvoyer, de prendre congé, congé. — **बिदा कर्नौं** Congédier.

बिदित part. Connu, célèbre.

बिदेस s. m. Pays étranger.

बिद्या s. f. Science, connaissance.

बिद्याधर् s. m. Vidyādhara (*espèce de demi-dieu*).

बिद्यावान adj. Instruit, savant.

बिद्याहीन adj. Ignorant.

बिधना s. m. Le dieu Brahmâ.

बिधवा s. m. Divinité. — *Nom de Brahmâ.*

बिधवा s. f. Veuve.

बिधान s. m. Usage, manière d'agir, précepte, injonction.

बिधि s. f. Règle, manière. — s. m. Destin. — *Nom de Brahmâ.*

बिधिवत adv. Suivant la règle.

बिन adv. Sans, excepté, à moins que.

बिनउं pour **बिन हूं** Voyez **बिन**.

बिनती s. f. Supplication, soumission, sollicitation.

बिनां Voyez बिन.

बिना Voyez बिन.

बिनास s. m. Destruction.

बिनि Voyez बिन.

बिनु Voyez बिन.

बिनै s. f. Supplication, soumission.

बिपत s. f. Adversité, malheur.

बिपति Voyez बिपत.

बिपरीत adj. ou part. Contraire, opposé.

बिपरीति s. f. Dommage, ruine.

बिपिन s. m. Forêt.

बिपुल adj. Grand.

बिप्र s. m. Brâhmane.

बिबाह s. m. Mariage.

बिबाहि Voyez बिबाह.

बिबिधि adj. Différent, de diverses espèces.

बिबेक s. m. Distinction, jugement, discernement.

बिबेका Voyez बिबेक.

बिभचार s. m. Débauche.

बिभचारी adj. Débauché.

बिभौ s. m. Chose, richesse.

बिभ्राह s. m. Erreur, doute, appréhension.

बिमान s. m. Char d'un dieu.

बिमुख adj. Ennemi.

बिमुष Voyez बिमुख.

बियोग s. m. Séparation, absence. — adj. Séparé.

बियोगी s. m. Amant qui éprouve le chagrin de l'absence d'un objet aimé. — adj. f. Séparée de l'objet de son amour.

बिरक्त s. m. Espèce de faquîr qui a renoncé au monde. — adj. Dégoûté, indifférent.

बिरला adj. Rare, peu nombreux.

बिरह s. m. Séparation, absence.

बिरहा Voyez बिरह.

बिरही adj. Séparé de l'objet de son amour, qui éprouve le chagrin de l'absence.

बिराजनौं v. n. Briller, vivre heureux.

बिरानी s. f. Moquerie.

बिरियां s. f. Temps.

बिरूप adj. Défiguré. — बिरूप होनौं Être déshonoré.

बिरोधाभास m. comp. s. m. Sujet

de critique. (*Mot à mot : apparence, vraisemblance de critique.*)

बिलंब s. m. Délai, retard. — बिलंब लानौं Mettre du retard, différer.

बिलखनौं v. a. Voir, regarder.

बिलग s. m. Séparation, désunion. — बिलग माननौं S'offenser.

बिलछनौं v. a. Regarder, voir.

बिलमनौं v. n. S'arrêter, rester, tarder.

बिलानौं v. n. Disparaître, se retirer, être perdu. — v. a. Dissiper, disposer de, donner.

बिलाव s. m. Chat.

बिलूरनौं v. a. Égratigner.

बिलोकनौं v. a. Regarder, voir.

बिल्व s. m. Fruit du vilwa (*Ægle marmelos*).

बिवाह् Voyez बिबाह्.

बिवोग Voyez बियोग.

बिशाल adj. Grand.

बिशेष adj. Particulier, spécial.

बिश्राम s. m. Repos.

बिश्राम् Voyez बिश्राम.

बिश्व s. m. Univers. — *Nom d'une classe de divinités.*

बिश्वामित्र n. pr. Viswāmitra.

बिश्वास s. m. Confiance.

बिष s. m. Poison.

बिषई s. m. Objet perçu par les sens, chose de ce monde, chose, denrée.

बिषई adj. Mondain, du monde (homme), par oppos. à celui qui se livre à la vie religieuse.

बिषु Voyez बिष.

बिषै s. m. Objet perçu par les sens, affaire, chose. — *Empl. adverbial.* Dans, à l'égard de, concernant.

बिष्णु n. pr. Vichnou.

बिष्णुशर्मा n. pr. Vichnousarmâ.

बिस Voyez बिष.

बिसतार् s. m. Action d'étendre, étendue, déploiement, développement, abondance.

बिसरनौं v. n. Oublier, être oublié.

बिसारनौं v. a. Oublier.

बिसूरनौं v. n. Sangloter.

बिसेश Voyez बिसेष.

बिसेष s. m. Particularité, espèce.

— adj. Particulier, remarquable. — adv. Particulièrement, d'une manière remarquable.

बिसेषा Voyez बिसेष.

बिसेस Voyez बिसेष.

बिस्तार् Voyez बिसतार्.

बिस्तार्नौं v. a. Étendre, déployer.

बिस्वास Voyez बिश्वास.

बिस्वासी Voyez बिश्वास.

बिह्ंसनौं Voyez बिह्सनौं.

बिह्सनौं v. n. Sourire.

बिह्राण s. m. Lendemain. — बिह्राणें Demain.

बिह्रानौं v. n. Passer (le temps).

बिह्रार् s. m. Amusement, plaisir.

बिह्राल Voyez बिह्रार्.

बिह्राल adj. Qui a de mauvaises dispositions. — P. A. بحال.

बीच्च adv. Au milieu, entre. — इस बीच Sur ces entrefaites.

बीचि Voyez बीच.

बीज्ञ s. m. Semence.

बीतनौं Voyez बितनौं.

बीर् s. m. Héros, guerrier.

बीर् s. m. Frère.

बीरवर् n. pr. Vīravar.

बीरी s. f. Bétel.

बीस adj. num. Vingt.

बीसनौं v. n. Être renversé? succomber?

बुंभानौं v. a. Penser.

बुळुनौं Voyez बिळुनौं.

बुभानौं v. n. Être imprégné, être étanché (*en parlant de la soif*).

बुभानौं v. a. Expliquer, faire comprendre, persuader.

बुटाई s. f. Vieillesse.

बुटो adj. Vieux.

बुद्धि s. f. Intelligence, bon sens, raison, sagesse, pensée.

बुद्धिहीन adj. Dépourvu d'intelligence.

बुध s. m. Sage.

बुधि Voyez बुद्धि.

बुरा adj. Mauvais, le mal.

बुरि Voyez बुरा.

बुरो Voyez बुरा.

बुरौ Voyez बुरा.

बुलानौं v. a. Appeler, faire venir, inviter.

बूभानौं v. a. Penser, demander.

बूडनौं v. n. Se noyer, se plonger, s'enfoncer.

बृंदावन n. pr. Brindāban.

बृक्ष s. m. Arbre.

बृत्तांत s. m. Histoire, récit, nouvelle.

बृत्तान्त Voyez बृत्तांत.

बृन्द s. m. Multitude, quantité.

बेग s. m. Célérité, rapidité. —*Employé adverbial.* Rapidement, promptement.

बेगवंत adj. Prompt, rapide.

बेगि Voyez बेगी.

बेगी adv. Promptement, rapidement.

बेचनौं v. a. Vendre.

बेचैन adj. Inquiet, tourmenté.

बेटा s. m. Fils.

बेटी s. f. Fille.

बेण s. f. Vinā ou luth indien.

बेताळ s. m. Bétāla (*espèce de démon*).

बेत्ता adj. Sage, qui connaît.

बेद् s. m. Véda.

बेद्तिप्रमान m. comp. Le Véda en est la preuve, ainsi l'atteste le Véda.

बेद्न s. f. Peine, tourment, mal.

बेदाध्ययन s. m. mot comp. Lecture des Védas.

बेद्री s. f. Espèce de plate-forme servant d'autel.

बेदोक्त adj. Prescrit par les Védas.

बेर् s. m. Fois, moment, délai.

बेलनौं v. a. Répandre, étendre.

बेश Voyez बेष.

बेष s. m. Ajustement, costume, parure, déguisement.

बेष्टित adj. Entouré.

बेस्या s. f. Courtisane, prostituée.

बैंन Voyez बैन.

बैगन s. m. *Nom de plante.* (*Solanum melongena.*)

बैठन n. verb. Action de s'asseoir.

बैठनौं v. n. S'asseoir, être assis.

बैठानौं v. a. Faire asseoir, établir, placer.

बैठारनौं v. a. Faire asseoir, établir, placer.

बैताळ Voyez बेताळ.

बैद् Voyez बैद्दि.

बैद्दि s. m. Médecin.

बैन s. m. f. Parole, discours.

बैबि s. f. *Nom d'herbe.*

बैर् s. m. Inimitié. — बैर् कारनौं Contracter une inimitié.

बैरागी s. m. Ascète, pénitent, espèce de faquîr.

बैरी s. m. Ennemi.

बैल s. m. Bœuf.

बैश्य s. m. Homme de la troisième caste.

बैसंपायन n. pr. Vaisampāyana.

बैसम्पायन Voyez बैसंपायन.

बोइथ Voyez बोहिथ.

बोकड़ा Voyez बोकरा.

बोकरा s. m. Bouc.

बोझ s. m. Charge, fardeau.

बोध s. m. Connaissance, intelligence.

बोनौं v. a. Semer.

बोर adj. Profond, enfoncé.

बोरनौं v. a. Plonger, faire noyer, inonder.

बोल s. m. Parole, discours.

बोलनौं v. n. Parler, dire.

बोला Voyez बोल.

बोलानौं v. a. Dire.

बोली s. f. Discours, langage.

बोवनौं Voyez बोनौं.

बोहिथ s. m. Vaisseau, barque.

बौरा adj. Fou, insensé.

बौरी Voyez बौरा.

ब्याकुल adj. Agité, troublé.

ब्याधि s. f. Maladie, mal, peine, malheur.

ब्यापनौं v. a. Obtenir, s'emparer de, occuper, faire, affecter.

ब्याह s. m. Mariage.

ब्याहनौं v. a. Épouser, donner en mariage.

ब्योपार s. m. Commerce, trafic, transaction.

ब्योपारा Voyez ब्योपार.

ब्योहार s. m. Manière d'agir, conduite, pratique, usage, profession.

ब्योहारा Voyez ब्योहार.

ब्योहारू Voyez ब्योहार.

ब्यौपार Voyez ब्योपार.

ब्यौपारि Voyez ब्यौपारी.

ब्यौपारी s. m. Marchand.

ब्यौरा s. m. Différence, distinction, explication, récit.

ब्यौहरो s. m. Prêteur.

ब्यौहार Voyez ब्योहार.

ब्रंभपुर n. pr. Brahmapour.

ब्रज n. pr. Bradj.

ब्रत s. m. Vœu, acte méritoire, pénitence.

व्रतधारी adj. Fidèle à ses vœux, pieux.

व्रतांत s. m. Histoire, récit, nouvelle.

व्रष s. m. Arbre.

व्रषाकाल s. m. Saison des pluies.

ब्रह्म n. pr. Brahmâ.

ब्रह्म s. m. *En comp.* Brâhmane.

ब्रह्मचर्य s. m. État de Brahmâtchari.

ब्रह्मण s. m. Brâhmane.

ब्रह्मयोनि mot comp. adj. Issu de la caste brâhmanique.

ब्रह्मलोक s. m. Monde de Brahmâ, ciel.

ब्रह्महत्यादि mot comp. Meurtre d'un brâhmane, etc.

ब्रह्मा *en compos.:* Brâhmane. — ब्रह्मा जात Caste des Brâhmanes.

ब्राह्मण s. m. Brâhmane.

ब्राह्मन Voyez ब्राह्मण.

ब्राह्मनी s. f. Femme de brâhmane.

ब्राह्म्य s. m. *Nom d'un des huit modes de mariage.*

भ

भंग s. m. Rupture, déroute, défaite. — adj. Brisé, vaincu.

भंडार s. m. Lieu où l'on enferme les richesses, magasin, trésor.

भंडारा Voyez भंडार.

भइयारो adj. Qui inspire de la crainte.

भक्त s. m. Adorateur, fidèle, serviteur. — adj. Pieux.

भक्ति s. f. Religion, foi, dévotion, attachement.

भक्तिनि s. f. Servante.

भक्षनौं v. a. Manger.

भगवंत adj. Divin. (*Épith. de Krichna.*) — s. m. Dieu.

भगवंता Voyez भगवंत.

भगवान s. m. Dieu, l'être suprême. — adj. Divin.

भगानौं v. a. Faire fuir, mettre en fuite.

भङ्ग Voyez भंग.

भजन s. m. Culte, adoration.

भजनौं v. a. Adorer, honorer.

भजनौं v. n. S'enfuir, fuir.

भट s. m. Guerrier, héros.

भत्तार् s. m. Époux.

भननौं v. n.? Être? passer?

भय s. m. Crainte, frayeur.

भयमान adj. Qui craint, effrayé.

भर् adj. Plein, entier, autant que, aussi long que. — छिन भर् Un instant.

भरण s. m. Action de nourrir, d'élever.

भरत n. pr. Bharata.

भरनौं v. a. Emplir, remplir, nourrir, charger, porter, répandre, accomplir. — v. n. Être plein, être rempli.

भरम s. m. Embarras, doute, erreur, soupçon.

भरमानौं v. a. Tromper, alarmer, embarrasser.

भरा adj. Plein, beaucoup, tout, entier.

भरानौं v. a. Remplir, faire remplir, faire préparer.

भरि Voyez भरा.

भरुवा s. m. Mari.

भरे Voyez भरा.

भलॆ Voyez भला.

भला adj. Bon, le bien, honorable, favorable. — *Employé adverbial.* Bien.

भलाई s. f. Bonté, bien-être, bonheur.

भली Voyez भला.

भलो Voyez भला.

भलौ Voyez भला.

भव s. m. Existence.

भव adj. en comp. Né de.

भवन s. m. Maison.

भवा temps pass. Voyez होनौं.

भवानी n. pr. Bhawānī (*déesse, femme de Siva*).

भव्य adj. Beau, heureux.

भसंत s. m. Temps.

भस्म s. f. Cendre.

भांडा s. m. Grand pot de terre, vase.

भांति s. f. Manière, mode, sorte, espèce.

भांती Voyez भांति.

भांवर् s. f. Tour, révolution. — भांवर् फिरनौं Faire le tour.

भाई s. m. Frère.

भाउ Voyez भाव.

भाखनौं Voyez भाषनौं.

भाग s. m. Fortune, sort, destinée.

भाग s. m. Partie, portion.

भाग s. m. Fuite.

भाग जानौं v. n. Fuir, s'enfuir.

भागनौं v. n. Voler, fuir, s'en fuir.

भागवत adj. Heureux, fortuné.

भागा जानौं Voyez भाग जानौं.

भागीरथी n. pr. Bhāgīrathī.

भाग्य s. m. Fortune, destinée.

भाजनौं v. n. Fuir, s'enfuir.

भाट s. m. Barde.

भान Voyez भानु.

भानु s. m. Soleil.

भानौं v. n. Être approuvé, plaire, convenir, être content.

भार् s. m. Poids, fardeau.

भारत s. m. Descendant de Bharata.

भारनौं Voyez भरनौं.

भारया Voyez भार्य्या.

भारी adj. Lourd, grand, important, fatigant.

भार्या Voyez भार्य्या.

भार्य्यावंत adj. Qui a une femme, une épouse.

भार्य्या s. f. Femme, épouse.

भाव s. m. Sentiment, passion, choix, volonté, disposition, pantomime, vie, existence, condition, état. — भाव बतानौं Gesticuler.

भावना s. f. Appréhension, crainte.

भावनौं Voyez भानौं.

भाषनौं v. a. Parler, dire, raconter, narrer

भाषा s. f. Parole, discours, langage.

भाषौ Voyez भाषा.

भास s. m. Éclat.

भिक्षा s. f. Aumône.

भिक्षुक s. m. Mendiant.

भिखारी s. m. Mendiant.

भिछा Voyez भिक्षा.

भिजवानौं v. a. Faire envoyer.

भिडनौं v. n. En venir aux mains.

भितरि Voyez भीतर्.

भींतर् Voyez भीतर्.

भींतरि Voyez भीतर्.

भी conj. Aussi, même

भीख s. f. Aumône.

भीजनौं v. n. Être humide, mouillé, éprouver du chagrin, des regrets, être tourmenté.

भीतर् adv. Dans, au dedans, dans l'intérieur.

भीतरि Voyez भीतर्.

भीति s. f. Crainte.

भीना adj. Humide, mouillé.

भीर् s. f. Foule, multitude.

भीरु adj. Timide, craintif.

भीष्मक n. pr. Bhīchmaka.

भुजा s. f. Bras.

भुवंगम s. m. Serpent.

भुवर्लोक s. m. Espace compris entre la terre et le soleil, monde céleste.

भुवाला s. m. Roi.

भुषो Voyez भूखा.

भुषौ Voyez भूखा.

भूंसनौं v. n. Aboyer.

भू s. f. Terre.

भूखा adj. Affamé, qui a faim.

भूत s. m. Démon, esprit.

भूतल s. m. Terre, sol.

भूप s. m. Roi, souverain.

भूपति s. m. Maître de la terre, roi, souverain.

भूपाल s. m. Roi, souverain.

भूमि s. f. Terre, sol.

भूमिदान s. m. Présent consistant en terres, don que l'on fait d'une terre.

भूरि adj. Beaucoup.

भूलनौं v. n. S'égarer, oublier, omettre.

भूष s. f. Faim.

भूषण s. m. Ornement, parure, bijou.

भूषन Voyez भूषण.

भूषा Voyez भूखा.

भूषो Voyez भूखा.

भूषौ Voyez भूखा.

भृङ्ग s. f. Abeille.

भेंट Voyez भेट.

भेजनौं v. a. Envoyer.

भेट s. f. Rencontre, présent fait à un supérieur.

भेटनौं v. a. Rencontrer, joindre, faire un présent (à un supérieur).

भेद् s. m. Secret, action de briser, séparation, différence.

भेठ्नौं v. a. Briser.

भेर् s. f. Timbale, instrument de musique.

भेरी Voyez **भेर्**.

भेव s. m. État, disposition, nature.

भेष s. m. Déguisement, apparence.

भैं s. f. Terre.

भैंस s. f. Femelle du buffle.

भैया s. m. Frère.

भोंसु pour **भयौ** Voyez **ह्वैनौं**.

भो pour **भयौ** Voyez **ह्वैनौं**.

भोग s. m. Jouissance, satisfaction, bien-être, possession, nourriture.

भोगनौं v. n. Jouir, souffrir.

भोगु Voyez **भोग**.

भोगू Voyez **भोग**.

भोजक्कटु n. pr. Bhodjakatou.

भोजन s. m. Nourriture. — **भोजन कव्वानौं** Faire manger. — **भोजनार्थ** Pour sa nourriture.

भोय allitérat. ou part. de **ह्वैनौं**?

भोर् s. f. Pointe du jour, aurore.

भौंन s. f. Voyez **भौन**.

भौ temps pass. Voyez **ह्वैनौं**.

भौजाई s. f. Belle-sœur.

भौन s. f. Terrain, terre.

भौन temps pass.? Voyez **ह्वैनौं**.

भ्रात s. m. Frère.

म

मंगल s. m. Bonheur, réjouissance. — **मंगल गानौं** Chanter des chants de félicitation, de réjouissance.

मंगलाचार् s. m. Fête, réjouissance.

मंगली adj. Joyeux, de fête.

मंगवानौं v. a. Faire appeler, faire venir, faire apporter.

मंगानौं v. a. Envoyer chercher, faire venir, faire apporter, demander.

मंजार् s. m. Chat.

मंडन s. m. Ornement.

मंडरानौं v. n. Faire un circuit, voltiger.

मंडलेश्वर् s. m. Souverain, monarque.

मंडी s. f. Marché.

मंढा s. m. Pavillon.

मंत्र s. m. Charme, avis, conseil, formule consacrée.—मंत्र जंत्र Charme, enchantement.

मंत्रि Voyez मंत्री.

मंत्री s. m. Conseiller, ministre.

मंद adj. Lent.

मंदर् n. pr. Mandara.

मंदविसर्प n. pr. Mandavisarpa.

मंदिर् s. m. Habitation, palais, temple.

मंह् adv. Dans.

मअ्लूम adj. Connu, apparent, manifeste, évident.—मअ्लूम होनौं Paraître. — A. معلوم.

मकर् s. m. Tromperie, artifice. —A. مكر.

मकरन्द् s. m. Miel, abeille.

मकान s. m. Place, demeure. — A. مقام.

मख s. m. Sacrifice.

मग s. m. Route, chemin, voie, moyen. — मग चाह्नौं Attendre.

मगधदेस n. pr. Pays de Magadha.

मगॅन adj. Plongé, content, joyeux.

मगर् s. m. Crocodile, alligator.

मगानौं Voyez मंगानौं.

मघवान s. m. *Nom d'Indra.*

मजलस s. f. Assemblée. — A. مجلس.

मझार् s. m. Milieu. —*Empl. adverbial.* Dans, au milieu.

मझारि Voyez मझार्.

मढनौं v. a. Embellir, orner.

मणि s. f. m. Pierre précieuse.

मण्डलेश s. m. Prince souverain, monarque.

मत s. f. Esprit, intelligence, opinion, avis, souvenir, manière.

मत particul. prohib. Ne pas.

मतङ्ग n. pr. Matanga.

मतवारौ adj. Ivre, furieux.

मता s. m. Avis, conseil.

मति s. f. Voyez मत.

मति particul. prohib. Voyez मत.

मतिमान adj. Intelligent, sage.

मतौ Voyez मता.

मत्त adj. Ivre.

मत्स्योखा adj. Portant la marque d'un poisson.

मथना s. m. Baratte.

मथुरा n. pr. Mathourâ.

मद् s. m. Vin, liqueur.

मद् s. m. Orgueil, ivresse. — adj. Ivre, en rut (éléphant).

मदन s. m. Amour. — n. pr. *Nom de Kâma, dieu de l'amour.*

मदन मोहन n. pr. *Nom de Krichna.*

मदमत adj. Ivre, en rut (éléphant).

मदोत्कट n. pr. Madotkata.

मधि Voyez मध्य.

मधुकर् s. m. Abeille.

मधुर् adj. Doux, mélodieux.

मध्य s. m. Milieu, milieu (du corps). — *Empl. adverbial.* Au milieu, dans, dans l'espace de....

मन s. m. Esprit, cœur, inclination, volonté, sentiment. — मन लानौं Faire attention.

मन s. f. m. Voyez मणि.

मन s. m. *Nom d'un poids.* — A. من.

मन भानौं v. n. Être agréable à l'esprit, plaire, convenir.

मन भायौ adj. Agréable, qui plaît.

मनहु impér. empl. adverbial. Comme.

मनानौं v. a. Faire agréer, persuader, apaiser, calmer.

मनि s. m. pour मन हि Voyez मन.

मनि s. f. m. Voyez मणि.

मनिमई adj. Orné de pierres précieuses.

मनु n. pr. Manou.

मनु s. m. Voyez मन.

मनु impér. empl. adverbial. Voyez मनहु.

मनुज s. m. Homme.

मनुष s. m. Homme.

मनुष्य Voyez मनुष.

मनुहार् s. f. Action de charmer, de réjouir, de plaire, plaisir, charme.

मनुहारि Voyez मनुहार.

मनुहारी s. f. Voyez मनुहार.

मनुहारी adj. Ravissant.

मनोरथ s. m. Désir, intention.

मनोर्थ Voyez मनोरथ.

मन्थन s. m. Action de secouer, agitation, ébranlement.

मन्दिर Voyez मंदिर.

मम gén. sing. du pron. de la 1re pers. De moi, mon.

मरकत s. m. Émeraude.

मरघट s. m. Lieu où l'on brûle les morts.

मरण s. m. Mort.

मरदनौं v. a. Fouler, écraser.

मरन Voyez मरण.

मरनो Voyez मरण.

मरनौं v. n. Mourir.

मरम s. m. Secret, mystère, chose cachée.

मरम् Voyez मरम.

मरोरनौं v. a. Empoigner, saisir, appréhender.

मर्तलोक Voyez मर्त्यलोक.

मर्त्यलोक s. m. Le monde des mortels, la terre.

मर्म Voyez मरम.

मर्य्याद s. f. Action de persévérer dans la bonne voie.

मलनौं v. a. Frotter.

मलय n. pr. Malaya.

मलवानौं v. a. Faire frotter.

मलीन adj. Souillé, malpropre, affligé.

मलेछ adj. Barbare, qui est d'une race impure.

मल्ल s. m. Lutteur.

मसखरी s. f. Moquerie. — A. مسخری.

मसाण s. m. Lieu où l'on brûle les morts, cimetière.

मस्तक s. m. f. Tête, front. — मस्तक घ्राण जाननौं Donner un baiser sur le front.

महत adj. Grand.

महता Voyez महत.

महतारि s. f. Mère.

महराज Voyez महाराज.

महरानौं s. m.? Grand roi (*terme de respect*)?

महल Voyez महल़.

महल़ s. m. Palais, demeure. — A. محل.

महांत adj. Grand.

महा adj. Grand. — *Empl. adverbial.* Très, fort.

महाकाल n. pr. Mahâkâla ou Siva.

महाजान adj. Très-instruit.

महातप adj. Qui se livre à de grandes austérités.

महातेज adj. Très-énergique, très-brillant.

महादुखी adj. Très-affligé.

महादेव n. pr. Mahādéva ou Siva.

महान adj. Grand.

महाबल Voyez महाबली.

महाबली adj. Très-fort, très-puissant.

महाभारत s. m. Mahâbhârata.

महाभूत s. m. Élément.

महाराज s. m. Grand roi. — *Au voc.* Sire. (*Ce mot s'emploie aussi comme terme de respect.*)

महिमा s. f. Grandeur, importance.

महिषा s. m. Buffle.

महिषी s. f. Celle des femmes d'un roi qui a été couronnée reine.

महींना Voyez महीना.

महीना s. m. Mois. — P. مهینا.

महो Voyez महा.

महोछो s. m. Fête funèbre.

महोछौ s. m. Bœuf.

मांगनौं v. a. Demander, désirer, chercher.

मांगिन लेनौं v. a. Emprunter.

मांझ s. m. Milieu. — *Empl. adverbial.* Dans.

मांथा Voyez माथा.

मांननौं Voyez माननौं.

मांरनौं Voyez मारनौं.

मांस s. m. Chair, viande.

मांसु Voyez मांस.

मांह adv. Dans.

मांहिं Voyez मांह.

मांहि Voyez मांह.

मांही Voyez मांह.

मा s. f. Mère.

माई s. f. Mère.

मागध s. m. Barde.

मागनौं Voyez मांगनौं.

माचनौं v. a. Faire, produire.

माछी s. f. Poisson.

माझ Voyez मांझ.

माटी s. f. Terre.

मात s. f. Mère.

मात adj. Étonné. — P. مات.

मातनौं v. n. Être enivré.

मातपिता Voyez मातापिता.

माता s. f. Mère.

माता adj. Ivre, qui est dans un transport.

मातापिता mot comp. Parents (*le père et la mère*).

मातृ s. f. Mère.

मात्र adv. Seulement. — *En comp. ce mot signifie :* Qui n'est pas plus grand que.

माथा s. m. Front, tête. — माथा ठनकनौं Éprouver un battement du front. — *c'est-à-dire :* Avoir un mauvais pressentiment.

माथौ Voyez माथा.

माधव n. pr Mâdhava. (*Nom de Krichna.*)

मान s. m. Honneur, respect, égard, considération, obstination, mesure, étendue.

मान adj. Semblable.

माननौं v. a. Respecter, avoir de la considération pour, se soucier de, reconnaître, agréer, admettre, accepter, croire, accorder, éprouver.

मानस s. m. Voyez मानुस.

माना s. m. Voyez मान.

मानिक s. m. Rubis.

मांनिय adj. Approuvé, agréable à.

मानुष s. m. Homme.

मानुस Voyez मानुष.

मानों Voyez मानो.

मानो impér. empl. adverbial. Comme, comme si, supposé que.

मानौं Voyez मानो.

मानौ Voyez मानो.

मानौ adj. Orgueilleux, arrogant.

माम *Allitération employée pour la rime.*

माय s. f. Mère.

माया s. f. Bonté, faveur, compassion, illusion.

मार् s. f. Action de battre, de tuer, coup. — मार् लेनौं Battre, vaincre.

मारग s. m. Route, chemin.

मारण n. verb. Action de tuer.

मारन Voyez मारण.

मारनौं v. a. Frapper, tuer, faire mourir, détruire, lancer.

मारवा adj. Qui tue.

मारुत part. prés. pour मारु Voyez मार्नौं.

मारू s. m. Tambour, timbale.

मार्ग Voyez मारग.

माल s. m. Richesses, biens. — A. مال.

माल s. f. Voyez माला.

माला s. f. Rosaire, guirlande, collier, livre.

मालिन s. f. Jardinière.

मालिनी n. pr. Mâlinî (*rivière*).

माली s. m. Jardinier.

माह् Voyez मांह्.

माहांत adj. Grand.

माहिं Voyez मांह्.

माहि Voyez मांह्.

माहीं Voyez मांह्.

माही Voyez मांह्.

मिंत्र Voyez मित्र.

मिटनौं v. n. Être effacé, aboli, oublié, expirer.

मिटानौं v. a. Effacer, détruire.

मिठबोली adj. Qui a un langage agréable, doux.

मित्र s. m. Ami.

मित्रता s. f. Amitié.

मित्रलाभ s. m. Acquisition d'un ami, Mitralâbha (*titre du premier chapitre de l'Hitopadésa*).

मिथ्या adj. Faux, mensonger.

मिल s. m. Rencontre, réunion.

मिलन s. m. Action de se réunir, réunion.

मिलनौं v. n. Se rassembler, se réunir, se rencontrer, aller à la rencontre de, aller rejoindre, être rencontré, trouver.

मिला s. f. Station?

मिलानौं v. a. Faire rencontrer, réunir, faire assembler, mêler, joindre, attacher, introduire.

मिलावनौं Voyez मिलानौं.

मिश्री s. f. Sucre. — A. مصری.

मिहरी s. f. Femme.

मिहीं adj. Fin. — P. مهين.

मीचु s. f. Mort.

मीठौ adj. Doux, agréable.

मीत s. m. Ami, amant.

मीन s. f. Poisson.

मीर् माधो n. pr. Mîr Mâdho.

मीरशिकार् s. m. Chasseur. — P. میرشکار.

मीलनौं Voyez मिलनौं.

मुंडमाल s. f. Collier de têtes humaines.

मुंडानौं v. a. Raser.

मुकति Voyez मुक्ति.

मुकुट s. m. Diadème, ornement qui sert à parer la tête.

मुकुत s. m. Perle.

मुकुर s. m. Miroir.

मुक्त adj. Délivré, jouissant de la béatitude finale, affranchi des liens de ce monde.

मुक्ति s. f. Salut, délivrance finale.

मुख s. m. Bouche, visage.

मुख्य adj. Principal.

मुगल s. m. Mogol. — P. مغل.

मुढ s. m. Tête. — *Au fig.* Chef.

मुदित part. Réjoui, joyeux.

मुनि s. m. Saint personnage, solitaire, sage.

मुनीश s. m. Chef des mounis ou solitaires.

मुनौं Voyez मूनौं.

मुरझानौं v. n. Languir, dessécher, être abattu.

मुरारी n. pr. Mourârî (*nom de Krichna*).

मुर्छित Voyez मूर्छित.

मुर्ष Voyez मूरख.

मुल Voyez मूल.

मुवनौं v. n. Mourir.

मुष Voyez मुख.

मुषु Voyez मुख.

मुसक्यानि s. f. Sourire.

मुसिक्यानौं v. n. Sourire.

मुह s. m. Visage, bouche. — मुह होनौं Témoigner en justice, être confronté.

मुहर s. f. Pièce d'or. — P. مهر.

मूंछ s. f. Moustache.

मूंड s. m. Tête.

मूंडनौं v. a. Raser.

मूंडानौं v. a. Raser, faire raser.

मूढ adj. Fou, insensé, stupide, ignorant.

मूढ़ Voyez मूढ.

मूत्र s. m. Urine.

मूनौं v. n. Mourir.

मूर Voyez मूल.

मूरख adj. Insensé, ignorant.

मूरछनौं v. n. Être évanoui, être abattu.

मूरति s. f. Image, forme, corps, personne.

मूरष Voyez मूरख.

मूर्ख Voyez मूरख.

मूर्खता s. f. Ignorance, folie.

मूर्छा s. f. Évanouissement, étonnement, stupéfaction.

मूर्छित adj. Défaillant, évanoui.

मूर्द्धा s. m. Tête. — मूर्द्धा घ्रान Baiser donné sur le front.

मूल s. m. Racine, origine, texte (*d'un livre, par opposition au commentaire*).

मृग s. m. Daim.

मृगया s. f. Chasse.

मृत adj. Mort.

मृतक s. m. Corps mort, mort.

मृत्यु s. f. Mort.

मृदु adj. Doux.

में postpos. Dans, parmi, au milieu de, sur. — में से D'entre.

मेंढा s. m. Bélier.

मे postpos. Voyez में.

मे pron. pers. Voyez मैं.

मेखला s. f. Ceinture.

मेघ s. m. Nuage.

मेटनौं v. a. Effacer, détruire.

मेनका n. pr. Ménakâ.

मेरा gén. sing. du pron. de la 1re pers.

मेरु n. pr. Mérou (*montagne*).

मेरें gén. sing. du pron. de la 1re pers.

मेरे gén. sing. du pron. de la 1re pers.

मेरो gén. sing. du pron. de la 1re pers.

मेलनौं v. a. Pousser, lancer.

मेला s. m. Rencontre.

मेवा s. m. Fruit. — P. ميوه.

मेह s. m. Pluie.

मेहा Voyez मेह.

मैं pron. pers. Je, moi.

मैं postpos. Voyez में.

मैंत्रि Voyez मैत्री.

मै pron. pers. Voyez मैं.

मै postpos. Voyez में.

मैउक Voyez मैदुक.

मैदुक s. m. Grenouille.

मैत्रिं Voyez मैत्री.

मैत्रि Voyez मैत्री.

मैत्री s. f. Amitié.

मैथनुक adj. Qui se livre aux opérations charnelles.

मैन s. m. Amour. — n. pr. *Nom du dieu de l'amour.*

मैमंत adj.? Ivre?

मेरे gén. sing. du pron. de la 1re pers.

मैल s. f. Souillure.

मैला adj. Souillé, malpropre.

मों postpos. Dans, parmi, entre.

मो cas obliq. sing. du pron. de la 1re pers.

मोची s. m. Cordonnier.

मोजा s. m. Chaussure. — p. موزه.

मोती s. m. Perle. — सोती मोती आब सी उतरनौं Être confus.

मोद s. m. Joie, plaisir.

मोल s. m. Achat, prix. — मोल लेनौं Acheter.

मोला Voyez मोल.

मोलि Voyez मोल.

मोषा s. m. Salut, délivrance finale, bonheur éternel.

मोह्नि s. f. Charme, fascination.

मोह्र Voyez मुह्र.

मोहिं Voyez मोहि.

मोंहि cas obliq. sing. du pron. de la 1re pers.

मोह्नि Voyez मोहि.

मोह्री Voyez मोहि.

मौंतकेत n. pr. Mauntaket.

मौ cas obliq. sing. du pron. de la 1re pers.

मौन s. m. Silence. — मौन धरनौं Garder le silence.

मौर s. m. Tour, cercle.

मौह्रौर Voyez मुह्र.

म्यंत्र s. m. Ami.

म्यंत्रि s. f. Amitié.

म्रंग Voyez मृग.

म्रग Voyez मृग.

म्रगु Voyez मृग.

म्रति s. f. Mort.

म्रतिग s. m. Corps mort, mort.

म्रिग Voyez मृग.

म्रिगराज s. m. Roi des animaux, lion.

य

यक adj. Un, une. — p. يك.

यकादसि adj. num. Onze.

यक्ष s. m. Yakcha (*demi-dieu*).

यज्ञ s. m. Sacrifice.

यत conj. Puisque, comme, que, parce que.

यती s. m. Sage qui a dompté ses passions, religieux mendiant.

यत्र adv. Où.

यथा adv. Comme, de même que.

यदा adv. Quand.

यदु n. pr. Yadou.

यदुबंसी adj. Qui est de la famille d'Yadou.

यम n. pr. Yama (*roi des enfers*).

यमपुरी s. f. Ville d'Yama ou séjour de la mort.

यमराज Voyez यम.

यश s. m. Gloire, célébrité, réputation.

यसा Voyez ऐसा.

यह् pron. dém. Celui-ci, celle-ci, ceci, ce.

यहां adv. Ici. auprès de. — यहां तक Jusqu'ici.

यहि Voyez यह्.

यही Voyez यह्.

यहु Voyez यह्.

यहे Voyez यह्.

यहै Voyez यह्.

या conj. Ou. — P. يا.

या cas obliq. sing. du pron. dém. यह्.

या pron. Voyez यह्.

यात s. f. Voyez जात.

यातें Voyez याते.

याते loc adverb. Parce que, puisque, c'est pourquoi, à cause de cela.

यादव s. m. Descendant d'Yadou.

याही cas obliq. sing. du pron. dém. यह्.

युद्ध s m. Combat. — युद्ध करनौं Combattre.

युवा adj. Jeune.

युवति Voyez युवती.

युवती s. f. Jeune femme.

युवराज s. m. Prince héritier du trône.

यूथ s. m. Troupe, bande.

येक Voyez यक.

येकादस adj. num. Onze.

येकादसी s. f. Onzième jour de la quinzaine lunaire.

येकै Voyez यक.

येको Voyez यक.

येह् Voyez यह्.

यों adv. Ainsi.

यो adv. Voyez यों.

यो pron. Voyez यह्.

योगेश्वर् n. pr. *Nom de Vichnou.* (*Divinité qui est l'objet de la contemplation religieuse.*)

योग्य adj. Propre à, capable, convenable, digne de.

योनि s. m. Matrice, origine.

यौं Voyez यों.

यौं pron. Voyez यह्.

यौबन s. m. Jeunesse.

यौह् pron. Voyez यह्.

य्या pron. Voyez या.

य्हां Voyez यहां.

र

रंक s. m. Pauvre, gueux.

रंग s. m. Couleur, apparence, manière, espèce, plaisir, amusement. — रंग चढनौं Être enivré. — रंग रंगनौं Être amoureux. — रंग रातनौं Être tourmenté par l'amour.

रंहनौं Voyez रहनौं.

रक्षा s. f. Protection, défense, conservation.

रखनौं v. a. Avoir, conserver, garder, placer, laisser.

रखवार् s. m. Garde, gardien.

रघुनाथ s. m. *Nom de Râma.*

रघुराय s. m. *Nom de Râma.*

रङ्ग Voyez रंग.

रचनौं v. n. Être fait, être créé, se livrer à. — v. a. Faire, préparer.

रछक s. m. Garde, gardien.

रजनी s. f. Nuit.

रजपूत Voyez राजपूत.

रटनौं v. a. Répéter, réitérer.

रण s. m. Combat, bataille.

रतंन Voyez रतन.

रत s. f. Nuit.

रत adj. Appliqué à, attaché à.

रतन s. m. Pierre précieuse.

रतनमंजरी n. pr. Ratnamandjarî.

रति s. f. Amour. — n. pr. Ratî, (*femme du dieu de l'amour.*)

रती s. f. Voyez रत.

रत्न Voyez रतन.

रत्नमंजरी Voyez रतनमंजरी.

रथ s. f. Char, chariot.

रथी s. m. Homme monté sur un chariot, sur un char.

रदछद s. m. Lèvres.

रन Voyez रण.

रबि s. m. Soleil.

रमण adj. Agréable.

रमन Voyez रमण.

रमनौं v. n. Se réjouir, se plaire.

रमनौं v. n. Errer, aller.

रमैनी s. f. Espèce de poésies.

रम्य adj. Agréable.

रव s. f. Cri, bruit.

रषनौं Voyez रखनौं.

रषवार Voyez रखवार.

रषवारा Voyez रखवार.

रषवारी Voyez रखवार.

रषवारो Voyez रखवार.

रषवालौ Voyez रखवार.

रषुवारा Voyez रखवार.

रषुवारी s. f. Gardienne, garde.

रस s. m. Jus, sentiment propre à être développé en poésie, amour, jouissance.

रसक Voyez रसिक.

रसायन s. m. Douceur.

रसायनि Voyez रसायन.

रसिक adj. Spirituel, ingénieux.

रसोई s. f. Vivres, aliments.

रहनौं v. n. Rester, s'arrêter, demeurer, être situé, résider, continuer.

रहस s. m. Solitude.

रहसनौं v. n. Se réjouir.

रहित adj. Privé, qui reste, laissé. — adv. En particulier, en secret, en cachette.

रहिवौ infin. forme infl. empl. subst. Action de rester.

रांड s. f. Veuve, femme.

राई s. m. Prince, chef, roi.

राक्षस s. m. Démon, malin esprit. — *Nom d'un des huit modes de mariage.*

राखनौं v. a. Mettre, placer, déposer, tenir, conserver, garder, protéger, sauver, laisser.

राग s. m. Musique, chant, amour.

रागी s. m. Chanteur, amant. — adj. Qui éprouve de l'affection, passionné.

राज s. m. Royauté, royaume, roi.

राजकन्या s. f. Princesse.

राजकुंमार Voyez राजकुंवर.

राजकुंवर् s. m. Jeune prince, prince royal.

राजकुंवरि Voyez राजकुंवारी.

राजकुंवार् Voyez राजकुंवर्.

राजकुंवारी s. f. Princesse royale.

राजकुंवारू Voyez राजकुंवर्.

राजकुमार् Voyez राजकुंवर्.

राजद्‌वार् Voyez राजद्वार्.

राजद्‌वारा Voyez राजद्वार्.

राजदुवार् Voyez राजद्वार्.

राजदुवारू Voyez राजद्वार्.

राजद्वार् s. m. Porte d'un palais.

राजपुत्र s. m. Fils de roi.

राजपुत्री s. f. Fille de roi.

राजपूत s. m. Descendant d'un roi.

राजब्यौहार् s. m. Usages des rois.

राजभोग s. m. Aliments que l'on place devant une idole, au milieu du jour.

राजमंदिर् s. m. Palais, résidence royale.

राजमह्ल s. m. Palais, résidence royale.

राजसभा s. f. Cour d'un roi.

राजहंस s. m. Cygne.

राजा s. m. Roi.

राज्य s. m. Royaume.

रात s. f. Voyez राति.

राति s. f. Nuit. — आधी राति Milieu de la nuit, minuit.

राती Voyez राति.

रात्रि s. f. Nuit.

राधा n. pr. Râdhâ.

रानी s. f. Reine, princesse.

राम n. pr. Râma (*nom de trois incarnations de Vichnou*).

रामनौं v. n. Errer, aller.

रामा Voyez राम.

रामानंद् n. pr. Râmânand.

रामायण s. f. Râmâyana (*poëme*).

रामु Voyez राम.

रामै Voyez राम.

राय s. m. Roi, prince. (*Ce mot s'emploie aussi comme terme de respect.*)

रार् s. f. Dispute, querelle, contestation.

रावरौ pron. poss. Votre, le vôtre.

राषनौं Voyez राखनौं.

रास s. m. Monceau, amas. — छबि रास Amas de beauté, *c'est-à-dire :* beau.

रासि Voyez रास.

राह् s. f. Route, chemin. — p. راه.

रिझानौं v. a. Faire plaisir, satisfaire.

रितुराज s. m. Printemps.

रिपु s. m. Ennemi.

रिष s. m. Richi, saint personnage.

रिस s. f. Mécontentement, colère.

रिसानौं v. n. Être mécontent, être en colère.

रिसि Voyez रिस.

री Voyez रे.

रीझ s. f. Approbation, satisfaction, contentement.

रीझनौं v. n. Être content, satisfait, charmé.

रीत Voyez रीति.

रीति s. f. Usage, coutume, manière. — *Empl. adverbial.* En guise de.

रीस Voyez रिस.

रुंडमाल s. f. Collier fait avec des cadavres sans tête.

रुंष Voyez रूख.

रुकिमिनि Voyez रुक्मिनी.

रुक्म n. pr. Roukma.

रुक्मिनि Voyez रुक्मिनी.

रुक्मिनी n. pr. Roukminî.

रुख़सत s. f. Congé. — रुख़सत होनौं Se retirer, prendre congé. — A. رخصت.

रुचनौं v. n. Exciter le désir, être agréable, plaire.

रुचि s. f. Avidité, désir.

रुधिर s. m. Sang.

रुप Voyez रूप.

रुपैया s. m. Roupie (*monnaie*).

रुष Voyez रूख.

रूख s. m. Arbre.

रूप s. m. Forme, beauté. — *En comp.* Qui a la forme de, qui est.

रूपमान adj. Beau.

रूपवंत Voyez रूपवत.

रूपवत adj. Beau.

रूपवान Voyez रूपवत.

रूपी en compos. Qui a la forme de, qui est.

रूषं Voyez रूख.

रूष Voyez रूख.

रे interj. O! holà!

रेतभव m. comp. adj. Né de la semence.

रेन s. f. Poussière.

रेन s. f. Voyez रेनि.

रेनि s. f. Nuit.

रेष s. f. Marque, destinée.

रैंन Voyez रैन.

रैंनि Voyez रैन.

रैदास n. pr. Raï-Dâs.

रैन s. f. Nuit.

रोग s. m. Maladie.

रोदन s. m. Action de pleurer, pleurs, larmes.

रोनौं v. n. Se lamenter, pleurer, être chagrin. — धाय मारि रोनौं Crier, pleurer amèrement, sangloter.

रोम s. m. Duvet qui est sur la peau.

रोवन s. m. Lamentation, action de pleurer.

रोवनौं Voyez रोनौं.

रोशनी s. f. Éclat, splendeur. — P. روشنی.

रोस s. m. Colère.

रोसु Voyez रोस.

रोहण s. m. Action de monter, ascension.

रोहन Voyez रोहण.

ल

लंबा adj. Long.

लअल s. m. Rubis. — P. لعل.

लई s. f. Mélodie, chant, affection, désir.

लकरी s. f. Bois, morceau de bois.

लछमी Voyez लक्ष्मी.

लक्ष्मी s. f. Richesse. — n. pr. Lakchmî (*déesse de la fortune*).

लखनौं v. a. Regarder, voir. — v. n. Paraître, être vu.

लग adv. Jusque.

लगनौं Être appliqué, être attaché, être mis, se mettre à, s'appliquer à, être en contact avec, être employé à, atteindre, avoir égard.

लगानौं v. a. Appliquer, attacher, mettre, charger de, exécuter, présenter, offrir.

लघु adj. Léger, faible, petit.

लक्ष adj. num. Cent mille.

लक्षन s. m. Signe, marque.

लक्षमन n. pr. Lakchmana.

लजानौं v. n. Être honteux, rou-

gir, éprouver un sentiment de pudeur.

लज्जा s. f. Honte, pudeur, modestie.

लज्या Voyez लज्जा.

लड़का s. m. Enfant.

लड़काई् s. f. Enfance.

लड़नौं v. n. Combattre, se disputer.

लत s. f. Plante rampante.

लपटानौं v. n. Être attaché, s'attacher.

लपेटनौं v. a. Rouler, tortiller.

लब्ध adj. Acquis, reçu.

लर्नौं Voyez लड़नौं.

ललकार्नौं v. a. Délier, provoquer. — v. n. Crier (en insultant).

ललाम adj. Beau, charmant, agréable.

लषनौं Voyez लखनौं.

लषानौं v. a. Voir, regarder.

लसत adj. Vu.

लसनौं v. n. Briller, être convenable.

लह्गा s. m. Vêtement consistant en une pièce d'étoffe qui s'attache autour des reins et tombe jusqu'aux pieds.

लह्नौं v. a. Trouver, obtenir, recevoir.

लहरि् s. f. Vague, onde.

लाइक़ adj. Qui mérite. — A. لايق.

लाईक Voyez लाइक.

लाईक़ Voyez लाइक़.

लागनौं Voyez लगनौं.

लागी s. f. Coup.

लाज Voyez लज्जा.

लाजनौं Voyez लजानौं.

लाजा Voyez लज्जा.

लाठी s. f. Massue, bâton.

लात s. f. Coup de pied.

लादनौं v. a. Charger.

लानौं v. a. Amener, apporter, appliquer, mettre.

लाभ s. m. Profit, acquisition.

लाल adj. Chéri, bien-aimé.

लावनौं Voyez लानौं.

लाहौर् n. pr. Lahore.

लिखनो s. f. Plume (à écrire).

लिखनौं v. a. Écrire, peindre, décrire.

लिपि s. f. Écrit.

लियें Voyez लिये.

लिये adv. Pour, à cause de.

लियैं Voyez लिये.

लिलार् s. m. Destinée.

लिवानौं v. a. Faire prendre.

लिषनौं Voyez लिखनौं.

लिषिमी Voyez लक्ष्मी.

लीक s. f. Marque d'ignominie, tache.

लीन temps passé. Voyez लैंनौं.

लीनी 3e pers. f. sing. temps pass. Voyez लेनौं.

लीने 3e pers. m. pl. temps passé. Voyez लेनौं.

लीन्ही temps pass. f. Voyez लेनौं.

लीये Voyez लिये.

लीला s. f. Jeu.

लुकनौं v. n. Être caché, être couvert.

लुकानौं v. a. Cacher. — ले लुकानौं Dérober.

लुगाई् Voyez लोग?

लुटानौं v. a. Prodiguer, faire piller, piller.

लुद्ध adj. Libertin, débauché.

लुननौं v. a.? Recueillir?

लुभनौं v. n. Être amoureux, avoir des désirs.

ले आनौं v. a. Amener, ramener, apporter, rapporter.

लेखा s. m. Raison, compte. — इस लेखे Pour cette raison.

ले चलनौं v. a. Conduire, porter.

ले जानौं v. a. Emporter, transporter, conduire.

लेटनौं v. n. Être couché, reposer.

लेन n. verb. Action de prendre.

लेनौं v. a. Prendre, recevoir, accepter, tenir.

लेस s. m. Marque, signe, effet.

लैंनौं Voyez लेनौं.

लैनौं Voyez लेनौं.

लों adv. Jusque, comme.

लोक s. m. Monde, gens, race.

लोका Voyez लोक.

लोग s. m. Gens, monde.

लोगा Voyez लोग.

लोगु Voyez लोग.

लोगू Voyez लोग.

लोटनौं v. n. Rouler, se rouler, plonger.

लोथ s. f. Cadavre.

लोभ s. m. Avarice, avidité, cupidité, désir.

लोभा Voyez लोभ.

लोभी adj. Cupide, avare.

लोयन s. m. Œil.

लोह s. m. Fer.

लोहु Voyez लोहू.

लोहू s. m. Sang.

लों Voyez लौं.

लौंग s. f. Clou de girofle (*Caryophyllus aromaticus*).

लौ s. f. Lumière, flamme.

लोकपाल s. m. Gardien du monde. (*Espèce de divinités au nombre de huit.*)

लोचा s. m. Morceau de viande, de chair.

ल्यानौं Voyez ले आनौं.

ल्याये Voyez लिये.

व

वचन s. m. Parole, discours.

वपु s. m. Corps.

वखनौं v. a. Décrire.

वराह s. m. Sanglier.

वर्णन s. m. Description, éloge.

वर्णाश्रम s. m. Classe et condition d'une personne.

वस s. m. Pouvoir, autorité, commandement.

वस्त s. f. Chose.

वस्त्र s. m. Vêtement.

वह pr. dém. Il, elle, celui-là.

वह adj. Qui apporte, qui donne.

वहनौं v. n. Souffler.

वहां adv. Là.

वहीं adv. Là-même.

वही pr. dém. Lui-même, celui-là même.

वहै Voyez वही.

वां Voyez वा.

वा cas obliq. sing. du pron. dém. वह.

वाक्य s. m. Parole, discours.

वाजंत्र s. m. Instrument de musique.

वानर s. m. Singe.

वाम s. f. Femme.

वायु s. m. Air, vent. — n. pr. Vâyou ou le vent.

वारन s. m. Sacrifices.

वारनौं v. a. Entourer, environner, ceindre.

वारमुखी s. f. Courtisane, prostituée.

वालमीक Voyez वाल्मीक.

वाल्मीक n. pr. Vālmīkī.

वाहि cas obliq. sing. du pron. dém. वह.

वाही Voyez वाहि.

वाहू Voyez वाहि.

विचारनौं v. a. Réfléchir, méditer, penser.

वित्त s. m. Richesse.

विदुर n. pr. Vidoura.

विद्यवान adj. Instruit, savant.

विद्या s. f. Science, connaissance.

विद्याधर s. m. Vidyādhara (*espèce de demi-dieu*).

विद्याधरी s. f. Vidyādharī ou femme de Vidyādhara.

विन cas obliq. pl. du pron. dém. यह.

विनै cas obliq. pl. du pron. यह.

विप्र s. m. Brâhmane.

विफल adj. Inutile, infructueux.

विमुष adj. Qui détourne le visage, qui a de l'aversion, opposé.

विवाह s. m. Mariage.

विश्व s. m. Univers.

विसं cas obliq. sing. du pron. de la 3e pers.

विसे cas obliq. sing. du pron. de la 3e pers.

विहार s. m. Amusement, plaisir.

विहित adj. Établi, prescrit.

वीन Voyez विन.

वुनै cas obliq. sing. du pron. dém. वह.

वृंहित s. m. Cri de l'éléphant.

वृक्ष s. m. Arbre.

वृतान्त s. m. Histoire, récit.

वृथा adv. En vain, inutilement.

वृद्ध adj. Vieux.

वृहस्पति n. pr. Vrihaspati (*régent de la planète Jupiter*).

वें nom. pl. du pron. de la 3e pers.

वेई Voyez वे.

वेदज्ञ s. m. Brâhmane versé dans la connaissance des Vêdas.

वेस s. m. Habillement, ornement, parure.

वैं postpos. pour तें.

वैंहि Voyez वाहि.

वै Voyez वे.

वैसा adj. Tel.

वैसे adv. Ainsi, de même.

वैसै Voyez वैसे.

वैसौ Voyez वैसा.

वोढनौं v. a. Porter.

वौ Voyez वा.

व्याघ्र s. m. Tigre.

व्याधि s. f. Maladie, peine.

व्यापनौं v. a. Faire, occuper.

व्यास n. pr. Vyāsa.

व्याह् s. m. Mariage.

व्यौवहार s. m. Habitude, usage, conduite.

व्रत s. m. Vœu.

व्रिध adj. Vieux.

व्हां Voyez वहां.

व्है part. pour ह्वै. Voyez होनौं.

श

शंख s. m. Conque.

शकुन s. m. Oiseau, espèce d'oiseau (*vautour indien*).

शकुन्त Voyez शकुन.

शकुन्तला n. pr. Sakountalā.

शकुन्तलाभव m. comp. adj. Né de Sakountalā.

शक्र n. pr. *Nom d'Indra.*

शङ्का s. f. Crainte, appréhension, doute, soupçon.

शत adj. num. Cent.

शतधा adv. De cent côtés, cent fois.

शत्रु s. m. Ennemi.

शब्द s. m. Bruit, son.

शर s. m. Flèche.

शरण s. f. Asile, protection.

शरीर s. m. Corps.

शलिल s. m. Eau.

शशि s. m. Lune.

शस्त्र s. m. Arme.

शह्र s. m. Ville. — P. شهر.

शांत adj. Apaisé, calme, tranquille.

शाल s. m. Chacal.

शासन s. m. Ordre, commandement, gouvernement.

शास्त्र s. m. Science, livre. — काव्य शास्त्र ouvrage de poésie, poëme.

शिखि s. f. Montagne.

शिर s. m. Tête. — शिर मौर Qui

porte une mèche de cheveux sur le haut de la tête? (*Épith. des Sivaïtes.*)

शिष्य s. m. Disciple.

शीख s. f. Avertissement, leçon, étude.

शीतल adj. Froid, frais.

शीस s. m. Tête.

शुक्ल adj. Blanc.

शुचि adj. Pur.

शुद्ध adj. Pur.

शुभ adj. Favorable, heureux.

शुभग adj. Heureux, fortuné.

शुभाशुभ m. comp. adj. Bon et mauvais, le bien et le mal.

शूद्र s. m. Homme de la quatrième caste.

शूद्रक n. pr. Soûdraka.

शून्य adj. Vide, désert.

शेश n. pr. Sécha (*roi des serpents*).

शेशनाग Voyez शेश.

शैल s. m. Montagne.

शोक s. m. Chagrin, affliction.

शोभन adj. Beau, éclatant.

शोभा s. f. Beauté, éclat, gloire, illustration, ornement, décoration.

शोह्नो v. n. Être beau, briller.

शौ adj. num. Cent.

श्रद्धा s. f. Foi, confiance.

श्रवन s. m. Oreille.

श्राप s. m. Imprécation, malédiction.

श्री s. f. Prospérité. — *Nom de la déesse Lakchmî.* — (*Ce mot s'ajoute aussi comme titre d'honneur aux noms propres.*)

श्रीयुत adj. Riche, fortuné.

श्रुति s. f. Audition.

श्रेष्ठ adj. superl. Excellent, le meilleur.

श्रोणत n. pr. Sronat.

श्रोणतपुर n. pr. Sronatpour.

श्लोक s. m. Sloka, stance, vers.

ष

षट adj. num. Six. — षट कर्मा Les six actes que doit accomplir un brâhmane.

षडग s. m. f. Épée.

षबरि s. f. Nouvelle. — A. خبر.

षरा adj. Qui se tient debout, escarpé.

षरो Voyez षरा.

षांडा s. m. Sucre (brut).

षांणहारा s. m. Mangeur, qui dévore.

षांत Voyez षात.

षांनहारो Voyez षांणहारा.

षांनौं Voyez षानौं.

षाई s. f. Fossé.

षाडा adj. Âpre (au goût), amer.

षात s. m. Trou, creux.

षानौं v. a. Manger. — *Au figuré:* Prendre, recevoir, éprouver.

षावनौं Voyez षानौं.

षिभनौं Voyez षीजनौं.

षिन s. m. Moment. — *Répété:* Tantôt . . . . . tantôt.

षिन adj. Malheureux, malade, qui souffre.

षिसानौं v. n. Se retirer.

षिसानौ adj. Honteux, chagrin.

षीजनौं v. n. Être fâché, tourmenté.

षुर s. m. Sabot, corne (*d'un animal qui a le pied fourchu*).

षुरषेल s. f.? Espèce de projectile?

षेत s. m. Champ, champ de bataille.

षेलनौं v. a. Jouer, folâtrer.

षैचनौं v. a. Arracher, tirer.

षैल Voyez षैला.

षैला s. m. Jeune bœuf.

षोज s. m. Recherche.

षोजनौं v. a. Chercher.

षोट s. f. Défaut.

षोटर s. m. Creux (d'arbre), trou.

षोटरा Voyez षोटर.

षोडर s. m. Creux (d'arbre).

षोडरा Voyez षोडर.

षोनौं v. a. Perdre, gâter, gaspiller.

षोलनौं v. a. Ouvrir, déployer, révéler, montrer.

षौजनौं Voyez षोजनौं.

ष्यात adj. Célèbre, fameux.

ष्यानौं v. a. Faire manger.

ष्याल s. m. Badinage.

स

संक s. f. Crainte, inquiétude, doute, soupçon.

संकट s. m. Peine, infortune.

संकनौं Voyez सकनौं.

संकर् n. pr. *Nom de Siva.*

संकल्प s. m. Projet, dessein, vœu, aumône faite par suite d'un vœu.

संका Voyez संक.

संकेत s. m. Arrangement, engagement.

संकौ Voyez संक.

संखोदक s. m. Eau conservée dans une coquille pour être offerte en sacrifice.

संग s. m. Union, société, compagnie, troupe, caravane. — adv. Avec. — संग लेनौं Prendre avec soi, emmener.

संगति s. f. Union, réunion, société.

संगम s. m. Union.

संगि Voyez संग.

संगी s. m. Compagnon.

संगु Voyez संग.

संग्रह् s. m. Action d'amasser, action de prendre.

संग्रहु Voyez संग्रह्.

संग्राम s. m. Combat.

संचनौं v. a. Amasser, accumuler.

संचरनौं v. n. Entrer, pénétrer.

संचार् s. m. Entrée, accès.

संचारनौं v. a. Faire entrer.

संचारा Voyez संचार्.

संचारि Voyez संचार्.

संजूता adj. Doué de, qui possède.

संजोग s. m. Union, chance.

संत s. m. Dévot, saint. — adj. Pieux.

संतत s. m. Progéniture, famille.

संतति s. f. Race, progéniture.

संताप s. m. Chagrin, affliction, misère.

संतावनौं Voyez सतानौं.

संतुष्ट adj. Satisfait, content.

संतोष s. m. Contentement, satisfaction.

संतोषा Voyez संतोष.

संदेस s. m. Message.

संदेह s. m. Doute, hésitation, soupçon.

संधि s. f. Union, réunion, état d'une chose qui est jointe à une autre.

संधी s. f.? Voyez संधि.

संध्या s. f. Crépuscule, abstraction religieuse, méditation.

संन्यासि Voyez संन्यासी.

संन्यासी s. m. Religieux mendiant.

संपति s. f. Fortune, richesses, prospérité.

संपदा s. f. Fortune, prospérité.

संबंधी s. m. Parent.

संभव s. m. Origine, naissance, production.

संभार s. m. Soutien.

संभारनौं Voyez संभालनौं.

संभालनौं v. a. Supporter, soutenir, saisir, lever, brandir.

संयोग Voyez संजोग.

संवारनौं v. a. Préparer, arranger, se parer, faire réussir.

संसार s. m. Monde.

संसारा Voyez संसार.

संसारु Voyez संसार.

सकति Voyez सक्ति.

सकनौं v. n. Pouvoir, être possible.

सकल adj. Tout, entier.

सकानन adj. Couvert de forêts, avec des forêts.

सकान्ति adj. Beau, éclatant.

सकाम adj. Amoureux.

सकुचनौं v. n. Être effrayé, appréhender, craindre.

सकेलनौं v. a. Ramasser.

सक्ति s. f. Pouvoir, puissance, énergie, énergie d'un dieu personnifiée sous le nom de la déesse sa femme.

सक्रुद्ध adj. Irrité, colère, cruel, farouche.

सक्रोध Voyez सक्रुद्ध.

सखा s. m. Ami.

सगा s. m. Parent, allié.

सगाई s. f. Parenté.

सघन adj. Épais.

सङ्कर s. m. Mélange.

सङ्ग s. m. Voyez संग.

सचाई s. f. Véracité, vérité, honnêteté.

सचिव s. m. Compagnon, ministre (*d'un prince*).

सचैंन m. comp. Avec tranquillité.

सच्च adj. Vrai, sincère.

सजन s. m. f. Personne respectable.

सजनौं v. n. Être préparé, être prêt.

सजल adj. Plein d'eau.

सज्जन adj. Vertueux, honnête, respectable.

सज्ञान adj. Sage, intelligent, qui a du discernement.

सज्ञानी Voyez सज्ञान.

सठ adj. Fourbe, rusé.

सत s. m. Vertu, vérité, Satyayouga ou le premier des quatre âges du monde.

सत adj. Vrai, vertueux, bon, honnête.

सतकर्म s. m. Œuvre pieuse.

सतसंग s. m. Bonne société, fréquentation des gens de bien.

सतानौं v. a. Tourmenter, troubler, affliger.

सती s. f. Femme qui se brûle sur le bûcher de son mari. — adj. f. Vertueuse.

सती adj. m. Voyez सत.

सत्त s. m. Vertu.

सत्ति adj. Vrai, vertueux.

सत्य s. m. Voyez सत.

सत्य adj. Voyez सत.

सत्यबक्ता adj. Véridique.

सत्यबादी adj. Véridique.

सत्यावती n. pr. Satyâvatî.

सत्रह adj. num. Dix-sept.

सत्रु s. m. Ennemi.

सदा adv. Toujours.

सदाई Voyez सदा.

सदृश adj. Pareil, semblable.

सधान्ना adj.? Discipliné?

सन part. forme sanscrite. Étant.

सनमान s. m. Respect, égard.

सनमाना Voyez सनमान.

सनमुख Voyez सन्मुख.

सनमुष Voyez सन्मुख.

सनांन Voyez स्नान.

सनाथ adj. Qui a un maître, un protecteur.

सनान Voyez स्नान.

सनेह s. m. Amour, affection, attachement.

सनोह् Voyez सनेह्री.

सनेह्री s. m. Ami, amant.

सन्ध्या s. f. Devoirs religieux que doivent remplir les hommes des trois premières classes, le matin, le soir et même à midi.

सन्मुख adv. En face, auprès, à l'opposé.

सपत s. f. Serment.

सपना Voyez स्वप्न.

सपल्लव adj. Plein de rejetons, de bourgeons.

सपुष्टेह्री adj. Qui a le corps gros et gras.

सब adj. Tout. — सब कुछ Tout, quoi que ce soit. — सब कोई Chacun.

सबद Voyez सब्द.

सबदी s. f. Espèce de poésies.

सबाह्न m. comp. Avec les chars.

सबिधि loc. adverb. Suivant la règle, la loi, convenablement.

सबुधि n. pr. Saboudhi.

सबे pour सब ह्री Voyez सब.

सबोध s. m. Perte, destruction.

सब्द s. m. Bruit, cri, parole.

सभ Voyez सब.

सभा s. f. Assemblée, cour.

सभासद s. m. Celui qui assiste à une assemblée.

सम adj. Semblable, égal, entier. — *Empl. adverbial.* De même, également.

समजानौं Voyez समभानौं.

समभ s. f. Connaissance.

समभनौं v. a. Comprendre, connaître, penser, considérer, croire, supposer.

समभांनौं Voyez समभानौं.

समभानौं v. a. Faire comprendre, faire connaître, expliquer, conseiller, faire entendre, admonester.

समय s. m. Temps, fois, circonstance, moment favorable.

समये Voyez समय.

समरथ Voyez समर्थ.

समरथ्य Voyez समर्थ.

समर्थ adj. Capable, puissant. — s. m. Force, puissance.

समसत Voyez समस्त.

समस्त adj. Tout, entier.

समांचार Voyez समाचार.

समा s. m. Espèce de démon.

समा s. m. Harmonie.

समाचार s. m. Nouvelle, annonce, histoire.

समाज s. m. Attirail, société, multitude. — समाज करनौं Réunir.

समाधान s. m. Consolation, satisfaction.

समान adj. Semblable, bon, équitable.

समाना Voyez समान.

समानौं v. n. Entrer dans, être englouti, être contenu dans.

समाप्त adj. Fini, terminé.

समीप adv. Auprès, proche.

समीपस्थ adj. Proche.

समुभानौं Voyez समभानौं.

समुभानौं Voyez समभानौं.

समुद Voyez समुद्र.

समुदाय adj. Rassemblé, réuni. — s. m. Multitude, collection (d'individus).

समुद्र s. m. Mer, Océan.

समूह s. m. Quantité, multitude, foule.

समृद्ध adj. Enrichi, augmenté.

समें Voyez समय.

समेटनौं v. a. Rassembler, amasser, ramasser.

समेत adv. Ensemble, avec.

समैं Voyez समय.

समै Voyez समय.

समो s. m. Observance d'une obligation religieuse.

समोय s. m. Serment.

सम्भव Voyez संभव.

सयान adj. Adroit, prudent.

सय्या s. f. Lit, couche.

सर s. m. Tête, chef. — P. سر.

सर s. m. Flèche.

सर s. m. Lac, étang.

सरग Voyez सर्ग.

सरन s. f. Refuge, protection.

सरनजाम s. m. Appareil, attirail, pompe. — P. سرانجام.

सरनौं v. n. Être accompli, fait, terminé.

सरप Voyez सर्प.

सरवथा Voyez सर्वथा.

सरवर s. m. Voyez सरोवर.

सरवर adj. Égal.

सरस adj. Excellent, parfait, plus grand, abondant. — *Employé adverbial.* Plus.

सरसाई s. f. Abondance, excellence, agrandissement.

सरसानौं s. m.? Abondance? — adj.? Abondant? excellent?

सरह्द s. f. Frontière, limite. — P. A. سرحد.

सरणागत adj. Réfugié, qui demande protection.

सराप् s. m. Imprécation, malédiction.

सरासन s. m. Action de lancer des flèches.

सरिता s. f. Rivière.

सरीर् s. m. Corps.

सरीरा Voyez सरीर्.

सरूप s. m. Forme, apparence. — adj. Semblable.

सरोरुह् s. m. Lotus.

सरोवर् s. m. Lac, étang.

सर्ग s. m. Chapitre, division.

सर्गलोक s. m. Ciel.

सर्प s. m. Serpent.

सर्ब adj. Tout.

सर्बज्ञ adj. Infiniment sage, connaissant tout.

सर्बदमन m. comp. Qui dompte tout. — *Nom de Bharata.*

सर्ब्ब Voyez सर्ब.

सर्व Voyez सर्ब.

सर्वथा adv. Absolument, tout à fait, entièrement.

सर्षप s. m. Graine de moutarde. — सर्षप मात्र Qui n'est pas plus gros qu'une graine de moutarde.

सलाम s. m. Salutation (*suivant l'usage musulman*). — A. سلام.

सलिल s. m. Eau.

सवार् adj. Monté (*sur un cheval, etc.*), ivre. — सवार् होनौं Être monté sur, être transporté par. — P. سوار.

सश्य s. m. Fruits (de la terre), grain.

सषाई s. f. Amitié.

सषी s. f. Amie, compagne.

ससा s. m. Lièvre.

ससि s. m. Lune.

ससुर् s. m. Beau-père.

ससुरा Voyez ससुर्.

सह् conj. Avec.

सह्ज adj. Facile, naturel. — सह्ज सुभाव ही Avec une aisance naturelle, avec facilité.

सहनौं v. a. Supporter, endurer.

सहबास s. m. Habitation commune, séjour commun.

सहस s. m. Force, violence.

सहस adj. num. Voyez सहस्र.

सहस्र adj. num. Mille.

सहाइ s. m. Voyez सहाय.

सहाई s. f. Assistance, protection.

सहाय s. m. Celui qui aide, compagnon.

सहित prép. Avec.

सहितु Voyez सहित.

सहिष्णु adj. Patient, qui souffre, qui supporte.

सही particul. emph. Très-bien! bien! oui certes.

सहेली s. f. Servante, femme attachée au service d'une autre.

सांकली s. f. Chaîne.

सांग s. f. Lance, javeline.

सांच adj. Véritable, vrai, véridique, réel.

सांची Voyez सांच.

सांचौ Voyez सांच.

सांझ s. f. Soir.

सांति s. f. Calme, tranquillité.

सांधनौं Voyez साधनौं.

सांप s. m. Serpent.

सांपु Voyez सांप.

सांस s. f. Soupir. — सांसें लेनौं Pousser des soupirs.

सा adj. Ressemblant à. — *Espèce d'explétif qui sert a donner plus de force au sens du mot qui le précède.* — कौन सा Quel? *mot à mot :* comme quel? — बहुत सा Beaucoup.

साकट s. m. Char. — साकट लोग Charretiers.

साक्षी s. m. Témoin.

साखि s. m. Garant, répondant.

साखी s. m. Arbre.

साखी s. f. Espèce de poésies.

साग s. m. Herbe, végétaux.

सागर् s. m. Mer, Océan.

साच Voyez सांच.

साचा Voyez सांच.

साचो Voyez सांच.

साचौ Voyez सांच.

साजनौं v. a. Préparer.

सात adj. num. Sept.

साथ s. m. Compagnie. — adv. Avec, en même temps. — साथ लेनौं Emmener avec soi.

साथि Voyez साथ.

साथिनि s. f. Compagne.

साथी s. m. Compagnon.

साथी s. f. Voyez साथ.

साध adj. Bon, vertueux, parfait, pieux, dévot. — s. m. Saint personnage, marchand.

साधन s. m. Accomplissement, pratique.

साधनौं v. a. Accomplir, établir, arranger.

साधु Voyez साध.

साधुता s. f. Vertu, sainteté.

साधू Voyez साध.

सापनी s. f. Femelle du serpent.

सापु Voyez सांप.

साम्हे adv. En face, à la rencontre de, au-devant de.

सामा s. f. Préparatifs, collection des objets nécessaires pour une cérémonie.

सामान s. m. f. Appareil, pompe, rang, opulence. — P. سامان.

सारंग adj. Varié, bigarré.

सार् s. f. Essence, mérite, valeur. — adj. Bon, excellent.

सारथी s. m. Cocher.

सारदा n. pr. Sâradâ (*nom de Saraswatî*).

सारनौं v. a. Faire, construire.

सारा s. f. Voyez सार्.

साल् s. m. Épine, fléau, calamité.

सालग्राम s. m. Pierre que les Indiens adorent comme étant la forme de Vichnou.

सालङ्कार adj. Revêtu d'ornements, avec une parure.

साला s. m. Beau-frère.

सालिह् बेग n. pr. Sâlih-Beg.

सावका s. m. Enfant, petit d'un animal.

सावधान adj. Attentif.

सावरौ adj. Brun, qui a le teint noir.

साषनौं v. a. Témoigner, prouver.

साषि s. f. Témoignage, preuve, confiance.

साषी s. m. Témoin.

साष्टांग s. m. Espèce de salutation qui consiste à se prosterner et à toucher la terre avec huit parties du corps.

सास s. f. Belle-mère.

सास s. f. Voyez सांस.

सास्त्र s. m. Livre.

साह्र s. m. Marchand, banquier.

साह्रस s. m. Violence, courage, résolution.

साह्रिब s. m. Maître, compagnon. — A. صاحب.

साहु Voyez साह्र.

साहू Voyez साह्र.

सिंगार् s. m. Ornement, toilette, amour.

सिंघ Voyez सिंह्र.

सिंघलद्वीप n. pr. Singhaladîp (l'île de Ceylan).

सिंघु Voyez सिंह्र.

सिंधु s. m. Mer, Océan.

सिंह्र s. m. Lion.

सिंह्रि Voyez सिंह्र.

सिकंदर् n. pr. Sikandar.

सिगरा adj. Tout, entier.

सिगरो Voyez सिगरा.

सिथिल adj. Lâché, relâché, faible, mou.

सिद्ध s. m. Saint, nom d'une classe de demi-dieux. — adj. Vertueux, accompli, achevé. — सिद्ध ह्रोनौं Réussir, avoir une heureuse issue.

सिद्धान्त s. m. Conséquence, vérité démontrée.

सिधांत Voyez सिद्धान्त.

सिधि s. f. Succès, accomplissement, perfection.

सिन्धु Voyez सिंधु.

सिबिका s. f. Palanquin.

सियाह्रगोश s. m. Lynx de Perse (*Felis caracal*). — P. سیاه گوش.

सिर् s. m. Tête. — सिर् मौर् Voyez शिर्.

सिरजनौं v. a. Créer, produire.

सिरानौं v. n. Se refroidir, se rafraîchir. — v. a. Rafraîchir, inonder.

सिल Voyez सील.

सिव n. pr. Siva.

सिवा prép. Outre, excepté. — A. سوا.

सिवाय prép. Outre, excepté, si ce n'est que, seulement. — A. P. سوای.

सिष s. m. Disciple.

सिष s. f. Avertissement, remontrance.

सिष्टाचार् s. m. Politesse.

सिष्य s. m. Disciple.

सिसुपाल n. pr. Sisoupâla.

सीं adj. f. pl. Voyez सा.

सी adj. f. sing. Voyez सा.

सीक्षा s. f. Instruction, enseignement, avertissement.

सीख s. f. Connaissance, étude, avertissement, leçon.

सीखनौं v. a. Apprendre, acquérir, gagner.

सीत s. m. Un grain de riz bouilli, offrande de riz aux divinités inférieures.

सीत n. pr. Voyez सीता.

सीतल adj. Froid.

सीता n. pr. Sîtà.

सीधो s. m. Provisions, vivres.

सीधौ Voyez सीधो.

सीप s. f. Coquille.

सील s. m. Qualité, disposition naturelle, moralité.

सीलु Voyez सील.

सीव s. f. Extrémité, limite.

सीषनौं Voyez सीखनौं.

सीस s. m. Tête.

सुं pron. dém. Voyez सो.

सुंजुगता adj. Très-adroit.

सुंदर adj. Beau.

सुंदरता s. f. Beauté.

सुंदरि Voyez सुंदरी.

सुंदरी adj. f. Belle (*femme*).

सुंष Voyez सुख.

सु pron. dém. Voyez सो.

सु conj. Voyez सो.

सु postpos. Voyez सों.

सु particul. explét.

सुअक्षर adj. Bien écrit.

सुआ s. m. Perroquet.

सुकुमार adj. Très-jeune, délicat.

सुकुमारि adj. f. Très-jeune, délicate.

सुकुवार Voyez सुकुमार.

सुख s. m. Bonheur, plaisir, satisfaction, repos.

सुखद adj. Agréable, qui donne de la joie, du bonheur.

सुखदान s. m. Action de donner du contentement, don de bonheur, de plaisir.

सुखदाय adj. Qui cause du plaisir, du bonheur, agréable.

सुखदायक adj. Qui donne le bonheur, agréable.

सुखधाम s. m. Asile de bonheur.

सुखी adj. Heureux, content.

सुगम adj. Praticable, accessible.

सुजन adj. Bon, vertueux.

सुजश s. m. Gloire éclatante.

सुजान adj. Sage, intelligent.

सुजाना Voyez सुजान.

सुजानि Voyez सुजान.

सुठार् *Allitération employée pour la rime.*

सुण्ड s. f. Trompe d'éléphant.

सुत s. m. Fils.

सुतनौं v. n. Dormir, coucher.

सुता s. f. Fille.

सुत्र s. m. Chaîne.

सुत्र *Allitération employée pour la rime.*

सुदरसन n. pr. Soudarsana.

सुद्धीनी adj. Qui a grand besoin.

सुदृढ adj. Très-fort, très-puissant.

सुद्ध adj. Pur, légitime, vertueux.

सुद्र Voyez सूद्र.

सुद्रा Voyez सूद्र.

सुध s. f. Mémoire, sensation, connaissance, avis, nouvelle. — सुध पानौं Être informé, apprendre.

सुध adj. Voyez सुद्ध.

सुधर्म्म adj. Vertueux, juste.

सुधा s. m. Nectar.

सुधारनौं v. a. Arranger, ajuster, décorer, embellir.

सुधि s. f. Connaissance, nouvelle. सुधि लेनौं Prendre connaissance, s'enquérir.

सुधौ adj. Voyez सुद्ध.

सुध्यार्थ mot comp. s. m. Moyen de légitimer.

सुन adj. Vide, sans consistance.

सुननौं v. a. Écouter, entendre, apprendre.

सुनांन्हि adj. pl. Voyez सुन.

सुनानौं v. a. Faire entendre, informer, raconter, dire.

सुन्दरि adj. f. Voyez सुंदरी.

सुन्दरी s. f. Beauté. — adj. f. Belle (*femme*).

सुपन Voyez स्वप्न.

सुपना Voyez स्वप्न.

सुपनौं Voyez स्वप्न.

सुपवित्र adj. Pur.

सुपर्ण n. pr. *Nom de Garouda.*

सुपारी s. f. Noix de bétel (*Areca catechu*).

सुप्त adj. Endormi.

सुप्रशन्न adj. Très-satisfait, très-content.

सुफल adj. Utile, profitable, qui porte fruit.

सुबरन s. m. Or.

सुबास s. f. Parfum.

सुबेश adj. Orné, beau.

सुभग adj. Fortuné, heureux.

सुभट s. m. Guerrier.

सुभला adj. Bon, excellent.

सुभाय Voyez सुभाव.

सुभाव s. m. Nature, qualité naturelle, propriété.

सुमति adj. Sage.

सुमन s. m. Fleur.

सुमनस s. m. Fleur.

सुमिरन s. m. f. Action de répéter, de célébrer.

सुमिरनौं v. a. Se souvenir de, mentionner, célébrer.

सुर s. m. Dieu, divinité.

सुर s. m. Chant, mélodie, son de voix, accent.

सुरति s. f. Souvenir, connaissance, attention.

सुरत्राण s. m. Protection des dieux (*épith. d'Indra*).

सुरनाथ s. m. Maître des dieux (*épith. d'Indra*).

सुरपति s. m. Maître des dieux (*épith. d'Indra*).

सुरेश s. m. Maître des dieux.

सुर्जा s. m. Soleil. — n. pr. Sourya ou le Soleil.

सुष Voyez सुख.

सुषदाई Voyez सुखदाय.

सुषमा s. f. Beauté.

सुषी Voyez सुखी.

सुसंग s. m. Bonne société, fréquentation des gens de bien.

सुसा Voyez ससा.

सुहरित adj. Bien verdoyant.

सुहाई adj. Agréable, charmant.

सुहागवती adj. f. Femme chérie de son mari, favorite.

सुहानौं v. n. Être agréable, plaire, convenir.

सुहावति adj. Agréable.

सूंड s. f. Trompe d'éléphant.

सूका Voyez सूखा.

सूखा adj. Sec, desséché.

सूझ s. f. Vue.

सूझनौं v. n. Paraître, être vu, être visible.

सूद्र s. m. Soûdra, ou homme de la quatrième caste.

सून्तो adj. Vide.

सून्नौं Voyez सोन्नौं.

सूर् s. m. Héros, brave.

सूर् s. m. Soleil.

सूरज Voyez सूर्य्य.

सूरज सेन Voyez सूरज सैन.

सूरज सैन n. pr. Soûrya-Séna.

सूरता s. f. Valeur, héroïsme.

सूरसेन n. pr. Soûraséna.

सूर्य्य s. m. Soleil.

सूष Voyez सुख.

सृष्टि s. f. Création, nature.

से cas obliq. de l'adj. सा.

से postpos. Avec, à partir de, par.

सेज s. f. Lit, couche.

सेठ s. m. Banquier.

सेत Voyez स्वेत.

सेना s. f. Armée.

सेर् s. m. *Nom d'un poids.*

सेर् adj. Rassasié, dégoûté. — P. سیر.

सेव Voyez सेवा.

सेवक s. m. Serviteur, adorateur.

सेवकू Voyez सेवक.

सेवग Voyez सेवक.

सेवनौं v. a. Servir, adorer.

सेवां Voyez सेवा.

सेवा s. f. Service, adoration, culte, respect.

सेषसाई n. pr. *Nom de Vichnou.*

सेस s. m. Reste. — n. pr. Sécha (*roi des serpents*).

सें postpos. Voyez से.

सैंन s. f. Voyez सैन.

सैंन s. f. Voyez सेना.

सै adj. num. Cent.

सैन s. m. Sommeil.

सैन s. f. Clin d'œil, signe, signal. — सैन करनौं Faire signe.

सैन s. f. Voyez सेना.

सैन सूरजि Voyez सूरज सैन.

सैनापती s. m. Général.

सैन्या s. f. Armée.

सों postpos. Voyez से.

सोंहीं adv. En face, devant, à l'opposé.

सो pron. pers. et dém. Il, elle, celui-là, celle-là, cela.—*Empl. adverbial.* Ainsi.

सो postpos. Voyez से.

सोइ् pour सो हि Voyez सो.

सोई् pour सो ही Voyez सो.

सोउ pour सो हू Voyez सो.

सोक s. m. Douleur, chagrin, affliction, regret.

सोकु Voyez सोक.

सोग s. m. Peine, chagrin, douleur. — P. سوگ.

सोगा Voyez सोग.

सोच s. m. Réflexion, embarras, souci, chagrin. — सोच करनौं Réfléchir.

सोचनौं v. n. Réfléchir, penser, méditer.

सोत s. m. f. Courant, ruisseau.

सोती *Allitération employée pour la rime.*

सोना s. m. Or.

सोनौं v. n. Dormir.

सोबर्णदान s. m. Présent consistant en or.

सोभा s. f. Éclat, beauté, splendeur, ornement.

सोम s. m. Soma, sorte de breuvage merveilleux.

सोय pour सो हि Voyez सो.

सोय adj. num. Cent.

सोर् s. m. Cri, bruit. — P. شور.

सोरठ n. pr. Sorath.

सोरठा s. m. Sorte de mètre hindoui.

सोव pour सो हू Voyez सो.

सोवनौं Voyez सोनौं.

सोह्नौं v. n. Être convenable, aller bien, faire bon effet.

सोह्लागू s. m. Bonheur, prospérité, félicité.

सौं postpos. Voyez सैं.

सौंउ pour सो हू Voyez सो.

सौंज s. f. Riz cuit?

सौंधा adj. Odoriférant, de bonne odeur.

सौंपनौं v. a. Donner, confier, remettre, déposer.

सौंय postpos. pour सौं हि Voyez सैं.

सौंह s. f. Serment.

सौ pron. Voyez सो.

सौ adj. num. Cent.

सौ adj. Voyez सा.

सौच s. m. Ablution.

सौना s. m. Voyez सोना.

सौनौं adj. num. Cent.

सौम्य adj. Beau, calme, doux.

सौरभ s. m. Parfum, bonne odeur.

स्तन s. m. Sein (*d'une femme*).

स्तुति s. f. Éloge, louange.

स्त्री s. f. Femme.

स्थान s. m. Demeure, endroit, appartement.

स्नान s. m. Action de se baigner, bain, ablution.

स्नानु Voyez स्नान.

स्नेह् s. m. Amitié, affection.

स्पर्श s. m. Toucher, contact, attouchement.

स्मस्त Voyez समस्त.

स्यंघ Voyez सिंह्.

स्यंघु Voyez सिंह्.

स्यंघू Voyez सिंह्.

स्यन्दन s. m. Chariot de guerre, char.

स्याम adj. Noir. — n. pr. *Nom de Krichna.*

स्यारु Voyez स्याल.

स्याल s. m. Chacal.

स्यालु Voyez स्याल.

स्वकर् mot comp. De ses propres mains.

स्वक्ष adj. Qui a de beaux yeux.

स्वधर्म s. m. Devoir particulier, occupation, emploi.

स्वधर्मरत adj. Fidèle à son devoir.

स्वपिता s. m. Propre père.

स्वप्न s. m. Songe.

स्वयं adv. Spontanément, de soi-même.

स्वरूप s. m. Forme naturelle, forme, figure.

स्वर्ग s. m. Ciel, paradis d'Indra.

स्वर्णलेखा n. pr. Swarnalékhâ.

स्वसदृश adj. Semblable à soi.

स्वांमी Voyez स्वामी.

स्वाद् s. m. Saveur, plaisir.

स्वान s. m. Chien.

स्वामी s. m. Maître, seigneur, époux.

स्वार्थ s. m. Intérêt personnel, égoïsme.

स्वास s. m. Soupir, souffle.

स्वेत adj. Blanc, pâle.

हं

हंकारनौं v. a. Appeler, défier.

हंम Voyez हम.

हंस s. m. Cygne, oie.

हंसनौं v. n. Rire, sourire, se moquer.

हज़रत s. f. Majesté (*titre d'honneur*). — A. حضرت.

हजार Voyez हज़ार.

हज़ार adj. num. Mille. — P. هزار.

हठ s. f. Obstination, entêtement.

हडी s. f. Boîte, étui.

हतनौं v. a. Tuer.

हत्या s. f. Meurtre.

हत्यार Voyez हत्यारो.

हत्यारो s. m. Meurtrier.

हत्यारौ Voyez हत्यारो.

हत्यार्यौ Voyez हत्यारो.

हथियार s. m. f. Attirail, appareil (de guerre), armes.

हथियारा Voyez हथियार.

हनन s. m. Action de tuer, de détruire, meurtre.

हननौं v. a. Tuer, détruire.

हनुमान n. pr. Hanoumân.

हनूमान Voyez हनुमान.

हम nom. pl. du pron. de la 1re pers.

हमारो gén. pl. du pron. de la 1re pers.

हमैं cas obliq. pl. du pron. de la 1re pers.

हमै cas obliq. pl. du pron. de la 1re pers. Voyez हमैं. — *Nom. pl.* pour हम हि.

हय s. m. Cheval.

हर n. pr. Har (*nom de Siva*).

हर adj. Chaque, chacun. — P. هر.

हरन s. m. Enlèvement, action de prendre.

हरन s. m. Daim.

हरना Voyez हरन.

हरनौं v. a. Enlever, saisir, faire disparaître.

हरवै Voyez हलवै.

हरष Voyez हर्ष.

हरषनौं v. n. Se réjouir, être satisfait.

हरा adj. Vert.

हरा part. Fatigué.

हरि n. pr. Hari (*nom de Vichnou*).

हरिवो infin. forme infl. empl. subst. Enlèvement,

हर्ना s. m. Pommeau (de selle).

हर्ष s. m. Joie. — हर्ष करनौं Se réjouir.

हर्षित adj. Joyeux.

हलवे adv. Lentement, doucement.

हसनौं Voyez हंसनौं.

हसाई s. f. Moquerie.

हस्ती s. m. Éléphant.

हांकनौं v. a. Conduire, faire avancer, chasser, crier après.

हा interj. Ah!

हाक s. f. Cri, action d'appeler, provocation.

हाकनौं Voyez हांकनौं.

हाकिम s. m. Gouverneur, juge. — A. حاكم.

हाकू Voyez हाक.

हाट s. f. Boutique, marché.

हाड s. m. Os, ossements.

हांथ s. m. Main, possession, pouvoir. — हाथ मारनौं En venir aux mains.

हाथा Voyez हाथ.

हांथि Voyez हाथ.

हाथी s. m. Éléphant.

हान s. f. Perte, tort, dommage.

हानि Voyez हान.

हाय interj. Hélas!

हायन s. m. Année.

हार s. m. Collier.

हार s. f. Défaite.

हारनौं v. n. Être vaincu.

हारनौं v. a. Voyez हरनौं.

हारो adj. en comp. Qui fait.

हालनौं v. n. Trembler.

हास s. m. Sourire, rire.

हास्तिन n. pr. Hāstinapour.

हास्य adj. Ridicule.

हाहा interj. Ah! ah! hélas!

हाहाकार s. m. Consternation, surprise.

हिं Voyez हि.

हिंदू s. m. Hindou. — A. P. هندو.

हि particul. Précisément, même. —Terminaison servant à marquer le dat. et l'acc.

हित s. m. Amitié, bienveillance, amour. — *Empl. adverbial.* Pour, pour l'amour de.

हितकारी s. m. Ami, bienfaiteur.

हितू s. m. f. Ami.

हिमगिरि s. m. Mont Himālaya.

हिमवान n. pr. Himālaya.

हिय s. m. Cœur.

हिया s. m. Voyez हिय.

हियौ part.? Voyez होनौं.

हिरण s. m. Daim.

हिरन Voyez हिरण.

हीं particul. Voyez हि.

हींन Voyez हीन.

हींसनौं v. n. Hennir.

ही particul. Voyez हि.

हीण adj. Voyez हीन.

हीन adj. Privé de, manquant, petit, faible.

हीय s. m. Voyez हिय.

हीया temps pass.? Voyez होनौं.

हुं pron. pers. Voyez हौं. — 1re pers. sing. ind. prés. pour हौं Voyez होनौं.

हु particul. Voyez हि.

हुक्म s. m. Ordre. — A. حكم.

हुगे 2e pers. pl. fut. pour होउगे Voyez होनौं.

हुतो Voyez हुतौ.

हुतौ part. Étant.

हुलास s. m. Allégresse, joie.

हूं pron. pers. Voyez हौं. — 1re pers. sing. ind. prés. pour हौं Voyez होनौं.

हूं particul. Voyez हि.

हू particul. Voyez हि.

हूजे 2e pers. pl. précat. pour हूजिये Voyez होनौं.

हूत part. Étant.

हूल s. f. Coup, attaque, action de pousser.

हूलनौं v. a. Pousser, aiguillonner, faire avancer.

हृत adj. Ravi.

हृदय s. m. Cœur.

हृदयस्थ adj. Qui est dans l'esprit, dans le cœur.

हृदै Voyez हृदय.

हे interj. Oh!

हेत s. m. Intention, cause, motif, — *Empl. adverbial.* Pour, à cause de.

हेतु Voyez हेत.

हेम s. m. Or.

हेरनौं v. a. Regarder, observer, voir, chercher, poursuivre.

हो interj. Oh! ho!

होजानौं v. n. Devenir, arriver.

होत s. f. Moyens, ressources pécunières.

होन forme infl. de l'infin. de होनौं.

होनौं v. n. Être, exister

होम s. m. Offrande de beurre clarifié.

हौं pron. pers. Je, moi.

ह्रेषित s. m. Hennissement

FIN